नरमेध !

[डच प्रजातंत्र का विकास]

: चन्द्रभाल जौहरी

शीघ्र ही प्रकाशित होंगे

१—फाँसी !

२—किसान

३—मजूर

४—अछूत

५—जंगली

६—क्या करें ?

७—मराठे वीर

८—आत्मकथा

९—ग्राम-संगठन

१०—विवाह-मीमांसा

११—प्रलय-प्रतीक्षा

१२—लोकनायक श्रीकृष्ण

१३—ब्रिटिश साम्राज्य की नींव

श्रद्धेय

गणेश जी को

'श्री गणेश'

की

श्रद्धाञ्जलि

‘त्यागभूमि’

जीवन, जागृति, बल और बलिदान !

‘त्यागभूमि’ अपनी एक खास दिशा की ओर बढ़ती जा रही है। प्रतीत होता है, त्याग और बलिदान की भावना को जनसाधारण की नस-नाड़ियों में दौड़ा देना उसका मिशन है और अपने उसी मिशन को पूर्ण करने में वह छटपटाती रहती है। ‘त्यागभूमि’ के सम्पादन में परिश्रम और लगन की मात्रा बहुत स्पष्टता से झलक उठती है।

—कर्मवीर

हिन्दी के मासिक-पत्रों के इस भ्रष्ट वातावरण में ‘त्यागभूमि’ ने एक सुरुचिपूर्ण आदर्श उपस्थित कर दिया है ‘त्यागभूमि में कई ऐसी विशेषतायें और नवीनतायें हैं, जो हिन्दी के अन्य किसी भी मासिक-पत्र में नहीं हैं।

—युवक

हम दावे के साथ छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि ‘त्यागभूमि’ सी सस्ती, सुलिखित, सुसम्पादित हिन्दी में एक भी पत्रिका नहीं है। फिलहाल जिसे केवल एक मासिक पत्र या पत्रिका खरीदने की सामर्थ्य हो उसे बिना किसी पशोपेश के त्यागभूमि का ग्राहक बन जाना चाहिए।

—मतवाला

प्रस्तावना

मोटली का प्रख्यात इतिहास मैंने यरोडा जेल में पढ़ा था। उसका असर मेरे पर अच्छा पड़ा था। विलियम दी साइलेण्ट (प्रिंस ऑव् ऑरेञ्ज) का जीवन चरित्र जानने योग्य है और मोटली की शैली रसिक है। भाई चन्द्रभाल जौहरी का अनुवाद पढ़ने की मुझको फुरसत नहीं मिली है परन्तु मैं जानता हूँ कि उन्होंने परिश्रम अच्छा किया है। अंग्रेजी भाषा नहीं जानने वालों के लिए यह पुस्तक उपयोगी है, ऐसा मेरा अभिप्राय है।

स्टीमर अरण्डा
३० मार्च सन् १९२९

मोहनदास करमचन्द गांधी

वक्तव्य

मेरे अहमदाबाद आने पर गान्धीजी ने मुझे पुस्तकों की एक सूची दी। उनकी इच्छा थी कि इन पुस्तकों का हिन्दी में रूपान्तर हो जाय। मैंने दुर्भाग्य से उस सूची में से सब से बड़ी पुस्तक पहले चुनी। जिस ग्रन्थ के लिखने में प्रसिद्ध इतिहास-कार मोटले ने दस वर्ष लगाये थे, जिस ग्रन्थ की भाषा सुन्दर बनाने में उस सिद्ध-हस्त उपन्यास-लेखक ने अपनी सारी कला खर्च कर दी, उस महान ग्रन्थ पर अज्ञान के कारण मेरा हाथ अनायास ही जा पड़ा था।

मैंने मोटले के 'राइज़ ऑव् दि डच रिपबलिक' को एक बार पढ़ा और मुग्ध हो गया। किसी ग्रन्थ का एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तर करना कोई बड़ा महत्व का काम नहीं समझा जाता है। परन्तु मोटले का ग्रन्थ पढ़ चुकने पर डच प्रजातंत्र का स्वतन्त्र इतिहास लिखने का विचार करना मुझे धृष्टता, संसार के एक महान सेवक के प्रति कृतघ्नता और व्यर्थ का अहम्वाद सा प्रतीत होने लगा। साथ ही उस अंग्रेज़ी के पन्द्रह सौ पृष्ठ के तीन जिल्द वाले ग्रन्थ का हिन्दी के चार-पाँच सौ पृष्ठ में सार निकालकर रख देना और भाषा भी उपयुक्त और सजीव बनाये रखना बड़ा कठिन जान पड़ने लगा। सफलता मिली कि असफलता इसका निर्णय तो पाठक ही कर सकते हैं—विशेष कर वे पाठक, जिन्होंने मूल अंग्रेज़ी ग्रन्थ और हिन्दी के रूपान्तर दोनों को संयोगवश ध्यान से पढ़ा हो।

गान्धी जी की प्रेरणा और आशीर्वाद न होता तो मेरे लिए
तो इस बृहत कार्य को प्रारम्भ करके समाप्त करना भी कठिन हो
जाता । जैसे-तैसे लगभग दो वर्ष में हिन्दी का रूपान्तर हो पाया
है । मोटले की जादू-भरी अंग्रेज़ी से रूपान्तर की हिन्दी गिर न
जाय इसी खब्त में अध्याय के अध्याय फिर-फिर लिखे, बहुत-सा
काग़ज और स्याही ख़राब की, रातों-रातों की नींद बिगाड़ी, परन्तु
फिर भी वह बात कहाँ ? इतने पर भी यह काम शायद अधूरा ही
रह गया होता, अगर काका कालेलकर ने ज़बरदस्ती एक मास
की तनहाई (Solitary Confinement) न दे दी होती । इच्छा
अथवा अनिच्छा से मैं उनका भी ऋणी हूँ । पूज्य गणेश शंकर
विद्यार्थी जी के प्रोत्साहन और सहायता के लिए यदि मैं उनके
प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ तो यह व्यर्थ का पश्चिमी ढंग का लोका-
चार हो जायगा । वे मेरे बड़े भाई हैं । उसी प्रकार श्रीकृष्ण-
दत्त जी पालीवाल । प्रकाशकों के नखरों और अपनी नव-वधू
की सी हिचकिचाहट से उकताकर जब मैं अपने दो वर्ष के प्रयत्न
को एक बार अग्नि में झोंक देने का विचार करने लगा था, तो
भाई पालीवाल जी ने डाँटकर मुझे इस आत्मघात से बचाया था ।
साधु-प्रकृति भाई हरिभाऊ उपाध्याय जी ने प्रकाशन में सहायता
करके जो मेरा उत्साह बढ़ाया है उसके लिए मैं उनका अत्यन्त
ऋणी हूँ । पुस्तक की प्रस्तावना पूज्य गान्धी जी लिखने वाले थे ।
परन्तु दुर्भाग्य से या सौभाग्य से, जो कुछ भी कहिए, जिस समय
पुस्तक प्रेस में जा रही है, गान्धी जी फिर सन् १९२०-२१ की
तरह दूसरे आक्रमण की दुन्दुभी बजा चुके हैं । हिन्दी रूपान्तर
पढ़ने का उनके पास समय भी नहीं । फिर भी अपनी प्रेरणा से

किये गये प्रयत्न की लाज रखने की परिस्थिति में जो कुछ सम्भव था, उन्होंने कुछ शब्द प्रस्तावना-स्वरूप लिखकर भेज दिये हैं और लिखते हैं कि "भाई जौहरी, मैं प्रस्तावना भेजता हूँ। इससे अधिक लिखने का न समय है न शक्ति है। बापू का आशीर्वाद।" मेरे लिए 'बापू का आशीर्वाद' ही काफी था, प्रस्तावना न भी आती। बापू जी की मेरे ऊपर असीम कृपा और स्नेह है कि उन्होंने ब्रह्मदेश से २६ मार्च सन १९२९ को होने वाले कलकत्ते में अपने अभियोग के लिए लौटते हुए भी जहाज में बैठे-बैठे कुछ शब्द लिखकर भेज दिये। हिन्दी जनता को मूल-ग्रन्थ का महत्व मालूम हो गया।

हालैण्ड के नरमेध-यज्ञ की इस रोमाञ्चकारी कहानी को लिखकर मोटले यूरोप में अमर हो गया है। अमेरिका और इँग्लैण्ड के लोग तो उसकी अंग्रेजी की पुस्तक पढ़कर उसका गुण गाते ही हैं। यूरोप की अन्य सब भाषाओं, फ्रेञ्च, जर्मन, रशन इत्यादि में भी मोटले के ग्रन्थ के अनुवाद हो चुके हैं।

इन अनुवादों को अच्छे-अच्छे लेखकों ने लिखा है और अच्छे-अच्छे आदमियों ने उनकी प्रस्तावनायें लिखी हैं। मैंने अपनी मातृभाषा जानने वालों को केवल हालैण्ड के स्वतन्त्रता के भयंकर संग्राम की कहानी सुनाने की महत्वाकांक्षा से ही मोटले के ग्रन्थ का हिन्दी में रूपान्तर करने का साहस किया है। यह स्वतंत्रता का संग्राम क्या था, प्रारम्भ से अन्त तक एक महान यज्ञ था! नरमेध-यज्ञ! अत्याचार की भट्टियाँ जल रही थीं। अलंकार की भट्टियाँ नहीं, सचमुचकी भट्टियों में दिन-रात मनुष्य झोंके जाते थे। वे भट्टियों में झुंकते थे, परन्तु संग्राम से भागते नहीं थे।

असंख्य मनुष्य आहुति बने। देवता-स्वरूप, हालैण्ड के लोगों का हृदय-सम्राट 'विलियम दि साइलेण्ट' इस स्वतन्त्रता के यज्ञ में पूर्णाहुति बना। तब कहीं जाकर स्वतन्त्रता-देवी के दर्शन हुए। सदियों से गुलाम रहने के कारण निराशा और भाग्य के उपासक बन जाने वाले, एक ठोकर से घबराकर बैठ जाने वाले, एक हार से हतोत्साह हो जाने वाले पाठक हॉलैण्ड के स्वतन्त्रता के पुजारियों की कहानी में पढ़ें। ओह

"......जून का महीना आ गया। नागरिकों की कठिनाइयाँ क्षण-क्षण बढ़ने लगीं। साधारण भोज्य पदार्थ तो कभी के खत्म हो चुके थे। लोग तेलहन पर गुज़ारा चला रहे थे। जब यह भी खत्म हो गया, तो लोग बिल्ली, कुत्ते और चूहे हड़पने लगे। और जब यह भ्रष्ट जानवर भी नष्ट हो गये तो लोग घोड़ों और बैलों के रक्खे हुये चमड़े उबाल-उबाल कर खाने लगे। उन्होंने जूतों तक का चमड़ा उबाल कर खाया; उन्होंने कब्रों पर से घास नोंच-नोंच कर खाई; पत्थरों पर जमी हुई काई खाई कि जिससे वे कुछ दिन तक जीवित बने रहें और भेजी हुई सहायता आते ही स्वतन्त्रता की ध्वजा फहरा दें।......अन्त में नागरिकों ने अपने प्रिय नेता ऑरेञ्ज के पास एक खत में अपना हाल खून से लिखकर भेज दिया, और नगर पर निराशा का काला झण्डा चढ़ाकर लड़ते-लड़ते मर-मिटने के लिए तैयार हो गये।......लीडन में अनाज खत्म हो चुका था। कुत्ते, बिल्ली, चूहों की बढ़िया खाने में गिनती होने लगी थी। थोड़ी सी गायें बचाकर दूध के लिए रख ली गई थीं। उनमें से भी थोड़ी-थोड़ी रोज़ मारी जाने लगीं। परन्तु ज़रा-ज़रा से माँस

से भूखों मरने वाले नागरिकों का पेट कैसे भर सकता था ? क़साई-खाने के चारों ओर भुखमरों की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी और वे आपस में एक-एक निवाला माँस के लिये कुत्तों की तरह झगड़ते थे। वध किये हुए पशुओं का रक्त बहकर खरंजे पर आता था, तो बेतहाशा दौड़ कर गिरते थे और जिह्वा से रक्त चाटने लगते थे। स्त्रियाँ और बच्चे दिन भर गन्दे नालों और गोबर के ढेरों में अनाज के कण ढूँढते और कुत्तों से खाने के लिए झगड़ते नज़र आते थे। कटे हुए और उबले हुए चमड़े के टुकड़ों को लोग बड़े चाव से हड़प जाते थे। पेड़ों की सारी हरी पत्तियाँ नोच कर खा डाली गईं थीं। घास-पात सब कुछ मनुष्य का भोजन बन चुका था। फिर भी भूख से तड़प-तड़प कर मनुष्य सड़कों में गिरते थे और मर जाते थे। रोज़ भयंकर संख्या में मौतें होती थीं। बच्चे माताओं के भूख से सूखे और मुर्झाये हुए स्तनों पर छटपटा-छटपटा कर जानें गँवाते थे। मातायें गोद में बच्चों को लिये हुए मर-मरकर सड़कों पर गिरती थीं। मकानों में कुटुम्ब के कुटुम्ब प्रातःकाल को मरे हुए मिलते थे। महामारी फैली। सात-आठ हज़ार मनुष्य देखते-देखते काल के गाल में चले गये। परन्तु इस फ़ाके-मस्ती और निराशा में भी लीडन को अपनी स्वतंत्रता का गर्व था। जब शत्रु नागरिकों को कुत्ते, बिल्ली और चूहे खाने वाला कहकर चिढ़ाने और हँसने लगे तब नागरिकों ने नगर की दीवारों पर चढ़कर अपने शत्रुओं से गरजकर कहा, 'तुम हमको कुत्ते-बिल्ली-चूहे खाने वाला कहते हो ? हाँ, हैं हम कुत्ते-बिल्ली खाने वाले ! परन्तु साथ-साथ यह भी विश्वास रखना कि जब तक नगर में से एक भी बिल्ली या कुत्ते की आवाज़

आती रहेगी लीडन सिर नहीं झुकायेगा। जब हमारे पास कुछ भी खाने को न रहेगा तो यक़ीन रखना हम में से हरएक अपना बायां हाथ खा-खा कर दाहिने से अपने देश, अपनी जाति, अपनी स्त्रियों, अपने धर्म और स्वतन्त्रता के लिए घोर युद्ध करेगा। यदि फिर भी भगवान ने प्रसन्न होकर हमारी सहायता न की तो भी हम अन्त तक तुम से लड़ते रहेंगे। जब अन्तिम घड़ी आ जायगी तब अपने हाथों हम अपने नगर में आग लगा देंगे; पुरुष, स्त्री, बच्चे सब अग्नि की ज्वालाओं में जलकर मर जायेंगे, परन्तु अपने घरों को विदेशियों के पदार्पण से अपवित्र नहीं होने देंगे; अपनी स्वतन्त्रता का नाश न होने देंगे।"

लीडन के, स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले नागरिकों ने शत्रु से बचने का और कोई उपाय न देखकर समुद्र के बांध काट दिये और अपने देश को विदेशियों के पदों के अपवित्र स्पर्श से बचाने के लिए समुद्र में डुबा देने के लिए तैयार होकर चिल्लाने लगे, Better a drowned land than a lost land अर्थात् हारे हुए देश से डूबा हुआ देश अच्छा। क्या हम अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाले पुरुष भी इसी प्रकार स्वतन्त्रता के लिए जीने और स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने को तैयार हैं? हमें तो साल-छः महीने के लिए जेल हो आने पर ही घमण्ड हो जाता है। स्वतन्त्रता के आगामी विकट लम्बे संग्राम में जब तक हम भी इसी तरह हारे हुए देश से डूबा हुआ देश' अथवा जला हुआ देश सहर्ष पसन्द करने को तैयार नहीं हो जायँगे, अपनी निःसहायता पर निराश नहीं होंगे तबतक विजय मिलना असम्भव है। स्वाधीनता वही पा सकते हैं जो उसका मूल्य हंसते-

हंसते चुका देते हैं। कोई हमारी वर्तमान अवस्था पर निराश न हो; नेदरलैण्ड के इन्हीं निःसहाय निःशस्त्र साधारण लोगों ने संसार की उस समय की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं का इस भयंकरता से सामना किया था कि शत्रु–सेनापति को अपने घर खबर भेजनी पड़ी थी कि 'यह नागरिक ऐसे लड़ते हैं कि जैसे संसार के सर्व-श्रेष्ठ सैनिक लड़ सकते हैं।"

है किसे सामर्थ्य सहने की भला उस हाथ को,
देश-रक्षा के लिए ऊंचा हुआ जो हाथ हो।

अन्त में उन सब मित्रों के प्रति जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मुझे सहायता की है, मैं एक बार कृतज्ञता प्रकट करना अपना धर्म समझता हूँ। पाठकों से प्रार्थना है कि जहाँ कहीं उन्हें इस ग्रन्थ में रोचकता मिले, उसके लिए वे मोटले की लेखनी और गान्धी जी की प्रेरणा का आभार मानें। जहाँ त्रुटियाँ और अरोचकता मिले उसके लिए मुझे दोषी समझें और मेरे अज्ञान के लिए मुझे क्षमा करें।

गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद
फाल्गुन सं १९८९

चन्द्रभाल जौहरी

विषय--सूची

भूल-सुधार

अध्याय १७ और १८ के आरम्भ में भूल से १५—१६ अंक पड़ गये हैं। पाठक कृपया सुधार लें।

नरमेध !

"अपने बल पर खड़े होकर लड़ना और स्वाधीनता प्राप्त करना, नहीं तो लड़ते-लड़ते मर जाना ही मेरी नजर में सर्वश्रेष्ठ जँचता है।"

—विलियम प्रिंस ऑव् आरेञ्ज

डच प्रजातंत्र का विकास

चार्ल्स के पूर्व

यूरोप के उत्तर-पच्छिम का वह भाग जिस में अब बेलजियम और हालैण्ड बसे हुए हैं पहले नेदरलैण्ड कहलाता था। इस में तीन बड़ी नदियां राइन, मियूज़ और शेल्ड बहती हैं। जिस प्रकार पाँच नदियों ने पंजाब की और गंगा और यमुना ने युक्त-प्रान्त की भूमि को अपने जल से सींच-सींच कर उपजाऊ बना दिया है, उसी प्रकार इन तीन नदियों ने नेदरलैण्ड की मरुभूमि को अपनी गोद का दूध पिला-पिला कर हरा-भरा कर रक्खा था। यह भाग समुद्र की सतह से नीचा है, परन्तु मनुष्य ने अपनी लगातार मेहनत से इसे समुद्र के राज से छीन कर पृथ्वी की भेंट कर दिया है, बड़े-बड़े बांध खड़े करके समुद्र को पीछे ढकेल दिया है। समुद्र से छीने हुए भाग पर लोगों ने अपने घर बनाये हैं, बड़े-बड़े नगर बसाये हैं। भौगोलिक और जातीय आधार पर यह फ़ान्स और जर्मनी दोनों का कहा जा सकता है। जिस प्रकार आर्य्यों ने जंगलों को काट कर गंगा और यमुना के किनारे गाँव बसाये थे, उसी प्रकार यहाँ के पूर्व निवासियों ने दलदलों को सुखाकर रहने के योग्य भूमि बनाई थी।

यहाँ के आदिम निवासी कौन थे, कैसे थे, यह कहना बड़ा कठिन है। सीज़र से पहले का कोई वर्णन इस भाग के

सम्बन्ध में नहीं मिलता । बटेविया के—जिसे नेदरलैण्ड का हृदय कहना चाहिए—निवासी बड़े वीर थे । यहाँ के नौजवान युवक जब तक एक शत्रु को मार नहीं लेते थे तब तक अपनी दाढ़ी और बाल नहीं कटाते थे । सीज़र की सेना में बटेविया के सिपाही ही सब से वीर गिने जाते थे । रोम का साम्राज्य इन्ही के बल पर फैला था । बूढ़े, जवान, सब वीरता के मद से मतवाले राजपूतों की भांति रणभूमि में जान गँवाने के लिये सदा उत्सुक फिरा करते थे । अपने देश की प्राकृतिक अड़चनों से लड़ते-लड़ते ये लोग मेहनत के खूब आदी हो गये थे । इनका शरीर भी हृष्ट-पुष्ट होता था ।

नेदरलैण्ड में बसने वाली फरासिसी और जर्मन दोनों जातियाँ शरीर में पुष्ट और लम्बे क़द की थीं । परन्तु धार्मिक बातों में फरासिसी अपने धर्म-गुरुओं के पीछे वैसे ही अन्ध-विश्वास से चलते थे जैसे कि भारतवासी ब्राह्मण के पीछे चलते थे । जर्मन आज़ादी से सोचते थे । परमात्मा इत्यादि के बारे में भी उनके विचार उच्च थे । दोनों जातियों की राज-नैतिक परिस्थिति में बहुत अन्तर था । फरासिसियों के यहाँ सरदार और अमीर–उमरा तथा धर्म गुरु ही सब कुछ माने जाते थे । सर्व साधारण के कोई अधिकार न थे । राज्य-शासन का भार भी इन्हीं सरदारों इत्यादि के हाथ में रहता था । वे जो तय करते थे वही न्याय माना जाता था । सब सरदार और अमीर लड़ाई के हुनर में होशियार होते थे और वे ही प्रति वर्ष के लिए राजा चुन लिया करते थे । साधारण लोग जो सरदार उनकी रक्षा करने के योग्य होता था उसी की शरण में

जा रहते थे। जर्मनों के यहाँ सार्वजनिक पंचायतों के द्वारा सब काम होता था। दासों के अतिरिक्त—जो या तो लड़ाई में कैद हुए आदमी होते थे या दंगलों में हारे हुए मनुष्य-और सब को राजनीति में भाग लेने का अधिकार था। प्रायः पूर्णिमा को पंचायत की बैठक होती थी। ढाल और तलवार की खन-खनाहट पर लड़ाई के सरदार चुने जाते थे यही सरदार शासन का कार्य भी करता था। गावों की पंचायतों में गांवों के मुखिया चुने जाते थे। सब चुने हुए सरदार और मुखिया पंचायत की आज्ञा का सदा पालन करते थे। लड़ाई, सुलह और शासन का वास्तविक अधिकार केवल पंचायत को ही था। लोगों को स्वतन्त्रता इतनी प्रिय थी कि नियत दिवस पर पंचायत की बैठक में पहुँच जाना भी जनता के प्रतिनिधि और सरदार लोग अपनी स्वतन्त्रता पर एक बन्धन समझते थे। अकसर दो-दो तीन-तीन दिन तक उनके इन्तज़ार में सभा की बैठक रुकी रहती थी। वे बड़ी शान से आते थे। राय देने के लिए हाथ न उठा कर ज़ोर ज़ोर से ढाल तलवार खड़काते थे। जब सरदार चुने जाते तो कन्धों पर बिठा कर उनका जलूस निकाला जाता था।

इन लोगों का सब से पहला ऐतिहासिक वृत्तान्त जो मिलता है वह विदेशियों के हाथ का लिखा हुआ है। जब सीज़र ने नेदरलैण्ड पर हमला किया था, तब नेदरलैण्ड-वासियों ने उससे खूब लोहा लिया था। नरवाई जाति के लोग तो इस वीरता से लड़े थे कि उनकी जाति की जाति मर मिटी थी। सीज़र की जीत हुई परन्तु नरवाई लोगों ने जीते-जी उसकी दासता स्वीकार

नहीं की। शेष जातियों ने सीज़र से सन्धि कर ली थी और बटेविया के लोगों को सीज़र ने खुश होकर अपनी सेना में रख लिया था। आगे चलकर यह बटेविया की सेना अपनी वीरता के लिए सारे यूरोप में प्रसिद्ध हुई। यहाँ तक कि रोम-साम्राज्य की लगाम ही इस सेना के हाथ में आ गई। जिसकी तरफ़ यह सेना झुक जाती थी, वही रोम का राजा चुन लिया जाता था।

एक दफ़ा वितेलियस बटेवियन सेना की सहायता से रोम का राजा चुना गया। परन्तु उसने गद्दी पर बैठते ही सारी बटेवियन फ़ौज को जर्मनी भेज दिया क्योंकि वह इससे बहुत डरता था। बस फिर क्या था। नेदरलैण्ड में क्रान्ति हो गई और नेदरलैण्ड से रोम-साम्राज्य की सत्ता ही उखाड़ फेंकी गई। क्लाडियस सिविलियस नाम का एक बहुत बुद्धिमान बटेवियन सरदार था। उसने रोम में शिक्षा पाई थी और पचीस वर्ष तक रोम की सेना में रहा था। वह बड़ा स्वतन्त्रता-प्रिय व्यक्ति था। उसने देखा कि रोम के राजा बहुत ऐयाश और कमज़ोर हो गये हैं; और राज्य की लगाम बटेवियनों के हाथ में है। रोम में रहकर रोमनों की सारी बुराइयाँ सिविलियस ने अच्छी तरह देख ली थीं। वितेलियस अपने खाने-पीने पर ही एक सप्ताह में जितना धन खर्च कर डालता था उतना धन सारे बटेवियनों का केवल पेट ही नहीं भर सकता था; बल्कि उनके देश के दलदल सुखाकर उसे हरा-भरा एवं धन-धान्य-पूर्ण देश बना सकता था। सिविलियस ने सोचा कि क्यों न ऐसे व्यसनी राजा से पिण्ड छुड़ा लिया जाय।

सिविलियस ने देखा कि नेदरलैण्ड को स्वतन्त्र हो जाने का यही मौक़ा है। बड़े प्रयत्न से उसने नेदरलैण्ड की सारी जातियों

को मिलाया और रोम के विरुद्ध स्वतन्त्रता के युद्ध की दुन्दुभी बजाई। युद्ध छिड़ा। एक तरफ़ तो सारे रोम-साम्राज्य की शक्ति थी और दूसरी तरफ़ छोटा-सा नेदरलैण्ड। कहाँ तक लड़ाई चल सकती थी? बेचारे सिविलियस की हार हुई। दक्षिण प्रदेशों की फरासिसी सन्धि के लिए उत्सुक हो उठे थे। यहाँ तक कि वीर बटेवियन भी बड़बड़ाने लगे थे कि "हमीं अकेले कहाँ तक लड़ते रहेंगे, जब सबके भाग्य में गुलामी ही बदी है तो हमीं अकेले लड़कर उसे कैसे रोक लेंगे?" सिविलियस बड़ा होशियार राज-नीतिज्ञ था। उसने रोमनों के आये हुए सन्धि के सन्देश को तुरन्त स्वीकार कर लिया। राइन नदी का पुल बीच में से तोड़ दिया गया। और इस तरफ़ सिविलियस और उस तरफ़ रोम के सेनापति खड़े होकर आपस में सन्धि की शर्तें करने लगे।

बस लेखक टेसीटस ने इस कहानी को यहीं पर छोड़ दिया है। बेचारे सिविलियस का कार्य, दक्षिण प्रदेश के निवासियों के कन्धे डाल देने के कारण पूरा न हो सका। आगे चल कर हम देखेंगे कि यह दक्षिण।प्रान्तों के फरासिसी हमेशा लड़ाई के लिए सब से पहले क़दम उठाते थे परन्तु अन्त में सब से पहले घुटने टेक देते। उत्तर प्रान्त के लोग धीरे-धीरे आते थे; परन्तु आजाने पर अन्त तक अड़े रहते थे। बाद में विलियम आव् आरेञ्ज ने फिर जब स्वतन्त्रता का झण्डा खड़ा किया तब भी यह दक्षिण वाले अन्त में उसे इसी प्रकार छोड़कर चल दिये जैसे कि उन्होंने सिविलियस का साथ छोड़ दिया था।

बहुत दिनों तक नेदरलैण्ड रोम-साम्राज्य का एक भाग रहा। फिर फ्रान्स के क़ब्ज़े में चला गया। और फिर शार्लमैन

की मृत्यु के बाद जब उसके कमजोर उत्तराधिकारी उसके बड़े साम्राज्य को सँभाल न सके तब नेदरलैंड पर जर्मनी ने क़ब्ज़ा जमा लिया। इस बीच में नेदरलैंड में बहुत से छोटे बड़े जागीरदार उठ खड़े हुए थे। सन् ९२२ ई० में नेदरलैंड के अन्तिम फरासिसी राजा ने काउण्ट डर्क को होलैण्ड की जागीर प्रदान की थी। जागीरदारों को प्रायः पूर्ण राज्याधिकार होते थे। ९६५ ई० में लौरेन की जागीर दो भागों में विभाजित कर दी गई थी। नीचे का भाग नेदरलैण्ड में आगया था। ग्यारहवीं सदी में यह जागीर काउण्ट ऑव् ब्रबेण्ट के हाथ आई और वह काउण्ट से ड्यूक ऑव ब्रबेण्ट कहलाने लगा। जिस प्रकार इन बड़े जागीरदारों को अपनी-अपनी जागीरों में पूर्ण स्वतन्त्रता थी उसी प्रकार उनसे नीचे के काउण्ट और बैरन कहलाने वाले जागीरदारों को भी अपने यहाँ पूर्ण स्वतन्त्रता थी। नामूर, हेनाल्ट, लिमबर्ग और जुटफेन के काउण्ट लक्जमबर्ग और गुइलड्रेस के ड्यूक मेचलिन के बैरन और एण्टवर्प के मार्कीज़ इत्यादि सारे जागीरदार इसी कक्षा के जागीरदार थे। लौरेन के घराने के बाद सब से मशहूर फ्लेण्डर्स का घराना था। हालैण्ड, जेलैण्ड, यूट्रेक्ट, ओवरीसेल, ग्रोनिन जेन, ड्रेन्द और फ्रीसलैन्ड ये सात प्रान्त जिस भाग में बसे हुए थे उसी भाग में अन्त में संयुक्त नेदरलैण्ड के प्रजातन्त्र-राज्य की स्थापना हुई थी। प्रारम्भ में इस भाग पर हालैण्ड के काउण्ट और यूट्रेक्ट के बिशप मिल कर राज्य करते थे।

नैदरलैण्ड छोटी छोटी जागीरों में बँटा हुआ था। दसवीं शताब्दी में पुराने ढंग का बटेव्रियन शासन जिसमें लोग अपने

अधिकारी स्वयं चुन लेते थे—नष्ट हो चुका था। जब नेदरलैण्ड पर रोम का आधिपत्य हुआ था तब से यह अधिकारियों के चुनने की प्रथा बन्द करदी गई थी। राजधानी रोम से जो अधिकारी नियत कर दिया जाता था देश पर उसी का अधिकार समझा जाता था। फिर जब फ्रान्स का आधिपत्य हुआ तो उस ने भी यही प्रथा जारी रक्खी। शार्लमैन के समय में तो सार्वजनिक पंचायतों का नाम ही मिट गया था। सेना विभाग, शासन-विभाग, न्याय-विभाग सारे विभागों के अधिकारी राजा द्वारा नियुक्त होते थे। परन्तु जैसे भारतवर्ष में मुग़ल सम्राट के कमज़ोर होते ही नवाब इत्यादि अपना राज्य जमा बैठते थे; उसी प्रकार नैदरलैण्ड के अधिकारी भी किया करते थे। शार्लमैन का सिद्धान्त था कि अधिकारियों को लोगों के पुराने रस्म रिवाजों के अनुसार ही शासन करना चाहिये। इस सिद्धान्त के कारण जनता पर निरंकुश राज्य कभी न हो सका। लोगों को बहुतसी बातों में स्वतन्त्रता रही। परन्तु इस सिद्धान्त की आड़ में अधिकारी लोग भी राजा की मीन-मेख से बचे रहते थे। यही अधिकारी वर्ग सारी मालगुज़ारी और कर वसूल किया करता था मालगुज़ारी का कम से कम एक तिहाई भाग तो ये मामूली तौर पर सदा ही हड़प जाते थे। परन्तु सम्राट के कमज़ोर होते ही सारी आमदनी अपने घर रखने का क्रम शुरू हो जाता था। इस अन्धे समय में जब कि शिक्षा और सभ्यता का अच्छी तरह प्रकाश नहीं फैल पाया था। अधिकारी और धर्म गुरु जनता का खूब खून चूसते थे। क़त्ल ज़िना, बदमाशी, लूटमार सबसे रुपया देकर बचाव हो सकता

था। राजा के अधिकारी प्रायः साल में तीन बार पंचायतों को एकत्र किया करते थे परन्तु ये पंचायतें उन बटेवियन स्वतन्त्र पंचायतों की तरह न थीं जिन में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित ढाल-तलवार खनखनाते हुए वीर अपनी इच्छानुसार मनमाने समय पर आकर अपने अधिकारी चुना करते थे। अब देश के शासन की बागडोर दूर देश में रहने वाले ऐसे गुप्त हाथ में पहुँच गई थी, जिसके उन्हें कभी दर्शन भी नहीं होते थे। अब जनता का शासन नहीं था, जनता पर शासन होता था। अब अपने अधिकारी नेदरलैण्ड वाले स्वयं नहीं चुनते थे। कोई दूसरी ही दैवी शक्ति उनके अधिकारी चुन कर भेजती थी। जनता के राजनैतिक अधिकार ही नहीं छीन लिये गये थे, व्यक्तिगत अधिकारों की भी कुरकी करली गई थी। जो अधिकारी जनता के रक्षक नियत किये जाते थे, वे ही जब भक्षक बन कर जनता पर टूटते थे तब शासन की सुव्यवस्था कैसे रह सकती थी?

इसी प्रकार पाँच शताब्दियाँ बीतीं! इस काल में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस,' बस यही एक क़ानून था। लाठी का ज़ोर, रूपये का ज़ोर, धर्म-गुरुओं का ज़ोर। इन्ही तीन शक्तियों का निरंकुश राज्य था। परन्तु संसार में धीरे-धीरे सभ्यता फैल रही थी। यह ठीक है कि ड्यूक बैरन, धर्म-गुरु लोग हमेशा आपस में लड़ते रहते थे, प्रजा का रक्त मुफ्त में बहाया जाता था; बाज़ दफ़ा तो एक एकड़ ज़मीन के लिये हज़ारों जानें जाती थीं; यह भी ठीक है कि धर्म के नाम पर सैकड़ों रोते-पीटते मनुष्यों की गरदनें काट कर देवी-देवताओं पर चढ़ा दी जाती थीं; बेईमानी,

दगाबाज़ी, छल-कपट, लूटमार, किसी भी प्रकार से। रुपया जमा करना लोग साधारण बात समझते थे। परन्तु यह सब होते हुए भी नेदरलैण्ड की तिजारत और कला-कौशल में वृद्धि हो रही थी; देश की गोद धन से भरने लगी थी। दूर—दूर पर बसे हुए नगरों और गावों के साथ—साथ बड़े नगर भी बसने लगे थे। नगरों की मालदार चुंगियों की राज्य कार्य्य में बात भी सुनी जाने लगी थी। हालैण्ड के मल्लाहों ने भी दूर-दूर के धावे मारना शुरू कर दिये थे। धन से बल आता है; बल से आत्म-विश्वास। जब सर्व साधारण में कारीगरी के कारण रुपया हो गया तो उन्होंने भी धनुष-बाण खरीदे; वे भी तलवारें बाँध कर सरदारों की तरह ऐंठ कर निकलने लगे। साधारण मनुष्यों का इस प्रकार मूछों पर ताव देना जब सरदार लोग न सह सके; तो आपस में अक़सर झगड़े भी होने लगे। इन झगड़ों में सर्व साधारण ने देखा कि उनकी तलवार भी उतना ही अच्छा काट कर सकती है जितना अच्छा कि सरदारों की तलवार करती है। अपनी शक्ति का ज्ञान होते ही जनता के हृदय से सरदारों का भय निकल गया। शिक्षा भी फैल ही रही थी। लोगों की आँखें खुल जाने से धर्म गुरुओं का दबदबा भी कम हो चला। दिन—दिन सर्व साधारण की शक्ति बढ़ती गई। बहुत दिनों से जो एक सिद्धान्त चला आता था कि 'राजा पृथ्वी पर परमेश्वर का अवतार है' वह तो क़ायम रहा परन्तु वास्तविक सत्ता सार्वजनिक चुङ्गियों के हाथ में आने लगी। यह 'परमेश्वर के अवतार' वाला सिद्धान्त भी बड़े मज़े का सिद्धान्त था। कोई भी मूर्खाधिराज गद्दी पर आ बिराजे परन्तु वह

परमेश्वर की ही इच्छा से आता था। यदि परमेश्वर के भेजे हुए इन महान् आत्माओं में से यदि कोई बलहीन होते अथवा राज्य-कार्य की आपदाओं से विरक्त रहना चाहते थे तो वे ईश्वर के सौंपे हुए राज्य को बेच-बाच कर अपना पिण्ड छुड़ा लेते थे। चार्ल्स दि सिम्पुल ने, इसी ईश्वर के प्रतिनिधि की हैसियत से काउण्ट डर्क हालैण्ड को सौंप दिया था; परन्तु इतने पर भी ईश्वर का प्रतिनिधि बेचारा चार्ल्स दि सिम्पुल अपने ताज की रक्षा न कर सका; जेलखाने में जान गँवाई। यद्यपि नगरों के हाथ में वास्तविक सत्ता आरही थी; परन्तु नगर खुल्लम् खुल्ला कभी कानून बनाने या शासन में भाग लेने का दावा नहीं करते थे। हाँ, सम्पूर्ण महत्वपूर्ण राज कार्यों में, और विशेषतः सन्धि करने में तो इनका पूरा हाथ रहता था। डराकर, धमका कर, खून बहाकर, वायदे करके, घूस देकर, लालच देकर, नाना प्रकार से नेदरलैण्ड के नगरों ने राजाओं से अधिकार पत्र ले लिये थे। ये अधिकार पत्र (Charters) जन-साधारण की तरफ़ से बनाये जाते थे और राजा उन में लिखी हुई जनता की शर्त के अनुसार राज्य करने की शपथ लेता था। ये अधि-कार-पत्र नेदरलैण्ड के इतिहास में बड़ी महत्वपूर्ण वस्तु हैं। इन्हीं के अनुसार नगरों पर राज्य होता था। जब कभी राजा इनके विरुद्ध जाता था तो जनता मरने-मारने पर तत्पर हो जाती थी। इस प्रकार अभी तक जहाँ केवल सरदार और धर्म-गुरु ही थे, वहाँ तीसरी शक्ति नगरों की पैदा होगई। फिरभी नगर न तो अपने को सारे देश का प्रतिनिधि समझते थे और न वे थे ही। उत्तर भाग में गुलामी प्रबल रूप से बहुत

दिन तक क़ायम रही। अधिकार-पत्रों के अनुसार निरंकुश-शासन के स्थान पर क़ानून का राज्य क़ायम हुआ था। सब के लिए एक ही क़ानून था। कोई मनुष्य बिना क़ुसूर गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था। अदालतें भी बनाई गई, ग़ुलाम इत्यादि नीच जाति के लोगों को छोड़ अन्य साधारण वर्ग के सब मनुष्य इन अदालतों में बैठ सकते थे। इतना सा सुधार और अधिकार भी उस असभ्य काल के लिए बड़ी बात थी।

पहले तो नगरों के अधिकारी राजा ही चुनता था। फिर धीरे-धीरे इन नगरों की चुंगियाँ ही अधिकारी चुनने लगीं। नैतिक जीवन के उदय और कला-कौशल से कमाये हुए धन के बल ने हालैण्ड और फ्लेण्डर्स के नगरों को छोटे-छोटे प्रजातन्त्रों के रूप में बदल दिया था। जैसे-जैसे इन नगरों की शक्ति बढ़ती गई, वैसे-वैसे इन्होंने और हाथ-पैर फैलाये। सरदारों के साथ इन नगरों के प्रतिनिधि प्रान्तिक पंचायतों में भी पहुँचने लगे। सन् १२८९ ई० में हालैण्ड के ६ प्रधान नगरों को प्रान्तिक पँचायत में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला। इस प्रकार सरदारों के साथ-साथ इन नगरों के हाथ में भी राजनैतिक संगठन का अधिकार आने लगा। काउण्ट ने नगरों को अपने अधिकारी और कौंसिल के कुछ सदस्य चुनने की भी सनद देदी।

जिस स्थान पर आजकल हालैण्ड में ज्यूडरज़ी नाम का समुद्र का भाग है, वहाँ पहले स्थल था। तेरहवीं शताब्दी में एकाएक समुद्र की बाढ़ आ जाने से यह हिस्सा डूब गया। तबसे पृथ्वी का यह भाग समुद्र का भाग बन गया। इस अचानक दैवी-आपत्ति से फ्रीसलैण्ड दो भागों में बँट गया। पश्चिमी भाग

हालैण्ड से मिल गया और पूर्वी भाग के स्वतंत्रता-प्रिय लोगों ने अपनी स्वतंत्रत शासन प्रणाली क़ायम रक्खी।

हालैंड में प्रथम डर्क से लेकर तेरहवीं शताब्दी तक ४०० वर्ष बराबर डर्क और फ्लोरेन्स के घराने के मनुष्य गद्दी पर बैठते आये थे। इन घरानों के नष्ट हो जाने पर हेनाल्ट के काउन्ट के घराने को हालैण्ड की जागीर मिली। हालैण्ड और ज़ेलैण्ड मिलकर एक हो ही चुके थे। अन्त में ये दोनों प्रान्त: हेनाल्ट से मिल गये। सन् १३५५ ई० में इस घराने का अन्तिम सरदार भी बिना कोई पुत्र छोड़े मर गया। इसलिए उसकी बहिन का लड़का विलियम ऑव् ववेरिया गद्दी पर बैठा। विलियम के बाद उसका भाई और भाई के बाद भाई का बेटा जागीर का मालिक हुआ। इसका नाम भी विलियम था। इसके बाद उसकी १७ वर्ष की लड़की गद्दी पर बैठी। परन्तु लड़की के चचेरे भाई बरगण्डी के ड्यूक फिलिप ने, जो 'सज्जन' के नाम से मशहूर था, उससे इसके बाप की जागीर छीन ली। लड़की बेचारी जंगलों में मारी-मारी फिरने और बड़े कष्ट से अपने दिन बिताने लगी।

पाँच सौ वर्ष तक नेदरलैण्ड इसी तरह छिन्न-भिन्न रहा। अन्त में बरगण्डी के घराने का सारे नेदरलैण्ड पर राज्य हो गया। नेदरलैण्ड के सब प्रान्त जो अलग-अलग हो गये थे, फिर से सब दासता के एक सूत्र से बाँध दिये गये। सब मिल कर एक स्वामी के सामने शीश नवाँने लगे। एक शताब्दी से अधिक समय तक यही घराना सारे देश पर राज्य करता रहा।

हालैण्ड हज़म करने के पहले ही फिलिप बहुत से प्रान्तों पर—किसी पर बिरासत से तो किसी पर जबरदस्ती से अधिकार

जमा चुका था। हालैण्ड, जेलैण्ड, हेनाल्ट और फ्रीसलैण्ड पाने के एक साल बाद ही उसने लक्ज़मबर्ग पर भी अधिकार जमा लिया। इतना बड़ा राज्य पाकर वह यूरोप के अन्य राजाओं की बराबरी का दम भरने लगा। पोर्च्युगाल की शाहज़ादी इज़ाबेला से जब उसका विवाह हुआ था तो फिलिप ने 'गोल्डेन फ्लीस' नामक एक संस्था स्थापित की थी।

संसार के सबसे प्रख्यात पचीस राजे, महाराजे और सरदार इस संस्था के सभासद थे। जैसा पहले कहा जा चुका है नगरों की 'चुंगियाँ और नगर पंचायतों' की शक्ति बहुत-कुछ बढ़ गई थी। राजा के प्रतिनिधि और सरदारों के प्रतिनिधियों के बराबर ही नगर पंचायतों के प्रतिनिधियों का भी प्रान्तिक पंचायतों में ज़ोर था। परन्तु सब नगर छोटे-छोटे प्रजातन्त्र राज्यों की तरह एक दूसरे से स्वतन्त्र थे। प्रान्तिक पंचायत में जो प्रतिनिधि जाते थे, वे वहाँ उसी प्रकार बैठते थे जिस प्रकार आजकल राष्ट्र-संघ में भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि एक दूसरे पर कड़ी नज़र रख कर बैठते हैं। एक नगर को दूसरे नगर पर विश्वास न था। यही अविश्वास उन्हें आगे चल कर ले डूबा। फ़िलिप जन्म का बड़ा लालची था। वह कभी अपनी संकुचित शक्ति पर सन्तोष नहीं कर सकता था। गद्दी पर बैठते ही उसने लोगों को कसना शुरू किया। सर्व-साधारण की स्वतन्त्रता क़ायम रखने और अधिकार-पत्रों के अनुसार चलने की उसने जो शपथें ली थीं वे सब एक किनारे रख कर उसने मरते दम तक नेदरलैण्ड के लोगों की स्वतंत्रता कुचलने का ही प्रयत्न किया। उसमें राज्य-शासन की पूर्ण योग्यता थी। रणभूमि में भी वह

जी खोल कर लड़ता था। उसने जनता पर बहुत कर लगाया। परन्तु उसमें इतनी बुद्धि थी कि जिन लोगों की थैली काट-काट कर खजाना भरा जा रहा है यदि वही निर्धन हो जायँगे तो आमदनी का द्वार भी बन्द हो जायगा। इसीलिए वह सदा इस बात का भी प्रयत्न करता था कि देश की तिजारत और उद्योग-धन्धे बढ़ते रहें। उसके समय में जिस प्रकार स्वतंत्रता की क्षति हुई, उसी प्रकार देश के धन-दौलत की वृद्धि भी हुई।

फ़िलिप के बाद उसका बेटा गद्दी पर बैठा। उसका नाम था चार्ल्स। परन्तु वह 'बहादुर चार्ल्स' के नाम से पुकारा जाता था। बहादुर तो वह अवश्य था, परन्तु दुर्भाग्य से उसमें और कोई गुण नहीं था। किसी अन्य देश पर जाकर राज करने और प्रजा की जेब काटने के लिए बड़ी बुद्धिमत्ता और चालाकी की आवश्यकता होती है। चार्ल्स का बाप तो इस काम में बड़ा होशियार था परन्तु चार्ल्स निरा उद्दण्ड और ऊल-जलूल था। जिस प्रकार मुहम्मद तुग़लक चीन जैसे बड़े-बड़े राज्यों को जीतने के स्वप्न तो देखा करता था, परन्तु देश की शासन व्यवस्था का कुछ विचार नहीं करता था; उसी प्रकार इसे भी राज्य-शासन की कोई परवाह नहीं थी। एक बड़ी भारी फ़ौज रख छोड़ी थी, और प्रजा पर निर्द्वन्द होकर कर लगाता था। लोग इतना अधिक कर देने को तैयार नहीं थे। अधिकारी वर्ग जब कर वसूल करने जाते थे तो अकसर मार-पीट भी हो जाती थी। सड़कें ख़ून से रँग जाती थीं। तिस पर भी यह पागल स्वीजरलैण्ड की वीर पहाड़ी जातियों से लड़ाई मोल ले बैठा। अन्त तक वह इसी प्रकार मार-काट में लगा रहा। उसका सिर अपने स्वप्न के

साम्राज्य का ताज तो नहीं पहिन सका, एक दिन कटकर रक्त-पूर्ण कीचड़ में अवश्य जा गिरा। यह बेचारा अपने राज्य की असहाय प्रजा को सताने के सिवाय अपना और कोई मनोरथ पूर्ण न कर सका। इसके मरने पर उसकी जवान लड़की मेरी गद्दी पर बैठी।

मेरी के गद्दी पर बैठते ही लोगों में यह विचार फैला कि खोई हुई स्वतंत्रता फिर से प्राप्त करने का यह अच्छा अवसर है। आपस की फूट से जो हानि होती है उसका लोग अनुभव कर चुके थे। इसलिए सब दल मिल गये। सबने मिलकर एक स्वर से अपने अधिकारों की माँग की। मेरी बेचारी औरत थी। तिसपर इधर से फ्रांस के राजा लुई ने भी बरगण्डी पर चढ़ाई कर दी। वह सारा राज्य अपने लिए और मेरी को अपने लड़के से ब्याहने के लिए माँगने लगा। मेरी बड़ी घबड़ाई; उसने देश के लोगों से प्रार्थना की कि सब मिलकर इस नयी आपत्ति का सामना करो। लोगों ने कहा—"हाँ, हम तुम्हारी सहायता करने को तैयार हैं, परन्तु हमारे जो अधिकार तुम्हारे बाप-दादों ने नष्ट कर डाले हैं, हमें फिर दे दो और शपथ खाओ कि भविष्य में फिर कभी हमारी स्वतंत्रता में हस्तक्षेप न होगा। मेरी ने शपथ खाकर 'ग्रेट प्रिविलेज' अर्थात् 'महान् अधिकार' के नाम का लोगों को एक अधिकार-पत्र दिया, जिसका नेदरलैण्ड के इतिहास में वही स्थान है जो इङ्गलैण्ड में मेगना चार्टा का। नेदरलैण्ड के भावी लोकसत्तात्मक राज्य की जड़ इसी अधिकार-पत्र से जमी। नेदरलैण्ड वालों को कोई नया अधिकार नहीं दिया गया था। केवल पुराने अधिकारों को इस अधिकार-पत्र में फिर से मान लिया गया था।

"प्रान्तिक पंचायतों की सम्मति लिए बिना मेरी विवाह नहीं करेगी। सब अधिकारी देशवासियों में से ही बनाये जायँगे। कोई अधिकारी दो पदों पर नियुक्त नहीं हो सकेगा। पदों की बिक्री नहीं होगी। बड़ी पंचायत और हालैण्ड की सबसे बड़ी अदालत पुनर्जीवित की जाती है। मामूली अदालतों की अपील इस बड़ी अदालत में सुनी जायगी। जो अभियोग प्रान्तिक और नागरिक अदालतों के हल्कों में होंगे वे पहले उन्हीं अदालतों में जायँगे। केवल उनकी अपील इस अदालत में होगी। प्रान्तिक और नागरिक झगड़े चुकाने के लिए लोग अपनी सीमा से बाहर नहीं बुलाये जायँगे। प्रान्तों की तरह नगर भी जब चाहें और जहाँ चाहें अपनी पंचायतों की बैठक कर सकेंगे। प्रान्तिक पंचायतों की राय के बिना कोई नवीन कर नहीं लगाये जायँगे। मेरी या उसके उत्तराधिकारी कोई लड़ाई बिना प्रान्तिक पंचायतों की राय के नहीं छेड़ेंगे। यदि पंचायत की सलाह लिये बिना कोई लड़ाई छेड़ी जायगी तो प्रान्त उसके लिए धन इत्यादि कुछ देने को बाध्य नहीं होंगे। सब राज-कार्यों में देशी-भाषा का उपयोग होगा। मेरी का कोई हुक्म, जो नागरिकों के अधिकारों के विरुद्ध होगा, नहीं माना जायगा। पंचायतों की राय के बिना न कोई सिक्का बनाया जायगा, न किसी सिक्के का मूल्य घटाया-बढ़ाया जायगा। जिन करों के सम्बन्ध में नगरों की राय नहीं ली जायगी वे कर देने को नगर बाध्य नहीं होंगे। राजा स्वयं पंचायतों के सामने आकर अपने व्यय का प्रश्न रक्खा करेगा।"

पन्द्रहवीं शताब्दी के लिए ऐसी शासन-योजना काफी उदार थी। इस योजना से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि स्वतंत्रता नेदरलैण्ड

के लोगों का जन्म-सिद्ध अधिकार मान लिया गया था। अभी तक तो प्रजा के कुछ अधिकार ही नहीं थे। जो कुछ था, राजा था। खैर, अब माना गया कि जनता के भी हाथ, पाँव, दिल और दिमाग़ होता है। हालैण्ड की तरह फ्लैण्डर्स इत्यादि अन्य प्रान्तों के साथ भी ऐसी ही योजनायें की गई। देश में चारों ओर आनन्द मनाया जाने लगा। इसी आनन्दोत्सव के बीच मेरी ने चुपचाप अपने कुछ विश्वासी अधिकारियों को, बिना पंचायत की अनुमति के, फ्रांस के राजा से सन्धि करने के लिए भेज दिया। फ्रांस के राजा ने सारा भेद खोल दिया। नवीन स्वतंत्रता पाये हुए मतवाले लोगों ने पकड़ कर तुरन्त उन देश-द्रोही अधिकारियों को सूली पर चढ़ा दिया। मेरी बाल बिखेरे दौड़ती हुई आकर अपने नौकरों के लिए प्राणदान की भिक्षा माँगने लगी। परन्तु किसी ने उसकी न सुनी।

१८ अगस्त सन् १४७७ ई० को मेरी का विवाह आस्ट्रिया और जर्मनी के राजा, हैप्सबर्ग के घराने के युवराज मैक्समिलियन से हो गया। मैक्समिलियन बड़ा ही चालाक था। उसने जनता के सर्वप्रिय दल से ऊपरी मेल कर लिया, उन्हें बड़े-बड़े सब्ज़ बाग़ दिखाये और अन्त में सरदारों से सर्व-साधारण को भिड़ाकर सरदारों की शक्ति नष्ट कर डाली। मेरी की घोड़े से गिर कर अकाल-मृत्यु हो गई। सब प्रान्तों ने मैक्समिलियन को मेरी के बच्चों का रक्षक मानकर बच्चों की नाबालग़ी में उसको शासन करने का अधिकार दे दिया। परन्तु फ्लैण्डर्स प्रान्त के लोग बड़े स्वतन्त्रता-प्रिय और अभिमानी थे। उन्होंने उसको राज्याधिकारी मानने से साफ़ इन्कार कर दिया। मेरी के चार वर्ष की अवस्था

के पुत्र फ़िलिप को वे उठा ले गये और उसी के नाम पर शासन करने लगे। कई वर्ष तक योंही काम चलता रहा। मैक्समिलियन कुछ न कर सका। अन्त में सन् १४८८ ई० में उसने रोमनों की एक सेना लेकर ब्रूजेज़ नगर पर—जहाँ उसका लड़का रहता था—चढ़ाई कर दी। लोगों ने उसकी सेना को हरा दिया और उसको पकड़ कर मय उसके कई सरदारों के बाज़ार के एक मकान में क़ैद कर दिया। दूसरे प्रान्तों को बड़ी चिन्ता हुई और उन्होंने मैक्समिलियन और फ्लैण्डर्स के लोगों में जैसे-तैसे सन्धि करा दी। इस सन्धि के अनुसार मैक्समिलियन अन्य सारे प्रान्तों का अधिकारी माना गया परन्तु फ्लैण्डर्स पर फ़िलिप के नाम से एक कौंसिल का ही राज्य रहा। इसी समय यह भी निश्चय हुआ कि हर वर्ष सारे प्रान्तों की एक काँग्रेस हुआ करेगी और उसमें देश की अवस्था पर विचार हुआ करेगा। इन सब बातों को पूरा करने की मैक्समिलियन ने शपथ तो खाली, परन्तु ज्योंही उसके पिता बादशाह फ्रेडरिक ने उसको सहायता के लिए सैक्सनी के ड्यूक के सेनापतित्व में सेना भेजी उसने तुरन्त अपनी प्रतिज्ञा भंग कर डाली। एक वर्ष तक युद्ध होता रहा। अन्त में फ्लैण्डर्स के लोगों की हार हुई। सारे देश पर मैक्समिलियन का निरंकुश राज्य फैल गया। जिन लोगों ने उसके विरुद्ध सिर उठाया था उनको कड़ी सज़ायें मिलीं। अपने और अपनी पत्नी के पिछले वादों का विचार न करके उसने लोगों की स्वतंत्रता कुचल डाली। सन् १४९३ ई० में अपने बाप की मृत्यु पर मैक्समिलियन पूरे साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। अब वह एक महान् साम्राज्य का अधिपति था। दूसरे साल मेरी के पुत्र फिलिप को—जो 'सुन्दर'

फ़िलिप कहलाता था—नेदरलैंगड की सारी पंचायतों ने भेंट और नजरें दीं। उत्तर में उसने केवल बरगण्डी के चार्ल्स और फ़िलिप के वादों को मानने की शपथ खाई। मेरी के 'ग्रेट प्रिविलेज' की याद तक भुला दी गई। हालैण्ड, ज़ेलैण्ड इत्यादि सारे प्रान्तों ने उसे इन्हीं शर्तों पर अधिकारी मान लिया। फ्रीसलैण्ड ने—जिसके अधिकार-पत्र में लिखा था कि जबतक वायु स्वच्छन्दता से बहेगी फ्रीसलैण्ड भी स्वच्छन्द रहेगा—लड़ाई से थके होने के कारण, निराश होकर, मैक्समिलियन के हुक्म से ड्यूक ऑव् सैक्सनी को अपना नवाब (Podesta) मान लिया। सारा देश परतन्त्रता की ज़ञ्जीर में फिर बँध गया।

सन् १४९६ ई० में फ़िलिप का विवाह स्पेन के राजा की कन्या से हुआ। फ़िलिप तो वाजिदअली शाह की तरह ऐशो-आराम से अपना जीवन बिताकर १५०६ ई० में चल बसा परन्तु उसके एक लड़के ने, जो द्वितीय शार्लमेन के नाम से मशहूर हुआ, स्पेन और नेदरलैण्ड को एक छत्र-छाया में कर दिया और इस प्रकार हेप्सबर्ग का घराना एक बड़े चक्रवर्ती राज्य का मालिक बन गया। नेदरलैण्ड अब कोई स्वतंत्र राष्ट्र न रहा। एक बड़े साम्राज्य की जागीर समझा जाने लगा। चार्ल्स पाँचवाँ, जिसको द्वितीय शार्लमेन कहते हैं, अपने घराने के लोगों को नेदरलैण्ड का नवाब बनाकर शासन करने को भेज दिया करता था। नेदरलैण्ड और स्पेन का यह राजनैतिक मिलन दोनों देशों का वास्तविक सम्मेलन न करा सका। एक देश दूसरे से हर बात में विरुद्ध था। स्पेन की आबादी बिखरी हुई थी; लोग ग़रीब और लड़ाकू थे। नेदरलैण्ड ख़ूब आबाद था; तिजारत से

फल-फूल रहा था। 'सुन्दर' फ़िलिप, फर्डिनेण्ड से जलता था। इन राजाओं के आपस के बैर के कारण दोनों देशों की प्रजा भी एक दूसरे से घृणा करती थी।

फ्लैण्डर्स का घेण्ट नामी नगर यूरोप का उस समय का सब से बड़ा और मालदार नगर समझा जाता था। यहाँ इतने कारीगर रहते थे कि जब वे अपने काम पर जाने को निकलते तो शहर के सारे रास्ते बन्द हो जाते थे। अस्सी हज़ार के क़रीब लड़ने वाले जवान शहर में रहते थे। घेण्ट का आधिपत्य आस-पास के और भी बहुत से नगरों पर था। नगर की प्रजा अपने-अपने धन्धे के अनुसार कई हिस्सों में विभाजित थी और उन सब की अलग अलग पंचायतें थीं। ये लोग बड़े स्वतंत्रता-प्रिय और स्वछन्द थे। मेरी के 'ग्रेट प्रिविलेज' के अनुसार अपने अधिकारों को अभी तक सुरक्षित समझते थे। नगर के बीच रोलैण्ड नाम का एक बड़ा घण्टा लटकता था। इसके बजते ही लोग हथियार ले-लेकर इकट्ठे हो जाते थे। बहुत दिनों से यह घण्टा वहाँ लटकता था। नगर-वासी घण्टे पर जान देते थे। चार्ल्स का चूड़ा-कर्म-संस्कार भी घेण्ट में ही हुआ था। एक बार इस नगर पर बारह लाख करोलो का कर लगाया गया। लोगों ने कर देने से इन्कार कर दिया। दबाव डाला गया तो बलवा कर डाला। रोलैण्ड घण्टे की टनन्-टनन् आवाज़ होते ही शस्त्र ले-लेकर लोग निकल पड़े। जिस मनुष्य को उन्होंने अपना सन्देशा देकर भेजा था कि हम कर नहीं देंगे उसने अधिकारियों से जाकर कह दिया कि नगरवासी कर देने को तैयार हैं। उसकी इस दग़ाबाज़ी के लिए उसे बड़ी कड़ी सज़ा दी गई। पकड़कर

पहले उसे खूब कष्ट देकर तंग किया गया और फिर सूली पर चढ़ा कर मार डाला गया। चार्ल्स एक भारी सेना लेकर बड़े ठाठ-बाट से फ्रेण्ट में घुसा। उसका खूब स्वागत हुआ। छः घण्टे तक उसका जुलूस शहर में फिराया गया। चार्ल्स का प्रत्येक सिपाही सरदारों की भाँति अस्त्र-शस्त्र और वस्त्रों से सुसज्जित था। उसकी शान-शौकत देख कर नगर-निवासी दंग रह गये। एक महीने तक तो चार्ल्स चुप रहा और कुछ न बोला। इसके बाद उसने अपना आक्रमण शुरू किया। पहले उन्नीस नेताओं को पकड़कर फाँसी दी गई। फिर सारे नगर को दण्ड का हुक्म सुना दिया गया। सारे नगर का माल-असबाब, रुपया-पैसा, घर-जायदाद सब जब्त कर लेने का हुक्म हुआ। रोलैण्ड घण्टा भी एक दम हटा देने का हुक्म दिया। पिछले कर में डेढ़ लाख बढ़ा दिया गया। इसके साथ साथ छः हज़ार वार्षिक का नया कर सदा के लिए लगा दिया गया। एक बड़ा दरबार हुआ और आज्ञा हुई कि नगर के प्रतिनिधि काले कपड़े पहन कर, नंगे सिर, मुँह में लगाम लगाये आवें और चार्ल्स से क्षमा माँगें। नगर में बड़ा असन्तोष था। कोने-कोने पर सिपाहियों का पहरा था। चार्ल्स अपने को इस प्रकार का राजनैतिक अभिनय करने में बड़ा दक्ष समझता था। बेचारे प्रजा के प्रतिनिधि घसीटकर लाये गये। आँखों में आँसू भरे, रुँधी आवाज़ से उन्होंने घुटने टेक कर क्षमा माँगी। चार्ल्स बहुत बनकर कुछ सोचने लगा। मानो वह विचार कर रहा था कि क्षमा प्रदान करूँ या न करूँ। अन्त में रानी ने अपना अभिनय किया। राजा से बहुत प्रार्थना करते हुए कहा—'प्रभु आपका जन्म इसी नगर में हुआ था। इसलिए

इनको क्षमा कर दो।" चार्ल्स ने उत्तर में कहा "अच्छा, मैं तुम्हारे प्रेम के कारण और इस कारण कि ये लोग हृदय से क्षमा माँगते हैं तथा न्याय की कठोर धार से दया ही मुझे भी अधिक पसन्द है, इन लोगों को क्षमा करता हूँ।" इस के बाद सारा देश दासता की कठोर जंजीरों में पूर्णतया जकड़ गया। देश की सबसे बड़ी अदालत भी अधिकारियों ने अपने हाथ में कर ली और भविष्य के लिए निष्पक्ष न्याय की जड़ ही कट गई।

नेदरलैंड की क्रान्ति को अच्छी तरह समझने के लिए नेदरलैंड की धार्मिक अवस्था को समझना बहुत जरूरी है। ईसाई मजहब तो बहुत दिन पहले ही देश में आ चुका था। परन्तु शुरू से ही लोग पोप का अधिकार बहुत नहीं मानते थे। बारहवीं सदी से ही ऐसे-ऐसे पन्थ उठ खड़े हुए थे, जो पोप का, उसके अधिकारों का और ईसाइयत का मजाक उड़ाया करते थे। बाद को वाल्डो और लूथर इत्यादि के सिद्धान्तों ने भी लोगों में प्रवेश किया। जिस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतवर्ष में पण्डों-पुजारियों के पञ्जे से लोगों को छुड़ाने का प्रयत्न किया, उसी प्रकार लूथर ने यूरोप को धर्मान्धता के पञ्जे से छुड़ाने का प्रयत्न किया था। जो लोग लूथर इत्यादि के सिद्धान्तों को नेदरलैंड में मानते थे उन्हें कड़ी सजायें दी जातीं थीं। गरम लोहे से जलाया जाता था; आग में डाला जाता था; खौलते हुए पानी में डुबाया जाता था। जिन्दा आदमियों की खाल खिचवाकर मक्खियाँ छोड़ दीं जातीं थी और उन बेचारों को तड़पा-तड़पा कर जान ली जाती थी। परन्तु इन सब जुल्मों से भी लोगों के मन में शान्ति स्थापित न की जा सकी। दिन-

दिन लोगों में प्रचलित धार्मिक व्यवस्था के प्रति अश्रद्धा बढ़ती ही गई।

पादरी बड़े ऐशो आराम से रहते थे। बड़ी बड़ी जागीरों के मालिक थे। राजा, उमराव, सरदार और किसान सभी से रुपया वसूल करते थे। ये लोग अपने से बड़ा अधिकारी ही किसी को नहीं मानते थे। अगर कोई पादरी कोई कसूर करता था तो वह अदालत के सामने आने को बाध्य नहीं था। उसका मुकदमा पादरियों की अदालत में होता था। मामूली आदमियों को साधारण गवाह होने पर ही सज़ा मिल जाती थी, परन्तु छोटे से छोटे पादरी को सज़ा देने के लिए कम से कम सात गवाहों की आवश्यकता होती थी। बड़े पादरियों की सजा करने के लिए तो सत्ताइस से लेकर बहत्तर गवाहों तक की आवश्यकता होती थी। यदि कोई ज़रा भी पादरियों के विरुद्ध आवाज़ उठाता था तो उसके विरुद्ध फतवा निकाल दिया जाता था और सब उसका बहिष्कार कर देते थे। बड़े-बड़े वीर जो आग, लोहा, किसी से नहीं डरते थे इन पादरियों के नाम से काँपते थे।

१३ वीं शताब्दी के लगभग पादरियों की शक्ति क्षीण होने लगी। पादरी व्यसनी तो थे ही उनके पास धन-दौलत भी बहुत रहती थी। इस दौलत के कारण लोगों में उनके प्रति घृणा और ईर्षा बढ़ने लगी। ये न तो देश की रक्षा के लिए ही कभी तलवार पकड़ते थे और न कभी कोई कर ही देते थे। इस कारण राजा-राव सभी इन से कुढ़ते थे। फ्लैण्डर्स, हालैण्ड इत्यादि के काउण्टों ने हुक्म निकाला कि पादरी लोग खरीद, वसीयत इत्यादि किसी प्रकार से भी जागीर के मालिक

नहीं बन सकेंगे। एक दो जगह बलवे भी हो गये। लोगों की घृणा दिन-प्रति-दिन बढ़ रही थी। बढ़े भी क्यों न? पादरियों ने लालच और बेईमानी की हद कर दी थी। बहुत से पादरी तो बिलकुल दुकानदार ही बन बैठे थे। उनके माल पर कर नहीं लगता था, इसलिए वे बर्तन इत्यादि धड़ल्ले के साथ और सब दुकानदारों से सस्ते बेचते थे। उनकी प्रतियोगिता में साधारण व्यापारियों की तिजारत ठण्डी पड़ जाती थी। इसलिए तिजारती भी इन से जलते थे। पादरियों को लोगों के अपराध क्षमा करने का भी अधिकार था। चाहे कैसा ही महान अपराध हो इनके क्षमा कर देने पर फिर अपराधी को सज़ा नहीं दी जा सकती थी। लालची पादरियों ने 'क्षमा-प्रदान' पत्रों को बेचना शुरू कर दिया। 'ज़हर देके मारने' का क्षमा-प्रदान-पत्र ११ डुकैट में! 'बिना ज़हर की हत्या' की क्षमा और भी सस्ती थी। पितृ-हत्या दो डुकैट में ही माफ़ हो जाती थी। कोई ऐसा पाप न था जिस के लिए क्षमा मोल न मिल सकती हो। यहाँ तक कि पाप करने के पहले ही लोग क्षमा-पत्र खरीद सकते थे। कोई पापी यदि गिरजे में जाकर छिप रहता तो फिर उसे सजा नहीं मिल सकती थी। इन सब अनर्थों और धर्म की मिट्टी-पलीद देखकर स्वामी दयानन्द की तरह यदि यूरोप में एक लूथर पैदा हो गया तो आश्चर्य क्या है? अत्याचार ही अत्याचार नष्ट करने वालों को पैदा किया करता है। छापेखाने का आविष्कार भी हो चुका था और बाइबिल छप-छप कर बिकने लगी थी। पहले हस्त-लिखित बाइबिल की एक प्रति लगभग ५०० क्राउन में मिलती थी। अब पांच क्राउन में

ही मिलने लगी। ग़रीब आदमी भी बाइबिल ख़रीद कर पढ़ने लगे थे और उनकी आँखें खुलने लगी थीं। धर्म के ठेकेदारों से ठेकेदारी छिनने लगी थी। सन् १४५९ ई० में बरगण्डी के ड्यूक फिलिप ने एलान कर दिया कि पादरी लोग गिर्जों में पापियों को नहीं छिपा सकते। चार्ल्स बाल्ड ने भी पादरियों पर कड़ा कर लगाया था। चार्ल्स लड़ाई के अतिरिक्त दुनिया में और कोई चीज़ समझता ही नहीं था। पादरी कर देने में चीं-चपड़ करने लगे तो उसने तलवार के ज़ोर से कर वसूल करना शुरू कर दिया। इस प्रकार पादरियों को चारों ओर से धक्के लगने लगे थे। सच्चे रोमन कैथोलिक लोग पादरियों की दशा पर आँसू बहाते थे। धार्मिक कर वसूल करने के लिए पादरियों ने सारा नेदरलैण्ड ज़िलों में बाँट रक्खा था। इन ज़िलों से धर्म के नाम पर वसूल किया हुआ कर पादरी लोग खुल्लम-खुल्ला जुआघरों, शराबखानों और चकलों में ख़र्च किया करते थे। क्षमा का ढोंग सीमा के बाहर पहुँच चुका था। 'परमात्मा की माता से ज़िना करने की भी क्षमा मिल जाती थी'*। यह दशा देख कर सच्चे पुरुषों का हृदय फटता था।

धर्म की इस व्यवस्था के विरोध में जो पन्थ या पुरुष उठता था लोग उसी के पीछे चल पड़ते थे। लूथर, विक्लिफ इत्यादि के अतिरिक्त और भी बहुत से लोगों के अनुयायी खड़े हो गये थे। नये-नये पन्थ चल पड़े थे। एक पन्थ तो वाम-

---

*absolution was offered even for the rape of Gods' mother, if that were possible.

मार्गियों से भी भ्रष्ट खड़ा हो गया था। बहुत से लोग इस पन्थ में सम्मिलित हो गये और पन्थ चलाने वाले गुरु की परमात्मा की तरह पूजा करने लगे। गुरु ने एक मेला लगाकर ईसामसीह की माता मेरी की मूर्ति से विवाह किया और अपने दोनो ओर एक-एक बक्स रख दिया कि लोग परमात्मा की माता के दहेज के लिए रुपया दें। लोगों ने बड़े उत्साह से दौड़-दौड़ कर बक्सों में रुपया भर दिया। अन्ध-विश्वास और पागलपन की हद हो गई थी।

लूथर के पवित्र झण्डे के नीचे लोग एकत्र हो रहे थे। उसने निर्भीक स्वर से धार्मिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज़ उठाई। नेदरलैण्ड स्पेन के राजा चार्ल्स की पैतृक जागीर था। वहाँ वह जो चाहे कर सकता था परन्तु जर्मनी में मनमानी करने की उसकी हिम्मत नहीं हो सकती थी। १५२१ ई० में पोप की सम्मति से चार्ल्स ने शाही एलान निकाला कि "लूथर नामी मनुष्य आदमी नहीं बल्कि शैतान है। साधुओं के कपड़े उसने लोगों को बहकाकर नरक में लेजाने के लिए पहन रक्खे हैं। इसलिए एलान किया जाता है कि वह और उसके चेले जहाँ मिलें फांसी पर लटका दिये जाँय और उनका सब माल-असबाब जब्त कर लिया जाय।" इस घोषणा के बाद नेदरलैण्ड में एक भयंकर हत्याकाण्ड प्रारम्भ हुआ जिसके कारण चार्ल्स का शासन यूरोप के इतिहास में कुख्यात है। पहली जुलाई सन् १५२३ ई० को पहले-पहल लूथर के दो चेले ब्रसेल्स में जलाये गये। रोमन कैथलिक प्रथा के अनुसार लोग केवल गिर्जाघरों में प्रार्थना एवं धर्म-शास्त्रों का अध्ययन और चर्चा कर

सकते थे। परन्तु लूथर के मत वाले सुधारक हर स्थान पर प्रार्थना कर लिया करते थे। वे इस बात में विश्वास नहीं करते थे कि गिर्जों में ही प्रार्थना की जानी चाहिए। इसलिए एक नया शाही एलान किया गया कि "गिर्जों के अतिरिक्त और किसी स्थान पर लोग प्रार्थना करने के लिए एकत्र न हों, न घर में धर्म-शास्त्रों का अध्ययन और धर्म-विषयक चर्चा करें। जो इस आज्ञा के विरुद्ध आचरण करेगा उसे प्राण-दण्ड मिलेगा।" एलान कोरी धमकी देने के लिए ही नहीं किये गये थे। दिन-रात भट्टियाँ दह-कती थीं और लोग पकड़-पकड़ कर उनमें झोंके जाते थे।

लूथर इत्यादि के मत-वालों तथा अण्ड-बण्ड पन्थ वालों को ही सज़ायें नहीं दी जाती थीं, बहुत से सीधे और सच्चे निष्पक्ष धार्मिक लोगों को भी पकड़-पकड़ कर फाँसी दे दी जाती थी। चार्ल्स की बहिन हँगरी की रानी मेरी ने—जो नेदरलैण्ड की नाम मात्र की शासक थी—अपने भाई चार्ल्स को सन् १५३३ ई० में एक पत्र लिखा था कि "धर्म के विरुद्ध जाने वाले लोगों को खूब कड़ी सज़ायें देनी चाहिएँ। किसी को नहीं छोड़ना चाहिए। केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि नेदरलैण्ड की आबादी नष्ट न हो जाय।" पीछे जो हत्याकाण्ड शुरू हुआ उसे देखकर तो यही भय लगता था कि कहीं मेरी की नियत की हुई सीमा को भी अत्याचार न लाँघ जाय और समूचा देश ही वीरान न हो जाय। इस 'धर्मपरायण' विधवा मेरी ने बड़ी धार्मिक प्रसन्नता के साथ हुक्म निकाला था कि धर्म के विरुद्ध आचरण करने वालों को मौत की सज़ा दी जायगी। जो आदमी पश्चात्ताप करेंगे उन्हें केवल तलवार से मारा जायगा। जो औरतें पश्चात्ताप

करेंगी उन्हें केवल जिन्दा जमीन में गाड़ दिया जायगा और जो लोग पश्चात्ताप बिलकुल न करेंगे उन्हें आग में जला दिया जायगा। जिस समय ये अत्याचार हो रहे थे उसी समय चार्ल्स ने अपने पुत्र फ़िलिप को युवराज और नेदरलैंड के भावी राजा की हैसियत से प्रजा से स्वामि-भक्ति की शपथ लेने के लिए नेदरलैंड बुलाया।

चार्ल्स का राज्य-त्याग

२५ अक्तूबर सन् १५५५ ई० को ब्रसेल्स के महल में नेदरलैण्ड की पंचायतों को एकत्र होने का बुलावा दिया गया था। चार्ल्स पंचम ने यह तिथि राज्य-भार फिलिप को सौंप देने के लिए निश्चित की थी। चार्ल्स राजनैतिक स्वाँग रचने में बड़ा सिद्धहस्त था। वह अच्छी तरह समझता था कि इन राजनैतिक दिखावों का जनता पर अच्छा असर पड़ता है। इन स्वाँगों को किस समय और किस प्रकार रचना चाहिए, यह भी वह खूब जानता था। हम देख चुके हैं कि जब घेण्ट में बलवा हुआ था तो वह किस प्रकार वहाँ पहुँचा था और फिर भुलावा देकर जनता को महीने भर बाद कैसी कड़ी सजायें दी थीं। हरे-भरे घेण्ट नगर को—जो कि एक छोटे प्रजातन्त्र की तरह स्वतन्त्र था—बिलकुल तबाह कर डाला था। उसकी इच्छा थी कि उसके राजनैतिक जीवन का अन्तिम दृश्य भी उसकी कला का अनूठा नमूना हो। खूब सोच विचार कर उसने इस दृश्य का कार्य-क्रम तैयार कर लिया था। २५ अक्तूबर को चार्ल्स अपने सिर का मुकुट उतारकर फ़िलिप के सिर पर रक्खेगा, यह कोई साधारण बात न थी। सारे यूरोप की आँखें एक टक ब्रसेल्स के महल की ओर लग रही थीं।

ब्रबेण्ट प्रान्त की राजधानी ब्रसेल्स बड़ा पुराना, सुन्दर, हरा-

भरा और आबाद नगर था। लगभग एक लाख की आबादी थी। शहर की चारों ओर ६ मील लम्बी चहार दीवारी थी, जो दो सौ बरस पुरानी हो चुकी थी। बीच से सीन नदी बहती थी। चारों ओर बाग़, बाटिकायें और खेत इत्यादि फल-फूल रहे थे। बीच नगर में टाउन हाल की मीनार ३६० फीट ऊँची नेदरलैण्ड की कारीगरी की ध्वजा-स्वरूप खड़ी थी इस में पत्थर की नक़्क़ाशी का बड़ा सुन्दर काम था। मीनार की बांई ओर एक बहुत सुन्दर बग़ीचा था। दाहिनी ओर ओरेञ्ज, एग्मोण्ट, अरेम्बर्ग, क्यूलेम्बर्ग इत्यादि के सरदारों के राज-भवन बने हुए थे। शहर के बाहर एक मील की दूरी पर एक सघन और सुन्दर बन था, जिसमें ईसाई भिक्षुओं की कन्दरायें थीं और जहाँ नगर के लोग आखेट के लिए अथवा गरमी में सैर करने जाया करते थे।

इस सुन्दर और धनवान नगर के महल में आज एकत्र होने का पंचायतों को न्योता मिला था। महल बहुत सुन्दर न था, न किसी विशेष कारीगरी से सुशोभित था। मुख्य द्वार से घुसते ही एक बड़ा हाल मिलता था जिससे सटा हुआ एक छोटासा देवालय था। इस हाल में 'गोल्डेन फ्लीस' संस्था की बैठकें हुआ करती थीं। इसी हाल में आज की महती सभा का प्रबन्ध किया गया था। पश्चिम की तरफ एक छः-सात सीढ़ियों का मंच बनाया गया था और उसके नीचे बहुत सी बेंचें नेदरलैण्ड के सत्तर प्रान्तों के प्रतिनिधियों के बैठने के लिए रक्खी गई थीं। मञ्च पर दाहिने-बायें कई क़तारें कुर्सियों की थीं, जिनपर जरी पड़ी थी। यह 'गोल्डेन फ्लीस' के सभासदों और विशेष कोटि

के मेहमानों के बैठने के लिए थीं। इनके पीछे तीनों बड़ी कौंसिलों के सदस्यों के बैठने की जगह थी। मंच के मध्य में एक बड़ा सुन्दर छत्र था जिसपर बरगण्डी के हथियार सजाये गये थे। इसके नीचे तीन सोने की कुर्सियाँ रक्खी गई थीं।

नियत समय पर सब प्रतिनिधि अपनी-अपनी बेंचों पर आकर बैठ गये परन्तु जेल्डरलैण्ड और ओवरीसेल दो प्रान्तों के प्रतिनिधि नहीं आये। चारों ओर हाल ठसाठस भर गया था परन्तु मंच की सब कुर्सियां अभी तक खाली थीं। लोग उत्सुकता से बाट देख रहे थे। तीन बजते ही देवालय के द्वार से चार्ल्स, विलियम आव् आरेञ्ज का कन्धा पकड़े लकड़ी टेकता हुआ घुसा। उसके पीछे फिलिप और नेदरलैण्ड की मालिकिन हँगरी की विधवा रानी थी। इन दोनों के पीछे, आर्क डयूक मैक्समिलियन, डयूक ऑक्सेवाय तथा गोल्डन फ्लीस के और बहुत से सरदार थे। बिशप ऑव् ऐरस—जो पीछे से कार्डिनल ग्रेनविले के नाम से नेदरलैण्ड के इतिहास में अपने अत्याचार के लिए प्रसिद्ध हुआ—इसी झुण्ड में था। फ्रीजियन राज्य घराने का वीर लेमोरेल एगमोण्ट जिसने आगे चल कर रणक्षेत्रों में अपना नरसिंहा बजाकर यूरोप में नाम पाया और अन्त में देश के लिए फांसी पर चढ़ा तथा ड्यूक ऑव् हार्न, मार्क्वीज बरघन और लार्ड मौनटिनी, जिनका अन्त भी एगमाण्ट की तरह ही हुआ, उपस्थित थे। ड्यूक ऑव एयरशाट, ब्रैडरोड डाक्टर विग्लियस, रुइगोमाज़ इत्यादि और बहुत से लोग भी जो आगे चल कर देश का भाग्य बनाने या बिगाड़ने में भाग लेगें, इस समय मौजूद थे। जिस के कन्धे का सहारा लेकर

आज चार्ल्स सभा में आया था उसी के सहारे आगे चलकर देश स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा। विलियम ऑव् आरेन्ज का नाम इतिहास में अमर होगा। आज की सभा अनोखी थी। लोगों की आंखें चौंधिया रही थीं। परन्तु जो-जो मुख्य लोग इस दरबार में उपस्थित थे उन सब को आज की चकाचौंध एक बड़े अन्धकार की तरफ बुला रही थी। सब के सब आगे चलकर जान से हाथ धोयेंगे। कुछ विष देकर मारे जायेंगे; कुछ फांसी पर लटकेंगे, कुछ क़त्ल करवा दिये जायँगे। परन्तु आज की हँसी-खुशी में कौन इन यातनाओं का स्वप्न देख सकता था ?

चार्ल्स के घुसते ही सब लोग उठ कर खड़े हो गये। त्रिकोणाकार छत्र के नीचे जो तीन कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं, उन पर चार्ल्स आस्ट्रिया की रानी और फिलिप आकर बैठे। अन्य लोग भी अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये। प्रिवी कौंसिल के एक सदस्य ने उठ कर एक बड़ी लम्बी चौड़ी वक्तृता झाड़ते हुए कहा—"बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे महाराजा जो इसी देश में पैदा होने के कारण हम सबको विशेष रूप से प्यार करते थे, आज अपनी अस्वस्थता और गठिया इत्यादि के कठिन रोगों के कारण राज्य-त्याग कर स्पेन की अच्छी जलवायु में रहने जारहे हैं।" फिर उसने चार्ल्स का वसीयतनामा पढ़ा जिसमें आज से फिलिप को नेदरलैण्ड का राजा घोषित किया गया था। लोग चार्ल्स की प्रशंसा करते हुए एक-दूसरे से कानाफूसी करने लगे कि ऐसे समय में जब कि फ्रान्स का राजा देश पर दांत लगाये बैठा है, महाराज को देश नहीं छोड़ना चाहिए।

चार्ल्स उठा। विलियम ऑव आरेञ्ज का कन्धा पकड़कर और लकड़ी का सहारा लेकर खड़ा हुआ। विलियम आरेञ्ज की अवस्था इस समय केवल बाईस वर्ष थी। परन्तु चार्ल्स ने उसे अपनी सेना का मुख्य सेनापति बनाकर फ्रांन्स की सीमा पर लड़ने के लिए नियुक्त कर रखा था। इस विशेष अवसर के लिए उसे वहां से बुला लिया गया था। चार्ल्स ने अपनी लिखी हुई वक्तृता पढ़नी शुरू की। १७ वर्ष की अवस्था से लेकर आज तक के अपने सारे कारनामों का जिक्र करते हुए उसने कहा—"मैंने नौ दफा जर्मनी, छः दफा स्पेन, सात बार इटली, चार बार फ्रान्स, दस बार नेदरलैण्ड, दो दफा इँगलेण्ड और कितनी ही बार अफ्रिका पर चढ़ाई की। मैंने ग्यारह दफा समुद्र यात्रा की। मैंने जन्म भर जो कुछ किया केवल देश और धर्म की रक्षा के लिए ही किया। जब तक परमात्मा ने मेरे शरीर में शक्ति रक्खी मैंने देश और धर्म की सेवा की। अब मेरी शक्ति क्षीण हो चली है, अतएव देश और प्रजा के हित के लिए मैं राज्य का त्याग करता हूँ। बूढ़े, कमजोर चार्ल्स के के बदले नौजवान शक्तिशाली फिलिप को गद्दी पर बैठाता हूँ।" फिर उसने फिलिप से कहा—"मरते समय पिता का इतना बड़ा राज्य पुत्र के लिए छोड़ कर मरना पुत्र के लिए बड़ी कृतज्ञता की बात होनी चाहिए। मैं तो जीते जी ही तुम्हें राज्य सौंप कर कब्र में जारहा हूँ। मेरा यह ऋण तुम केवल प्रजा की सेवा करके चुका सकते हो। यदि तुम योग्य साबित हुए और परमात्मा से डरते हुए न्याय और धर्म की रक्षा करते रहे तो आगामी सन्तान मेरे त्याग की प्रशंसा करेगी।" अन्त में चार्ल्स

ने पंचायतों से प्रार्थना करते हुए कहा—"मैं तुमसे और तुम्हारे द्वारा देश से प्रार्थना करता हूँ कि फ़िलिप का आदेश मानना। अपने लिए केवल मैं इतना माँगता हूँ कि यदि मैंने अपने शासन कार्य में जान वा अनजान कोई अपराध कर डाला हो तो आप लोग मुझे क्षमा करें और भूल जाँय। अब अपना शेष जीवन ईश्वर भजन में बिताऊँगा। आपने जो दया और प्रेम का व्यवहार मेरे साथ किया है उसे मैं कभी न भूलूँगा। परमात्मा से आप के हित के लिए सदा प्रार्थना करता रहूँगा।"

इन शब्दों ने सब के हृदय पिघला दिये। सब की आँखों में आंसू भर आये और चारों ओर से सिसकियों की आवाज़ आने लगी। चार्ल्स स्वयं कुर्सी पर बैठ कर बच्चे की तरह रोने लगा। फिलिप उठ कर चार्ल्स के पैरों में गिर पड़ा। चार्ल्स ने उठा कर उसे छाती से लगा लिया और आशीर्वाद देकर सरदारों से कहने लगा कि बेचारे फिलिप के कन्धों पर एका-एक बड़ा भारी बोझा आ पड़ा है। परमात्मा इसकी सहायता करें। फिलिप ने अपने पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए लोगों से कहा—"मुझे बड़ा खेद है कि मैं आपकी भाषा में आपसे नहीं बोल सकता। मेरी तरफ़ से बिशप ऑव् एरस बोलेंगे। कृपया आप उन्हें ध्यान से सुनिये।" बिशप ने उठकर एक धारा प्रवाह मनोहारिणी वक्तृता दी जिसमें उसने फिलिप की ओर से चार्ल्स के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और विश्वास दिलाया कि आपकी आज्ञा के अनुसार ही फिलिप अपने कर्त्तव्य का सदा पालन करेंगे। देश का शासन चलाने में भी

आपका ही अनुकरण करेंगे। लोगों की ओर से जैकब नाम के एक कौंसिल के सदस्य ने उत्तर में बड़ी सुन्दर भाषा में चार्ल्स का राज्य त्याग मंजूर कर लिया। फिर आस्ट्रिया की रानी ने उठकर अपने पद त्याग की घोषणा की और लोगों से अपने पिछले कृत्यों के लिए क्षमा चाही। जैकब ने पुनः उठकर लोगों की तरफ से महारानी के भूतपूर्व कृत्यों पर सन्तोष प्रकट किया इसके बाद सभा विसर्जित हुई। चार्ल्स जिस क्रम से सरदारों के साथ हाल में आया था उसी प्रकार उठ कर चला गया। चार्ल्स अपने अन्तिम अभिनय में पूर्णतः सफल हुआ। लोगों को उसने बिलकुल विश्वास दिला दिया कि जीवन पर्यन्त उसे प्रजा के हित से अधिक और कोई दूसरी वस्तु प्रिय नहीं रही थी। लोगों को आंखों से प्रेम और कृतज्ञता के आंसू बरस उठे। भविष्य की ओर सब आशा और श्रद्धा से देखने लगे।

बेचारी भोली-भाली प्रजा को कूट राजनैतिक कैसे भीषण धोखे देते हैं! कैसे खिला-खिला कर मारते हैं। चार्ल्स ने अपने जीवन में कौनसा ऐसा देश-हित का काम किया था, जिसके लिए इतने प्रेम के आंसू बहाये गये? सदा उसने लोगों पर अत्याचार ही किये थे। उसकी सारी समुद्र यात्रायें और दूसरे देशों पर हमले नेदरलैण्ड के किस काम आये? उसने कभी इस देश के लोगों के हित का ध्यान नहीं रखा। लड़ाईयों के व्यय के लिए नेदरलैण्ड से ही सदा रूपया लिया जाता था। परन्तु इन लड़ाईयों का नेदरलैण्ड से कोई सम्बन्ध नहीं था। जिस प्रकार १९१४ ई० के महायुद्ध में इंग्लैण्ड और फ्रांन्स को बचाने के लिए बेचारे भारतवर्ष की जेब काटी

गई थी उसी प्रकार चार्ल्स की साम्राज्य फैलाने की अभिलाषाओं को पूरा करने के लिए नेदरलैण्ड की थैली खाली की जाती थी। चार्ल्स को अपने सारे साम्राज्य से पांच करोड़ की आमदनी थी। इसमें से दो करोड़ नेदरलेण्ड से आता था। इस अभागे देश के कारीगर दिन-रात मेहनत करके जो रुपया इकट्ठा करते थे, वह उनसे कर द्वारा छीन कर व्यर्थ की लड़ाइयों में व्यय किया जाता था। चार्ल्स ने ये सारी लड़ाईयाँ केवल अपने साम्राज्य बढ़ाने के लिए लड़ी थी। पीछे से वह 'धर्म-सुधार' आन्दोलनों को दबाने में नेदरलैण्ड का धन खर्च करता रहा। नेदरलैण्ड के लोगों से रुपया तो लिया जाता था परन्तु उन्हें यह पूछने का अधिकार नहीं था कि रूपया व्यय किस प्रकार किया जाता है। अगर कभी पंचायतें कुछ पूछने की हिम्मत करतीं थी तो राजा की तरफ से उन्हें फटकार मिलती थी। यही नहीं कि चार्ल्स केवल इन लोगों की थैली ही खाली करता हो और उनकी तिजारत को ही हानी पहुँचाता हो। उसकी यह भी इच्छा थी कि नेदरलैण्ड के पृथक्-पृथक् प्रान्त अपनी पंचायतों द्वारा जो स्वतन्त्र शासन चलाते थे, उसे नष्ट करके सब प्रान्तों को मिलाकर एक ऐसा राज्य बना लिया जाय जिसमें राजा की इच्छा और आज्ञा ही सब कुछ हो। परन्तु ऐसा करना आसान न था। नेदरलैण्ड के लोगों के पूर्वजों ने अपना रक्त बहाकर स्वतन्त्रता प्राप्त की थी। आज भी लोग स्वतन्त्रता के लिए खून बहाने को तैयार थे। चार्ल्स मरते दम तक अपनी यह इच्छा पूरी न कर सका। परन्तु जहाँ तक बना उसने लोगों की स्वतन्त्र संस्थाओं को नष्ट करने

का प्रयत्न किया। टूरनी नगर की स्वतन्त्रता छीन कर उसने उस नगर को इटली और स्पेन के नगरों की भांति दास बना दिया। हम देख ही चुके है कि भेरएट को, उसने केवल इस लिए कि इन नगर ने अपनी पुरानी प्रथा और अधिकारों के अनुसार कर देने से इन्कार कर दिया था, कितनी कड़ी सजा दी थी। चार्ल्स केवल निरंकुश शासक ही नहीं था, बड़ा अत्याचारी भी था।

फिर ऐसे अत्याचारी राजा के राज्य त्याग करने पर नेदरलैण्ड के लोगों ने इतने आँसू क्यों बहाये ?

चार्ल्स में कुछ गुण भी थे। चार्ल्स का युग वीरता और बहादुरी का युग था। जो राजा रणक्षेत्र में दिल खोलकर लड़ सकता था अथवा अखाड़ों में योद्धाओं को पछाड़ सकता था उसपर लोग मुग्ध हो जाते थे। चार्ल्स बड़ा वीर था। निर्भय होकर लड़ाई में घुस पड़ता था। सबसे पहले कमर कसकर तैयार हो जाता था, और सबसे पीछे हथियार खोलता था। जहाँ सबसे घमासान युद्ध होता था वहाँ चार्ल्स सबसे पहले पहुँचता था। अखाड़ों में भी उसने सैकड़ों वीरों को पछाड़ा था। लोग उसके इन गुणों पर मुग्ध थे, इसीलिए अत्याचारी होने पर भी उनके हृदय में उसके लिए प्रेम था। परन्तु यदि चार्ल्स नेदरलैण्ड को आर्थिक और राजनैतिक कष्ट ही दिये होता तो भी प्रजा का उसके प्रति प्रेम दिखाना एक सीमा तक ठीक होता। इतिहास तो चार्ल्स को केवल एक अत्याचारी और दुराचारी राजा ही की तरह याद रक्खेगा। बड़े आश्चर्य को बात है कि ऐसे दुष्टात्मा के राज-त्याग करने पर लोगों ने इतने आँसू बहाये ?

वेनिस का राजदूत नेविजेरो चार्ल्स के राज-त्याग के दस वर्ष पहले की अवस्था वर्णन करते हुए लिखता है कि अकेले हालैण्ड प्रान्त में तीस हज़ार प्राणियों को सूली पर चढ़ाकर, गला घोंट-कर अथवा ज़िन्दा जलाकर इसलिए मार डाला गया कि वे अपने घर पर धर्म-ग्रन्थ पढ़ते थे, मूर्ति-पूजा से घबराते थे अथवा इस बात में विश्वास नहीं करते थे कि रोटी ❀ के अन्दर ईसा का रक्त और माँस वास्तव में आ जाता है। भिन्न-भिन्न इतिहास-लेखकों के मतानुसार अधिक से अधिक डेढ़ लाख और कम से कम पचास हज़ार लोगों को नेदरलैण्ड में केवल भिन्न धार्मिक विचार रखने के कारण प्राण-दण्ड मिला था। यह वर्णन राज्य-त्याग से दस वर्ष और धर्म-सम्बन्धी चार्ल्स की घोषणा से—जिस-के बाद ज़ोर शोर से धार्मिक अत्याचार शुरू हुआ था—पाँच वर्ष पहले का है। घोषणा के बाद के शेष वर्षों में तो न जाने उसने और कितने प्राणियों का वध करा डाला होगा। जो राजा अपने हाथ ज़िन्दगी भर अपनी प्रजा के रक्त से इस प्रकार रँगता रहा हो उसका इतना मुँह कि प्रजा की प्रतिनिधि पंचायतों को बुला-कर अपने राज्य-त्याग के समय कहे कि जीवन-पर्यन्त मैं केवल प्रजा के हित के लिए प्रयत्न करता रहा! और लोग उसके पद-त्याग पर आँसू बहायें? जिन कब्रों में उसने हज़ारों मनुष्यों को ज़िन्दा गड़वा दिया था उनमें से यदि एक मुर्दा उठ कर आज

❀ रोमन कैथलिक ईसाइयों के यहाँ एक त्योहार पर एक दावत होती थी। उनका विश्वास है कि इस दावत पर जो रोटी खाई जाती है वह ईसामसीह का माँस और शराब ईसा का खून बन जाता है।

इस सभा के सम्मुख खड़ा हो जाता और अपनी कहानी सुनाने लगता तो प्रजा के हित को स्मरण करके आँसू बहाने वाले चार्ल्स को मुँहतोड़ उत्तर मिल जाता। शायद यह मुर्दा इस मनुष्य से, जो आज प्रजा के प्रतिनिधियों से अनजाने अन्याय के लिए क्षमा माँग रहा था, कहता कि इस संसार से परे भी एक संसार है जहाँ अपने भाइयों को जलाना, मारना और सूली पर चढ़ाना पाप समझा जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि चार्ल्स धर्मान्ध था; धर्मान्धता के कारण ही उसने ये सब अत्याचार किये। परन्तु यह बात बिल्कुल ग़लत है। चार्ल्स धर्मान्ध नहीं था। उसने स्वयं रोम पर हमला करके उस नगर को बुरी तरह लूटा था और परमात्मा के प्रतिनिधि पोप को क़ैद कर लिया था। चार्ल्स तो केवल एक ऐसे महान् साम्राज्य का भूखा था; जिसमें वह निरंकुश, निर्द्वन्द्व राज्य कर सके। उसकी इस महत्वाकांक्षा के रास्ते में जो भी अड़चन बनकर आता था—चाहे वह पोप और पादरी हो अथवा पोप के विरुद्ध पन्थ वाला सुधारक—उसीको वह मिट्टी में मिला देने का प्रयत्न करता था। चार्ल्स धर्म सुधारकों को केवल इस कारण दण्ड नहीं देता था कि वे धर्म में सुधार चाहते थे। वह बड़ा दूरदर्शी था। वह जानता था कि ये आज धर्म में सुधार चाहनेवाले कलशासन में सुधार चाहेंगे। बस इसी कारण वह सिर उठाने वाले लोगों को दबाना चाहता था। यदि वह धर्म में पक्का विश्वास करने वाला होता तो कदापि जर्मनी से इस शर्त पर सन्धि न करता कि जर्मनी के लोग धार्मिक मामलों में स्वतन्त्र रहेंगे। वैसी हालत में तो जब तक उसके पास एक सिपाही भी रहता वह धर्म के लिए अवश्य

लड़ता लेकिन उसने जर्मनी को धार्मिक स्वतंत्रता दे दी और इधर नेदरलैण्ड में धर्म के सम्बन्ध में स्वतंत्र विचार रखनेवालों को पकड़-पकड़ कर ज़िन्दा जलवाता रहा। चार्ल्स को जर्मनी के सिपाहियों की आवश्यकता थी, इसलिए उसने जर्मनी से यह सन्धि चुपचाप कर ली। नेदरलैण्ड में जिन विचारों के लिए साधारण लोग प्राण-दण्ड पाते थे वे ही विचार चार्ल्स के जर्मन सिपाही चार्ल्स के झंडे के नीचे ही नेदरलैण्ड में फैलाते फिरते थे। यदि चार्ल्स धर्म में विश्वास रखनेवाला होता तो कदापि वह यह बात सहन न करता, अपनी जान भले ही गँवा देता। परन्तु वह तो जिस तरह भी हो केवल नेदरलैण्ड को अपने पञ्जे में रखना चाहता था।

वीर होने के साथ-साथ चार्ल्स तीन-चार भाषायें बहुत सुंदरता से बोल सकता था। मनुष्यों की भी उसे खूब परख थी। बड़ा धार्मिक आडम्बर दिखाया करता था। हर रविवार को धार्मिक उपदेश सुनता था। प्रायः आधी-आधी रात तक अपने खीमे में घुटनों पर बैठकर प्रार्थना किया करता था। वह जानता था कि साधारण लोगों पर इन बातों का अच्छा असर होता है। लोग उसके इन ऊपरी दिखावों के कारण उसका असली रूप पहचानने में धोखा खा जाते थे। यही कारण था कि उसके इतने अत्याचारी होने पर भी लोग उससे घृणा नहीं करते थे। चार्ल्स यह भी जानता था कि कभी-कभी जनता को छोटे-छोटे कष्ट बड़े-बड़े कष्टों से अधिक दुःखदायी होते हैं और छोटे-छोटे कष्टों से घबराकर जनता विद्रोह कर बैठती है। जिस तरह ग़ज़नवी, तैमूर अथवा नादिरशाह भारतवर्ष को लूट-मारकर चलते बने

उस प्रकार चार्ल्स लुटेरों की भाँति देश को केवल एक दो दफ़ा लूटकर चला जाना नहीं चाहता था। यदि वह ऐसा करता तो देश का अहोभाग्य होता परन्तु वह तो—जिस प्रकार अंग्रेज़ों ने भारतवर्ष को सदा के लिए चूसने की योजना की है—नेदरलैण्ड को अपने हाथों में थैली की तरह पकड़े रहना चाहता था कि जिससे वह जब और जहाँ चाहे रुपया व्यय कर सके। वह जानता था कि यदि स्पेन वालों को छोटी-छोटी नौकरियों पर भी नेदरलैण्ड में नियुक्त कर दिया जायगा तो न केवल लोगों में असन्तोष की आग भड़केगी और बखेड़े खड़े होंगे, बल्कि देश-वाशियों को ही छोटी-छोटी नौकरियों पर रख कर उनके द्वारा नेदरलैण्ड अधिक अच्छी तरह वश में रक्खा और चूसा जा सकेगा। गुलाम देशों को हमेशा ही उन्हीं देशों के आदमियों के द्वारा गुलाम रक्खा जाता है। छोटी-छोटी नौकरियों पर उसने नेदरलैण्ड के लोगों को ही रक्खा। फिलिप को भी बाद में उसने यही सलाह दी थी। चार्ल्स का साम्राज्य इतना बड़ा था कि छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना उसके लिए बिलकुल असम्भव था। अधिकतर साम्राज्य का कार्य्य मन्त्रियों और अधिकारियों की ज़िम्मेदारी पर ही चलता था। इसीलिए रिश्वतें भी खूब चलतीं थीं। मन्त्री और अधिकारी मालामाल हो जाते थे। चार्ल्स, यह सब देखकर भी आँखें बचाता था। वह जानता था कि रिश्वतें रोकना उसकी शक्ति के बाहर है। अगर वह छोटी-छोटी बातों में अधिकारियों के ऊपर निगाह रखता तो साम्राज्य का काम एक दिन भी नहीं चल सकता था। चार्ल्स का ध्येय जनता को सुखी रखना नहीं था। उसका ध्येय तो चक्रवर्ती

साम्राज्य का आधिपत्य था और जबतक उसके इस लक्ष्य के मार्ग में कर्मचारियों के रिश्वत लेने के कारण कोई बाधा उपस्थित होने की संभावना न रहती वह अपने कर्मचारियों की करतूतों को विरक्ति से देख सकता था। चार्ल्स होशियार तो था परन्तु अपने को वह जितना होशियार समझता था उतना नहीं था। उसने मनुष्य की कमज़ोरियों का ही अधिक अध्ययन किया था। इसलिए प्रायः वह मनुष्यों के गुणों की तरफ़ देखना भूल जाता था। उसने अपनी ऐसी ही ग़लतियों से अपने बहुत से मित्रों को शत्रु भी बना लिया। बहुत से ऐसे आदमियों को, जो उसके बड़े काम के होते, वह अपने हाथों से ऐसी ही भूलों के कारण खो बैठा था। बहुत से लोगों की यह स्पष्ट राय थी कि जितनी शेख़ी वह बघारता था उतना चतुर नहीं था उसने अपने जीवन में बहुत से ऐसे कार्य्य कर डाले जिनके कारण उसके उद्देश पूर्ति के मार्ग में बड़ी बाधायें खड़ी हो गई।

चार्ल्स मामूली क़द का गठीले जिस्म का जवान था। जवानी में वह अपने सामने किसी को कुछ नहीं गिनता था। स्पेन के जातीय खेलों में वह अक्सर साँडों को सींग पकड़-पकड़ कर दे मारा करता था। खाना भी बहुत और खूब ठूस-ठूस कर दिन में कई बार खाता था। शराब तो बोतलों पर बोतलें चढ़ा जाता था। इन्हीं सब आदतों के कारण बुढ़ापे में उसे गठिया, दमा इत्यादि बहुत से रोगों ने आ घेरा। जवानी में तो सदा उसके साथ विजय देवी जयमाल लिए घूमा करती थी परन्तु अपने ढलते दिनों में उसे बड़ी निराशाओं का सामना करना पड़ा था। जवानी में जो उसके सामने आया, हारा। यहाँ तक कि उसने

एक बार रावण की भाँति सैक्सनी और ब्रन्सविक के ड्यूकों को पकड़कर अपने रथ के पहियों से बाँध दिया था। परन्तु राज्य-त्याग के कुछ ही दिन पहले उसी जर्मन जाति के एक नौजवान ने—जिसको निकम्मा कहकर वह ठट्ठा लगाया करता था—उसे इतनी बुरी तरह पराजित किया था कि बेचारे को बुढ़िया का वेश धारण करके जान बचाकर भागना पड़ा था और अन्त में मजबूर होकर पासू की सन्धि करनी पड़ी थी, जिसमें लूथर इत्यादि को जर्मनी में अपने विचारों का प्रचार करने की इजाज़त दे देने की शर्त भी थी। फ्रान्स की अन्तिम चढ़ाई में भी उसे हार हुई थी और अन्त में जिस पोप को उसने गिरफ्तार कि याथा, उसके उत्तराधिकारी ने उसके राज्य-त्याग को धार्मिक न मान कर उसे अपमानित किया। जितना बड़ा साम्राज्य वह अपने बेटों के लिए छोड़ना चाहता था उतना वह अपने जीवन-भर प्रयत्न करने पर भी बना नहीं सका। इतनी मानसिक और शारीरिक पीड़ाओं के होते हुए वह अपने अन्तिम दिन शान्ति से कैसे बिता सकता था? उसने जवानी में ही इरादा कर लिया था कि अपने अन्तिम दिवस वैरागियों में रहकर बिताऊँगा। राज्य-त्याग के उपरान्त, वह अपनी स्त्री को छोड़ कर एक मठ में जा बैठा। परन्तु उसके हृदय में शान्ति नहीं थी। वह फिलिप को लम्बे-लम्बे पत्र लिखकर सलाह दिया करता था कि सुधारकों का नामो-निशान मिटा देना चाहिए। ऐसी कड़ी सज़ायें देनी चाहिएँ कि फिर धर्म के सम्बन्ध में मीन-मेख करने का कोई साहस न करे। उसे बड़ा पछतावा होता था कि, हाय! मैंने लूथर से सन्धि क्यों कर ली? इसी दुष्ट ने संसार में अधर्म फैलाया है। परन्तु उसके

इस छटपटाने से भला संसार की प्रगति कैसे रुक सकती थी ? जीवन पर्यन्त जिसने लोगों को कष्ट ही दिये हों उसके अन्तिम दिन शान्ति से कैसे बीत सकते हैं ? धार्मिक सुधारकों को दण्ड देने की चिन्ता करने की उसे आवश्यकता नहीं थी। इस सम्बन्ध में उसके ख़ून से पैदा हुआ फ़िलिप उससे दो हाथ बढ़ कर ही था। धर्म को क़ायम रखने की चिन्ता जितनी फ़िलिप को थी उतनी संसार में बड़े-बड़े महात्माओं को भी नहीं रही होगी।

---

(३)

फ़िलिप का आगमन

फिलिप का जन्म सन् १५२७ ई० में हुआ था। राज्याभिषेक के समय उसकी अवस्था २८ वर्ष की थी। उसे अपने बाप की जागीर में नेदरलैण्ड ही नहीं मिला वरन् नेदरलैण्ड के साथ साथ सारे स्पेन का साम्राज्य उसके हाथ आगया। एशिया, अफ्रिका, अमेरीका में उसका राज्य था। मिलन का वह ड्यूक था। इग्लैण्ड और फ्रान्स का भी नाम मात्र का राजा था। सन् १५४८ ई० में फिलिप पहले-पहल युवराज की हैसियत से नेदरलैण्ड में दौरा करने आया। ग्रीष्म-काल उसने वहीं बिताया। लोगों ने बड़ी धूमधाम से उसका स्वागत किया। फिलिप ने भी खूब दिल खोल कर लोगों से बड़े-बड़े वादे किये। हर जगह निसंकोच होकर उसने प्रतिज्ञायें लीं कि मैं जनता और शहरों के अधिकार सदा सुरक्षित रक्खूंगा। लोगों ने उसके इन वादों को सच्चा समझा। परन्तु यह सब चार्ल्स की मक्कारी थी। वह फिलिप से इस प्रकार के वादे करा कर लोगों को शान्त रखना चाहता था। बेचारे सहज विश्वासी फ्लेमिंग्स, ब्रबण्टाइन्स और वेलन लोग उसकी चाल में फंस गये उन्होंने शुद्ध हृदय से हर जगह फिलिप का स्वागत किया। एण्टवर्प में तो इस धूम का स्वागत हुआ कि शहर के अन्दर २६ हजार आठ सौ रुपये खर्च करके

बड़े सुन्दर अट्ठाइस दरवाज़े बनाये गये । सारे शहर के अमीर उमरा सजधज कर चार हजार सिपाहियों को साथ लेकर उसकी अगवानी को गये: परन्तु फिलिप ने इन सब बातों पर कोई विशेष प्रसन्नता प्रकट नहीं की। उसके रूखे व्यवहार से लोगों को दुःख भी हुआ।

सन् १५५४ में फिलिप ने इगलैण्ड की रानी मेरी ट्यूडर से विवाह किया । मेरी बहुत कुरूपा और फिलिप से उम्र में ११ वर्ष बड़ी थी फिर भी वह फिलिप को जी जान से प्यार करती थी। जो मेरी रानी की हैसियत से प्रजा का खून बहाती और अत्याचार करती थी वही मेरी फिलिप की पत्नी बन कर उस के पैरों पर लोटने लगी। अगर पति और पत्नी के एक से विचार ही किसी दम्पति को प्रसन्न बना सकते हैं तो मेरी और फ़िलिप को तिगुना सुखी होना चाहिए था। दोनों ही अपने जीवन का उद्देश्य प्रचलित सनातन-धर्म की रक्षा करना समझते थे। प्रचलित धर्म पर विश्वास न करनेवालों को सूली पर चढ़ाना दोनों का मुख्य कार्य था। अपने साम्राज्यों को नरक बनाकर ये दोनों प्राणी स्वयं स्वर्ग में जाने के इच्छुक थे। परन्तु एक से विचार रखकर भी यह दम्पति सुखी नहीं थे। मेरी फ़िलिप की शुष्कता पर अकेले में बैठ कर आँसू बहाया करती । फ़िलिप को उसकी ज़रा भी परवाह नहीं थी। इंग्लैण्ड की पार्लमेण्ट ने फ़िलिप को नाम-मात्र से अधिक सत्ता देने से बिलकुल इन्कार कर दिया । परन्तु मेरी अपनी प्रजा को नाराज़ करके भी फ़िलिप को लड़ाइयों के लिए अपने खज़ाने से रुपया केवल इस-लिए देती रही कि फ़िलिप किसी प्रकार उससे खुश हो जाय।

चार्ल्स बड़ा व्यवहार-कुशल था। मन में उसके कुछ भी हो। ऊपर से बड़ी मीठी बातें किया करता था। सब लोग उससे ख़ुश रहते थे। फ़िलिप में व्यवहार-कुशलता बिल्कुल नहीं थी। उसका व्यवहार सभी को बड़ा अप्रिय लगता था। लोगों की यह भी राय थी कि फ़िलिप न तो अपने पिता की तरह बलवान्, उत्साही और वीर है। न वह चार्ल्स की तरह युद्ध के लिए उत्सुक ही रहता है। बल्कि जहाँ तक होता है वह युद्ध से बचता है। चार्ल्स किसी की धमकी से पीछे नहीं हटता था और जो कुछ उसे करना होता तत्काल कर डालता था। फ़िलिप सोच-विचार में ही बहुत समय बिता देता था। फ़िलिप बहुत तुच्छ बुद्धि का—मामूली श्रेणी के मनुष्यों से भी गिरा हुआ—मनुष्य था। मिहनत तो दिन-रात करता था। परन्तु छोटी-छोटी बातों में अपना समय गँवा देता था। सुव्यवस्था और प्रबन्ध करना उसे बिल्कुल नहीं आता था। बोलता कम था परन्तु लिखने का उसे इतना शौक़ था कि पास ही के कमरे में बैठे हुए मनुष्य को अठारह पृष्ठ का पत्र केवल किसी ऐसे छोटे कार्य्य के लिए लिख भेजता जो कोई भी चतुर मनुष्य छः शब्दों में कर सकता था। उसका अधिकतर समय पत्र लिखने में ही व्यतीत होता था। शायद वह समझता था कि दुनिया पत्र-व्यवहार पर ही चलती है। वास्तव में बात यह थी कि वह किसी बात का तुरन्त निश्चय करने के अयोग्य था। अतः अपनी विचारहीनता छिपाने के लिए छोटे-छोटे कामों के सम्बन्ध में भी लम्बे पत्र लिखने बैठ जाता था। उसके पत्रों को पढ़ कर किसी निश्चय पर पहुँचना दुर्लभ होता था, क्योंकि वे प्रायः अर्थ-हीन और तत्व-रहित होते थे। केवल एक ही बात

उसके जीवन में ऐसी मिलती है, जिस पर अन्त तक वह दृढ़ रहा। साम्राज्य बढ़ाने की अपेक्षा धर्म को सुरक्षित रखने का उसे जिन्दगी भर ध्यान रहा। परन्तु यह कोई उसके स्वतंत्र विचारों का परिणाम न था, उसकी रग-रग में बचपन से ही यह भाव भर दिया गया था कि संसार में सनातन-धर्म को सुरक्षित रखना ही उसका सर्वोपरि कर्त्तव्य है। फ़िलिप ने कोई अधिक शिक्षा भी न पाई थी। उस समय के रात्र, राजा प्रायः कई भाषायें बोल लिया करते थे; परन्तु फ़िलिप केवल स्पेनिश भाषा ही बोल सकता था। सौभाग्य से फ़िलिप को ललित-कला से थोड़ा प्रेम था; परन्तु ललित-कला के उस युग में उसमें यह बात भी न होती तो वह कोरा पशु होता। वह अपने काम प्रायः समय पर करता था। प्रार्थना, कथा और धर्मोपदेश सुनने में वह सदा आगे रहता जिसे देखकर कट्टर सनातनी भी कहते कि युवराज की इस यौवनावस्था में धर्म की ओर इतनी प्रवृत्ति न होनी चाहिए। रोज़ घण्टों बैठकर वह धर्म-विषयक चर्चा किया करता था और अपने गुरू से बहुत खोद-खोद कर पाप-पुण्य के प्रश्न पूछता था। उसे इस बात की बड़ी चिन्ता रहती थी कि कौनसा काम पापमय है और कौनसा पुण्य-मय। फिर भी उसका सबसे प्रिय व्यसन व्यभिचार था। रात को प्रायः वेश बदल कर गलियों में घूमता और नीच से नीच कर्म तक करता।

फ़िलिप प्रायः स्पेन की पोशाक ही पहिनता था। कभी-कभी फ्रान्स और बरगण्डी के कपड़े भी पहिनता था। उसका दरबार ब्रसेल्स में बरगण्डी की प्रथा के अनुसार लगा करता था। परन्तु १५० दरबारियों से १३५ स्पेन के थे। शेष पन्द्रह-बीस फ्लेमिन्स

बरगण्डी, इटली, जर्मनी, इंग्लैण्ड इत्यादि सब प्रदेशों के मिलाकर थे।' इस सम्बन्ध में फ़िलिप ने अपने पिता की सलाह का कुछ भी ध्यान नहीं रक्खा था। चार्ल्स का विचार था कि नेदरलैण्ड पर नेदरलैण्डवासियों द्वारा ही शासन करना चाहिए। परन्तु फ़िलिप में चार्ल्स की दूरदर्शिता नहीं थी। उसने नेदरलैण्ड के वीर और अभिमानी पुरुषों के सिर पर स्पेन वालों को रखकर नेदरलैण्ड में स्पेनवासियों के प्रति अत्यन्त द्वेष और घृणा के भाव उत्पन्न करा दिये। फ़िलिप स्पेन वालों को प्यार करता था। स्पेन वालों के साथ ही उठता बैठता था; स्पेनवालों से ही सलाह मशविरा करता था और केवल स्पेनवालों के द्वारा ही नेदरलैण्ड का राज्य चलाना चाहता था। उसकी कार्यकारिणी में भी पाँच छः स्पेन के सरदार थे। उनमें रूई गोमेज़ और ड्यूक ऑव् ऐलवा बड़े मशहूर थे। कहा जाता था कि फ़िलिप के चक्रवर्ती साम्राज्य के दो पाये थे, एक रूई गोमेज़, दूसरा ड्यूक ऑव् ऐलवा। इन दो मनुष्यों की राय से आधी दुनिया का राज्य चलता था। परन्तु ऐलवा और गोमेज़ में आपस में बड़ी ईर्ष्या थी। दोनों एक दूसरे को हमेशा नीचा दिखाने का प्रयत्न करते थे। अन्य अधिकारियों को बड़ी मुश्किल थी। यदि किसी पर रूई गोमेज़ प्रसन्न हो जाता था तो वह ड्यूक ऑव् ऐलवा की आँखों में खटकने लगता था और यदि किसी पर ड्यूक की कृपा-दृष्टि हो जाती तो गोमेज़ उसका दुश्मन बन जाता था। कार्यकारिणी में शान्तिवादी और युद्धवादी दो दल थे। गोमेज़ शान्तिवादी पक्ष का नेता था और ड्यूक युद्धवादी पक्ष का। फ़िलिप के हृदय को शान्ति ही अधिक पसन्द थी इसलिए गोमेज़ पर उसका अधिक स्नेह था। परन्तु

ड्यूक की तलवार बड़े काम की चीज़ थी। फ़िलिप उसका भी उपयोग करना चाहता था। विशप ऑव् ऐरसन्जे आगे चलकर नेदरलैंड का भाग्य-विधाता ही बन बैठा। इस समय कार्य-कारिणी में अधिक भाग नहीं लेता था। कभी-कभी किसी विशेष कार्य्य के सम्बन्ध में सम्मति लेने के लिए बुला लिया जाता था। वह अकेला ही सारी कार्यकारिणी से अधिक बुद्धिमान और चतुर था।

रूई गोमेज़ का जन्म एक पोर्चुगीज़ वंश में हुआ था। बचपन में वह फ़िलिप के साथ पला था। एकबार उसने लड़कपन में फ़िलिप को पीट डाला था और इस पर चार्ल्स ने क्रोध करके उसे प्राण-दण्ड का हुक्म दे दिया था। परन्तु फ़िलिप ने चार्ल्स के पैरों पड़ कर गोमेज़ की प्राण-भिक्षा माँगी थी और चार्ल्स ने प्रसन्न होकर गोमेज़ को छोड़ दिया था। कहते हैं तब से गोमेज़ और फ़िलिप का स्नेह बहुत बढ़ गया था। गोमेज़ भी बड़ा चतुर था। उसने फ़िलिप को अपने हाथों की कठपुतली कर रखा था। परन्तु फ़िलिप का गोमेज़ के हाथों में खेलने का एक और भी विशेष कारण था। फ़िलिप का गोमेज़ की स्त्री शाहज़ादी इबोली के साथ खुल्लमखुल्ला बहुत दिनों से सम्बन्ध था और गोमेज़ सब कुछ जानते हुए भी कुछ न कहता था। रात-दिन गोमेज़ फ़िलिप के साथ रहता था। कपड़े उतारने से लेकर लोगों से मिलने-मिलाने तक का सारा प्रबन्ध और सारा पत्र-व्यवहार गोमेज़ ही करता था। दिन-रात काम करते-करते गोमेज़ पीला पड़ गया था। फिर भी फ़िलिप की सेवा में आठों पहर लगा रहता था और फ़िलिप से कहा करता था कि 'परमात्मा के बाद बस मैं आपको

जानता हूँ।' अपने मालिक की तरह वह भी अधिक पढ़ा लिखा न था। न तो उसे स्पेनिश भाषा के सिवाय और कोई भाषा ही आती थी और न युद्ध अथवा राज्य-प्रबन्ध सम्बन्धी विषयों का ही उसे कुछ ज्ञान था। मगर था वह बड़ा होशियार। राज-नीतिज्ञ; युद्ध-कला विशारद, धर्म-शास्त्री कोई भी हो सबसे वह इस प्रकार वार्तालाप करता कि कोई उसे ज्ञानहीन नहीं बता सकता था। फ़िलिप ने उसे माला-माल कर रक्खा था। लाखों रुपये साल की आमदनी की जागीरें उसे दे डालीं थीं और उसका भाग्य दिनों-दिन ऊँचा ही उठता जा रहा था।

पाठक देख चुके हैं कि चार्ल्स के राज्य-त्याग के समय हँगरी की महारानी ने नेदरलैण्ड का युवराज-पद त्याग दिया था। यह स्त्री क्या थी, पूरी पुरुष थी। हाव-भाव, चाल-ढाल, खेल-कूद इत्यादि प्रत्येक व्यवहार से पुरुष जँचती थी। घोड़े की सवारी और शिकार का उसे विशेष शौक़ था। वह फ़िलिप को देख कर जलती थी और फ़िलिप भी उसे हृदय से घृणा करता था। फिर भी फ़िलिप की इच्छा थी कि नेदरलैण्ड के शासन का भार उसी के हाथ में रहता तो अच्छा था। ख़ैर, नेदरलैण्ड की नवाबी ड्यूक ऑव् सेवाय को दी गई। इस समय ड्यूक की उम्र सत्ता-इस अट्ठाइस वर्ष की होगी। यह बड़ा उद्दण्ड और साहसी मनुष्य था। इसका भी राज्य-कुटुम्ब से रिश्ता था। चार्ल्स का भतीजा और फ़िलिप का भाई होता था। परन्तु उसके बाप पर बुरे दिन आने से उसकी सारी जागीर छिन गई थी। इस नौजवान के हाथ में सिवाय अपनी तलवार के और कुछ न रहा था। उसने संकल्प कर लिया था कि अपनी तलवार के द्वारा ही अपनी रोटी कमा-

ऊँगा और तलवार के ही जोर से अपने बाप की जागीर और मान-मर्यादा वापिस ले लूँगा। चार्ल्स की सेना में नौकरी करके उसने ऐसा मान पाया कि अन्त में नेदरलैण्ड का नवाब बन गया। युद्ध उसका व्यापार था। युद्ध न होने से पैसा नहीं मिलता था, इसलिए शान्ति उसे बिलकुल नापसन्द थी। काउण्ट मैन्सफील्ड, मारशल स्ट्रोजनी इत्यादि उस समय के सभी योद्धा युद्ध से रुपया कमाते थे और शान्ति को बुरा समझते थे। इस नौजवान ने भी लड़भिड़ कर खूब रुपया इकट्ठा कर लिया था और अपने बाप की जागीर भी वापिस ले ली थी। इसका असली नाम फिलबर्ट था। इसको लेटिन, फ्रेन्च, स्पेनिश और इटेलियन इत्यादि कई भाषायें अच्छी तरह आती थीं। यदि उसमें उतावलापन और उद्दण्डता न होती तो वह बड़ा अच्छा सेनापति हो सकता था। खैर, यह उतावला उद्दण्ड जंगलों में फिरने वाला, बिना प्रजा का प्रजापति, बे मुल्क का नवाब, अन्त में अपनी तलवार के कारण इतना मशहूर हुआ कि आखिरकार नेदरलैण्ड का नवाब बना दिया गया।

चार्ल्स उम्र भर अड़ोस-पड़ोस के देशों से लड़ता रहा था। उसको अपने जीवन में बस युद्ध जीतने और राज्य बढ़ाने की अभिलाषा ही रही थी। परन्तु अन्तिम समय में उसे अपने पुत्र फ़िलिप का मार्ग निष्कण्टक और शान्तिमय बनाने की भी बड़ी इच्छा थी। अपने राज्य के अन्तिम दिनों में उसने बड़ी चेष्टा की कि किसी तरह युद्ध बन्द हो जाय जिससे गद्दी पर बैठते ही फ़िलिप को युद्ध की चिन्ता न करनी पड़े। परन्तु उसने जीवन-पर्यन्त लड़ाइयाँ लड़-लड़कर जो झगड़े बखेड़े यूरोप में खड़े कर

दिये थे उन्हें एकदम मिटा देना संभव नहीं था। उसने बहुत प्रयत्न करके फ्रान्स, स्पेन, फ्लैण्डर्स और इटली इत्यादि—फ्रान्स और स्पेन के राजाओं के सारे साम्राज्य—में शान्ति रहने के लिए एक सन्धि भी की थी। परन्तु यह सुलह केवल पाँच वर्ष के लिए ही हुई थी। पाँच वर्ष तक ऊपर से लड़ाई बन्द रही। परन्तु अन्दर-अन्दर युद्ध की तैयारियाँ होती रहीं। पोप ने भी फ्रान्स से एक गुप्त सन्धि की थी जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ था कि फ्रान्स पोप को रुपया दे और पोप स्पेनवालों को इटली से निकाल दे। फ़िलिप को राज्याभिषेक के समय अच्छी तरह मालूम था कि मुझे कुछ ही दिन बाद फ्रान्स से लड़ना पड़ेगा। इसलिए गद्दी पर बैठते ही उसने युद्ध की तैयारी भी प्रारम्भ कर दी। परन्तु फिर भी उसके हृदय की सर्वोच्च अभिलाषा एक ही थी, धर्म की रक्षा करना। साम्राज्य बढ़ाने की उसे चिन्ता नहीं थी। बिशप ऑव् एरस की सलाह से उसने नेदरलैण्ड में धर्म के विषय में मतभेद रखने वालों के लिए पुराने कठोर कानून फिर से जारी कर दिये मगर इन क़ानूनों के अनुसार लोगोंपर पूरी तरह क्रूरता नहीं की गई; क्योंकि फ़िलिप को नेदरलैण्ड वालों से फ्रान्स की लड़ाई में सहायता लेनी थी। फ़िलिप ने नेदरलैण्ड से अपनी सेनाओं के खर्च के लिए कर माँगा। परन्तु नेदरलैण्ड के सब मुख्य-मुख्य प्रान्तों ने किसी प्रकार का नवीन कर देने से साफ़ इन्कार कर दिया। हाँ, वहाँ की बड़ी पंचायत ने सहायता-स्वरूप कुछ रुपया देने का वादा किया। फ़िलिप ने इसी पर सन्तोष कर लिया। नेदरलैण्डवालों को अधिक न छेड़ा गया। क्योंकि बिना नेदरलैण्ड की सहायता के फ्रान्स से लड़ना असम्भव था।

फ्रान्स के युद्ध में नेदरलैण्ड के सारे सरदारों ने फ़िलिप की ओर से लड़ाई में भाग लिया। एक वर्ष तक लड़ाई जारी रही। फ़िलिप की सेना ने फ्रान्स वालों को पराजित किया। फ्रान्स को लाचार होकर सन्धि कर लेनी पड़ी। इस सन्धि में फ़िलिप ने फ्रान्स से मनमानी शर्तें स्वीकार करा लीं। परन्तु विजय का सेहरा नेदरलैण्ड के वीर सरदार लेमोरल एगमोण्ट के सिर रहा। एगमोण्ट इस युद्ध में ऐसी वीरता से लड़ा था कि बड़े बड़े योद्धा उसे लड़ते देख दाँतों तले उँगली दबाते थे। युद्ध में जहाँ किसी को जाने की हिम्मत नहीं पड़ती वहाँ एगमोण्ट पहुँचता था। जब सब निराश हो चुकते थे तब वीर एगमोण्ट पहुँचकर विजय देवी से जयमाल पहिनता था। नेदरलैण्ड वीर देश था। वहाँ वीरों की पूजा होती थी। एगमोण्ट पर लोग लट्टू हो उठे। जब वह विजय पाकर लौटा तो लोगों ने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया। सभी ने एक स्वर से उसकी जय बोली। एगमोण्ट को देखकर सबके हृदय फूल उठे थे। परन्तु एक हृदय में वह काँटे की तरह खटकने लगा था। डयूक ऑव् ऐलवा उसका यह सम्मान न देख सका। ईर्षा से जलकर उसने बड़ा भयंकर संकल्प किया। एगमोण्ट ने भी विजय और सम्मान के मद में ऐलवा को कुछ सख्त सुस्त बातें फिलिप के सामने ही कह डालीं। इस अपमान के कारण ऐलवा का संकल्प और भी दृढ़ हो गया।

डचेज़ परमा का शासन

लड़ाई समाप्त होने के पहले ही बिशप ऑव् एरस और
फ्रान्स का लौरेन का कार्डीनल पेरोन नामी एक स्थान पर मिले थे।
इन दोनों पादरियों ने आपस में सलाह की थी कि फ्रान्स और
स्पेन की आये दिन की लड़ाई से नवीन धर्म-पन्थावलम्बियों को
अपने प्रचार और कार्य्य का ख़ूब मौका मिल रहा है। इसलिए जैसे
बने आपस की लड़ाई बन्द करके दोनों को मिल जाना चाहिए
और मिलकर दोनों देशों को नवीन धर्म-पन्थावलम्बियों की ख़बर
लेनी चाहिए। फ्रान्स का राजा हेनरी भी लड़ाई से थक चुका
था। उसे अपनी हार का भी बड़ा भय रहता था। फ़िलिप की
भी हार्दिक इच्छा यही थी किसी तरह इन बखेड़ों से पिण्ड छूटे,
तो नेदरलैण्ड के सुधारकों की ख़बर लें। फ्रान्स और स्पेन ने
आपस के युद्ध कभी किसी राष्ट्रीय अथवा जातीय प्रश्न को सुल-
झाने के लिये नहीं होते थे। इसलिए जनता को किसी प्रकार
भी सन्धि हो जाने पर हर्ष होना स्वाभाविक ही था।

एगमोण्ट की अन्तिम विजय के बाद फ्रान्स के लिए सन्धि
करने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया था। दोनों तरफ़
से सुलह की तैयारियाँ हुईं। स्पेन की तरफ़ से सन्धि की शर्तों
पर बात-चीत करने के लिए शाहज़ादा आरेञ्ज, ड्यूक ऑव
ऐलवा, बिशप ऑव् एरेस, रूई गोमेज़ और प्रेसीडेन्ट विग्लियस
नियुक्त हुए। फ्रान्स की तरफ़ से कान्सटेब्ल और लौरेन के

कार्डिनल इत्यादि आये। इस सन्धि के अनुसार यह निश्चय हुआ कि, फ्रान्स और स्पेन के राजा केवल एक कैथोलिक पन्थ समर्थन करेंगे। दूसरे पन्थों को नष्ट करने का प्रयत्न करेंगे, पिछले आठ वर्षों में दोनों तरफ की जो जागीरें एक दूसरे देश ने ले ली हैं वे लौटा दी जायँगी।" इस शर्त के अनुसार ड्यूक ऑव् सेवाय की सारी जागीर उसको वापिस मिल गई और वह फिर रङ्क से राजा हो गया था। हेनरी की बहिन से सेवाय का विवाह होना भी निश्चय हुआ था। हेनरी की पुत्री ईजाबेला का विवाह फ़िलिप से ठहरा था। यूरोप के लगभग सभी राष्ट्र इस सन्धि में सम्मिलित थे। सन्धि की शर्तें पूरा करने के लिए जमानत के तौर पर फ़िलिप के चार सरदार हेनरी अपने साथ ले गया था। इनमें आरेञ्ज का शाहजादा विलियम था। फ्रान्स में जाकर हेनरी तो कुछ ही दिन में मर गया, परन्तु आरेञ्ज के शाहजादे विलयम को एक ऐसा भेद बता गया कि जिससे विलयम का सारा जीवन बदल गया। एक दिन बातें करते-करते हेनरी ने विलियम को उस गुप्त सन्धि की सारी शर्तें बता दीं जो उसने विलियम के साथ सुधारकों को नष्ट करने के लिए की थीं। इस सन्धि का हाल सुन कर विलियम की आँखें खुल गईं। उसे पता चला कि जनता के विरुद्ध क्या क्या षड्यन्त्र रचे जा रहे हैं। विलियम ने उसी दिन दृढ़ संकल्प किया कि आज से मेरा जीवन इन राजाओं के मनोरथ विफल करने में ही व्यतीत होगा। आगे चलकर पाठक देखेंगे कि इस दृढ़ संकल्पी महान् आत्मा ने अपने देश और जाति के लिए जीवन भर अकथनीय कष्ट सहे और अन्त में देश के चरणों पर अपने हृदय के रक्त की अञ्जलि

चढ़ा कर संसार से चल बसा। हालैंड प्रजातन्त्र के जन्मदाता आरेञ्ज विलयम का नाम संसार के इतिहास में अमर रहेगा। फिलिप की स्त्री इङ्गलैंड की रानी मेरी की मृत्यु हो चुकी थी। चार्ल्स भी मर चुका था। सन्धि से छुट्टी पाकर फ़िलिप अपनी स्त्री और पिता की शोक-क्रिया में संलग्न हुआ और शान्ति की स्थापना पर इधर नेदरलैण्ड में नाच रंग होने लगा। एण्टवर्प में नौ दिन तक लगातार लोगों के आनन्दोत्सव मनाये—ख़ूब खेल-कूद हुए। शराबें उड़ीं, बाजे बजे। परन्तु नेदरलैंडवासियों के इन आनन्दोत्सवों से फ़िलिप को कुछ उत्साह अथवा प्रसन्नता नहीं होती थी। उसने यह सन्धि इसलिए थोड़े ही की थी कि नेदरलैंडवाले ख़ूब नाचें कूदें और मौज उड़ावें? उसने तो सारी दुनिया से सन्धि केवल इसलिए की थी कि नेदरलैंडवालों का सिर नीचा हो फ़िलिप को आज तक कभी नेदरलैंड प्रिय नहीं लगा था। उसे वहाँ रहना भी भार मालूम होता था। वह शीघ्र से शीघ्र स्पेन लौट जाता और वहाँ बैठकर अपने मनोवांच्छित कार्य को प्रारम्भ करना चाहता था। फिलिप नैदरलैण्ड के शासन और अपने स्पेन लौटने का प्रबन्ध करने लगा। ड्यूक ऑव् सेवाय को अपनी ही इतनी जागीर मिल गई थी कि उसे अब नैदरलैण्ड का शासन सम्भालने का अवकाश नहीं था। इस लिये आवश्यकता हुई कि नेदरलैण्ड की नवाबी किसी दूसरे को दी जाय। बहुत से लोगों को इस पद की चाह थी। एगमोण्ट और विलियम ओरेञ्ज का नाम भी इस सम्बन्ध में लिया जाता था परन्तु विलियम अच्छी तरह जानता था कि किसी नैदरलैण्ड निवासी को यह पद नहीं मिल सकता अन्त में फिलिप ने चार्ल्स

की पुत्री अपनी बहीन डचेज़ ऑव् परमा को विशप ऑव् ऐरस की सलाह से चुपचाप इस पद पर नियुक्त कर दिया सब देखते रह गये। डचेज़ ऑव् परमा की सहायता के लिये तीन समितियाँ भी बनाई गईं। स्टेट कौंसिल, प्रिवी कौंसिल और फाइनेन्स कौंसिल। फाइनेन्स कौंसिल का काम बजट इत्यादि बनाना और राज्य के आय-व्यय की देख-रेख करना था। इसका प्रमुख बैरन बेरलमोण्ट था। प्रिवी कौंसिल का कार्य न्याय शासन था। इसके दस सदस्य थे और प्रमुख डाक्टर विग्लियस था। सबसे मुख्य और आवश्यक समिति स्टेट कौंसिल थी। इसको राज्य-शासन के सारे आवश्यक कार्य, युद्ध, सन्धि, परराष्ट्र सम्बन्ध, और प्रान्तिक और अन्तर-प्रान्तिक शासन सब कुछ करने और देखने भालने का अधिकार था। इसके सदस्य बिशप ऑव ऐरस विग्लियस, बेरलमौण्ट, ऑरेञ्ज का शहज़ादा और काउण्ट एगमोण्ट थे पीछे से तीन चार सदस्य बढ़ा दिये गये जिस में काउण्ट हौर्न का नाम विशेष उल्लेखनीय है। काउण्ट हौर्न को फिलिप के साथ स्पेन जाने का हुक्म भी मिला था। कहा गया था कि वहाँ पहुँच कर उसको नेदरलैण्ड के शासन सम्बन्धी सारे अधिकार दे दिये जायँगे।

देशी सरदारों को स्टेट कौंसिल में रक्खा तो गया था परन्तु उनकी शक्ति कम करने के लिए ऐसा नियम बना दिया गया था कि स्टेट कौंसिल के सदस्य दूसरी समितियों में भाग न ले सकेंगे परन्तु दूसरी समितियों के सदस्य और 'गोल्डन फ्लीस' संस्था के सदस्यों को स्टेट कौंसिल के कार्य में भी भाग लेने का अधिकार था। स्टेट कौंसिल में भी सारी सत्ता तीन सदस्यों की एक उपसमिति के हाथ में थी। इस समिति का नाम 'कन्सल्टा'

था और इसके सदस्य विग्लियस, बेरलमोण्ट और ऐरस थे इन तीन सदस्यों में भी ऐरस ही मुख्य था। वह जो कहता और करता वही होता था। दूसरे दोनों सदस्य केवल उसकी हां में हां मिलाया करते थे। डचेज़ ऑव् परमा तो ऐरस के हाथ की कठपुतली मात्र। थी वास्तव में ऐरस को ही नेदरलैण्ड का भाग्य-विधाता बनाया गया था।

ब्रेबेण्ट में नवाबज़ादी स्वयं ही रहने वाली थीं इसलिए वहाँ कोई सूबेदार नियत नहीं किया गया। दूसरे प्रान्तों में सूबेदार नियत हुए। फ्लैण्डर्स और आरटोइज़ का सूबेदार काउण्ट एगमोण्ट बनाया गया। हालैण्ड, ज़ेलैण्ड और यूट्रेक्ट का सूबेदार आरेञ्ज का शाहज़ादा हुआ। गुइलड्रेस और ज़ुटफेन का काउण्ट मेघमा, फ्रीसलैण्ड, ग्रोनिञ्जन और ओवरीसल का काउण्ट रेम्बर्ग; हेनाल्ट वेलेन्सेनीज़, और केम्ब्रे का सरदार बरघन; टूर्नी और टूर्नेसिस का बैरनमौनटनी; नामूर का बैरन बोलसोण्ट; लक्ज़मबर्ग का काउण्ट मैन्सफील्ड; राइसेल, डूये और और चीज़ का बैरन कोरेंज़। ये सबके सब सूबेदार अपने-अपने प्रान्तों की सेना के सेनापति भी थे। फ्लैण्डर्स को छोड़कर और सब प्रान्तों के सूबेदार अपने-अपने प्रान्तों के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी थे। शान्ति के समय, साधारण तौर पर प्रान्तों में बहुत थोड़ी सेना रहती थी क्योंकि जनता अधिक सेना रखना पसन्द नहीं करती थी। नेदरलैण्ड भर में शान्त समय में रहनेवाली सेना कुल ३००० थी। परन्तु ।यह सेना यूरोप भर में सबसे अच्छी समझी जाती थी। बहुत दिनों से फ्रान्स और स्पेन में लड़ाइयाँ हो रही थीं। इसलिए नेदरलैण्ड में ४००० विदेशी सेना भी

रहती थी। यह सेना सीमान्त-प्रान्तों की रक्षा के लिए रक्खी गई थी। विदेशी सिपाही देश के खज़ाने से रुपये पाते थे परन्तु देश-वासियों से अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। उनके व्यभिचार और दुष्टाचार के कारण नेदरलैण्डवासी उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते थे। जब फ्रान्स और स्पेन में सन्धि हो गई तब सीमान्त प्रान्तों की रक्षा का भय भी जाता रहा और इस सेना की नेदरलैण्ड में रखने की कुछ आवश्यकता न रही। लोगों की राय थी कि यह सेना विसर्जित कर दी जाय परन्तु ऐसा नहीं किया गया इससे लोगों को भय हुआ कि कहीं यह सेना देश के लोगों पर अत्याचार करने के लिए तो नहीं रक्खी जा रही है। लोगों को मालूम हो गया था कि उनकी धार्मिक तथा राजनैतिक स्वतंत्रता हरण करने के लिए नये उपाय रचने की मंत्रणा हो रही है। लोगों की यह भी धारणा हो उठी कि यही सेना और बड़ी कर दी जायगी और इसी सेना की सहायता से नेदरलैण्ड जकड़ कर स्पेन का गुलाम बना दिया जायगा।

सन् १५५९ ई० की ७वीं अगस्त के दिन घेरट नगर में सारे प्रान्तों के प्रतिनिधियों को एकत्र होने और फिलिप के श्री-मुख से विदाई का सन्देश सुनने के लिए सूचना भेजी गई। नियत दिवस पर प्रतिनिधियों की सभा एकत्र हुई। शाही दरबार बड़ी शान से सजाया गया। फिलिप, मार्गरेट (डचेज़ आव् परमा) तथा अन्य अनेक सरदारों के साथ दरबार में आकर बैठ गया। बिशप ऑव् एरस ने फिलिप की तरफ़ से लोगों से कहा—"श्री महाराज ने आप लोगों को यह बतलाने के लिए यहाँ एकत्र किया है कि श्रीमहाराज शीघ्र ही नेदरलैण्ड छोड़कर स्पेन जा

रहे हैं। श्रीमहाराज कहते हैं कि उनका नेदरलैण्ड पर बहुत स्नेह है और यदि अत्यन्त आवश्यक कार्य्य नहीं होता तो वह नेदर-लैण्ड छोड़कर कभी स्पेन न जाते। श्रीमहाराज के पिता जी सन् १५४३ ई० में प्रान्तों के हित के लिए ही इधर आये थे और वह प्रान्तों के हित-कार्य्यों में इतने संलग्न रहे कि केवल मृत्यु निकट आ जाने पर ही स्पेन लौट सके। श्री महाराज के राज्य-सिंहासन पर बैठने के समय फ्रांस से पाँच वर्ष तक के लिए एक सन्धि हो गई थी। परन्तु फ्रांस ने उस सन्धि को तोड़ डाला। अतः प्रान्तों की रक्षा के लिए और प्रान्तों के बैरी का मान-मर्दन करने के लिए श्री महाराज को यहाँ पर बाध्य होना पड़ा। जो कुछ रुपया इस देश के खज़ाने से इस युद्ध में खर्च किया गया है वह सब इस देश की रक्षा और हित के लिए ही किया गया है। देश के कल्याणकारी कार्य्यों के लिए अभी ३० लाख रुपये की और आवश्यकता है। श्री महाराज आशा करते हैं कि आप लोग प्रसन्नता से यह रुपया दे देंगे। स्पेन पहुँचने पर यदि हो सका तो महाराज कुछ रुपया भेजेंगे। ड्यूक ऑव् सेवाय को स्वयं अब इतनी जागीर मिल गई है कि उन्हें नेदरलैण्ड का शासन-भार सँभालने का अवकाश नहीं है। महाराज के पुत्र डॉन कारलो अभी छोटे हैं। वह भी इस भार को ग्रहण नहीं कर सकते। इसलिए श्री महाराज ने अपनी सुशीला बहिन मार्ग-रेट परमा को नेदरलैण्ड का शासन-भार सौंपा है। नेदरलैण्ड श्रीमती परमा की जन्म-भूमि है। उन्हें यह देश विशेष रूप से प्यारा है। वह इस देश के निवासियों की भलाई का स्वभावतः अधिक ध्यान रक्खेंगी। आजकल समय बुरा आ गया है। बहुत

से देश और विशेषत: इन प्रान्तों के अड़ोस-पड़ोस के देशों में नये-नये अण्ड-बण्ड मतमतान्तर और पन्थ खड़े हो गये हैं। ये सब पन्थ गुनहगारों के सिरताज 'शैतान' के चलाये हुए हैं। इन पन्थों के द्वारा शैतान ने इन अभागे देशों में बड़े झगड़े-बखेड़े खड़े कर दिये हैं जिनके कारण परम-पिता परमेश्वर अत्यन्त क्रुद्ध हैं। श्री महाराज की यह इच्छा है कि इन नये विचारों की महामारी से यह देश पवित्र रहे। श्री महाराज को इस देश के राजा की हैसियत से ईश्वर के सम्मुख सुशासन का उत्तर देना पड़ेगा। इसलिए उनका कर्त्तव्य है कि वह इस देश में धर्म का ह्रास न होने दें। किसी नये धर्म अथवा विचारों के आने से सदा देश में बड़ी गड़बड़ मचा करती है। इसीलिए श्री महाराज की हार्दिक इच्छा है कि वह परमेश्वर और अपने पिता के पुराने पन्थ पर ही दृढ़ रहें। आप लोगों को याद होगा कि राज्य-त्याग करते समय बड़े महाराज ने क्या शब्द कहे थे? उन शब्दों का पालन करने के लिए श्री महाराज ने मार्गरेट को आज्ञा दी है कि 'जिन-जिन क़ानूनों और उपायों का चार्ल्स महाराज ने नये विचारों और पन्थों को नष्ट करने के लिए उपयोग किया था, वे सब फिर से उपयोग में लाये जायँ और जिस तरह भी हो इस देश से इस नये विचारों की बीमारी को सर्वदा के लिए समूल नष्ट कर दिया जाय।' अन्य सब राज्याधिकारियों को भी परमात्मा के इस पवित्र कार्य्य को खूब जोश के साथ करना चाहिए।"

बिशप ऑव् ऐरस की वक्तृत्व शक्ति बहुत प्रसिद्ध थी। आज उसने फ़िलिप की ओर से बोलने में अपनी सारी कला खर्च डाली थी। परन्तु जो बातें नेदरलैण्ड-वासियों के दिलों में

काँटे की तरह खटक रही थीं उनका उस वक्तृता में ज़िक्र तक न आया था। न तो विदेशी सेनाओं के सम्बन्ध में ही कुछ कहा गया और न लोगों पर कर कम करने के सम्बन्ध में ही कोई बात कही गई थी। लोग करों के बोझ से दबे जा रहे थे। तिस-पर तीस लाख रुपये की माँग उनके सामने और रख दी गई। खैर, प्रथा के अनुसार प्रजा के प्रतिनिधियों ने उत्तर देने के पूर्व आपस में चर्चा करने की छुट्टी माँगी। दूसरे दिन फिर दरबार लगा और आरटोयज्ञ प्रान्त के प्रतिनिधियों की ओर से उनके प्रमुख ने पहले उत्तर दिया। आरटोयज़ प्रान्त के लोग बहुत शिष्ट और राजनीतिज्ञ थे। इसलिए उनके प्रमुख ने जो उत्तर दिया वह बड़ा ही सुन्दर, उपयुक्त और राजनीतिज्ञता से भरा हुआ था। उसने फ़िलिप की प्रशंसा करते हुए कहा—

"मेरे प्रान्तवासी सदा से श्री महाराज पर बड़ी श्रद्धा और प्रेम रखते हैं। वर्षों के लगातार युद्ध से जो-जो कष्ट उन्हें झेलने पड़े हैं उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से झेले हैं। श्री महाराज आज जो नई माँग रख रहे हैं उसका अपना भाग भी वे बड़े हर्ष के साथ देने को तैयार हैं। वे श्री महाराज के चरणों पर अपना एक-एक पैसा ही रखने को तैयार नहीं हैं वरन् अपना रक्त भी महाराजके लिए बहाने को सदैव तैयार हैं।" फ़िलिप एगमोण्ट के कन्धे पर बाँह रक्खे खड़ा था और बड़े ध्यान से प्रतिनिधियों का उत्तर सुन रहा था। आरटोयज़ के प्रमुख के वचन सुनकर उसके मुखपर प्रसन्नता झलकने लगी। परन्तु प्रमुख ने बड़ी होशियारी से पलटा खाया। उसने फ़िलिप से बहुत विनती करते हुए कहा—"महा-राज, मेरा प्रान्त यह सब कुछ और इससे भी कुछ अधिक करने

को तैयार है। परन्तु वह बदले में यह चाहता है कि श्री महाराज
सारी विदेशी सेना को एकदम यहाँ से चले जाने का हुक्म दे दें।
अब तो सारे संसार के राष्ट्रों ने मिलकर सन्धि करली है। युद्ध की
कोई सम्भावना नहीं है। फिर ये सेनायें व्यर्थ क्यों रक्खी जायँ?"

यह सुनते ही फ़िलिप के चेहरे से प्रसन्नता का सब रंग एक-
दम उड़ गया और वह झुंझलाकर कुरसी पर बैठ गया। उसके
चेहरे का रंग बार-बार बदलता था। बड़ी देर तक वह कुरसी पर
चुपचाप बैठा कुछ सोचता रहा। दूसरे प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने
आरटोयज वालों से भी अधिक साफ़ शब्दों में फ़िलिप से वही
बातें कहीं। रुपया देना सबने मंजूर किया। परन्तु विदेशी सेनाओं
के एकदम चले जाने की शर्त रक्खी। फ़िलिप सिंहासन के पास
बैठे हुए एग्मोण्ट इत्यादि सरदारों से सक्रोध कहने लगा—"हाँ,
हाँ, मैं खूब समझता हूँ। सारे के सारे प्रान्त बड़े राजभक्त हैं!"
इन उत्तरों के सिवाय सारे प्रान्तों की पंचायतों की ओर से एक
अरज़ी भेजकर भी फ़िलिप शिकायत की गई कि 'विदेशी
सेनाओं के सिपाही प्रति-दिन नगरों और ग्रामों में लोगों को
सताते, लूटते, मारते और बखेड़े खड़े करते हैं, जिनसे उकता कर
बहुत से नगरों और ग्रामों के मनुष्य अपने-अपने घर तक छोड़
कर भाग गये हैं।' इस अरज़ी पर आरेञ्ज के शहज़ादा विलियम,
काउण्ट एग्मोण्ट इत्यादि बहुत से बड़े-बड़े देशी सरदारों के भी
हस्ताक्षर थे। दरबार समाप्त होने के पहले ही यह अरज़ी फ़िलिप
के हाथों में रख दी गई। फ़िलिप क्रोध से वैसे ही जल रहा था।
अरज़ी पढ़ते ही आग-बबूला हो गया। एकदम अपनी कुरसी से
उठा और गुस्से से काँपता, यह कहता हुआ वहाँ से चला गया कि

'मैं भी तो एक दूसरे स्पेन का रहने वाला हूँ। क्या तुम लोग चाहते हो कि मैं भी अपना राज-पाट छोड़ कर यहाँ से चलता बनूँ ?' फ़िलिप के चले जाने पर ड्यूक ऑव् सेवाय ने सरदारों और प्रतिनिधियों को इस प्रकार राजा का अपमान करने पर खूब फटकार बताई।

फिलिप जानता था कि क्रोध दिखाने से कुछ काम न निकलेगा। कुछ दिन बाद पंचायत के पास फिलिप ने नरम शब्दों में सन्देशा भेजा कि विदेशियों के हाथ में देश का शासन सौंपने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। मैंने डचेज़ ऑव् परमा को इसी लिए शासन-भार सौंपा है कि वह इसी देश की रहने वाली हैं। स्पेन की सेना नेदरलैंण्ड में केवल देश को बाहर के हमलों से रक्षा करने के लिए रक्खी जाती है। कुल तीन-चार हज़ार विदेशी सिपाही देश में रह गये है। उन्हें फ़ौरन ही इसलिए नहीं हटाया जा सकता कि तन्ख्वाह बहुत चढ़ गई है। परन्तु मैं उनका वेतन इस देश के खजाने से नहीं दूँगा। स्पेन पहुँच कर वहाँ से रुपया भेज दूँगा। अभी डॉन कारलास भी नेदरलैण्ड आने वाला है। उसकी रक्षा के लिए भी इन सेनाओं की आवश्यकता पड़ेगी। फिर भी यदि पंचायत की ओर से पहले से कह दिया गया होता तो मैं बड़ी प्रसन्नता से इस सेना को अपने जहाज़ों पर लौटा ले जाता। परन्तु अब इतनी जल्दी तो प्रबन्ध होना असम्भव है। यद्यपि ये सेनायें नैदरलैण्ड के हित के लिए ही रक्खी जाती हैं परन्तु मैं उनका व्यय अपने पास से दूँगा। इसी देश के आरेञ्ज विलियम और काउण्ट एग्मौण्ट इन दो सरदारों को मैं इन सेनाओं का अध्यक्ष बनाता हूँ और वचन

देता हूँ कि अधिक से अधिक ये सेनायें तीन-चार मास में इस देश से हटाली जायँगी।

जिस दिन यह सभा हुई थी उसी दिन फिलिप ने देश के मुख्य न्यायालय के अधिकारियों को चिट्ठी लिखी कि धार्मिक विषय में मत-भेद रखने वालों को ढूँढ-ढूँढकर फांसी पर चढ़ाया जाय। जिन्दा जलाने, जिन्दा गाड़ने अथवा फांसी पर चढ़ाने के सम्बन्ध में जितने क़ानून बने हैं उनका अक्षरशः पालन किया जाय। किसी पर रियायत न की जाय। जो न्यायधीश अपराधियों को छोड़े अथवा रियायत करे उसको भी कठिन दण्ड दिया जाय।" फिलिप ने प्रतिनिधियों की फिर एक दूसरी सभा करके नम्र भाव से नेदरलैण्ड के लोगों से विदा ली। परन्तु आरेन्ज इत्यादि कुछ सरदारों के प्रति वह अपना क्रोध न छिपा सका। फ्लशिंग से शाही जहाजों का बेड़ा रवाना होने वाला था; डचेज़ परमा, ड्यूक ऑव् सेवाय और अन्य बहुत से सरदार फिलिप को वहां तक पहुँचाने गये थे। विलियम ऑव् आरेन्ज भी गया था। जब फिलिप अपने जहाज़ पर चढ़ने लगा तो उसकी आँखें विलियम पर पड़ीं। उसको देखते ही वह उबल पड़ा और बड़े क्रोध से बोला "तूने मेरा सारा काम बिगाड़ दिया।" विलियम ने बड़े नम्र भाव से कहा "मैंने क्या किया? जो कुछ हुआ है पंचायतों की राय से।" यह सुनकर फिलिप क्रोध से पागल हो गया और विलियम की कलाई ज़ोर से पकड़ कर चिल्लाया—"पंचायत! पंचायत ने नहीं...तूने...तूने...तू ने मेरा काम बिगाड़ा।"

इस प्रकार विलियम सब के सामने अपमानित होकर फिर

जहाज़ पर फ़िलिप से मिलने न गया। यदि वह जहाज़ पर चढ़ गया होता तो कहीं उसे जन्म भर ही स्पेन के बन्दीगृह की हवा न खानी पड़ती ? उसने बड़े विचार से काम लिया। विलियम बड़ा ही विचारशील मनुष्य था। अपनी विचार-शीलता के कारण ही वह अपने जीवन में बड़े-बड़े संकटों से बचा था। क्रोध में निकले हुए फ़िलिप के इस समय के वचन बिलकुल सच्चे हुए। मानो फ़िलिप की अन्तरात्मा ने पहिचान लिया था कि मेरे पैशाचिक कार्य्यों को मिट्टी में मिलाने वाला यही विलियम ऑव् आरेञ्ज है। फ़िलिप ने स्पेन पहुँचते ही धर्म के नाम पर अत्याचार का ताण्डवनृत्य शुरू कर दिया। लूथर के अनुयायी अथवा उनसे कुछ भी सहानुभूति रखने वाले लोग पकड़-पकड़कर जलाये जाने लगे। फ़िलिप खूब ठाट-बाट से अपने शाही कुटुम्ब, मन्त्रिगण और अन्य देशों के राजदूतों को ले दरबार लगाकर बैठता था और लूथर के अभागे अनुयायी ला-लाकर उसके सामने जलाये जाते थे। एक नौजवान सरदार एक दफ़ा इसी प्रकार पकड़कर लाया गया। फ़िलिप के सिंहासन के निकट से जब लोग उसे खींच कर ले चले तो उसने फ़िलिप से कहा—"क्या आप अपनी आँखों के सामने मुझे यों जीवित जल जाने देंगे ?" नर-पिशाच फ़िलिप ने उत्तर दिया "यदि मेरा पुत्र भी तेरी तरह बदमाश होता तो मैं उसे भी अपने हाथों जला देता।" फ़िलिप का नया विवाह फ्रांस की राजकुमारी से बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। विवाहोत्सव में सुधारकों की मशालें बनाकर रोशनी की गई! आह, मनुष्य भी कितना पाषाण-हृदय हो सकता है!

डचेज़ ऑव् परमा चार्ल्स की सब से बड़ी पुत्री थी पर उसका जन्म विवाहिता स्त्री से नहीं हुआ था। मार्गरेट को चार्ल्स की चाची ने पाला पोसा था और पीछे से उसको चार्ल्स की बहिन ने पाला जो हँगरी की महारानी और नेदरलैंड की नवाब थी। उसने मार्गरेट को घोड़े पर चढ़ना और शिकार खेलना सिखलाया। चार्ल्स ने पोप को खुश करने के लिए मार्गरेट का विवाह बारह वर्ष की अवस्था में २७ वर्ष के एक ऐयाश से कर दिया। वह पहले ही वर्ष में मर गया। फिर चार्ल्स ने एक दूसरे कुटुम्ब से नाता जोड़ने के अभिप्राय से उसका विवाह बीस वर्ष की अवस्था में १३ वर्ष नवयुवक आक्टेवो से कर दिया। मार्गरेट को आक्टेवो बिलकुल पसन्द नहीं था इसलिए वह उसका तिरस्कार किया करती थी। आक्टेवो निराश होकर चार्ल्स के साथ लड़ने चला गया। एक दफ़ा चार्ल्स की एक भयंकर लड़ाई का अन्त यह सुनने में आया कि एक बड़े तूफ़ान में चार्ल्स और आक्टेवो दोनों खत्म हो गये। यह समाचार पाकर मार्गरेट के हृदय में बड़ी ग्लानि और दुःख हुआ कि हाय, मेरे ही कारण दुखी हो आक्टेवो ने घर-बार छोड़कर लड़ाई की शरण ली थी। फिर जब समाचार झूठा निकला और चार्ल्स के साथ आक्टेवो भी लौटकर आया तब मार्गरेट ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया और फिर उनके दो बच्चे भी पैदा हुए।

इस समय फ़िलिप के मार्गरेट ऑव् परमा को शासन-भार सौंपने के कई कारण थे। वह यह समझता था कि मार्गरेट राज पुत्री है और नेदरलैंड में ही पैदा हुई है इसलिए सब इस निर्वाचन से प्रसन्न होंगे। मार्गरेट के पति को भी वह कई झगड़ों

के कारण प्रसन्न करना चाहता था। परन्तु सब से मुख्य कारण
यह था कि फ़िलिप नेदरलैंड के शासन की बागडोर वास्तव में
विशप ऑव् ऐरस के हाथ में देना चाहता था और डचेज़ ऑव्
परमा ही एक ऐसी व्यक्ति थी जो इस पादरी के हाथ की कठ-
पुतली बनकर खेलने को तैयार थी। जिस समय वह इस देश
कि गद्दी पर बैठी उसकी अवस्था २७ वर्ष के लगभग होगी।
उसे धार्मिक पाखण्डों में बड़ा विश्वास था। उसे कैथलिक धर्म
पर विश्वास न करने वालों से बड़ी घृणा थी और वह अपने
बाप के धर्म-सम्बन्धी 'खूनी कानूनों' को ईश्वर की सम्मति से
बनाये गये कानून समझती थी। वह नित्य पूजा-पाठ करती, प्रति
पवित्र सप्ताह एक दर्जन कुँवारी लड़कियों के चरण धोती और
बड़ी धूम-धाम से उनके विवाह करती।

यह तो हुआ नेदरलैण्ड की अधिष्ठात्री का चरित्र। अब तनिक
शासन की मुख्य कार्यकारिणी स्टेट कौंसिल के सदस्यों के चरित्रों
को भी देखिये। बेरलामौण्ट 'आय-व्यय' विभाग का प्रमुख था।
कैथलिक लोग उसको बड़ा सच्चरित्र समझते थे, परन्तु प्रोटेस्टेण्ट
लोगों के मतानुसार वह बड़ा लालची और क्रूर था। इसमें तो
कोई सन्देह नहीं कि बेरलामौण्ट था बहुत बहादुर, राजभक्त
और पोप का कट्टर चेला; वह सदा अपने चारो पुत्रों के साथ
देश के विरुद्ध, राजा की सहायता के लिए प्रस्तुत रहता था।
यदि बेरलामौण्ट ने अपनी तलवार अपने देश विरुद्ध एक
विदेशी राजा के पक्ष में न उठाकर अपने देश के लिए ही उठाई
होती तो उसकी वीरता का गुण-गान आज उसके देश का बच्चा-
बच्चा करता। परन्तु उसने दुर्भाग्य से अपनी वीरता का सदा

अपने देश के विरुद्ध ही उपयोग किया। प्रेसीडेण्ट विग्लियस अपने ज़माने का बड़ा विद्वान् पुरुष था। उसने कई विश्वविद्यालयों में पढ़कर बहुत सी उपाधियाँ प्राप्त की थीं। जब फ्रांस से चार्ल्स ने सन्धि की तब इसको भी प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया था। कहा जाता है कि चार्ल्स को 'खूनी कानून' बनाने में इसने बड़ी सहायता दी थी, यद्यपि डाक्टर यह बात स्वीकार नहीं करता। वह कहता कि मैंने तो चार्ल्स से कह-सुनकर क़ानूनों की कठोरता कम करने का प्रयत्न किया था; परन्तु उसकी इस बात पर विश्वास नहीं किया गया क्योंकि उसके धार्मिक विचार सब अच्छी तरह जानते थे। वह धर्म-कर्म में बड़ा पक्का था। धार्मिक स्वतंत्रता, अर्थात् कैथलिक सम्प्रदाय के अतिरिक्त और किसी सम्प्रदाय में विश्वास रखना वह सबसे बड़ा पाप समझता था। वह उन लोगों को दिन-रात बड़ी गालियाँ सुनाया करता जो गिर्जों में न जाकर घर पर ही ईश्वरोपासना करने के पक्ष में थे। वह कहा करता था—"यदि बे-पढ़े लिखे लोग अपने कमरों के द्वार बन्द कर एकान्त में प्रार्थना करने बैठेंगे तो सारा देश नष्ट हो जायगा। 'शैतान' सबकी आत्माओं पर कब्ज़ा कर लेगा। इन सब आपदाओं से मनुष्यमात्र को तो 'ईसा के गडरिये' पादरी लोग ही बचाये रख सकते हैं। धार्मिक स्वतन्त्रता बिलकुल वितण्डा है।" डाक्टर का बुढ़ापे में स्वयं 'ईसा का गडरिया' बनने का इरादा था, इसलिए स्वभावतः उसे चिन्ता थी कि कहीं 'गडरियों' की रोज़ी ही न उठ जाय।

कौंसिल का तीसरा सदस्य विलियम ऑव् आरेञ्ज था। विलियम ऑव् आरेञ्ज उन पुरुष-रत्नों में से था जिनकी मनुष्य

समाज सदा ही पूजा करेगा। उसने अपने देश और संसार के लिए क्या किया यह तो आगे चलकर मालूम होगा। अभी यहाँ पर नेदरलैण्ड के इतिहास-गगन में उगनेवाले इस सूर्य का हम कुछ परिचय देते हैं। विलियम का जन्म नसाऊ के राज्य-घराने में हुआ था। नसाऊ वंश पहले-पहल १२वीं सदी में इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। उसी शताब्दी में इसकी दो शाखायें हो गईं। बड़ी शाखा को जर्मनी का राज्य मिल गया और छोटी परन्तु अधिक प्रख्यात शाखा पर नसाऊ डिलनबर्ग का राज्य रहा। पीछे से नसाऊ की छोटी शाखा नेदरलैण्ड में जा बसी और वहाँ उसे बहुत सी जागीर और अधिकार भी मिले। नसाऊ का यह राज-वंश वीरों का वंश कहा जाता था। विलियम आरेञ्ज का जन्म इसी वीर वंश में हुआ था। उसका पिता विलियम 'अमीर' के नाम से प्रख्यात था। परन्तु वह सन्तति में ही अमीर था। उसके पाँच पुत्र और सात पुत्रियाँ थीं। विलियम ऑव् आरेञ्ज की माँ का नाम जूलियाना था। वह बड़ी ही सच्चरित्र, धार्मिक विचारवाली, भक्तिभाव-पूर्ण, देवी थी। उसने अपना भक्ति-भाव पुत्रों में भी भर दिया था। उसने दुख—दर्द, कष्ट-आपदाओं में सदा अपने बच्चों को परमात्मा पर विश्वास रखना सिखाया था। जब उसके पुत्र बड़े हो गये तब भी वह उनको पत्रों में बराबर लिख लिखकर बच्चों की तरह समझाया करती थी कि 'बड़े से बड़े कष्टों में परमात्मा पर ही भरोसा रखना।' संसार के महान् पुरुषों की माताओं में जूलियाना का बड़ा उच्च स्थान है। उसके चार पुत्र विलियम, एडॉल्फस, हेनरी और जॉन सभी बड़े वीर और देश-भक्त थे।

सन् १५४४ ई० में विलियम का चचा निःसन्तान मर गया और विलियम को आरेञ्ज की जागीर १२ वर्ष की अवस्था में मिली। परन्तु विलियम ब्रसेल्स में पढ़ता था। लोग समझते थे कि विलियम राजा के दरबार में रहकर शिक्षा प्राप्त करेगा और फिर बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़कर नाम कमायेगा। अथवा कहीं राजदूत या नवाब बनकर मौज से जीवन बितावेगा। बहुत छोटी अवस्था में विलियम चार्ल्स के घरों में रहने के लिए बुला लिया गया। चार्ल्स मनुष्य को परखने में बड़ा चतुर था। उसने विलियम को देखते ही समझा कि बड़ा होनहार लड़का है। १९ वर्ष की अवस्था में ही विलियम चार्ल्स का बड़ा अन्तरंग मित्र बन गया। वह सदा चार्ल्स के साथ रहता। बड़े-बड़े मनुष्यों से परामर्श करते समय भी चार्ल्स विलियम को नहीं हटाता था, न उससे कोई बात छिपाता था। प्रायः उससे बड़े गम्भीर विषयों तक में सलाह लेता। उस समय के संसार के इतिहास में जो नाटक खेला जा रहा था उसका अन्दर से सब हाल अच्छी तरह देखने और समझने का विलियम को खूब अवकाश मिला। बड़ा होते ही विलियम बड़े पदों पर नियुक्त किया जाने लगा। ड्यूक ऑव् सेवाय की अनुपस्थिति में चार्ल्स ने विलियम को फ्रान्स के सीमा-प्रान्तों में सेनाधिपति बनाकर भेजा। इस पद के लिए सब बड़े-बड़े सरदार—यहाँ तक कि काउण्ट एगमोण्ट तक लालायित हो रहे थे। विलियम को अवस्था इस समय २१ वर्ष की भी नहीं थी पर चार्ल्स ने उसे ही चुना। विलियम ने भी अपने कार्य्य से दिखा दिया कि वह इस पद के सर्वथा योग्य था।

राज्य-त्याग करते समय भी चार्ल्स वलियम का ही कन्धा

पकड़कर खड़ा हुआ था। मानो वह कह रहा था कि विलि-यम के सहारे नेदरलैण्ड का राज्य निर्भर है। चार्ल्स के बाद विलियम आरेञ्ज का फ़िलिप से सम्बन्ध हुआ। एक समय फ़िलिप फ्रान्स से सन्धि करने के लिए इतना उत्सुक हो गया था कि उसने विलियम से बुलाकर कहा कि 'सबसे बड़ी सेवा जो संसार में तुम मुझे कर सकते हो, यह है कि जैसे भी बने फ्रान्स से सन्धि करवा दो। मैं स्पेन लौटने को बड़ा उत्सुक हो रहा हूँ।" उस समय विलियम ने ऐसी राजनीतिज्ञता से काम लिया था कि फ्रान्स को घुटने टेक कर सन्धि स्वीकार करनी पड़ी। इस एक उदाहरण से ही विलियम की राजनीतिज्ञता का पता चलता है। जिस समय फ़िलिप स्वयं सन्धि के लिए इतना उत्सुक हो रहा हो कि अपने राजदूत को बुलाकर कहे कि "ऐ राजदूत! मैं सन्धि के लिए इतना उत्सुक हूँ कि यदि फ्रान्स ने सन्धि के लिए प्रार्थना न की तो मैं स्वयं फ्रान्स से सन्धि के लिए प्रार्थना करूँगा," उस समय शत्रु को हार की शर्त्तों पर सन्धि करने के लिए मजबूर कर देना विलियम की प्रचण्ड राज-नीतिज्ञता नहीं तो और क्या थी?

उस ज़माने में जब सन्धि होती थी तो दोनों राजा एक-दूसरे पक्ष के अच्छे-अच्छे कुछ सरदार चुनकर अपने साथ ज़मानत के तौर पर ले जाते थे कि जिससे सन्धि की शर्तें शीघ्र ही पूरी कर दी जायँ। फ्रान्स का राजा, ऐलवा इत्यादि के साथ आरेञ्ज को भी चुनकर ले गया था। एक दिन राजा हेनरी और आरेञ्ज दोनों जंगल में अकेले शिकार खेल रहे थे। बातों-बातों में हेनरी ने विलियम से कहा—"मेरे देश में दिनपर दिन प्रोटे-

स्टेस्टेंट लोग बढ़ते जा रहे हैं। मेरा जी इनसे बहुत घबराता है। यह केवल धार्मिक क्रान्ति ही नहीं है। इसमें राजनैतिक अंश भी है। देखो न बड़े-बड़े सरदार भी शामिल होते जाते हैं। अब मैंने अपने भाई फ़िलिप से सन्धि कर ली है। अब मैं और वह दोनों मिलकर शीघ्र ही इन दुष्टों को नष्ट करने का उपाय सोच रहे हैं।" फ़िलिप ने इस सम्बन्ध की सारी बातें तय करने के लिए ऐलवा को भेजा था। हेनरी बेचारे को क्या मालूम था कि आरेञ्ज को इस गुप्त मन्त्रणा का बिलकुल पता नहीं था और आरेञ्ज को यह भेद बताकर वह अपने और फ़िलिप के इरादों की जड़ में कुल्हाड़ी मार रहा था। इन रहस्यों को जानकर आरेञ्ज का जीवन ही बदल गया। मानों उसने एक क्षण में निश्चय कर लिया कि इन नर-पिशाच राजाओं के अत्याचार से जनता की रक्षा करना ही आज से मेरे जीवन का उद्देश्य होगा। फिर हेनरी ने आरेञ्ज के सब तरकीबें भी बताईं जिनके द्वारा कैथलिक सम्प्रदाय में विश्वास न करने वाले लोगों का पता लगाया जाया करेगा और बड़े से बड़े सरदार तक को बिलकुल रियायत न दिखाकर प्राण-दण्ड दे दिया जायगा। हेनरी ने यह भी कहा कि इस काम के लिए नेदरलैण्ड में स्पेन की सेनायें बहुत उपयोगी होंगी। इस रहस्य को सुनकर विलियम आरेञ्ज के मन की काया-पलट हो चुकी थी, फिर भी उसने अपने हार्दिक-भाव अपने चेहरे से हेनरी को प्रगट नहीं होने दिये। चुपचाप शान्त इस तरह सारी बातें सुनता रहा मानो उसने कोई असाधारण आश्चर्यजनक बात नहीं सुनी। इसी घटना के कारण विलियम आरेञ्ज का नाम 'मौन' विलियम पड़ गया। विलियम ऑव् आरेञ्ज लिखता

है—"राजा हेनरी से यह रहस्य सुनकर आश्चर्य और क्रोध से मेरा सिर भन्नाने लगा। मैंने एक क्षण में ही समझ लिया कि मेरे देश में स्पेन से भी अधिक भयंकर अत्याचार शुरू होने वाला है। यदि कोई किसी मूर्ति की ओर तनिक आश्चर्य से भी निगाह उठाकर देखेगा तो वह तुरन्त ही अग्नि में झोंक दिया जायगा। मुझे इन नये सम्प्रदाय वाले लोगों के धार्मिक विचारों से तो प्रेम नहीं था परन्तु इतने सत्पुरुषों को मैं व्यर्थ सूली पर चढ़ते अथवा अग्नि में जलते भी नहीं देख सकता था।" विलियम ने इसी घटना के बाद संकल्प कर लिया कि जहाँ तक मुझसे हो सकेगा, मैं प्रजा को अत्याचार से रक्षा करूँगा। कुछ दिन बाद उसने हेनरी से नेदरलैण्ड जाने की छुट्टी ली और नेदरलैण्ड पहुँचकर स्पेन की सेनाओं को देश से तुरन्त निकालने के सम्बन्ध में एक बड़ा भारी सार्वजनिक आन्दोलन उठाया। स्पेन जाते समय फिलिप ने उससे ताकीद की थी कि 'अपनी जागीर में रोमन कैथलिक सम्प्रदाय के विरुद्ध चलने वालों को खूब कठोर दण्ड देना। किसी पर रियायत न करना। किसी को न छोड़ना। ध्यान रखना कि न्यायाधीश लोग उचित सख्ती करते रहें। किसी पर दया न दिखावें।' राजा ने विलियम को कुछ ऐसे सरदारों के चुप-चाप नाम भी बताये थे जिनकी उसे नये सम्प्रदायों में मिल जाने की गुप्त-रूप से खबर मिली थी और जिनको शीघ्र से शीघ्र मरवा डालने की उसने आज्ञा दे दी थी। विलियम लिखता है—'मैंने परमात्मा के वचनों को राजा के वचन से अधिक समझ उन सब सरदारों को चुपके से बुलाकर बता दिया कि तुम्हारा जीवन खतरे में है। तुरन्त ही देश छोड़कर भाग जाओ।"

फिलिप के स्पेन जाने के समय विलियम की उम्र २७ वर्ष की थी। उसकी स्त्री का सात वर्ष जीवित रहकर देहान्त हो चुका था। उससे एक लड़का और लड़की थे। यह स्त्री एक बड़े अमीर की बेटी थी। विलियम को उसके घर से भी काफी जागीर मिली थी। अभी तक विलियम ने आनन्द से केवल राजसी जीवन ही बिताया था। उसने आने वाली आपदाओं को कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। उसके पास धन, बल, मान सब कुछ था। आगे चलकर जिन नवीन धर्म-सुधारक सम्प्रदायों का वह कट्टर पक्षपाती बन गया उनपर भी उसका कोई विशेष प्रेम नहीं था। नाम के लिए वह कैथलिक पन्थ पर विश्वास करता था। आवश्यकता के समय पूजा-पाठ भी सनातन कैथलिक पन्थ की प्रथा के अनुसार ही करता था। परन्तु वास्तव में वह धार्मिक झगड़ों से दूर भागता था। अपनी जागीर में उसने लोगों को कैथलिक पन्थ पर ही चलने की आज्ञा निकाली थी परन्तु किसी अन्य पन्थावलम्बी की जान लेने के वह बिलकुल विरुद्ध था। उस जमाने में नेदरलैण्ड में कोली, चमार, घसियारे ही प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय में सम्मिलित होते थे बड़े आदमी उससे प्रायः अलग ही रहते थे। अन्य सरदारों की भांति विलियम भी रोमन कैथ-लिक ही था। उसने फिलिप के अत्याचारों से लोगों की रक्षा करने का संकल्प इसलिए नहीं किया कि उसे लोगों के धार्मिक विचारों से कुछ प्रेम था; धार्मिक बखेड़ों से तो वह सदा कोसों दूर रहता था वरन् इतने निरपराध मनुष्यों की धर्म के नाम पर हत्या उसे असह्य थी। जो विचार उसकी माता ने बचपन से उसके अन्दर भर दिए थे, यदि उनको प्रोटेस्टेण्ट विचारों का बीज मान

लें तो भी यही मानना पड़ेगा कि अभी तक विलियम में इस बीज का कोई अंकुर नहीं निकला था। दिन-रात मज़े की जिन्दगी बिताता था; खेल-तमाशे, नाचरंग, दावत, शिकार और राजकीय कार्यों में ही उसका सारा समय जाता था। उस के घर पर मेहमानों की बहुत ख़ातिर होती थी। जब राजा नेदरलैण्ड में रहते थे तो राजा के सब निजी। मेहमान विलियम के नसाऊ राज-भवन में ही ठहराये जाते थे। वहाँ विलियम के खर्च पर उन सब की खातिर होती थी। राजा अपने मेहमानों की खातिरदारी करने में अपने को असमंथ समझता था। विलियम के घर चौबीस सरदार और अट्ठारह बड़े-बड़े घरों के नवयुवक रोज इन मेहमानों की सेवा के लिए हाज़िर रहते थे। रसोईघर इतना विशाल था कि एक दिन केवल ख़र्च कम करने के विचार से अट्ठाईस उस्ताद रसोइये निकाल दिये गये थे। जर्मनी के सारे राज-परिवार अपने रसोइयों को काम सिखाने के लिए विलियम के रसोईघर भेजते थे। एक दफ़ा फ़िलिप ने विलियम के पास से एक रसोइया स्पेन बुलवाया था। रात-दिन उसके घर पर दावतें ही उड़ा करतीं। किसी समय कोई आवे, उसको खाना तैयार ही मिलता था। नई-नई और कीमती शराबें उड़तीं। गरीब-अमीर सबकी उसके यहाँ एक सी ख़ातिर होती थी और सभी से वह अच्छी तरह मिलता। अभिमान का उसमें नाम न था। भूलकर भी कभी किसी से अपशब्द नहीं बोलता। नौकरों तक से सभ्य व्यवहार करता था। सब उसपर स्नेह रखते थे और अपनी मीठी वाणी से वह दरबार में जिससे जो चाहता करा लेता। उसके शिष्ट व्यवहार पर सभी जान देते थे। उसका खर्च केवल दावतों

और शिकार में ही नहीं होता था, बड़े-बड़े ओहदों पर नियुक्त होने के कारण भी उसका बड़ा व्यय होता था। जब वह सीमा प्रान्त पर सेनाधिपति नियुक्त हुआ था, तब उसे तीन सौ रुपये मासिक मिलता था। परन्तु तीन सौ में उसके नौकरों का वेतन भी पूरा नहीं हो पाता था। राजा फरडीनेण्ड को ताज लेकर जाने और पेरिस में राजा हेनरी का सन्धि के समय मेहमान रहने में उसका पन्द्रह लाख खर्च हो गया था। ग्रेनविले के कथनानुसार इस छोटी-सी उम्र में इतनी जागीर होते हुए भी उसपर करीब आठ-नौ लाख का कर्जा था परन्तु यह आठ-नौ लाख का कर्ज उसका दिवाला नहीं निकाल सकता था। उसे अपनी जागीर से बहुत आमदनी थी। शाही खज़ाने पर भी उसका बहुत सा रुपया बाक़ी था।

सन् १५६० ई० के प्रारम्भ में विलियम ऑव् आरेञ्ज की यह दशा थी। वह उदार था, विशाल था, शानदार था, धनवान था, समृद्धशाली और बलवान था। इस छोटी उम्र में ही उसने बड़े-बड़े काम कर दिखाये थे। बड़ी-बड़ी उलझी हुई समस्याओं को सफलता से सुलझा चुका था। विलियम बहुत ही सोच-विचार कर काम करता, यही उसकी महानता का सब से बड़ा कारण और रहस्य है। वह जोश में आकर बिना समझे-बूझे कभी कुछ नहीं कर बैठता था। इसीलिए उसने एगमोण्ट की तरह कोई सेण्ट क्विण्टन की लड़ाई नहीं जीती परन्तु हाँ, देश के आने वाले राजनैतिक युद्ध में विजेता अवश्य हुआ। एगमोण्ट तलवार के ज़ोर पर विजय प्राप्त करता था और आरेञ्ज बुद्धि के बलपर। लोगों में कहावत चल गई थी—'आरेञ्ज की बुद्धि; एगमोण्ट की

तलवार'। शत्रु-मित्र सब एक–मुख से उसकी तीव्र बुद्धि की प्रशंसा करते थे। घोर से घोर शत्रु भी उसकी बुद्धिमत्ता, राजनीतिज्ञता और कार्य्य-कुशलता का लोहा मानते थे। आरेञ्ज गुपचुप मौन साध अपना मुँह लटका कर बैठने वाला मनुष्य नहीं था। जब कोई उससे मिलने जाता तो वह खूब हँसता, हँसी मज़ाक करता, गप्पें लड़ाता। उसमें बोलने और लिखने की अच्छी शक्ति थी। इतिहास का भी उसने काफ़ी अध्ययन और मनन किया था। लेटिन, फ्रेंन्च, जर्मन, फ्लेमिश और स्पेनिश पांच भाषायें वह अच्छी तरह जानता था।

डचेज़ ऑव् परमा केवल नाम के लिए सिंहासन पर बैठा दी गई थी। जिस मनुष्य के हाथ में वास्तव में देश की बाग-डोर थी उसका नाम ऐन्थनी पिरेनौट था। उस समय लोग उसको ऐरस के पादरी के नाम से जानते थे। आगे चलकर वह कार्डिनिल ग्रेनविले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कार्यकारिणी की तीन सदस्यों की गुप्त-मण्डली कन्सल्टा का, जो डचेज़ के द्वारा वास्तव में देश पर राज्य करती थी, यही मनुष्य प्राण था। वह जो चाहता था, 'कन्सल्टा' वही करती थी। ऐरस गरीब वंश में पैदा हुआ था। उसका बाप चार्ल्स के यहां एक साधारण नौकर था। परन्तु ऐन्थनी बड़ा चतुर निकला। उसने तीन-चार विश्व-विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की। २३ वर्ष की अवस्था में ही सात भाषाओं का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। शासन और धर्म सम्बन्धी क़ानूनों का भी वह बड़ा ज्ञाता समझा जाता था। चार्ल्स, ट्रेण्ट में उसकी एक वक्तृता सुनकर इतना मुग्ध हो गया कि उसने तुरन्त ही उसे स्टेट कौंसिल का सदस्य बना दिया। बाद को

वह चार्ल्स का इतना प्रिय हो गया कि चार्ल्स उसे बहुत से विश्वास के कार्य सौंपने लगा। निस्सन्देह ऐरस विद्वान और चतुर था। हाजिर-जवाब, मधुरभाषी, हिम्मत वाला, इरादे का पक्का और समय पर सूझ से काम करने वाला भी था। अपने ऊपर वालों को अपने हाथों में रखना और राजाओं को उल्लू बनाना भी उसे खूब [illegible]ता था। जब वह फिलिप से बातें करता तो ऐसा भाव प्रकट करता मानों फ़िलिप और उसके विचार बिलकुल एक ही हैं। फ़िलिप सदा अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ रहता था। बिशप ऐरस फिलिप के विचार ताड़कर उन्हें बड़ी सुन्दर भाषा में कह देता और फिलिप खुश हो जाता था। वह समझता कि मैं जो सोचता हूँ, ऐरस भी वही सोचता और करता है। ऐरस अत्यन्त मधुर धारा-प्रवाह व्याख्यान देने वाला था। परन्तु फिलिप को प्रसन्न करने के हेतु वह भी फ़िलिप की तरह छोटी-छोटी बातों के लिए लम्बे-लम्बे पत्र लिखा करता। कभी-कभी तो तीस-चालीस पृष्ठ के तीन-चार पत्र फ़िलिप के पास एक दिन में ही भेजता। फिलिप को स्वयं पत्र लिखने की बीमारी थी, इस लिए ऐरस के बहुत से लम्बे पत्र पाकर वह प्रसन्न होता था और स्वयं दिन भर क़लम लिए ऐरस की तरह सुन्दर पत्र लिखने का प्रयत्न किया करता परन्तु बेचारा ऐरस को कहाँ पा सकता था? फिलिप ऐरस-जैसे चतुर और विद्वान मनुष्य का क्लार्क होने के भी योग्य नहीं था परन्तु वह अपनी मूर्खता में समझता यही था कि मैं जिधर चाहता हूँ ऐरस को चलाता हूँ। ऐरस के लम्बे-लम्बे ख़तों को फिलिप बड़े ग़ौर से पढ़ता और प्रायः अपनी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करने के लिए उन पर अपनी

राय भी लिख देता था। मज़ा तो यह था कि राय वही होती थी जो ऐरस चाहता था और जिसकी तरफ़ वह अपने ख़तों में इशारा करता था। ऐरस ऐसी होशयारी से काम करता कि उसका मतलब निकल जाता। फ़िलिप बेचारा यही समझ कर ख़ुश रहा करता था कि मैं राय देता हूँ और ऐरस मेरी राय पर चलता है। जो मैं कहता हूँ, वही हो रहा है। परन्तु वास्तव में बात उलटी थी; होता वह था जो ऐरस चाहता था। इस प्रकार ऐरस फिलिप और मार्गरेट दोनों को मूर्ख बना कर अपना उल्लू सीधा कर रहा था।

जान पड़ता है कि राजनीति में ऐरस का एक ही सिद्धान्त था—जैसे बने राजा को प्रसन्न रखना चाहिए। वह निरंकुश शासन का पक्का उपासक था वह कहा करता था कि परलोक में ईश्वर और इस लोक में फ़िलिप केवल दो मालिकों की सेवा करना ही मेरा उद्देश है। वह नेदरलैण्ड की जातीय स्वतन्त्रता का कट्टर शत्रु था। उसने फिलिप को स्पेन लौटने के पहले, पंचायतों को न्योता देते समय बहुत समझाया कि पंचायतों को इकट्ठा करके नये कर के सम्बन्ध में उनसे कुछ भी सलाह लेना उचित नहीं है। उसकी राय थी कि पंचायतों को रुपये-पैसे के सम्बन्ध में कोई भी अधिकार नहीं होना चाहिए। वह प्रायः कहा करता कि युवराज्ञी मेरी ने अपने शासन-काल में पंचायतों से कर के सम्बन्ध में परामर्श करने की प्रथा चलाकर बड़ा झगड़ा खड़ा कर लिया है। जो लोग प्रान्तिक अधिकारों की चर्चा करते थे उन्हें वह 'बकवासी,' 'मक्कार' और जनता को ख़ुश करने के अभिप्राय से बकने वाले कहा करता।

जनता के 'जन्म-सिद्ध अधिकारों' का तो कोई जिक्र ही नेदरलैण्ड में इस समय नहीं था। हाँ, जनता के जन्म-सिद्ध दुःखों की चीत्कार और दासता की जंजीरों की झनकार अवश्य ही चारों ओर सुनाई देती थी। "राजा परमेश्वर की ओर से प्रजा का शासक बन कर आता है," इस सिद्धान्त में ज़रा भी सन्देह करने की उस समय किसी की हिम्मत नहीं हो सकती थी। नेदरलैण्ड-वासियों के कुछ अधिकार अति प्राचीन काल से चले आते थे; ये अधिकार उनके पूर्वजों ने अपना खून बहाकर प्राप्त किये थे। इन अधिकारों को नेदरलैण्ड-वासी किसी प्रकार भी छोड़ने को तैयार न थे। वे अपनी पसीने की कमाई बिना अपनी इच्छा और सम्मति के कर में देने को कैसे तैयार हो सकते थे? वे रोमन कैथलिकों की मूर्खता-भरी बातों पर विश्वास न करने के कारण अग्नि में पड़ने को तैयार न थे। ग्रेनविले का मत इन दोनों बातों में नेदरलैण्ड के लोगों के विरुद्ध था। उसे पंचायतों के कर-सम्बन्धी हस्तक्षेप करने पर बड़ा क्रोध आता था। फ़िलिप से बहुत कह-सुन कर और ज़ोर डाल कर ऐरस ने सन् १५५० ई० में बनाये हुए चार्ल्स के खूनी कानूनों को फिर से जारी करवा दिया था। सार्वजनिक अधिकारों का तो ऐरस क्या सम्मान कर सकता था, उसे 'जनता' शब्द तक से चिढ़ थी। घृणा और तिरस्कार से अक्सर मुँह बनाकर कहा करता—"जनता!...जनता!...जनता! किस चिड़िया का नाम है?" ऐरस के पास रुपया काफी हो गया था। सन् १५५७ ई० में उसके पास लगभग ढाई करोड़ का माल-असबाब और एक लाख नक़द था। फिर भी उसकी तृष्णा कम होने के बजाय

दिन पर दिन बढ़ती ही जाती थी। हमेशा बड़ी बेशर्मी से फ़िलिप से रुपया माँगता ही रहता। एक-दो दफ़ा तो फ़िलिप ने उसे बहुत फटकार भी दिया। यह है उन लोगों का चित्र जिनके हाथ में नेदरलैण्ड का शासन-भार था। नेदरलैण्ड के अमीर-उमरा, और सरदारों का बुरा हाल था। जिस प्रकार विलियम आरेञ्ज रुपया उड़ाया करता था, उसी प्रकार नेदरलैण्ड के और भी सारे सरदार पानी की तरह रुपया बहाया करते थे। जिस ठाट-बाट से आरेञ्ज रहता था, लगभग उसी ठाठ-बाट से एग-मोण्ट भी रहता था। शान करने, ठाट बनाने, दावत देने और नाच-रंग करने में सरदारों में आपस में खूब स्पर्द्धा रहती थी। जिनके पास रुपया होता वे तो अपने पास का रुपया खर्च करते; जिनके पास रुपया नहीं होता, वे कर्ज़ लेते और घर-बार फूँक-कर तमाशा देखते थे। फ़िलिप के नेदरलैण्ड छोड़कर चले जाने पर नाच-रंग और भी बढ़ गये। उसकी मौजूदगी में एक-दो महफ़िलें ही लगती थीं। परन्तु उसके चले जाने पर प्रत्येक अमीर के घर पर एक-एक महफ़िल लगने लगी। इन मह-फ़िलों में खूब शराबें उड़तीं। पीते-पीते लोग बेहोश होकर गिरने लगते थे। विलियम को भी अभी तक नई जवानी की बे-फ़िक्री थी। वह प्रायः इन शराबखोरों के गुलगपाड़ों में भी सम्मि-लित हो जाता था। काउण्ट ब्रेडरोड नाम का एक बड़ा ही फक्कड़ सरदार था। वह रोज़ शराब पीकर खूब चिल्लाता और गालियाँ बका करता। जर्मनी के सरदार भी इन महफ़िलों में अक्सर भाग लेने आते। उनके आने पर शराब का दौर और भी जोरों से चलता था। क्योंकि वे धनी और शराबी मशहूर थे। शराब

तक ही बात खत्म नहीं हुई, आगे भी बढ़ने लगी। अब जुआ भी शुरू हुआ। कम रुपया रखने-वाले सरदार अपनी जायदादें गिरवी रखकर जुआ खेलने लगे। जो जायदादें खो बैठते, वे और भी बेधड़क होकर दुन्द मचाते। पादरियों को गालियाँ सुनाते और कहते कि 'कम्बख़्त मुफ़्त में पड़े-पड़े मज़े करते हैं। न फ़ौज में लड़ने जाते हैं और न और ही कुछ काम करते हैं। इन्हें जागीरों की क्या आवश्यकता है? इनका काम तो केवल माला फिराना और बैठे-बैठे भजन करना है। इनसे जागीर छीनकर फ़ौजी सरदारों को दे देनी चाहिए।' उनसे मालगुज़ारी न माँगी जाय, इस विचार से ये सरदार अक्सर झगड़े-टण्टे भी खड़ा कर देते थे। यूरोप के उन सब देशों में, जहाँ धार्मिक क्रान्तियाँ हुईं, बहुत से सरदार क्रान्तिकारियों में केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने के विचार से ही मिल गये। बिगड़े हुए सरदारों के दाँत गिर्जों की जागीरों पर लग रहे थे। फिर भी नेदरलैण्ड की क्रान्ति को केवल इन स्वार्थी सरदारों की पैदा की हुई क्रान्ति नहीं कह सकते। इन सरदारों ने क्रान्ति में अच्छा भाग लिया, इनके कारण नेदर-लैण्ड में क्रान्ति की आग भी भड़की परन्तु क्रान्ति के कारण और ही थे। नेदरलैण्ड के लोगों की बहुत बुरी दशा हो रही थी; चारों ओर जनता में असन्तोष फैल रहा था; जनता के असन्तोष-सागर में सरदारों का असन्तोष तो केवल एक बूँद के समान था। सोलहवीं शताब्दी भी एक नया सन्देश लेकर आई थी। नई दुनिया अमेरिका का पता लगना, पुरानी दुनिया का नये विजे-ताओं के हाथ में आना, छापेखाने का आविष्कार, ये सब उथल-पुथल मचा देने वाली घटनायें केवल इसीलिए नहीं घटी थीं कि

दुनिया में मनुष्यों पर अत्याचार अधिक अच्छी तरह से किया जा सके।

नेदरलैण्ड के लोग सदा से व्यापार ही करते आये थे। इसलिए उनके विचार और भाव खूब स्वतन्त्र थे। यूरोप के बीचोबीच होने के कारण चारों ओर के देशों के तिजारती माल के साथ-साथ उन देशों के समाचार और विचार भी नेदरलैण्ड में आया करते थे। चार्ल्स के जारी किये हुए खूनी क़ानूनों को लोगों ने सहन तो कर लिया परन्तु माना नहीं था। शहीदों के खून की वर्षा ने नेदरलैण्ड की भूमि को नागरिक और धार्मिक स्वतन्त्रता की खेती के लिए भली-भाँति तैयार कर दिया था। रोज़ सैकड़ों मनुष्य सूली पर चढ़ाये जाते थे। परन्तु एक भी भय से अथवा प्राण के लोभ से अपना मत नहीं बदलता था। उन अज्ञात वीरों के नाम आज कोई भी नहीं जानता। न तो उन बेचारों के नाम किसी ने उनके जीवन में ही जाने होंगे, न अपने विश्वास और स्वतन्त्र विचारों के लिए सूली पर मर मिटने के बाद ही आज उनके नाम कोई लेता है। उन्होंने अपने सिद्धान्तों के लिए जो-जो कष्ट झेले, जो-कुछ सहा, वह किसी निर्मूल हवाई अथवा असत्य बात के लिए नहीं सहा था। उनके लिए सभी सत्य था। उनका अपना विश्वास सत्य था; चार्ल्स और उसके खूनी क़ानून सत्य थे; उनका गला काट लेने वाली तलवार सत्य थी; सूली पर चढ़ जाना सत्य था; पुरुषों का एक-दूसरे का हाथ पकड़े दहकती हुई भट्टियों में घुस जाना सत्य था; वीरता से रमणियों का गाते हुए क़ब्र में ज़िन्दा गड़ जाना भी सत्य था।

नेदरलैण्ड में नवीन विचार बहुत दिनों से फैलने लगे थे।

फ्रांस और जर्मनी से आ-आकर लोग नवीन विचारों का प्रचार किया करते थे। अमीर और ग़रीब दोनों में विभिन्न कारणों से असन्तोष की अग्नि सुलग उठी थी। इसी असन्तोष की दशा में सरकार ने चार्ल्स के 'खूनी कानून' भी जारी कर दिये। इन क़ानूनों के अनुसार किसी को लूथर अथवा उसके किसी साथी की लिखी हुई कोई पुस्तक छापने, रखने अथवा पढ़ने का अधिकार नहीं था; न मेरी तथा अन्य सन्तों की मूर्तियाँ तोड़ने या गिर्जे के बजाय अपने घर में इकट्ठा होकर प्रार्थना करने का अधिकार था। लूथर के विचार रखने वाले मनुष्यों के व्याख्यान सुनने का अधिकार भी नहीं था। धर्म-शास्त्रों का अध्ययन कर चुकने के किसी गुरु द्वारा मिले प्रमाण-पत्र के बिना धर्म-सम्बन्धी बातों पर मत प्रकट करने अथवा उनके सम्बन्ध में चर्चा करने का अधिकार नहीं था। अपराधियों को दण्ड देने की क़ानून में इस प्रकार योजना की गई थी कि यदि अपराधी पश्चाताप दिखाये तो पुरुष होने की दशा में उसका सिर तलवार से उड़ाया जाय; स्त्रियों को जीवित गाड़ दिया जाय। यदि धार्मिक अपराध करने वाले पश्चाताप न करें तो मनुष्य और स्त्रियाँ दोनों को जिन्दा आग में झोंक दिया जाय। अपराधियों का माल और जायदाद हर-हालत में ज़ब्त कर ली जाय। कानून में यह भी लिखा था कि यदि कोई आदमी धार्मिक अपराधियों को छिपाने या किसी प्रकार की सहायता करने का प्रयत्न करेगा अथवा यह जानता हुआ कि अपराधी कहाँ छिपा है न बतलायेगा तो उसको भी प्राण-दण्ड दिया जायगा। यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री पर कोई पादरी सन्देह करे कि उसके विचार नये मत के हैं तो उस स्त्री अथवा पुरुष को

तुरन्त ही शपथ खाकर इन्कार करना चाहिए अन्यथा उसे अपराधी समझ लिया जायगा और प्राण-दण्ड मिलेगा। अपराधियों को पकड़वाने के लिए लोगों को यह लालच भी दिया गया था कि जो कोई किसी अपराधी को पकड़वायेगा उसे, अपराधी की जागीर अथवा धन का आधा भाग—यदि वह सौ पौण्ड से अधिक न होगा—सरकार की ओर से पुरस्कार-स्वरूप दिया जायगा। जो कोई मनुष्य नये पन्थ वालों की गुप्त सभाओं में सम्मिलित होकर सभाओं की ख़बर सरकार को देगा वह सभाओं में सम्मिलित होने के कारण अपराधी नहीं समझा जायगा, न उसे किसी प्रकार का दण्ड ही मिलेगा। जजों और अन्य अधिकारियों को भी कड़े शब्दों में साफ़-साफ़ बता दिया गया था कि यह न समझ लिया जाय कि क़ानून केवल प्रजा को डराने के लिए ही जारी किये गये हैं; न क़ानूनों को बहुत सख़्त समझ कर सज़ायें ही कम अथवा नरम दी जायँ। जिस अपराध के लिए क़ानून में जो सज़ा है वही दी जाय। क़ानून में लिखी हुई सज़ा को ज़रा भी कम करने का अधिकार किसी न्यायाधीश को नहीं है। जो न्यायाधीश दया दिखायेगा, अथवा जो अधिकारी ऐसे अपराधियों को छोड़ देने की हमसे प्रार्थना करेगा, तुरन्त बरख़ास्त कर दिया जायगा और भविष्य में भी फिर कभी किसी पद पर नियुक्त न हो सकेगा। सज़ा अलग मिलेगी। ये सब हिदायतें फ़िलिप ने बड़े जोरदार शब्दों में अपने हाथ से लिखकर स्वयं सब सरदारों और अधिकारियों के पास भेजी थीं। गद्दी पर बैठने के बाद ही फ़िलिप ने नेदरलैण्ड को क़ानूनों का यह उपहार भेंट किया था। अधर्म पर चढ़ाई होने वाली थी, इसलिए धर्म की

सेना बढ़ाने की भी फ़िलिप को आवश्यकता मालूम हुई। पोप को लिखकर उसने नेदरलैण्ड में तीन नये महन्तों की गद्दियाँ स्थापित करने की आज्ञा ले ली। कार्य को भली-भाँति सफल बनाने के लिए यह भी निश्चय हुआ कि स्पेन की जो सेनायें नेदरलैण्ड में मौजूद हैं, वे अभी वहीं रहें। सेना थी तो केवल चार हज़ार सिपाहियों की ही, परन्तु स्पेन के सैनिक बड़े उद्दण्ड और छटे हुए साहसी जवान थे। उनके नेदरलैण्ड में रहने से लोगों पर धाक जमी हुई थी।

---

(५)

आन्दोलन

नेदरलैण्ड के सरदारों और नगरों को प्राचीन काल से बहुत से अधिकार और स्वतंत्रता मिली हुई थी। इस देश की गद्दी पर बैठने वाले राजा-गण प्रजा के इन अधिकारों को गद्दी पर बैठने के समय फिर से स्वीकार किया करते थे। इसी प्रथा के अनुसार फ़िलिप ने भी राज्याभिषेक के समय लोगों के इन अधिकारों को अक्षय माना था। इन अधिकारों के अनुसार सरदारों की पंचायतों और नागरिकों की सम्मति के बिना पुराने स्थापित मठों से अधिक न तो नेदरलैण्ड में नये मठ ही स्थापित किये जा सकते थे और न महन्तों की संख्या ही बढ़ाई जा सकती थी; न तो राजा किसी मनुष्य को बिना साधारण अदालत में बाक़ायदा मुक़द्दमा चलाये दण्ड दे सकता था और न विदेशियों को ही किसी पद पर नियुक्त कर सकता था। यदि राजा नागरिकों के इन अधिकारों को न मान कर स्वेच्छाचार करे तो लोगों को अधिकार था कि वे राज-भक्ति की सौगंध की चिन्ता न करके जिस प्रकार चाहें, राजा से व्यवहार करें। स्वतंत्रता और स्वाभिमान की इस हवा में पले हुए नेदरलैण्ड के लोगों पर जब यह अन्याय-पूर्ण 'खूनी क़ानून' लगाये गये; जिनकी सम्मति बिना एक भी नया मठ स्थापित नहीं किया जा सकता था, उनको जब एकदम तीन महामठों और पन्द्रह छोटे मठों के स्थापित हो जाने

की एकाएक सूचना मिली; जब न्याय जैसी महान् और पवित्र वस्तु क्षुद्र-हृदय महन्तों के हाथ में—जिनमें बहुत से तो विदेशी थे—दे दी गई, तो नेदरलैण्ड में एक छोर से दूसरे छोर तक खलबली मच उठी। ग़रीब और अमीर सभी के हृदयों पर एकसी चोट पहुँची। लोगों ने इन सारी बातों की जड़ बिशप ऑव् ऐरस को ही समझा। इसी समय से ऐरस लोगों का घृणा-पात्र बना और दिन पर दिन आगे लोगों के हृदय से गिरता ही गया। सच बात तो यह थी कि फ़िलिप ने ऐरस से नये मठों की नेदरलैण्ड में स्थापना करने के सम्बन्ध में कोई सलाह नहीं ली थी। चुपचाप पोप से सलाह करके मठ स्थापित कर दिये थे। फ़िलिप जानता था कि ऐरस बड़ा लोभी है। नये मठों के स्थापित होने से उसकी आमदनी कम हो जाने का डर है, इसलिए वह कदापि यह योजना पसन्द न करेगा। परन्तु लोगों को इन भीतरी बातों का क्या पता था? वे ऐरस को ही सारे अन्याय की जड़ समझते थे। सारा दोष उसी के सिर थोपा गया। ऐरस के सम्बन्ध में लोगों का ऐसा विचार होना कोई अस्वाभाविक अथवा आश्चर्य की बात नहीं थी क्योंकि वही नये शासन का अधिपति बनाया गया था और बड़े जोश के साथ उस नई व्यवस्था का समर्थन किया करता था। नेदरलैण्ड के लोगों ने एक स्वर से नई व्यवस्था के विरोध में आवाज़ उठाई। इस आन्दोलन का अगुआ शाहज़ादा आरेञ्ज हुआ। आरेञ्ज स्वयं तो रोमन कैथलिक पन्थ में विश्वास रखता था, परन्तु वह अन्याय होते किसी पर भी न देख सकता था। उसे मालूम था कि फ़िलिप नेदरलैण्ड में धर्म के नाम पर भयंकर अत्याचार करने का निश्चय कर चुका है। मठों की योजना-

अत्याचार की पहली सीढ़ी है। वह अच्छी तरह समझता था कि मठ और महन्त फिलिप के आने वाले अत्याचारों की वह मशीनें हैं जिनके द्वारा आगे चलकर देशवासियों को पीसा जायगा। उसने डचेज़ और ग्रेनविले दोनों ही के सामने नये मठों की इस नई व्यवस्था का घोर विरोध किया। फिलिप को भी उसने इस सम्बन्ध में पत्र लिखा। सरदार एगमोएट और बरघन ने भी आरेञ्ज का साथ दिया। सरदार बेरलामोएट ने भी पहले तो आरेञ्ज का पक्ष लिया। परन्तु बाद में डचेज़ परमा ने जब उसे सुझाया कि नये मठ स्थापित होने से तुम्हारे लड़कों को अच्छी नौकरियाँ मिल सकेंगी तब वह फिलिप के पक्ष में हो गया और कहने लगा—"नई व्यवस्था से देश का कल्याण होगा।" ग्रेनविले (ऐरस) ने फिलिप को पत्र लिखा कि 'यहाँ सब लोग कहते हैं कि यह नई व्यवस्था मेरी ही करतूत है। मैं देश भर की घृणा का पात्र हो रहा हूँ। आप कृपा करके एक घोषणा निकाल दें कि इस नई व्यवस्था में मेरा कुछ भी हाथ नहीं है।' फिलिप ने उसकी इच्छानुसार घोषणा निकाल दी और स्वयं भी बहुत से लोगों से कहा कि ग्रेनविले का इस व्यवस्था में बिलकुल हाथ नहीं था। ग्रेनविले ने प्रयत्न करके 'खूनी क़ानून' की भाषा भी नरम करवा दी। परन्तु लोगों ने कठोर क़ानूनों को नरम भाषा में भी स्वीकार करना पसन्द नहीं किया।

स्पेन की फ़ौज के सैनिकों को, लोग पहले से ही घृणा करते थे। उद्दण्ड स्वेच्छाचारी सिपाहियों की करतूतों से लोग तंग आ चुके थे। लोगों ने अनेक बार फिलिप से शिकायत की कि स्पेन के सैनिक लोगों से बहुत बुरा और अशिष्ट व्यवहार करते हैं।

इनको देश से हटा दीजिए। पाठकों को याद होगा कि पहली बार राज्याभिषेक के समय जब फ़िलिप से सैनिकों को हटाने की प्रार्थना की गई थी तो वह क्रोध से उबल पड़ा था। परन्तु पीछे से स्पेन जाते समय पंचायतों से वादा कर गया था कि तीन चार मास में ही फौजें अवश्य नेदरलैंड से हटा ली जायँगी। वादा किये चौदह मास बीत चुके थे। परन्तु फ़ौजें अभी नेदरलैंड में ही मौजूद थीं। कोई न कोई बहाना फ़ौजें न हटाने का बना दिया जाता था। नये क़ानून के जारी होने पर लोगों को विश्वास हो गया कि स्पेन की फ़ौजें हम लोगों पर अत्याचार करने के लिए ही ठहराई जा रही हैं। उन्होंने आन्दोलन उठाया कि स्पेन की फ़ौजों को तुरन्त देश से निकाल देना चाहिए। प्रत्येक वर्ष समुद्र के बाँधों की मरम्मत करने के लिए ज़ेलैंड के लोग जाया करते थे। इस साल उन्होंने वहाँ जाने से इन्कार कर दिया। वे कहने लगे—"बाँधों की मरम्मत करके क्या करेंगे? स्पेन के सिपाहियों के रोज़-रोज़ अत्याचार सहने से तो यही अच्छा है कि हम सब अपनी स्त्रियों-बच्चों-सहित बहकर समुद्र के गर्भ में चले जायँ। अपने माल-असबाब की रक्षा किसके लिए करें? क्या इन बदमाश सैनिकों के लिए, जो हमारे पसीने की कमाई मुफ़्त में लूटकर ले जाते हैं?" सब लोगों ने मिलकर क़सम खाली कि बाँधों की मरम्मत न होने से समुद्र भले ही हम पर चढ़ आये परन्तु हममें से कोई भी मनुष्य इस साल बाँधों की मरम्मत के लिए हाथ नहीं उठायेगा।

ज़ेलैंड के लोग इतने भड़क उठे कि ग्रेनविले को विश्वास हो गया कि स्पेन की फ़ौजों को बिना देश से निकाले अब लोग हर-

गिज़ दम न लेंगे। उनको समझाने-बुझाने की चेष्टा करना अथवा और कोई नया बहाना ढूँढकर फ़ौजों को रोक रखने का प्रयत्न करना अग्नि में घी डालना है। पचीस अक्तूबर सन १५६० ई० को स्टेट कौंसिल की एक बैठक की गई। उसमें ग्रेनविले ने डचेज़ को बहुत ज़ोरदार शब्दों में स्पेन की फ़ौजों को नेदरलैंड से हटा लेने की आवश्यकता दिखलाई। डाक्टर विग्लियस ने भी उसका बड़े जोश से समर्थन किया। आरेञ्ज ने भी साफ़-साफ़ कहा—"मैं तो अब एक दिन के लिए भी इन फ़ौजों का सेनाधिपति नहीं रह सकता। मैंने और एगमोण्ट ने केवल इसी वादे पर इन सेनाओं का सेनापतित्व अपने हाथ में लिया था कि फ़ौजें शीघ्र से शीघ्र यहाँ से हटा ली जायँगी।" अन्त में सर्व-सम्मति से स्टेट कौंसिल में निश्चय हुआ कि स्पेन की सेनायें शीघ्र से शीघ्र नेदरलैण्ड से रवाना कर दी जायँ। डचेज़ की तरफ़ से फ़िलिप को ग्रेनविले ने पत्र लिखा—"फ़ौजों को नेदरलैण्ड में रोक रखना असम्भव है। हम आपकी इच्छानुसार फ़ौजें रोक रखने का कोई न कोई बहाना ढूँढने का बहुत प्रयत्न करते हैं। पर, अब बहानों से काम नहीं चल सकता। यदि फ़ौजें नेदरलैण्ड में रहेंगी तो एक कौड़ी भी कर वसूल न हो सकेगा परन्तु यदि इन सेनाओं को नेदरलैण्ड से बिलकुल हटा लेने को सरकार तैयार हो तो जनता उनका वेतन तक अपने पास से चुका देने के लिए तैयार है।"

सौभाग्य से दक्षिण प्रान्तों में फ़ौजों की आवश्यकता पड़ी। सरकार को अपनी इज्ज़त बचाने का बहाना मिल गया। दक्षिण में सेनाओं की आवश्यकता होने के बहाने से सेनायें नेदरलैण्ड से हटा लीं गईं। नेदरलैण्ड को कुछ दिन के लिए साँस लेने का अव-

काश मिला। परन्तु सेनायें चली गईं तो क्या हुआ ? अत्याचार के मुख्य यंत्र मठ और महन्त तो मौजूद थे। फ़िलिप स्पेन से डचेज़ और ग्रेनविले के पास छोटे-छोटे आदमियों तक के नाम-पते और उनके बारे में अन्य बहुत सी ख़बरें बराबर भेजा करता था। अमुक आदमी को फाँसी पर चढ़ाना, अमुक को आग में जलाना, अमुक मनुष्य ने अपने घर पर प्रार्थना की, अमुक के लूथर की किताब पढ़ने की ख़बर मिली है, इत्यादि ज़रा-ज़रा सी बातों की ख़बर फ़िलिप के गुप्तचरों की सेना उसके पास पहुँचा देती थी और फ़िलिप यह सारी ख़बरें ग्रेनविले के पास नेदरलैण्ड भेज देता था। फ़िलिप का मंत्री भी अपने मालिक के आदेशों पर अक्षरशः चलने का प्रयत्न किया करता। फ़िलिप ग्रेनविले को प्रायः लिखता कि "अब हम-तुम जैसे थोड़े ही लोग संसार में ऐसे रह गये हैं जिन्हें धर्म का कुछ ख्याल है। इसलिए हम लोगों को उचित है कि ईसाई-धर्म की रक्षा हृदय से करते रहें।" ग्रेनविले उत्तर में लिखता—"मैं तो रात-दिन अधर्मियों को नष्ट करने का ही प्रयत्न करता हूँ। परन्तु क्या करूँ, न्यायाधीश इत्यादि लोगों को हिचकते हुए दण्ड देते हैं। यदि सब अधिकारी मिलकर दिल से काम करें तो परमात्मा का अटल-राज्य थोड़े ही दिनों में फिर दुनिया में स्थापित हो जाय।"

ग्रेनविले की करतूतों के कारण दिन-दिन लोगों की घृणा उसके प्रति बढ़ती जा रही थी। ऑरेञ्ज, एगमोण्ट और ग्लेयन इत्यादि सरदार भी उसे अब अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे। शासन का सारा काम 'कन्सल्टा' के द्वारा चलाया जाता था। स्टेट कौंसिल के—जिसके ऑरेञ्ज इत्यादि सरदार सदस्य

थे—किसी काम का।कुछ पता नहीं चलता था—कन्सल्टा में भी एक ग्रेनविले ही के हाथ में सब कुछ अधिकार था। वह जो चाहता वही होता था। परन्तु स्टेट कौंसिल के सदस्य होने के कारण प्रत्येक शासन-कार्य का उत्तरदायित्व सरदारों पर भी रहता था। सरदारों को यह परिस्थिति असहनीय हो उठी। ग्रेनविले फ़िलिप को तो गिड़-गिड़ाकर चालाकी और मक्कारी से जैसा चाहता चलाया करता परन्तु आरेञ्ज और एगमोएट इत्यादि सरदारों पर उसने खुल्लमखुल्ला ही हुक्म चलाना चाहा। यह बात भला सरदारों को कैसे सहन हो सकती थी। एगमोएट बड़ाही अभिमानी और अक्खड़ राजपूत था; उससे अपना क्रोध न छिपाया गया और वह एक दिन स्टेट कौंसिल में ही डचेज के सामने तलवार खींचकर ग्रेनविले पर दौड़ा। अगर आरेञ्ज ने उसका हाथ न पकड़ लिया होता तो ग्रेनविले की जीवन-लीला उस दिन समाप्त हो चुकी थी। आरेञ्ज बहुत चतुर मनुष्य था। वह एगमोएट की तरह अपने हृदय के भाव क्रोध में प्रकट नहीं कर बैठता था। ग्रेनविले और आरेञ्ज का आपस में खूब मित्रता का व्योहार था। ग्रेनविले जबसे नेदरलैएड आया तभी से वह आरेञ्ज को सदा प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया करता था। यहाँ तक कि आरेञ्ज जब कभी कहीं बाहर से घूम-घामकर ब्रसेल्स आता तो वह अपने घर जाने से पहले ग्रेनविले के घर जाता था। ग्रेनविले भी बिना कोई सूचना भेजे ही आरेञ्ज के सोने के कमरे तक में घुस जाता था। वह अच्छी तरह जानता था कि आरेञ्ज बड़े महत्व का आदमी है। और इसीलिए उसने उससे गाढ़ी मित्रता कर रक्खी थी। वह यह भी

सोचता कि चार्ल्स से लेकर फ़िलिप तक सभी आरेञ्ज को मानते हैं। किसी न किसी दिन अवश्य ही आरेञ्ज कोई न कोई असाधारण पद प्राप्त कर लेगा। उस समय उससे बहुत से काम निकल सकेंगे। वैसे भी बहुत से काम वह आरेञ्ज से योंही करा लिया करता था। आरेञ्ज को बहुत से पदाधिकारियों को नियुक्त करने का भी अधिकार था। ग्रेनविले आरेञ्ज से कहकर अपने बहुत से आदमियों को इन पदों पर नियुक्त करा लिया करता था। आपस के इस घनिष्ट सम्बन्ध के कारण भीतर से दिल टूट जाने पर भी आरेञ्ज और ग्रेनविले का ऊपरी सम्बन्ध कुछ दिनों तक नहीं टूटा। ग्रेनविले चाहता था कि आरेञ्ज स्वयं ही क्रुद्ध होकर किसी प्रकार मुझसे लड़ बैठे। मगर आरेञ्ज ने इतने दिन चार्ल्स के साथ व्यर्थ ही नहीं गँवाये थे। वह राजनीति में पूर्ण निपुण था। वह किसी प्रकार अपनी तरफ़ से ग्रेनविले को शिकायत का मौक़ा नहीं देना चाहता था। लेकिन यह काग़ज़ की नाव आख़िर कब तक चलती? अन्त में भावों का स्रोत फूट ही पड़ा।

ऐराटवर्प में मजिस्ट्रेटों की जगह ख़ाली हुई थी। वहाँ मजिस्ट्रेट नियुक्त करने का आरेञ्ज को बड़ा पुराना ख़ान्दानी अधिकार था। परन्तु अबकी दफ़ा चुपचाप 'कन्सल्टा' ने ही मजिस्ट्रेट नियुक्त करके मजिस्ट्रेटों के नामों की केवल सूची आरेञ्ज के पास भेज दी और लिख भेजा कि तुम और काउण्ट अरेम्बर्ग इसबात के लिए कमिश्नर नियुक्त किये जाते हो कि इन आदमियों को मजिस्ट्रेट नियुक्त कर दो। आरेञ्ज इस अपमान से जल उठा। उसकी इसी सम्बन्ध में ग्रेनविले से कुछ तू-तू मैं-मैं भी हो चुकी थी। जब डचेज़ का यह हुक्म उसके पास पहुँचा तो उसने यह कह-

कर वापिस कर दिया कि मैं डचेज़ का टहलुआ नहीं हूँ। वह किसी और को इस भले काम के लिए ढूँढ़ ले। स्टेट कौंसिल की बैठक में भी आरेञ्ज ने यही शब्द कहे। दोनों ओर से खूब कहा-सुनी हुई। आरेञ्ज ने कहा कि ऐण्टवर्प के मजिस्ट्रेट नियुक्त करने का मेरा खा़न्दानी अधिकार है। उसमें मुझ से कुछ पूछा तक नहीं गया? मुझे केवल इसलिए कमिश्नर बनाया जाता है कि मैं नियुक्त मनुष्यों को अधिकार दिला दूँ। ऐसे-ऐसे आवश्यक मामलों को चुपचाप उस 'कन्सल्टा' में ही तय कर लेना, जिस में ग्रेनविले ही सब कुछ है, अत्यन्त अनुचित और अनधिकार-चेष्टा है। ग्रेनविले दांत पीसकर कहने लगा—"अगर तुम कमिश्नर बनने को तैयार नहीं हो तो मैं और किसी मामूली आदमी को नियुक्त कर दूँगा। अभी तक हुआ सो हुआ; परन्तु अब शपथ खाता हूँ कि भविष्य में तुम-से घमण्डी सरदारों से किसी भी मामले में कभी सलाह नहीं लूँगा। प्रत्येक काम के लिए सदा छोटे-छोटे आदमियों को ही नियुक्त किया करूँगा।" क्रोध में इस प्रकार बकता हुआ ग्रेनविले कमरे से उठकर चला गया। आज से आरेञ्ज और ग्रेनविले का ऊपरी नाता भी टूट गया। पादरी ग्रेनविले और सरदारों का खुल्लमखुल्ला झगड़ा प्रारम्भ हो गया। आरेञ्ज और एगमोण्ट ने फ़िलिप को एक ख़त में लिखा—"हम लोग ड्यूक ऑव् सेवाय के समय का अनुभव कर चुके थे। हमें विश्वास था कि हम से केवल छोटी-छोटी बातों में ही सलाह ली जायगी। सब बड़े-बड़े मामले हमारी बिना सलाह के ही तय कर लिये जाया करेंगे। इसीलिए हम लोग स्टेट कौंसिल के सदस्य बनाने के लिए तैयार नहीं थे। परन्तु आपने ज़ेलैण्ड में हम लोगों पर

स्टेट कौंसिल के सदस्य बनने के लिए बहुत दबाव डाला और विश्वास दिलाते हुए कहा था कि सारे काम स्टेट कौंसिल की राय से ही हुआ करेंगे। अगर कभी कोई मामला स्टेट कौंसिल के सामने न रक्खा जाय तो मुझे लिखना। मैं तुरन्त उसका उपाय करूँगा। आपके इस विश्वास पर ही हमने स्टेट कौंसिल के सदस्य बनना स्वीकार कर लिया था। अब हम आप को सूचना देते हैं कि छोटी-छोटी बातों को छोड़कर अन्य किसी आवश्यक मामले में हम से सम्मति नहीं ली जाती है। और देश को दिखाया यह जाता है कि सब कुछ हम से पूछकर ही होता है। ऐसी हालत में या तो हमारा इस्तीफा मंजूर कर लीजिए या ऐसी आज्ञा शीघ्र भेजिए कि सारे मामले स्टेट कौंसिल के सामने अवश्य रक्खे जाया करें।" फिलिप ने अपने स्वभाव के अनुसार उत्तर भेजा कि इस सम्बन्ध में मैं अपना मत काउण्ट हॉर्न के साथ, जो स्पेन से शीघ्र ही जाने वाले हैं, भेज दूँगा।

हॉर्न और ग्रेनविले का भी आपस में सम्बन्ध अच्छा नहीं था। ग्रेनविले का एक भाई हार्न की बहिन से विवाह करना चाहता था। हॉर्न बड़ा अभिमानी था। उसने ग्रनविले के जैसे तुच्छ घराने के आदमी को अपनी बहन देना अपमानजनक समझा और विवाह करने से इन्कार कर दिया। हॉर्न बड़े उच्च घराने का था; फिलिप के जहाजी बेड़े का सेनाधिपति था। उसे क्या आवश्यकता पड़ी थी कि ग्रेनविले से प्रेम का नाता जोड़ता फिरता। ग्रेनविले की दशा का यथार्थ ज्ञान होने के कारण हॉर्न को उस से घृणा थी। ग्रेनविले ने भी हॉर्न से जलकर, उसके विरुद्ध बहुत सी चिट्ठियां गुप्त रूप से फिलिप को लिखी थीं। एक चिट्ठी में

उसने लिखा था कि 'श्रीमान जो मठ इत्यादि नेदरलैण्ड में स्थापित करना चाहते हैं हॉर्न उसका कट्टर विरोधी है। उसने स्पेन से अपने मित्रों को पत्र लिखकर अपना विरोध बताया है। आप कृपया उसे यह न बतलाइएगा कि उसके सम्बन्ध में यह सूचना आपको मैंने दी है। आप स्वयं उससे इस विषय पर बातचीत करके उसके विचार जान सकते हैं।' यह समाचार पाकर हॉर्न से फ़िलिप इतना चिढ़ गया कि जब हॉर्न नेदरलैण्ड के लिए चलते समय फ़िलिप से मिलने गया और बात चलने पर सरदारों का पक्ष लेकर पादरी ग्रेनविले का विरोध करने लगा तो फ़िलिप चिल्लाकर बोला—"क्या कहा! कम्बख्त तुम सब के सब इस पादरी के पीछे हाथ धोकर पड़ गये हो। सब के सब उसकी बुराई ही करते हो। परन्तु जब मैं उसका कोई क़सूर पूछता हूँ तो कुछ भी नहीं बताते।" फ़िलिप के मुँह से ऐसे अपमानसूचक शब्द सुनकर हॉर्न घृणा और क्रोध से तमतमा गया। आवेश के कारण उसका सिर इतना भन्ना गया था कि कमरे से बाहर आने का रास्ता तक भूल गया। अन्य सब सरदारों के विरुद्ध भी ग्रेनविले इसी प्रकार बराबर ख़त लिख लिखकर फ़िलिप के कान भरता रहता था। एक बार उसने फ़िलिप को लिखा कि 'मुझे ख़बर मिली है कि एग्मोएट के घर पर एक दावत हुई; वहाँ मठों और महन्तों के विरुद्ध खूब ही ज़हर उगला गया। कुछ सरदारों ने तो कहा कि फ़िलिप को हम सब की इस मामले में सलाह लेनी चाहिए थी; कम से कम स्टेट कौंसिल के सब सदस्यों की तो अवश्य ही सम्मति लेनी थी। फ़िलहाल तो कुछ अच्छे लोग भी पादरी बनाकर भेजे गये हैं। मगर

पीछे से ज़रूर क्रूर मनुष्यों को चुन-चुनकर इन जगहों पर नियुक्त किया जायगा। पंचायतों को हरगिज़ फ़िलिप की योजना सफल नहीं होने देनी चाहिए। सारांश यह कि, जैसी बातें यहाँ लोगों में स्पेन की फ़ौजें निकालने के समय आपस में होतीं थीं अब फिर सब वैसी ही बातें करते हैं।' फिर कुछ दिन बाद उसने फ़िलिप को एक दूसरे पत्र में लिखा—"मेरी समझ से सरदारों के नेदरलैण्ड में बखेड़े खड़े करने के दो ही उद्देश्य हैं। एक तो वे आप को यह बतला देना चाहते हैं कि बिना उनकी मरज़ी के आप कुछ भी नहीं कर सकते। दूसरे यह कि पंचायतों में आजकल वही सब कुछ हैं। आजकल छोटे-छोटे पादरी यहाँ रहते हैं, उन्हें डरा-धमकाकर वे जो चाहते हैं करा लेते हैं। बड़े-बड़े महन्तों के नेदरलैण्ड में आ जाने से उनका हुकम इस प्रकार न चल सकेगा। सरदार लोग श्रीमान् के पास एक पत्र भी भेजनेवाले हैं जिसमें वे यह दिखाने की चेष्टा करेंगे कि पूर्व अधिकारों के अनुसार नेदरलैण्ड में नये मठ स्थापित नहीं किये जा सकते। आप उसके उत्तर में केवल यह लिख दें कि मैंने कानून के पण्डितों की इस विषय में सलाह ले ली है। मठों का स्थापित करना नेदरलैण्ड के पूर्व अधिकारों के विरुद्ध नहीं है। तुम सब लोग मेरी योजना के अनुसार ही कार्य करो।' अस्तु; सरदारों का पत्र आने पर फ़िलिप ने उन्हें बिलकुल पादरी ग्रेनविले की सलाह के अनुसार ही उत्तर लिख दिया। सरदारों के विरोध से फ़िलिप का क्रोध दिन-दिन बढ़ता ही गया। वह विरोधियों के नाम तक से घृणा करने लगा। उसने ग्रेनविले को लिखा कि हमारे पास किसी की प्रसन्नता और अप्रसन्नता पर विचार करने का समय नहीं है। खूब सख़्ती से

सज़ायें दो। ये बदमाश डर से ही ठीक रास्ते पर आवेंगे।'

सरकारी कोष का इस समय ऐसा बुरा हाल हो रहा था कि अत्याचारों के कारण भड़क उठनेवाली अशान्ति को दबाने के लिए तथा सेना इत्यादि का नया प्रबन्ध करने के लिए कोष में पर्याप्त रुपया ही नहीं था। फ़िलिप का साम्राज्य तो सारे अमेरिका और लगभग आधे यूरोप पर था। उसके पास पेरू और मैक्सिको की सोने-चाँदी और जवाहरात की बहुमूल्य खानें भी थीं। परन्तु कुप्रबन्ध की यह दशा थी कि आगामी दो वर्ष के व्यय के लिए एक करोड़ दस लाख रुपये की आवश्यकता थी; और साम्राज्य की दो वर्ष की कुल आय केवल तेरह लाख तीस हज़ार होती थी। इस आय में भी सबसे अधिक अर्थात् पाँच लाख की आय उन लोगों से थी जो धार्मिक उपवास न रखने के लिए जुरमाना देते थे। पचास हज़ार वार्षिक की आय दक्षिण अमेरिका से गुलामों को पकड़ ले जाकर बेचने वाले सौदागरों के ठेकों से होती थी। जिस राज्य में राज्य का शासन और प्रबन्ध केवल राजा के मौज पर ही निर्भर हो वहाँ इस दशा के अतिरिक्त और हो ही क्या सकता था कि जवाहरात और सोने-चाँदी की खानों से तो कुछ भी लाभ न हो और राज्य का खर्च गुलामी के व्यापार और धार्मिक स्वतन्त्रता पर लगाये हुए करों से चले। इधर राज्य की तो यह कुव्यवस्था हो रही थी और उधर फ़िलिप एक ऐसा युद्ध छेड़ देने की फ़िक्र में था जो उसके जीवन-काल में ही क्या उसके पौत्र-प्रपौत्रों के जीवनकाल तक में समाप्त होनेवाला नहीं था। इस युद्ध में केवल सेना का ही खर्च दस लाख मासिक था। युद्ध के व्यय में से प्रायः ७० फ़ी सदी

बीच के आदमी ही हड़प जाते थे। एक सिपाही लड़ने के लिए भेजा जाता था तो चार का नाम दिखाया जाता था। नेदरलैण्ड की आर्थिक दशा के सम्बन्ध में ग्रेनविले भी फ़िलिप को कुछ सन्तोष नहीं देता था। वह लिखता था—"सरकार को नेदरलैण्ड में दस ड्यूकेट भी मिलना असम्भव है। समझ में नहीं आता क्या करें? पंचायतें रुपया तो बड़ा हाथ कस-कस कर देतीं हैं और हिसाब लेते वक्त जान निकाल लेती हैं। मैं उन्हें बहुत दफ़ा समझा चुका हूँ कि यह तुम्हारी ग़लती है। मगर वे कम्बख़्त मानते ही नहीं। जिस प्रकार सेनाओं को यहाँ से निकालने में सब एक-से दृढ़ थे, उसी तरह इस आय-व्यय के हिसाब-किताब के सम्बन्ध में भी वे अटल हैं।" फ़िलिप ने एक बार यह भी सोचा कि रांगे का रुपया बनाकर सिपाहियों को चुपचाप दे दिया जाय। मगर पंचायतों के विरोध और कुछ धार्मिक अड़चनों के कारण अन्त में ऐसा नहीं किया गया।

इस वर्ष—५६० ई० से ६१—की मुख्य घटनाओं में विलियम आरेञ्ज का दूसरा विवाह भी एक विशेष स्थान रखता है। २५ वर्ष की उम्र में ही सन् १५५८ ई० में विलियम की पहली स्त्री का देहान्त हो गया था। फ़िलिप-वंश से निकट सम्बन्ध रखने वाली डचेज़ लॉरेन की पुत्री से एक साल बाद उसके विवाह की बातचीत चली। डचेज़ परमा, ग्रेनविले और फ़िलिप इत्यादि सब की ही राय थी कि यह सम्बन्ध अच्छा रहेगा। लड़की के भाई का विवाह फ्रान्स की राजकुमारी से हुआ था। विलियम ने सोचा कि इस लड़की के सम्बन्ध से मुझे भी अच्छा फ़ायदा होगा। स्पेन और फ्रान्स दोनों के राज्य-घराने से मेरा घनिष्ट सम्बन्ध हो

जायगा। लड़की की माँ डचेज़ लॉरेन एक महत्वाकांक्षिणी स्त्री थी। नेदरलैण्ड की गद्दी पर बैठने की भी उसकी लालसा थी। उसने भी सोचा कि यदि विलियम से मेरी लड़की का विवाह हो गया तो मुझे एक बड़ा ज़बरदस्त सहायक मिल जायगा। ऐसा मालूम पड़ता था कि परिस्थितियाँ और मनुष्य सभी इस सम्बन्ध के पक्ष में थे। ऊपर से तो ग्रेनविले और फ़िलिप दोनों विलियम से यही कहते रहे कि हम तुम्हारे इस विवाह के लिए प्रयत्न कर रहे हैं परन्तु अन्दर-अन्दर उन्होंने मंत्रणा की कि विलियम वैसे ही बड़ा मालदार और बलशाली है, इस विवाह से उसका बल और बढ़ जायगा। बस, विलियम ने डचेज़ लॉरेन से चुपचाप कह दिया कि यह सम्बन्ध हरगिज़ मत करना। इधर एक दिन बाग़ में टहलते-टहलते विलियम से फिलिप ने कहा कि मैंने तो बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु डचेज़ लॉरेन अपनी पुत्री का तुमसे विवाह करने के लिए तैयार नहीं है। विलियम को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि डचेज़ लॉरेन से उसका बड़ा अच्छा सम्बन्ध था। आरेञ्ज लॉरेन को नेदरलैण्ड की नवाबी दिलाने का प्रयत्न कर रहा था। फ़िलिप ने विलियम को इशारा किया कि शायद लड़की ही तुम्हें पसंद न करती हो। परन्तु विलियम-जैसे बुद्धिमान मनुष्य को धोखा देना कुछ सरल काम नहीं था। वह जानता था कि कहीं ऐसे राजकीय विवाहों में लड़की की राय ली जाती है ? और यदि राय ली भी जाती तो विलियम को पसन्द न करने का कोई कारण नहीं हो सकता था। अपने समय के सिद्ध वीर और राजनीतिज्ञ राजकुमार को वह लड़की क्यों नहीं पसंद करती ? विलियम फ़ौरन ही ताड़ गया कि यह सब

फ़िलिप और ग्रेनविले की करतूत है। डचेज़ लॉरेन को भी इस घटना से बहुत दुःख हुआ और जब डचेज़ परमा को नेदरलैण्ड की नवाबी दे दी गई, तब तो उसकी सारी आशायें मिट्टी में मिल गईं।

फिर उसी वर्ष विलियम का विवाह जर्मन-राज्य-दरबार के प्रख्यात सरदार मौरिस की पुत्री से ठहरा। जितना सम्मान विलियम के घराने का नेदरलैण्ड में था उससे कहीं अधिक मौरिस के घराने का जर्मनी में था। मौरिस मर चुका था। उसकी लड़की एना अपने चचा के पास रहती थी। चचा ने लड़की की माँ से विवाह कर लिया था और इस प्रकार अपने भाई की सारी जागीर का मालिक हो गया था। वह चाहता था कि लड़की का विवाह जर्मनी से बाहर कहीं दूर हो तो अच्छा होगा, क्योंकि उसे भय था कि कहीं उसका पति जागीर में से कुछ हिस्सा लेने के लिए बखेड़ा न खड़ा करे। लड़की के दादा को यह सम्बन्ध पसन्द नहीं था क्योंकि लड़की प्रोटेस्टेण्ट थी और विलियम था रोमन कैथलिक। परन्तु यह वह समय था जब कि रोमन कैथलिकों और प्रोटेस्टेण्टों के बीच में सम-झौता होने का प्रयत्न हो रहा था। पोप भूले-भटके लोगों को मिला लेने के लिए तैयार था और उसने वह प्रसिद्ध निमंत्रण-पत्र जर्मनी के सरदारों के पास भेज रखा था जिसमें उसने उन्हें 'मेरे प्रियपुत्र' सम्बोधित किया था और जिसका मज़ाक़ उड़ाकर अन्त में सरदारों ने यह जवाब लिख भेजा—"हमें विश्वास है कि हमारी मातायें सद्धर्मिणी थीं और हमारे बाप तुम से अच्छे थे।" इसलिए इस समय विलियम और एना का

सम्बन्ध हो जाने में किसी को कुछ बाधा नहीं दीखती थी। परन्तु फ़िलिप के दिल में यह सम्बन्ध भी खटकता था। लड़की के पिता मौरिस ने फिलिप के बाप, चार्ल्स को जंगलों में खदेड़-खदेड़कर मारा था। मौरिस ने ही जर्मनी के पक्ष में पसाऊ की सन्धि चार्ल्स से नाक रगड़वाकर करवा ली थी। मोरिस ने ही जर्मनी से कैथलिक चर्च की जड़ उखाड़ डाली थी। मौरिस ने ही फिलिप को रोमनों का राजा नहीं बनने दिया था। फिर भला फिलिप को यह कैसे सहन हो सकता था कि विलियम मौरिस की पुत्री से विवाह करे। विलियम ने देखा कि मेरी परि-स्थिति ऐसी है कि किसी न किसी को हर हालत में अप्रसन्न करना ही पड़ेगा। इसलिए अच्छा है कि मैं किसी की प्रसन्नता का विचार न करूँ। और जो मुझे लाभदायक प्रतीत हो वही करूँ। आखिरकार उसने यह विवाह तय कर लिया और बड़ी धूम-धाम से खूब दावतों, खेल-तमाशों और नाचरंग के साथ एना से विलियम आरेञ्ज का विवाह हो गया।

'इनक्विज़िशन'

धार्मिक विचारों के सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल होने से लेकर अपराधी को दण्ड देने तक जो क्रिया होती थी उसका नाम 'इनक्विज़िशन' था। 'इनक्विज़िशन' के तीन प्रकार थे। परन्तु तीनों प्रकारों में कुछ अधिक भेद नहीं था। साधारणतया उसका यह अर्थ था कि किसी के विचार पादरियों को यदि पसन्द न आवें तो उसे तुरन्त आग में झोंक दिया जाय। पहले-पहल यह संस्था पोप अलेक्ज़ेण्डर षष्ठम और फ़रडीनेण्ड ने स्पेन में मूर और यहूदी लोगों को दण्ड देने के लिए स्थापित की थी। पीछे से ईसाई मत के 'अधर्मियों के' लिए भी इसका उपयोग होने लगा। 'इनक्विज़िशन' के पहले अधिकारी ने अपने अट्ठारह वर्ष के शासनकाल में १०२२० मनुष्यों को अग्नि में जलाया था और ९७३२१ मनुष्यों को देश-निकाला, आजन्म-कारावास, और जायदाद-जब्ती इत्यादि की सज़ायें दी थीं। इस एक राक्षस ने ही लगभग ११४४०१ कुटुम्ब नष्ट कर डाले थे। फिर भी 'इनक्विज़िशन' बढ़ता ही जाता था। इससे बड़ा कोई न्यायालय न था। जो पादरियों की यह मण्डली निश्चय कर देती थी, बस वही होता था। 'इनक्विज़िशन' के विरुद्ध कहीं कोई अपील नहीं हो सकती थी। उसका कार्य्य विचारों के लिए दण्ड देना था, कामों के लिए नहीं। पादरियों के दूत लोगों के दिलों और दिमाग़ों में

घुस-घुसकर उनके विचारों का पता लगाने का प्रयत्न किया करते। जिसके विचार अनुचित पाये जाते, उसे। फौरन प्राण-दण्ड दे दिया जाता था। 'इनक्विजिशन' का छोटा-सा :एक साधारण नियम यह था कि किसी को भी सन्देह में पकड़ा जा सकता था। कष्ट दे-देकर उससे किसी प्रकार अपराध क़बूल करवा लिया जाता था और फिर आग में डालकर उसे जलाया जाता था। दो गवाह मिलते ही किसी भी मनुष्य को काल-कोठरी में ठूँस दिया जाता था। वहाँ उसे थोड़ा-थोड़ा खाना खिलाकर भूका रक्खा जाता; किसी से बोलने का मौका न दिया जाता और जब वह मनुष्य अधमरा हो जाता तो उससे पूछा जाता था कि 'कहो अपराधी हो या नहीं ?' अगर वह मान लेता तो खैर; वर्ना दो और गवाह मिलते ही उसे फाँसी पर चढ़ा दिया जाता था। एक-गवाह मिलने पर अपराधी को शिकंजे में कस दिया जाता। अपराधी को केवल गवाही सुना दी जाती थी; गवाह सामने नहीं लाया जाता था। रात्रि के समय अन्धेरे में धीमी-धीमी मशीनों की रोशनी में बदन में काला-कम्बल लपेटे, मुँह छिपाये जल्लाद आता था और शिकंजे में कसे हुए अपराधी की धीरे धीरे हड्डियाँ तोड़ता था। उन अभागे मनुष्यों के कष्टों का वर्णन करने में क़लम रुकती है।

ईश्वर ! मनुष्य के दिमाग़ ने किस हृदय से मनुष्यों को कष्ट पहुँचाने के लिए ऐसे यत्न सोच निकाले ? कैसे मनुष्य के हृदय ने मनुष्यों पर ऐसे भीषण अत्याचार करने की इजाज़त दी ? काल कोठरी के कष्टों की कोई मीयाद या मुद्दत निश्चित नहीं होती थी। जबतक अपराधी अपना अपराध स्वीकार न कर लेता

था तबतक बराबर उसे कष्ट दिया जाता था। कुछ वीरों ने तो पन्द्रह-पन्द्रह वर्ष तक काल कोठरी की इन अमानुषिक यातनाओं को सहा और अन्त में अपने विश्वासों के साथ अग्नि में भस्म हो गये। जबतक अपराधी अपना अपराध स्वीकार नहीं करता था, मारा नहीं जाता था। क्योंकि रोमन कैथलिक पन्थ के अनुसार मरने से पहले अपने जीवन-भर के अपराध स्वीकार कर लेना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक था। अपराध स्वीकार करते ही अपराधी को प्राण-दण्ड सुना दिया जाता। परन्तु एक-दो अपराधियों को ही नहीं जलाया जाता था। जब बहुत-से अपराधी एकत्र हो जाते थे तब जलसा लगता; राजा, राव, सरदार, पादरी, साधारण मनुष्य सब इकट्ठे होते थे। अपराधी को एक कुरता—जिस पर शैतान के चित्र बने होते थे—पहिनाकर कोठरी से निकाला जाता था। उसके सिर पर एक कागज़ की शुण्डाकार टोपी रक्खी जाती थी जिसपर अग्नि में जलते हुए मनुष्य का एक चित्र होता था। फिर उसकी ज़बान बाहर खींच कर सलाख भोंक दी जाती थी, जिससे न तो उसका मुँह बन्द हो सके और न ज़बान ही अन्दर जा सके। फिर उसके सामने तश्तरियों में अच्छे-अच्छे खाने रखकर उसे चिढ़ाया जाता था—"कीजिए जनाब! नाश्ता कीजिए!" फिर उसका सब के सामने से होकर बड़ी शान से जुलूस निकाला जाता था। आगे-आगे स्कूलों के छोटे-छोटे बच्चे होते, उनके पीछे अपराधियों का झुण्ड होता। उनके बाद मजिस्ट्रेट और सरदार लोग आते थे और सब के पीछे पादरी। 'इनक्विज़िशन' के अधिकारी सब से पीछे घोड़ों पर सवार हाथ में ख़ूनी लाल झण्डियाँ फहराते हुए

आते और उनके दोनों ओर फ़रडीनेण्ड एवं अलेक्ज़ेण्डर के–जिन्होंने पहले-पहल 'इनक्विज़िशन' चलाया था–चित्र होते थे। जुलूस के पीछे साधारण मनुष्यों की भीड़ आती। सब सूली के चारों ओर खड़े हो जाते। फिर एक व्याख्यान दिया जाता, जिसमें 'इनक्विज़िशन' की प्रशंसा होती और अपराधियों पर फटकार पड़ती थी। जो अपना अपराध मान लेते थे मानो उन-पर बड़ी कृपा करके प्राण निकालकर उन्हें अग्नि में डाल दिया जाता। जो नहीं मानते थे उन्हें ज़िन्दा ही अग्नि में झोंक दिया जाता था। पादरियों का विचार था कि जलने के दुःख से शैतान अपराधियों का शरीर छोड़कर भाग जाता है और अपराधियों के शरीर पवित्र हो जाते हैं। इसलिए पापियों को अग्नि में डाल-कर पवित्र करने का पादरियों ने सरल उपाय ढूँढ निकाला था। 'इनक्विज़िशन' की अदालत सर्वोच्च अदालत थी। राजा और रङ्क कोई भी उससे मुक्त नहीं था। जिस प्रकार ग़रीब अपनी झोंपड़ी में इसके डर से काँपता था उसी प्रकार राजा-राव अपने महलों में काँपते थे। यह स्पेन का 'इनक्विज़िशन' था। नेदरलैण्ड में आज तक ऐसा 'इनक्विज़िशन' कभी प्रचलित नहीं हुआ था।

नेदरलैण्ड में पहले-पहल चार्ल्स ने ही यह संस्था स्थापित की। उसी ने पहली बार 'इनक्विज़िशन' के अधिकारी नियत किये थे, जिन्हें उसने अपराधियों को पकड़ने, सज़ा करने और जलाने तथा फाँसी पर चढ़ाने तक के सब अधिकार दे दिये। छोटे-बड़े सब राज्य-पदाधिकारियों को भी चार्ल्स ने लिख भेजा कि इसके अधिकारियों को हर प्रकार से सहायता की जाय।

और यदि कोई अधिकारी उनकी सहायता देने में ढिलाई करेगा तो वह भी अपराधी समझा जायगा और उसको भी फाँसी की सजा दी जायगी। नेदरलैण्ड का यह 'इनक्विज़िशन' भी क्रूरता में स्पेन से कुछ कम नहीं था। फ्रान्स के युद्ध के समय उसकी सख्ती कम कर दी गई थी। फिलिप ने गद्दी पर बैठते ही फिर सख्ती शुरू कर दी। 'इनक्विज़िशन' के अधिकारियों में टिटेलमैन नाम का एक अधिकारी अपने जुल्म के लिए बड़ा मशहूर था। इसका अधिकार फ्लैण्डर्स, डूये और टूर्ने नाम के नेदरलैण्ड के सबसे हरे-भरे और आबाद प्रान्तों पर था। उस समय के वर्णनों में उसके सम्बन्ध में लिखा है कि वह रात-दिन भयानक राक्षस की तरह अकेला घोड़े पर घूमा करता और बेचारे भय-भीत किसानों के सिर गदा से फोड़ता फिरता था। लोगों को केवल सन्देह मात्र पर ही घरों में सोते हुए बिस्तरों से घसीट-घसीटकर ले आता और जेल में ठूँस देता था। जेल में इन लोगों को पहले तो खूब कष्ट दिये जाते, बाद में बिना किसी मुक़दमे, वारण्ट अथवा दिखावटी ढकोसले के सूली पर चढ़ाकर अथवा अग्नि में झोंककर मार डाला जाता थे। शासन-विभाग का एक अधिकारी, जिसका सदा लाल-डण्डा बाँधने के कारण लाल-डण्डा नाम ही पड़ गया था, टिटेलमैन को एक दिन रास्ते में मिला। आश्चर्य-चकित होकर पूछने लगा—"आप कैसे अकेले या एक ही दो नौकरों को लेकर लोगों को पकड़ते फिरते हैं? मैं तो बिना हथियारबन्द सिपाहियों की एक अच्छी संख्या लिये अपने काम पर जाने की हिम्मत भी नहीं कर सकता। फिर भी जान का डर लगा ही रहता है।"

टिटेलमैन ने हँसकर कहा,—"अरे भाई लाल-डण्डा! मेरा काम बड़ा सरल है। मुझे हथियारबन्द सिपाहियों की आवश्यकता नहीं होती। तुम्हें बदमाशों से काम पड़ता है। मैं तो ऐसे भोले-भाले बेगुनाह आदमियों को पकड़ता फिरता हूँ जो बेचारे मेमनों की तरह चुपचाप मेरे साथ चले आते हैं।" लाल-डण्डा ने कहा—"भाई! यदि यही हाल रहा कि तुम बेगुनाहों को मारते फिरे और मैं बदमाशों को, तो फिर दुनिया में रह कौन जायगा।" पता नहीं उत्तर में टिटेलमैन ने क्या कहा परन्तु वह राक्षस यह जानते हुए भी कि 'मैं बेगुनाहों को पकड़ता फिरता हूँ' अपना काम बड़ी मौज से निर्द्वन्द्व होकर करता ही रहा। जितने आदमियों के अकेले उसने प्राण लिये; उतने मनुष्य नेदरलैण्ड के रोमाञ्चकारी इतिहास में 'इनक्विजिशन' के किसी अधिकारी ने नहीं मारे। एक दफ़ा उसने एक स्कूल के मास्टर को पकड़ बुलाया और उस पर 'अधर्म' का दोषारोपण करके कहा कि, 'तुम अपना दोष स्वीकार करके अभी क्षमा माँगो'। मास्टर ने कहा—"मेरा कुछ भी अपराध नहीं है। मैं क्षमा किसलिए मांगूँ?" टिटेलमैन बोला—"मालूम होता है तुम्हें अपनी स्त्री और बाल-बच्चों से प्रेम नहीं है।" मास्टर बोला—"स्त्री और बाल-बच्चे से प्रेम! अरे उन्हें तो मैं इतना प्यार करता हूँ कि यदि सारी दुनिया सुवर्णमयी होती और मेरे कब्जे में होती तो भी मैं वह सुवर्ण की दुनिया अपने स्त्री-बच्चों के पास रहकर सूखी रोटी और केवल पानी पर जीवन व्यतीत करने के लिए बड़ी प्रसन्नता से त्याग सकता था।" टिटेलमैन बोला—"तो फिर क्यों हिचकते हो? उनके पास आनन्द से रहो। केवल यह

कह दो कि मेरे विचार ग़लत थे। मैं क्षमा मांगता हूँ।" वह बहादुर मास्टर बोला—"स्त्री, पुत्र, तन, धन, संसार किसी के लिए धर्म और भगवान् को मैं नहीं छोड़ सकता।" इस उत्तर के बाद वह सूली पर चढ़ा दिया गया और उसकी लाश अग्नि में फेंक दी गई। इसी प्रकार टिटेलमैन ने टामस कैलबर्ग नामक जुलाहे को केवल इस अपराध के लिए पकड़कर जिन्दा जला दिया कि उसने जेनेवा में छपी हुई एक पुस्तक से ईश्वर की कुछ प्रार्थनायें नक़ल कर लीं थीं। एक दूसरे आदमी को एक भोथर तलवार से उसकी स्त्री के सामने ही इस बुरी तरह मारा गया कि उसकी स्त्री से वह भयानक दृश्य सहन न हो सका और वह बेचारी वहीं गिरकर मर गई। एक और वाल्टर कैपेल नाम का अमीर आदमी, जो ग़रीबों की बहुत सहायता किया करता था, अपने नवीन विचारों के कारण जला दिया गया। जिस समय उसको जलाने के लिए खम्भे से बाँधा जा रहा था एक गरीब आदमी—जिसकी उसने कभी सहायता की थी—चिल्लाता हुआ भीड़ से निकला और बोला—"खून के प्यासे जल्लादो! बेचारे वाल्टर कैपेल ने इसके अतिरिक्त ,और क्या अपराध किया है कि मुझ जैसे गरीबों का पेट भरता रहा है?" यह कहकर वह भी वाल्टर के साथ भस्म हो जाने के विचार से अग्नि में कूदा परन्तु लोगों ने उसे पकड़कर खींच लिया। दूसरे दिन वह फिर आया और वाल्टर की जली हुई ठठरी खम्भे से उतार अपने कन्धे पर रखकर सारे नगर में घूमता कचहरी पहुँचा और मजिस्ट्रेटों के सामने उसे रखकर बोला—"जल्लादो! तुम ने इसका माँस तो खाही लिया है। यह लो; बची-खुची हड्डियाँ

भी खालो।" मालूम नहीं टिटेलमैन ने इस भिखारी को भी यमराज के यहां भेजा या नहीं। नेदरलैण्ड के शहीदों की लम्बी सूची में ऐसे छोटे-छोटे आदमियों का इतिहास लिखा जाना असम्भव था।

आये दिन का अत्याचार और सख्ती भी लोगों के हृदय में 'खूनी क़ानूनों' और 'इनक्विज़िशन' के प्रति कोई प्रेम पैदा न कर सकी। अत्याचार से लोगों के दिल दहलते थे। परन्तु विरोध की आग भी बढ़ती जाती थी। बरट्रेण्ड नाम के एक आदमी ने तो टिटेलमैन और अन्य सब लोगों की आँखों के सामने ही अपनी जान पर खेलकर एक बड़ा कौतुक कर डाला। उस रोज़ 'बड़ा दिन' था। टूर्ने के गिर्जाघर में खूब भीड़ थी। बरट्रेण्ड ने अपनी स्त्री और बच्चों से आज प्रातःकाल ही कह दिया था कि तुम लोग प्रार्थना करना कि मैं जो कार्य्य करने वाला हूँ उसमें मुझे सफलता मिले। गिर्जे में बरट्रेण्ड भी भीड़ से मिलकर एक ओर खड़ा था। जैसे ही पादरी ने पवित्र पानी से भरा हुआ पूजा का प्याला हाथ में उठाया वह भीड़ चीरकर निकला और दौड़कर पादरी के हाथ से प्याला छीन लिया एवं उसे पृथ्वी पर पटक-कर बोला—"मूर्ख मनुष्यो! यह क्या स्वांग रचते हो? क्या यही ईसा-मसीह ने सिखाया था? ऐसे ही मोक्ष मिलेगा?" यह कह-कर उसने प्याले के टुकड़ों को अपने पैरों से कुचल डाला। उसे भाग जाने का मौका था। परन्तु वह दृढ़ भाव से वहीं खड़ा रहा। सब लोग उसके इस निर्भीक कार्य्य पर दंग रह गये। बाद में जब उसका अभियोग हुआ और उससे क्षमा मांगने को कहा गया तो उसने कहा,—"माफ़ी? धर्म और ईसा के नाम को कलंक लगने से बचाने के लिए मैं एक क्या, ऐसे-ऐसे सौ जीवन

भी देने को तैयार हूँ।" अधिकारियों को सन्देह था कि इतना निर्भीक कार्य्य केवल एक आदमी ही अकेला अपने बल पर नहीं कर सकता। अतएव उसके अन्य साथियों के नाम पूछने के लिए उसे बड़े-बड़े कष्ट दिये गये। परन्तु उसका इस कार्य्य में और कोई साथी न था इसलिए वह किसी का नाम नहीं बता सका। तब उसके मुँह में एक सलाख घुसेड़ दी गई और उसे टट्टर पर डालकर घसीटते हुए बाज़ार लेजाया गया। वहाँ उसके दाहिने हाथ और पैर को जलाकर दो दहकती हुई सलाखों में डालकर रस्सी की तरह ऐंठ दिया गया। बाद में उसकी जबान जड़ से उखाड़ ली गई। फिर भी वह भगवान का नाम लेने का प्रयत्न करता ही रहा; इसलिए उसके मुँह में एक और सलाख ठूँसी गई। अन्त में उसके हाथ और पाँव मिलाकर पीठ के पीछे बाँध दिये गये और एक जंजीर से उलटा लटका धीमी-धीमी आँच पर झुला-झुलाकर भून डाला गया। बड़े आश्चर्य की बात है कि उसने इन सारे कष्टों को अन्त तक जीवित रहकर सहा और एक बार मुँह से उफ् तक नहीं की।

दूसरे वर्ष टिटेलमैन ने फ्लैण्डर्स के रॉबर्ट ओगियर नाम के एक गृहस्थ को, उसकी स्त्री और दो पुत्रों के साथ, इसलिए पकड़ लिया कि उन्होंने गिर्जे की प्रार्थना में सम्मिलित होने के बजाय घर पर ही प्रार्थना कर ली थी। उन्होंने अपना अपराध स्वीकार किया और कहा—"हम लोग मूर्तिपूजा को बुरा समझते हैं इसलिए गिर्जे में नहीं जाते।" उनसे पूछा गया कि घर पर तुम लोग किस ढंग से प्रार्थना करते हो? ओगियर के छोटे से भोले लड़के ने कहा—"हम लोग घुटने टेककर भगवान से प्रार्थना

करते हैं कि भगवन् हमें बुद्धि दो और हमारे पाप क्षमा करो। हम अपने राजा के लिए प्रार्थना करते हैं कि उसका साम्राज्य बढ़े और उसका जीवन शान्ति-मय हो। हम लोग अधिकारियों के लिए भी प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा उनकी रक्षा करें।" उस नन्हें बच्चे के मुँह से ये भोले भाले शब्द सुनकर न्यायाधीश की आँखों में आँसू आ गये, फिर भी बाप और बड़े बेटे को जीवित जला देने का हुक्म सुनाना ही पड़ा। जब खम्भे पर लड़का जलने लगा तो वह प्रार्थना करने लगा—"हे परमपिता जगदीश्वर! प्यारे ईसा के नाम पर हमारे जीवन की बलि स्वीकार करो"। जो पादरी आग सुलगा रहा था उसने क्रोध से झुँझलाकर कहा, "बदमाश! तू झूठा है। तेरा पिता शैतान है। परमात्मा नहीं।" जब अग्नि की ज्वालायें चढ़ने लगीं तो लड़के ने फिर चिल्लाकर कहा—"देखो! देखो, पिता जी! हमारे लिए स्वर्ग के द्वार खुल रहे हैं। सहस्रों देवता हमारे आगमन के लिए खुशियां मना रहे हैं। हम लोगों को भी हँसते-हँसते ही प्राण दे देना चाहिए क्योंकि हम लोग सत्य के लिए जान दे रहे हैं।" वही पादरी फिर चिल्लाकर बोला—"अरे झूठे! अरे झूठे! तुझे नरक का द्वार खुलता हुआ दिखाई दे रहा होगा। सहस्रों देव नहीं होंगे, यमराज के भयंकर दूत दिखाई दे रहे होंगे।" आठ दिन के बाद ओगियर की स्त्री और दूसरा लड़का भी जला डाला गया।

एक दिन टिटेलमैन एक घर में घुसकर एक गृहस्थ को, उसकी स्त्री, चार पुत्रों और दो उसी समय के विवाहे हुए दम्पतियों सहित पकड़ लाया और उन पर घर में बैठकर बाइ-

बिल पढ़ने का अपराध लगा तुरन्त भट्टी में झोंक दिया। इसी प्रकार किसी को चरणामृत न पीने, किसी को घर में प्रार्थना करने, अथवा बाइबिल पढ़ने, किसी को मूर्त्ति-पूजा न करने इत्यादि के अपराधों के लिए पकड़-पकड़कर रोज़ अग्नि में झोंका जाता था। स्पेन के 'इनक्विज़िशन' और नेदरलैंड के 'इनक्विज़िशन' में केवल इतना अन्तर था कि स्पेन में सुधारक गुप्त रहते थे इसलिए उनका पता लगाना कठिन होता था। नेदरलैंड के लोग छिपकर कुछ भी नहीं करते थे। पकड़े जाने पर झूठ नहीं बोलते थे; इसलिए यहां लोगों को पकड़ना और जलाना अधिक आसान था। अन्यथा फ़िलिप के दो शब्दों में नेदरलैंड का 'इनक्विज़िशन' स्पेन से कहीं अधिक भयंकर और क्रूर था। अत्याचारों से लोगों के दिल पक गये थे। जनता और सरदार सभी एक स्वर से 'इनक्विज़िशन' के घोर विरोधी थे। क्योंकि नेदरलैंड में यह चार्ल्स के समय से आरम्भ तो हो गया था परन्तु जनता ने इसे किसी क़ानूनी वा स्थायी संस्था के तौर पर कभी स्वीकार नहीं किया था। लक्ज़मबर्ग और ग्रोनिजन प्रान्तों में तो कभी इसका पदार्पण ही नहीं हुआ। जेल्डरलैंड प्रान्त ने चार्ल्स के अधिकार में आते समय ही शर्त करा ली थी कि जेल्डरलैंड में कभी 'इनक्विज़िशन' जारी नहीं किया जायगा। ब्रेबेंट वालों ने अपनी भुजाओं के बल से इस बीमारी को अपने यहां घुसने से रोक दिया था परन्तु फ़िलिप ने किसी भी बात की कुछ परवाह न की। अपना आरा सभी प्रान्तों में आंखें मींचकर एक-सा चलाना आरम्भ कर दिया। ग्रेनविले जानता था कि जनता मुझे

घृणा करने लगी है। मुख्य-मुख्य सरदारों से भी उसका झगड़ा शुरू हो गया। डचेज़ परमा भी उससे नाराज़ रहने लगी क्योंकि ग्रेनविले डचेज़ की ज़रा भी परवाह न करके बेरलामौण्ट और विग्लियस की सलाह से ही सब काम कर लेता था। डचेज़ ने फ़िलिप को लिखा कि मुझे तो इस पादरी ने निरी कठपुतली बना रक्खा है। फ़िलिप के लिए यह कौनसी नई सूचना थी? वह तो नवाब ही इसलिए बनाई गई थी कि ग्रेनविले के हाथ की कठपुतली बनकर रहे। फिलिप ग्रेनविले से बहुत प्रसन्न था क्योंकि वह बड़ी स्वामि-भक्ति और उत्साह से फिलिप का काम करता था। मारक्विज़ बरघन को, जो वेलेंशियों का गवर्नर था, इस मार-काट के काम से बड़ी घृणा थी। इसलिए वह प्रायः अपनी जागीर से बाहर रहा करता था। ग्रेनविले ने उसके विरुद्ध फिलिप को चिट्ठी लिखी—"सरदार बरघन आपके काम का विरोध करते हैं। सब के सामने कहते हैं कि धार्मिक विचारों के लिए किसी की जान लेना न्याय संगत नहीं है जब हमारे अधिकारी ही ऐसे हैं तो फिर हम लोग किस प्रकार इस शुभ धार्मिक कार्य्य में सफल हो सकते हैं?" इसी समय ग्रेनविले को पता चला कि वेलेंशिस में दो पादरी नये पन्थ का प्रचार करते हैं। उसने तुरन्त उनके प्राणदण्ड की आज्ञा दी। इतना जोश तो फैल ही चुका था कि धर्म के लिए दण्ड भोगने वालों की जय-ध्वनि बोल-बोलकर लोग ख़ूब उत्साह बढ़ाने लगे थे। इन सर्वप्रिय पादरियों के प्राणदण्ड की आज्ञा सुनकर वेलेंशिस में एकदम आग-सी लग गई। पादरियों के गिरफ्तार होते ही रोज बड़ी-बड़ी सभायें होने लगीं। प्रति दिन बड़े-बड़े जुलूस

निकलते थे और जेल पर—जहां पादरी क़ैद थे—दिन-रात जनता की भीड़ लगी रहती थी। लोग जेल के बाहर से चिल्ला-चिल्ला-कर कहते कि 'घबराना मत। अगर तुम्हें जलाने का प्रयत्न किया जायगा तो हम सब बलवा करके तुरन्त तुम्हें छुड़ा लेंगे।' अधि-कारी लोग छः-सात महीने तक बलवा हो जाने के डर से पाद-रियों को न जला सके। अन्त में एक दिन जलाने की चेष्टा की गई तो जनता की भीड़ ने आकर पादरियों को छीन लिया।

जब जनता के पादरियों को छुड़ा ले जाने की यह खबर ब्रसेल्स पहुँची तो ग्रेनविले क्रोध से जल उठा। उसने तत्क्षण वेलेंशीस के उद्दण्ड लोगों को ठीक करने का संकल्प कर लिया। फौरन ही वेलेंशीस में फौजें भेजकर हज़ारों आदमियों को कत्ल करवा दिया गया। उनमें से एक पादरी नगर में मिला, उसे पकड़कर तुरन्त जला दिया गया। दूसरा कहीं दूसरी जगह भाग गया था। जेलों में इतने आदमी भर दिये गये कि जगह तक न रही।

दिन-रात ऐसे-ऐसे दृश्य देखकर ग्रेनविले के प्रति लोगों की घृणा बढ़ती ही जाती थी। आजकल हमारे ज़माने में समाचार-पत्र सरकार के अन्याय और निरंकुशता के विरुद्ध आवाज़ उठाकर लोगों को सजग करते हैं। लोगों के विचारों को सरकार के कानों तक पहुँचाते हैं। उस ज़माने में समाचार-पत्र नहीं थे। परन्तु लगभग उतनी ही उपयोगी 'वक्तृत्व-मण्डल' नामकी सँस्थायें प्रत्येक नगर की गली-गली में स्थापित थीं। इन में ग़रीब अमीर सभी एकत्र होकर व्याख्यान देते, कवितायें पढ़ते, अभिनय करते और स्वाँग

रचते थे। इन व्याख्यानों, कविताओं, अभिनय और स्वाँगों में सरकार के अन्याय और क्रूरता का विवेचन होता था। पादरियों, महन्तों और मठों का खूब मज़ाक उड़ाया जाता और ग्रेनविले की तो डटकर खबर ली जाती थी। इन कविताओं और व्याख्यानों की भाषा बड़ी असभ्य, अश्लील और कटु होती थी। कविता, अभिनय और भाषण करने वाले प्रायः दुकानदार, कारीगर और मज़दूर-पेशा लोग होते थे। कवि और सुलेखकों की साहित्य-गोष्ठी के लिए स्थान नहीं थे। ग्रेनविले ने बड़ा प्रयत्न किया कि इन मण्डलों को बन्द करवा दे। इसके लिए नये क़ानून बनवाये; फ़िलिप को लिखा; फाँसियां दीं; अन्य बहुत से यत्न किये। परन्तु कुछ फल न हुआ। ऐसा प्रतीत होता था, मानों लोगों ने संकल्प कर लिया है कि यदि और कुछ नहीं तो कम से कम हम जान पर खेलकर भी ग्रेनविले का अपमान तो अवश्य ही करेंगे। बात बढ़ने लगी। एक दिन एक मनुष्य ग्रेनविले के हाथ में एक अर्ज़ी रखकर चला गया। उस अर्ज़ी में कोई शिकायत अथवा प्रार्थना नहीं थी। ग्रेनविले के लिए अश्लील गालियाँ थीं। एक बेढंगा व्यंग-चित्र था, जिसमें उसे मुर्गी बनाकर नीचे बहुत से अण्डे रक्खे थे। अण्डों में से नवीन स्थापित मठों के महन्त कोई टाँग निकाले, कोई हाथ निकाले और कोई सिर पर महन्थी की पगड़ी बाँधे बाहर निकलने का प्रयत्न कर रहे थे। ग्रेनविले के सिर पर शैतान का चित्र था, और शैतान के मुँह के सामने लिखा था—'ग्रेनविले मेरा प्रिय सुपुत्र है। ऐ मेरे लोगो! उसका कहना मानो।' ग्रेनविले की निन्दा में लिखी हुई कवितायें उसका अपमान करने के लिए दीवारों पर चिपका दी जातीं

अथवा हाथों-हाथ घुमाई जाती थीं। परन्तु इन छोटी छोटी बातों से लोगों में बड़ा जोश फैलता और ग्रेनविले तथा 'इनक्विज़िशन' के विरुद्ध आन्दोलन बढ़ता जाता था। एक कविता इतनी सख्त निकली कि ग्रेनविले तिलमिला उठा। उसने फिलिप को लिखा "यह काम निस्सन्देह मेरे बैरी रिनार्ड का है और इस में एग्मोण्ट, मैंसफील्ड इत्यादि सरदारों का भी अवश्य हाथ है।" सब सरदार ग्रेनविले के विरुद्ध हो रहे थे। आरेञ्ज, एग्मोण्ट और हर्न ने तो खुल्लमखुल्ला ही विरोध शुरू कर दिया था। अपने विचार फिलिप को भी लिख दिये थे। मैंसफील्ड और उसके लड़के भी इन लोगों के साथ हो गये थे। एयरशॉट और अरेम्बर्ग इनसे अलग रहते थे। परन्तु उनकी भी सहाभूनुति ग्रेनविले के साथ नहीं थी। इधर से कुछ बड़े सरदारों ने बेरलामोण्ट से ग्रेनविले की भाँति वादा किया कि हम तुम्हारे लड़कों को अच्छी नौकरियां दिलाने का प्रयत्न करेंगे। इसीलिए वह भी डगमगाने लगा। थोड़े से खुशामदी लोगों के अतिरिक्त जिन्हें, ग्रेनविले से बहुत फायदा हो चुका था और आगे लाभ की आशायें थीं, कोई और उसका साथी न था। डाक्टर विग्लियस बड़ा विद्वान था। परन्तु उसे इन सब झगड़े-टण्टों से अपनी किताबों में अधिक आनन्द आता। वह 'खूनी क़ानूनों' के पक्ष में तो था परन्तु अपने देशवासियों का मिज़ाज भी अच्छी तरह पहचानता था। उसे मालूम था कि जबतक सहते हैं सहते हैं। जिस रोज़ लोग बिगड़े, खैर नहीं है। उसको आखें थीं। वह देख रहा था कि फिलिप का अत्याचार देश को किधर लिये जा रहा है। स्टेट कौंसिल का प्रमुख रहना जनता के क्रोध का

पात्र बनना था। उसने बहुत-सा रुपया जोड़ लिया था। उसका सिर विद्वत्ता का ख़जाना था। वह अपनी विद्वत्ता और रुपये-पैसे के दोनों खजानों में से किसी एक को भी ख़तरे में नहीं डालना चाहता था। उसकी हार्दिक इच्छा पेन्शन लेकर आनन्द से जीवन बिताने की थी। अनेक बार उसने फिलिप को लिखा। लेकिन फिलिप ने नहीं माना। उसकी तन्ख्वाह बढ़ाने का वादा कर दिया। लालची डाक्टर रुपये के लालच से ठहर गया और ग्रेनविले का मित्र बना रहा। परन्तु तूफ़ान से बचने के लिए सरदारों और ग्रेनविले में समझौता कराने का भी प्रयत्न करता रहा। डाक्टर सदा इस बात की चेष्टा करता क सत्य और असत्य के बीच का सुखद और सुविधा का मार्ग मुझे मिल जाय तो मैं उस पर दोनों तरफ के भय से सुरक्षित होकर आनन्द से चलता रहूँ परन्तु सत्य और असत्य का मार्ग सचमुच भूमिति की रेखा है। इतने पतले मार्ग को ढूँढ़ निकालना सर्वथा असम्भव है।

ग्रेनविले विरोध की परवाह न करके आरेञ्ज और एग्मोएट इत्यादि को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करता रहता। किसी काम में कोई सलाह इन लोगों से न लेता। विग्लियस और परमा के साथ बैठकर सब-कुछ स्वयं ही तय कर लेता। आरेञ्ज को यह भी सन्देह होने लगा था कि ग्रेनविले अवश्य हम लोगों के विरुद्ध फिलिप के भी कान भरता होगा। उन दिनों सरदारों में यह भी अफ़वाह फ़ैली की ग्रेनविले ने फिलिप को लिखा है कि जबतक नेदरलैण्ड के सात-आठ ख़ास-ख़ास सरदारों के सिर नहीं उड़ाये जायँगे तबतक नेदरलैण्ड में शान्ति नहीं होगी। ग्रेनविले और परमा ने कई दफ़ा लोगों को विश्वास

दिलाने का प्रयत्न किया कि यह अफ़वाह झूठी है, मगर लोगों को विश्वास न हुआ। ग्रेनविले ने फ़िलिप को भी लिखा कि लोग मेरे बारे में ऐसी झूठी खबरें उड़ाते हैं। कृपया आप उन सब को समझाइये कि मैंने कभी आपको ऐसी बात नहीं लिखी। फिलिप ने परमा को, यह लिखते हुए कि सरदारों को मेरी तरफ से समझा दो कि ग्रेनविले ने कभी मुझे ऐसा नहीं लिखा, यह भी लिखा कि ग्रेनविले ने तो नहीं लिखा है, मगर बात ठीक मालूम होती है। जबतक इन कमबख्त सरदारों में से दस-पाँच को सूली पर नहीं चढ़ाया जायगा, शान्ति नहीं होगी। ग्रेनविले के सम्बन्ध में जनता में भी बड़ी विचित्र खबरें उड़ा करतीं। कोई कहता कि उसने हाथ जोड़कर आरेञ्ज से प्राणभिक्षा ली है। कोई कहता, एगमोएट के पैरों पर सिर रखकर क्षमा माँगी है। कई बार ग्रेनविले को मार डालने की भी धमकी दी गई। परन्तु वह स्वभाव का बड़ा निर्भीक था। उसका मकान शहर के बाहर एक सुन्दर बाग में था। प्रायः अकेला ही अथवा दो-एक नौकरोंके साथ रोज़ रात को गलियों में होकर वहाँ जाता और बड़ी निर्भयता से अपना काम करता था।

इसी समय फ्रान्स में राजा और प्रजा का गृह-युद्ध छिड़ा। फिलिप ने अपने पूर्व वचनों के अनुसार प्रजा का दलन करने के लिए फ्रान्स के राजा के पास सेना भेजी। परमा को लिखा कि नेदरलैण्ड से कम से कम दो हज़ार सिपाही फ्रान्स भेजे जायँ। जब यह प्रस्ताव स्टेट कौंसिल में रक्खा गया तो इसका बड़ा विरोध हुआ। यहाँ तक कि डाक्टर विग्लियस और बेरला-मौण्ट तक ने इसका विरोध किया। अन्त में यह समझौता हुआ

कि सिपाहियों के बजाय रुपया भेज दिया जाय। नेदरलैण्ड की जेब काटकर फ्रान्स के राजा को अपनी प्रजा का सिर कुचलने के कार्य में सहायता दी गई। डचेज़ परमा बेचारी की बड़ी बुरी दशा थी। गेहूँ और पत्थर के बीच में जो दशा घुन की होती है वही दशा एक ओर सरदार एवँ जनता और दूसरी ओर फ़िलिप तथा ग्रेनविले के बीच में उसकी थी। उसकी तबीयत घबरा उठी थी। वह चाहती थी कि 'कंसल्टा' के अतिरिक्त किसी बड़ी सभा में नेदरलैण्ड की अवस्था पर विचार किया जाय जिससे उसके सिर सारा दोष न आये। फिलिप और ग्रेनविले पंचायतों को एकत्र करने के विरुद्ध थे। इसलिए 'गोल्डन फ्लीस' संस्था की बैठक बुलाई गई। सब उपस्थित सरदारों के सामने नेदरलैण्ड की अवस्था पर विचार शुरू हुआ। डाक्टर विग्लियस ने सरकार की ओर से एक बड़ा सुन्दर भाषण करते हुए नेदरलैण्ड के असन्तोष के बहुत से कारण बताये। असन्तोष दूर करने के कुछ उपाय भी बताये। परन्तु सबसे मुख्य कारण 'इनक्विज़िशन' की कोई चर्चा नहीं की गई। न उपायों में ही उसका कुछ जिक्र आया! सरदारों से यह कहकर कि आप लोग विचार कर उत्तर दें, सभा विसर्जित कर दी गई। सरदार जैसे असन्तुष्ट आये थे वैसे ही उठ कर चल दिये। उन्होंने देखा कि मुख्य बात 'इनक्विज़िशन' की कोई चर्चा नहीं होती। सभा समाप्त होने पर आरेन्ज ने विग्लियस और ग्रेनविले को छोड़कर अन्य सब सरदारों को अपने यहाँ एकत्र किया और परमा ने असन्तोष और उसके कारण एवं उपायों की जो बात उठाई थी उसपर आपस में विचार प्रारम्भ हुआ। एक तरफ से ग्रेनविले पर दोषारोपण

किया गया, दूसरी ओर से उसका पक्ष लिया गया। बादविवाद बहुत बढ़ गया और कुछ निश्चय न हुआ। कुछ दिन बाद बैठक फिर हुई। परमा ने 'इनक्विज़िशन' के विरोधी और ग्रेनविले के पक्ष वालों में समझौता कराने का बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु कुछ परिणाम न निकला। हाँ, एक बात अवश्य तय हुई कि प्रान्तिक पंचायतों के पास रुपये के लिए प्रार्थना की जाय और देश की दशा का वास्तविक ज्ञान कराने के लिए फिलिप के पास प्रतिनिधि भेजे जायँ। जब पंचायतों के पास रुपये की प्रार्थना भेजी गई तो पंचायतों ने यह कहकर इन्कार कर दिया कि फ्रान्स का गृहयुद्ध समाप्त हो रहा है, रुपया भेजने की कुछ जरूरत नहीं है। पंचायतों का यह उत्तर ग्रेनविले को छुरी-सा लगा। वह कहने लगा कि हर बात में रोड़ा अटकाने की पंचायतों की आदत पड़ गई है। स्पेन भेजने के लिए हॉर्न का भाई मौण्टनी चुना गया। वह हॉर्न से अधिक चतुर, आरेञ्ज का मित्र और ग्रेनविले का कट्टर शत्रु था। वह स्वयं रोमन कैथलिक पन्थ में विश्वास करता था परन्तु 'इनक्विज़िशन' की बर्बरता उसे असह्य थी। पहले हॉर्न को भेजने की बात चली, परन्तु हॉर्न को याद था कि ग्रेनविले के ज़रा भी विरुद्ध बोलने से फिलिप कितना बिगड़ गया था। अब फिर जाकर यदि वह उसके विरुद्ध बोलेगा तो न जाने फिलिप क्या करेगा। इसलिए उसने जाना स्वीकार नहीं किया।

ग्रेनविले रोज़ लम्बे-लम्बे ख़त फिलिप को लिखकर सब सरदारों के विरुद्ध कान भरता था। "सब के सब सरदार आपको और परमा को नीचा दिखाना चाहते हैं। सब कहते हैं कि

"फिलिप ने हमारी बग़ैर सलाह के मठ स्थापित करने का हुक्म पोप से कैसे मँगा लिया ? फिलिप है कौन ! देखें वह हमसे बिना पूछे नेदरलैण्ड में क्या कर सकता है ?" "इन लोगों ने अपने ऊपर बड़े कर्ज़ बढ़ा लिये हैं और जब कर्ज़ वाले रुपया माँगते हैं तो कहते हैं कि हम कहाँ से दें, फिलिप ने बहुत दिनों से हमारा वेतन नहीं दिया। इस तरह आप को बदनाम करते हैं। छोटे लोगों को भड़काकर अपना काम बनाना चाहते हैं। जनता के हित का ध्यान इन सरदारों को कुछ नहीं है; सब बनावटी बातें हैं। स्वयँ रुपया और अधिकार चाहते हैं। आप से जलते हैं। आपके अधिकार छीनना चाहते हैं। मुझे सूचना मिली है कि किसी सरदार ने यह भी कहा कि फिलिप से तो अच्छा यह है किसी दूसरे को अपना राजा चुन लें। इस सरदार के नाम का मुझे पता नहीं चला है। मगर सूचना एग्मोण्ट के घर से एक विश्वस्त सूत्र द्वारा मिली है। सुना है कि एग्मोण्ट बोहेमिया के राजा को प्रायः पत्र लिखता है, मगर मैं यह सब गप्प समझता हूँ। न बोहेमिया के राजा की हिम्मत है कि नेदरलैण्ड पर आक्रमण करे और न यह लोग ही आपको इस प्रकार यहाँ से निकाल सकते हैं। सुनते हैं यह भी चर्चा हुई कि बाहर से वह राजा आक्रमण करे और अन्दर से लोगों को भड़काकर क्रान्ति कर दी जाय। मगर मुझे ये सब बातें झूठी लगती हैं।" ग्रेनविले बड़ा चतुर था। वह फिलिप के हृदय में एग्मोण्ट की तरफ से डर भी बैठाना चाहता था और खुल्लमखुल्ला नाम भी नहीं लेना चाहता था। हॉर्न के बारे में उसने लिखा कि वह स्वयं तो सच्चा आदमी है मगर आरेञ्ज इत्यादि दूसरे सरदारों के बहकाने

आ जाता है। ग्रेनविले फिलिप को यह तो लिखता नहीं था कि सब सरदार 'इनक्विज़िशन' के विरुद्ध हैं। वह यह दिखाने की चेष्टा करता था कि सरदार स्वार्थी और सत्ता के भूके हैं, लोगों को अधर्म के लिए दण्ड न देकर इसलिए खुश रखना चाहते हैं कि आपके विरुद्ध आसानी से उन्हें भड़का सकें। उसने फिलिप को यह भी लिखा कि मौण्टनी जब स्पेन पहुँचे तो उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाय? फिलिप से सलाह करके परमा और ग्रेनविले ने सरदारों में फूट डलवाने का भी प्रयत्न किया। आरेञ्ज का एग्मोण्ट से अधिक रुपया सरकारी ख़ज़ाने पर चाहिए था। परन्तु एग्मोण्ट को इस साल आरेञ्ज से अधिक रुपया इसलिए दिया गया कि आरेञ्ज को बुरा लगे और वह एग्मोण्ट से घृणा करने लगे। रोम में राजा का चुनाव होने वाला था। वहाँ जाने की आरेञ्ज की इच्छा थी। परन्तु आरेञ्ज को नीचा दिखाने के लिए ष्यरशॉट को भेजा गया। जिससे आपस में मनोमालिन्य हो जाय। फिलिप को यह भी सन्देह हो चला कि आरेञ्ज इतना सोच-विचार क्यों किया करता है। अवश्य ही मेरे विरुद्ध कुछ-न-कुछ षड्यन्त्र रच रहा होगा। उसने बहुत पता लगाने का प्रयत्न किया कि आरेञ्ज क्या सोचा करता है, मगर बेचारे को कुछ भेद नहीं मिला।

जब मौण्टनी स्पेन पहुँचा तो फिलिप उससे बड़ी अच्छी तरह मिला। जैसा ग्रेनविले ने लिखा था उसी के अनुसार मौण्टनी को समझाने का प्रयत्न करने लगा। "स्पेन का 'इन-क्विज़िशन' नेदरलैण्ड में स्थापित करने की मेरी हरगिज़ इच्छा नहीं है। नये कानून जारी करने में ग्रेनविले का कोई हाथ नहीं

था। न उसकी राय से ये स्थापित किये गये हैं। स्थापित करने का मेरा विचार तो बहुत दिनों से था। और जब मैं इंग्लैण्ड में मेरी से विवाह करने गया था तभी मैंने बरघन से इस सम्बन्ध में बातचीत की थी। ग्रेनविले मुझसे सरदारों की कभी बुराई नहीं करता। मुझे नेदरलैण्ड पर बहुत स्नेह है। मैंने लोगों को धार्मिक बनाने के विचार से उन्हीं के हित के लिए 'इनक्विजिशन' स्थापित किया है।" मौण्टनी ने फिलिप की बातों से समझा कि फिलिप दय से बोल रहा है। परन्तु ग्रेनविले के सम्बन्ध में, जिसको वह खूब अच्छी तरह जानता था और हृदय से घृणा करता था, वह अपने विचार न बदल सका और बोला—"ग्रेनविले बड़ा स्वेच्छाचारी, लालची, दिखावटी और निरंकुश है। देश भर के लोग उसके सम्बन्ध में यही सम्मति रखते हैं। 'इनक्विजिशन' से लोग दहल उठे हैं और नये मठों को सब बड़ी घृणा से देखते हैं। ग्रेनविले, 'इनक्विजिशन' नये मठ और महन्त यही तीनों चीजें नेदरलैण्ड के सारे असन्तोष की जड़ हैं।" इस साफ़-साफ़ बोलने के लिए आगे चलकर मौण्टनी को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। दिसम्बर सन् १५६२ ई० को वह नेदरलैण्ड लौट आया और उसने फिलिप का उत्तर 'स्टेट कौंसिल' में सुनाकर कहा—"फिलिप ने कहा है कि सरदार लोग धर्म की रक्षा करने में मेरी सहायता करें। उन सबका वेतन भेज दूँगा"। आरेञ्ज का चेहरा लाल हो गया। उसको पूर्ण विश्वास हो गया कि जो गुप्त निश्चय फ्रान्स के राजा के साथ फिलिप ने किया था और जिसका भेद शिकार खेलते समय

जंगल में गलती से हेनरी ने मुझे बता दिया था, उसे अक्षरशः पूरा करने का और निर्दोष जनता के खून की नदियाँ बहाने का फिलिप पक्का इरादा कर चुका है। शाहजादा आरेञ्ज ने सोचा कि अब इस तरह काम न चलेगा। उसने कहा कि या तो ग्रेनविले ही नेदरलैण्ड में रहेगा या मैं ही रहूँगा। एग्मोण्ट, हार्न, मौण्टनी, बरघन इत्यादि सब बड़े सरदारों ने उसका साथ देने का वचन दिया।

११ मार्च सन् १५६३ ई० को आरेञ्ज, हार्न और एग्मोण्ट ने मिलकर फिलिप को एक पत्र लिखा। उसमें उन्होंने लिखा कि अब तक हमने ईमानदारी से आप की सेवा की, परन्तु ग्रेन-विले जैसे मनुष्य के द्वारा नित्य अपमानित होकर अब एक दिन भी काम करना हमें असह्य है। जनता तो ग्रेनविले से इतनी दुःखी हो गई है कि अगर अब तक हम लोग न समझाते रहते तो न जाने क्या हो जाता? हम आपको पहले भी एक पत्र लिख चुके हैं। यदि आप को एक मनुष्य को प्रसन्न करके देशभर को नाराज़ करना है तो आपकी खुशी। हमारे विषय में शायद यह समझा जाय कि हम लोग सत्ता के भूखे है। इसलिए हम लोग स्टेट कौंसिल से इस्तीफ़ा देते हैं। एअरशॉट, अरेम्बर्ग और बेरलमौण्ट के अतिरिक्त सब सरदारों ने इस पत्र को पसन्द किया। परन्तु ऐसे जोरदार पत्र पर हस्ताक्षर करने की आरेञ्ज, एग्मौण्ट और हार्न के अति-रिक्त किसी की हिम्मत नहीं पड़ी। बरघन और मौण्टनी का भी, जो इस आन्दोलन में खूब भाग ले रहे थे, इस पत्र पर दस्त-खत करने का साहस न हुआ। एग्मोण्ट और हार्न बड़े जोशीले थे। उन्होंने इस बात का कुछ विचार नहीं किया कि इस पत्र का

क्या परिणाम हो सकता है। सम्भव है फिलिप हमारा सदा के लिए जानी दुश्मन हो जाय। परन्तु दूरदर्शी आरेञ्ज ने सब समझ-बूझकर, और सब परिणामों के लिए कमर कसकर, खुली आँखों से, यह जानते हुए कि आज संसार के सबसे बड़े शक्तिशाली मनुष्य से लड़ाई मोल ले रहा हूँ, पत्र पर अपने हस्ताक्षर किये थे। एग्मोएट तो इतने जोश में था कि ऐअरशॉट और अरेम्बर्ग से अपने दल में न मिलने पर वाद-विवाद करते करते लड़ बैठा। वह हर जगह हर मनुष्य से कहता फिरता था कि सब लोग मिलकर आन्दोलन करो। मेल की बड़ी आवश्यकता है। बिना मेल के स्वतन्त्रता का युद्ध सफल नहीं हो सकता। शीघ्र ही इस पत्र की खबर हर जगह फैल गई। इस पर एग्मोएट और भी बिगड़ा। परमा के सामने ही एक दिन अरेम्बर्ग से भिड़ गया कि तुमने ही सारा भेद खोला है। अरेम्बर्ग सौगन्द खाकर बोला कि मैं सच कहता हूँ मैंने किसी से इस सम्बन्ध में अपनी जबान भी नहीं खोली है। मगर भेद खुला गया तो आश्चर्य क्या है। हर गली-कूचे में सबसे डींग हाँकते फिरते हो। एग्मोएट ने फिर कहा—"नहीं तुम्हीं ने विश्वासघात किया है।" इसपर एरेम्बर्ग को इतना क्रोध आया कि उसने अपनी तलवार की मूँठ पकड़कर कहा—"यदि फिर कोई मुझपर विश्वासघात का दोषारोपण करेगा तो बस तलवार से ही फैसला होगा।" लोगों ने बड़ी कठिनाई से बीच-बिचाव किया, नहीं तो वहीं एक-आध की जान चली गई होती। ऐग्मोएट के जोश का पार न था। हर जगह जो उसके मन में आता बक देता। वह स्वभाव से सिपाही था, रणक्षेत्र का वीर था। आरेञ्ज की तरह राजनीति को शत-

रंज के दाव-पेंच नहीं जानता था। उसकी इन सब छोटी से छोटी बातों की खबर परमा और ग्रेनविले फिलिप के पास भेज-कर उसके विरुद्ध फिलिप का क्रोध भड़काते रहते थे। बेरलामोएट ने पत्र का विरोध किया था। परन्तु सरदारों ने उसके पुत्रों को अच्छी नौकरियाँ दिलवाने का वादा कर दिया इसलिए वह सर-दारों को भी अप्रसन्न नहीं करना चाहता था। ग्रेनविले से उसने मिलना छोड़ दिया था। एक वर्ष से ग्रेनविले से एक बात नहीं की थी। इसका फल यह हुआ कि दोनों पक्षों को प्रसन्न रखने के यत्न में उसपर दोनों पक्षों का विश्वास नहीं रह गया।

छः महीने के बाद फिलिप ने सरदारों के पत्र के उत्तर में लिखा—"आप लोगों का मेरे प्रति श्रद्धा और प्रेम तो मैं बहुत पसन्द करता हूँ, मगर बिना किसी कारण के मैं ग्रेनविले को कैसे निकाल दूँ? आप लोगों ने उसके कोई अपराध तो साफ़-साफ़ लिखे ही नहीं हैं। ऐसी बातें पत्र-व्यवहार से तय होनी कठिन होती हैं। आप में से कोई एक स्पेन आकर मुझ से सब बातें कर जाय।" फिलिप की तो आदत ही हर काम में टाल-मटोल करने की थी। किसी बात का निश्चयात्मक उत्तर देना उसने सीखा ही न था। वह जानता था कि ग्रेनविले नेदरलैण्ड में सबकी घृणा का पात्र बन रहा है। मगर यह सब लोग ग्रेनविले से इसीलिए तो घृणा करते थे कि वह फिलिप की इच्छानुसार कार्य्य करता था। यदि फिलिप को लोगों की इच्छा का ही विचार होता तो उसे अपनी इच्छा का विचार छोड़ना चाहिए था, अन्यथा ग्रेनविले के पक्ष में खड़ा होना उसका कर्त्तव्य था। परन्तु फिलिप अपने स्वभाव के अनुसार

न तो नेदरलैण्ड से 'इनक्विज़िशन' हटाना चाहता था, न खुल्लम-खुल्ला ग्रेनविले का पक्ष लेना चाहता था। इसलिए उसने कुछ साफ़-साफ़ उत्तर न देकर एक सरदार को स्पेन बुलाया। डचेज़ को उसने लिखा—"मैं सरदारों में फूट डालना चाहता हूँ। तुम जहाँ तक हो एगमौएट को यहां भेजना, वह सीधा आदमी है। मेरी बातों में आकर आरेञ्ज इत्यादि से अलग हो जायगा।"

सरदारों में फिलिप के उत्तर से बड़ा असन्तोष फैला। ग्रेनविले के बाप-दादे लोहार थे। इसलिए लोगों ने उसके घर का नाम तिरस्कार से 'लोहिये की दूकान' रख दिया था। पत्र पढ़कर कुछ सरदार बोले—"भाई फिलिप बेचारा क्या करे? यह पत्र तो 'लोहिये की दूकान' का गढ़ा होगा।" वास्तव में बात भी यही थी। जैसा ग्रेनविले ने उसे लिखा था, उसने उत्तर दे दिया था। परमा ने एगमौएट से कहा कि फिलिप तुम्हें बुलाते हैं। एगमौएट बोला—"मुझे जाने में कोई बाधा नहीं है, परन्तु अपने मित्रों से सलाह कर लूँ। पत्र सबकी सलाह से लिखा गया है।" सब सरदारों की राय हुई कि फिलिप का कुछ करने का इरादा नहीं है केवल समय नष्ट करना चाहता है। उन्होंने आरेञ्ज के द्वारा फिलिप को यह उत्तर लिखवा दिया कि हममें हरएक आपके पास आने को सदा तैयार है, परन्तु इतनी लम्बी यात्रा करके ग्रेनविले के अपराध आपको बताने का हममें से किसी को आवश्यकता नहीं। हमारी इच्छा कभी आपको किसी के दोष अथवा अपराध बताने की नहीं थी, न भविष्य में ही हम किसी के ऊपर कोई दोषारोपण करना चाहते हैं। हमने तो लोगों

की शिकायतें आपको लिखी थीं। हमें विश्वास था कि हमारी पिछली सेवाओं के कारण आपका हम पर इतना विश्वास हो गया होगा कि आप हमारी शिकायतें सच्ची मान लेंगे। अपने मुँह से हम किसी के विरुद्ध विशेष कुछ नहीं कहना चाहते। अगर आपको अपराध जानने की इच्छा होगी तो खोजने पर आपको बहुत से अपराधों का पता चल जायगा। हमारा निवेदन है कि अब हम 'स्टेट कौंसिल' के सदस्य नहीं रह सकते; क्योंकि हम दूसरे के कृत्यों का और उनके परिणामों का अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेने को तैयार नहीं हैं। ये बातें सबकी ओर से आरेञ्ज ने परमा से भी कह दीं और आरेञ्ज, एग्मौण्ट तथा हॉर्न तीनों ने 'स्टेट कौंसिल' में जाना बन्द कर दिया।

हॉर्न ने एक निजी पत्र लिखकर भी फिलिप को समझाया कि ग्रेनविले से लोग इतनी घृणा करने लगे हैं कि अब वह आपकी कोई सेवा इस देश में अच्छी तरह नहीं कर सकता। आप उसे कहीं दूसरी जगह भेज दीजिए। पुराने धर्म की रक्षा करने को हम सब सरदार तैयार हैं। परमा ने भी अपने मन्त्री को स्पेन भेजकर फिलिप को समझाने की चेष्टा की कि ग्रेनविले के रहने से नेदरलैण्ड में अशान्ति बढ़ जायगी। पत्र भेजने के कुछ दिन बाद सरदारों ने मिलकर शिकायत के तौर पर परमा को एक अर्ज़ी दी कि "देश का बुरा हाल है। न राजा का भला हो रहा है, न प्रजा का। ख़जाने में पैसा नहीं है, प्रजा में असन्तोष बढ़ रहा है। सीमाप्रान्त के क़िले बेमरम्मत पड़े हैं। सरकार पर कर्ज़ होने के कारण देश के व्यापारियों को दूसरे

देश वाले क़ैद कर लेते हैं। पंचायतों को एकत्र करके उनकी सलाह से काम किया जाय तो सब कुछ ठीक हो सकता है। सरकार की राय पंचायतों को एकत्र करने की नहीं है। इसलिए हम लोगों ने 'स्टेट कौंसिल' के कार्य्य में भाग लेना व्यर्थ समझकर वहाँ आना बन्द कर दिया है। आप इसका कुछ और अर्थ निकालकर बुरा न मानें। अपने प्रान्तों में सरकार का काम हम लोग चलाते रहेंगे। आपकी अन्य सेवाओं के लिए भी हम लोग हाज़िर हैं।" सरदारों का यह पत्र जब फिलिप के पास पहुँचा तो वह अपने स्वभाव के अनुसार टाल-टूल करने लगा। उसने पत्र उठाकर ड्यूक ऑव् एलवा के पास भेज दिया और उसकी इस सम्बन्ध में राय पूछी। एलवा एक ख़ूँख़ार आदमी था; आकर फिलिप से कहने लगा—"जब मैं इन कम्बख़्त सरदारों के पत्र ग्रेनविले की शिकायत के सम्बन्ध में पढ़ता हूँ तो गुस्से से पागल हो जाता हूँ। इन बदमाशों का सिर उड़ा देना चाहिए। ख़ैर, जब तक सिर उड़ाने का मौक़ा नहीं मिलता आप इन लोगों को सीधा उत्तर न दीजिए। एग्मोण्ट की पीठ ठोंककर अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न कीजिए। शायद वह फूट आये।"

इधर ग्रेनविले बराबर फिलिप को लिखता—"धर्म का कार्य पूरी तरह से नहीं हो पाता। आरेञ्ज, हार्न, एग्मौण्ट इत्यादि अपने दल में सब छोटे-बड़े सरदारों के मिलाने का रात-दिन प्रयत्न कर रहे हैं। मुझे रोज़ अपमान सहना पड़ता है। ख़ैर, उसकी तो मुझे चिन्ता नहीं, क्योंकि मैं श्रीमान् की सेवा में अपना जीवन बड़ी प्रसन्नता से दे सकता हूँ। परन्तु मुझे चिन्ता एक

बात की है; और वह यह कि मेरा विरोध तो सरदारों का केवल ऊपरी दिखावा है। उनका भीतरी आशय कुछ और ही है। एक दिन आरेञ्ज, एग्मौएट. हार्न, मौएटनी और बरघन गुप्त-रूप से एक जगह बहुत देर तक सलाह करते रहे। पता नहीं चला कि उन्होंने क्या निश्चय किया है ? इन गुप्त मन्त्रणाओं में कोई बड़े भेद की बात अवश्य है। शायद उनका इरादा नेदरलैण्ड पर से आपका राज्य हटा देने का है। मुझे यहाँ से निकालकर यह काम बड़े सुभीते से हो सकेगा। इसलिए पहले मुझे निकाल देना चाहते हैं। मैंने सुना है कि वे लोग प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने की चर्चा कर रहे हैं, जिसमें उन्हीं का हुक्म चले, आप कुछ न कर सकें। आरेञ्ज विलियम प्रायः बड़ी डींग हाँका करता है कि मैं दूसरे देशों से सहायता माँग लूँगा। मेरा जर्मनी से बड़ा सम्बन्ध है। कुछ जर्मन सेनायें सीमा पर इकट्ठी भी हो रहीं हैं। अभी कुछ दिन हुए एक आदमी आरेञ्ज के यहाँ थोड़े दिन ठहरकर आया था। वह कहता था कि हार्न और मौएटनी भी आरेञ्ज के घर पर ठहरे हुए थे। एक दिन खाना खाते समय मौएटनी ने इस मनुष्य से पूछा कि 'तुम्हारे यहां बरगण्डी में कितने नवीन मत वाले हैं ?' उसने कहा—'एक भी नहीं।' मौएटनी बोला 'बरगण्डी के सब लोग मूर्ख मालूम होते हैं। जिनमें कुछ भी बुद्धि है वह सब आजकल नये मत के पक्ष में हैं।' आरेञ्ज ने उसे चुप करने का प्रयत्न करते हुए कहा कि बरगण्डी वाले जैसे हैं वैसे ही अच्छे हैं। इस पर मौएटनी बोला कि मैंने तो हाल ही में नवीन पन्थवालों की इतनी कथाओं और प्रार्थनाओं में भाग लिया है कि तीन मास तक के लिए काफी हैं। सम्भव है यह

सब मौएटनी ने मज़ाक में कहा हो। परन्तु जो मनुष्य मज़ाक में धर्म के सम्बन्ध में ऐसे विचार प्रकट कर सकता है, वह ट्रेंट का अधिकारी होकर वहाँ पुराने धर्म की रक्षा क्या करता होगा? एअरशॉट के ड्यूक को बरघन अपने दल में सम्मिलित न होने और राजभक्त रहने पर रात-दिन छेड़ा करता है। एक दिन तो तमाम नौकर-चाकरों के सामने सबने मिलकर उसका बहुत मज़ाक उड़ाया। एअरशॉट के यह पूछने पर कि अगर फिलिप ने कहना न माना तो आप लोग क्या करेंगे, बरघन क्रोधित होकर बोला—"कहना न माना तो क्या करेंगे? हम फिलिप को दिखा देंगे कि हम क्या कर सकते हैं?" जेनेवा के एक बदमाश ने यहाँ कत्ल कर डाला था। उसे मैंने देश-निकाला का हुक्म दिया था। परन्तु हार्न ने उसे अपने घर पर मेरा कत्ल कराने को रख छोड़ा है। यदि सत्य और परमात्मा हमारी तरफ़ है, यदि सनातन धर्म की रक्षा हमारे हाथों होनी है, तो हार्न और जिनेवा का बदमाश दोनों मेरी जान लेने में असफल रहेंगे। यदि उन्होंने मुझे मार भी डाला तो भी मुझे विश्वास है कि उनकी आशायें पूर्ण न होंगी।" इस प्रकार ग्रेनविले फिलिप-जैसे शक्की आदमी के सब सरदारों के विरुद्ध रोज़ कान भर-भरकर उसके दिल में सरदारों के विरुद्ध घृणा और भय उपजाने का प्रयत्न करता रहता था। चालाक तो इतना कि साथ-साथ यह भी लिख देता था कि "किसी के ख़िलाफ़ श्रीमान् के कान भरने की मेरी इच्छा नहीं। मैं तो केवल आपको इस देश की स्थिति का पूर्ण ज्ञान कराने के लिए आपके पास छोटे से छोटे समाचार भेजता रहूँगा। जन-साधारण बिलकुल राजभक्त हैं। ये सरदार

लोग उनको भड़काकर अपना मतलब सिद्ध करना चाहते हैं। अगर श्रीमान् इस देश में स्वयं पधारें तो सब असन्तोष दूर हो जायगा। लोग सरदारों का साथ छोड़ देंगे।" ग्रेनविले की राय में फिलिप का नेदरलैंड में आ जाना नेदरलैण्ड के सब रोगों का इलाज था। फिलिप ने आना तो स्वीकार कर लिया, परन्तु नेदरलैण्ड में आने से वह बड़ा घबराता था। जहाँतक बने टालना चाहता था। विलियम भी चाहता था कि फिलिप नेदरलैण्ड आवे तो अच्छा है। फिलिप को देश की दशा अपनी आंखों देखने का मौका मिलेगा और उसे मालूम हो जायगा कि ग्रेनविले कहाँ तक सच्ची खबरें भेजता था, और क्या-क्या झूठ लिखता था।

सन् १५६३ ई० की ये घटनायें देखकर उस समय प्रतीत होता था कि शीघ्र ही तूफान आने वाला है। ग्रेनविले को कुछ समय के लिए विजय मिल गई थी। आरेञ्ज, हार्न और एग्मौण्ट 'स्टेट कौंसिल' से निकल आये थे। फिलिप कुछ निश्चय ही नहीं कर पाया था कि क्या करना ठीक होगा। एलवा, नेदरलैण्ड के लोगों और सरदारों की धृष्टता पर दाँत पीसता था। परमा भी ग्रेनविले से ऊब उठी थी। ग्रेनविले भी सोचने लगा था कि स्वयं नेदरलैण्ड से सकुशल निकल जाऊँ तो अच्छा है। जनता का क्रोध दिन-दिन उसके प्रति बढ़ रहा था। इसी समय एक और घटना हो गई। सरकारी कोषाध्यक्ष के यहाँ सब सरदारों की दावत थी। वहां ग्रेनविले की खूब हँसी उड़ाई गई। ग्रेनविले अपने नौकरों को सुनहरे कपड़ों की कामदार वर्दियाँ पहनाकर खूब शान से रखता था। सरदारों ने निश्चय किया कि हम लोग

अपने नौकरों को बिलकुल सादी वर्दियाँ पहनायेंगे। वर्दियों पर कुछ ऐसे चिन्ह बना देंगे जिससे सब लोग समझ जावें कि ग्रेनविले का मज़ाक उड़ाने के लिए वर्दियाँ निकाली गई हैं। एग्मौएट के घर से शुरू होकर कुछ ही दिनों में नौकरों का नया-नया फैशन सारे शहर में फैल गया। जिधर देखो उधर ही सरदारों के नौकर लम्बे-लम्बे ढीले-ढाले सादे कपड़े के अंगरखे पहने, विदूषकों की सी लम्बी टोपी लगाये शहर में घूमते फिरते थे। लोग खूब ठट्टा मारकर हँसते और दिल भरकर ग्रेनविले का मज़ाक उड़ाते। सब अमीरों ने अपने नौकरों को ऐसी ही पोशाकें सिलवा दीं। बजाज़खाने में वर्दियों के मेल का कपड़ा ख़त्म हो गया। दर्जियों की दूकानों पर रात-रात भर सिलाई हुई। परमा भी ग्रेनविले के अपमान पर दिल ही दिल में बहुत खुश हुई और आरेञ्ज, एग्मौएट इत्यादि से उसने इस सम्बन्ध में कुछ शिकायत नहीं की। ग्रेन-विलेने सब हाल नमक-मिर्च लगाकर फिलिप को लिख भेजा।

आरेञ्ज, एग्मौएट और हार्न फिलिप से अपने पत्र का उत्तर न पाकर रुष्ट हो रहे थे। आरेञ्ज ने अपने जासूस फिलिप के राजभवन तक में रख छोड़े थे। उसके पास सारी गुप्त मन्त्रणाओं की खबरें, और आवश्यक पत्रों की नकलें तक आजाया करती थीं। जितनी खबर फिलिप की चालों की परमा को भी नहीं रहती थी, उतनी आरेञ्ज को रहती थी। अन्त में फिलिप ने ड्यूक ऑव् एलवा से सलाह करके निश्चय किया कि ग्रेनविले को नेदरलैण्ड से हटा लेना ही अच्छा है। ग्रेनविले की जान भी खतरे से बच जायगी और लोगों को सन्तोष भी हो जायगा परन्तु राजाज्ञा-द्वारा ग्रेनविले को हटाने से जनता का दिल बढ़ता

अतएव चुपचाप ग्रेनविले को लिख दिया गया कि अपनी माता को रखने का बहाना करके लम्बी छुट्टी ले लो और चल दो। अस्तु; जब ग्रेनविले छुट्टी लेकर चला तो देश भर में आनन्दोत्सव होने लगे। किसी ने उसको घर छोड़कर चलने के एक दिन पहले ही मोटे-मोटे अक्षरों में उसके द्वार पर लिख दिया 'बिक्री के लिए।' जब ग्रेनविले शहर छोड़कर जाने लगा तो सरदार ब्रेडरोड और ह्यूगस्ट्रेटन अपने ठण्डे नेत्र करने के लिए शहर के एक द्वार पर जा चढ़े। दुश्मन को मुँह काला करके देश से जाते देख उनके हृदय गद्गद् हो रहे थे। जब ग्रेनविले उस द्वार से निकल गया तो दौड़कर दोनों एक ही घोड़े पर चढ़कर गाड़ी के पीछे दौड़े। लड़कों की तरह बहुत दूर तक पीछे दौड़ते हुए गये। गाड़ी को दूर तक निकालकर लौट आये। मसखरा ब्रेडरोड तो नंगे पाँव ही घोड़े पर चढ़ बैठा था। ग्रेनविले के चले जाने पर भी लोगों को भय रहा कि छुट्टी खत्म होते ही शायद वह फिर लौट आयगा मगर विलियम ऑव् आरेञ्ज अच्छी तरह समझता था कि जब फिलिप को ग्रेनविले का नेदरलैण्ड में रखना कठिन हो गया तो वापस बुलाकर फिर रखना तो और भी कठिन है। ग्रेनविले चला गया था परन्तु लोगों का उसका अपमान करने से दिल नहीं भरा था। कई महीने बाद एक दिन काउण्ट मैन्सफील्ड के यहाँ दावत में ग्रेनविले का स्वाँग बनाया गया। दिन-भर उसकी हँसी उड़ाई गई। एक आदमी दाढ़ी लगाकर आया। उसके पीछे एक मनुष्य ग्रेनविले का वेश धारण कर आया और उसके पीछे शैतान के रूप में एक मनुष्य ने आकर ग्रेनविले को ख़ूब कोड़े लगाये। परमा

भी ग्रेनविले के चले जाने से प्रसन्न थी। ग्रेनविले ने उसे बिलकुल कठपुतली बना रक्खा था; अब वह स्वतन्त्र हो गई। खोई हुई सत्ता उसे फिर मिल गई। उसने फिलिप को लिखा—"अभी तक देश की दशा का मुझे यथार्थ ज्ञान ही नहीं हो पाता था। ग्रेनविले के चले जाने पर अब मुझे मालूम हुआ है कि स्वार्थी सेवकों ने अपना काम बनाने के लिए देश की दशा कितनी बिगाड़ डाली है। क्रान्ति हो जाने की बिलकुल सम्भावना है।" उधर परमा ने ग्रेनविले को भी लिखा—"तुम्हे मैं सदा से भाई की तरह प्यार करती हूँ। तुम्हारे चले जाने पर मुझे बड़ा खेद है।" अब परमा आरेञ्ज इत्यादि से भी अच्छी तरह मिलने लगी थी। डाक्टर विग्लियस सदा ग्रेनविले का साथ दिया करता था। अब परमा उसकी भी ख़ूब ख़बर लेने लगी। ग्रेनविले नेदरलैण्ड से जाकर फिर नहीं लौटा। फिलिप जानता था कि नेदरलैण्ड में उसे कोई नहीं चाहता। उसे वापस भेजना तूफ़ान खड़ा करना है। इसलिए फिलिप ने उसे नेपिल्स का वाइसराय बनाकर भेज दिया। फिर आवश्यकता पड़ने पर स्पेन बुला लिया। अन्त तक ग्रेनविले स्पेन की राजधानी में ही रहा। २१ सितम्बर सन् १५८६ ई० को सत्तर वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त हो गया।

---

(७)

ग्रेनविले के बाद

ग्रेनविले के चले जाने पर आरेञ्ज, हॉर्न और एग्मौएट 'स्टेट कौंसिल' के कार्य्य में फिर भाग लेने लगे। बड़ी मेहनत से काम करते—प्रायः रात तक बैठे रहते। आरेञ्ज ने परमा और फिलिप दोनों को अच्छी तरह समझा दिया था कि यदि ग्रेनविले लौटा तो हम सब फिर तुरन्त काम छोड़ देंगे। आरेञ्ज की अवस्था इस समय तीस वर्ष की थी। परन्तु चिन्ता और सोच-विचार के कारण उसके माथे पर झुर्रियाँ पड़ने लगी थीं। शरीर भी पतला और पीला पड़ चला था। जिस ऐश-आराम में लोटने वाले आरेञ्ज का हम पहले जिक्र कर चुके हैं अब यह वह आराम से जिन्दगी बिताने वाला आरेञ्ज न था। उसे दिन-रात चिन्ता रहती थी कि अत्याचार, अन्याय और अराजकता से देश की किस प्रकार रक्षा की जाय। अभी तक न्याय खुले आम बिकता था। अमीर बड़े-से-बड़ा क़सूर करने पर भी बचे रहते थे। ग़रीब निर्दोष होने पर भी कोड़े खाते और जेल में ठूँस दिये जाते। राज्य के बड़े-से-बड़े अधिकारी तक रिश्वत लेते थे। यहाँ तक कि डचेज़ परमा भी प्राइवेट सेक्रेटरी आरमेण्ट्रोज की सहायता से धार्मिक और राजकीय ओहदों को बेच-बेचकर खूब रुपया जोड़ रही थी। एग्मौएट इन सब बातों की अधिक परवाह नहीं करता था। डचेज़ इत्यादि के साथ दावतें

चढ़ाने में ही प्रसन्न और सन्तुष्ट रहता था। परन्तु यह दशा देखकर आरेञ्ज का हृदय फटता था। आरेञ्ज चाहता था कि 'पंचायतों' की बैठक बुलाई जाय; धार्मिक 'खूनी कानूनों' की सख्ती कम कर दी जाय और अन्य सब समितियों को तोड़कर सारी सत्ता 'स्टेट कौंसिल' के हाथों सौंप दी जाय। परन्तु इन सुधारों को अमल में लाना सरल काम न था। 'पंचायतों' की बैठक बुलाना और 'खूनी क़ानूनों' को नरम करना फिलिप की निरंकुशता की जड़ पर कुठाराघात करना था। चारों तरफ अन्धाधुन्ध बेईमानी और लूट का बाज़ार गरम था। इस भयंकर अन्धकार में केवल एक दीपक टिमटिमा रहा था। आरेञ्ज अराजकता और अन्याय को समूल नष्ट कर डालने के लिए कमर कस रहा था।

इसी समय एण्टवर्प में एक घटना हो गई। अक्टूबर मास में नये पन्थ के एक बड़े साधु पादरी को सूली पर चढ़ा देने का हुक्म दिया गया। जनता उस पादरी को बहुत आदर और स्नेह की दृष्टि से देखती थी। लोगों को उसका सूली पर चढ़कर जान गँवाना सहन न हो सका। जब पादरी सूली पर चढ़ाया जाने लगा तो चारों ओर से लोगों ने उमड़कर सिपाहियों और मजिस्ट्रेटों पर हमला कर दिया। जल्लाद तो जल्दी से पादरी को सूली पर चढ़ाकर और हथौड़ों से उसका सिर फोड़कर भाग गया। सिपाही और मजिस्ट्रेट भी जान बचाकर भाग गये। परन्तु फिलिप ने जब यह समाचार सुना तो जल उठा। परमा को लिखा कि बलवे में शरीक होने वालों को ऐसा सबक़ सिखाना चाहिए कि उन्हें याद रहे। बहुत से आदमियों को

फाँसियाँ देकर यह मामला तो ठण्डा पड़ा। मगर इधर जनता टिटेलमैन के, जो धर्म से विमुख होने वालों को दण्ड देने के लिए विशेष रूप से नियुक्त किया गया था, अन्याय से घबरा उठी थी। जनता की तरफ से फ्लैण्डर्स की पंचायतों ने फिलिप को एक प्रार्थनापत्र भेजा कि 'टिटेलमैन' बड़ा अन्याय करता है। दोषी-निर्दोष जिसपर ज़रा नाराज़ हो जाता है उसी को घर से घसीट मगाँ, और गवाहों से जो जी में आता है ज़बरदस्ती कहलवाकर धर्म के नाम उन्हें सूली पर चढ़ा देता है। कृपया ऐसा प्रबन्ध कर-दीजिए कि कम से कम गवाहों पर ज़बरदस्ती न की जाय। परन्तु इस प्रार्थनापत्र का फिलिप की ओर से कुछ उत्तर न मिला। उलटा फिलिप ने परमा को यह लिखा कि अधर्मियों को दण्ड देने में बहुत सुस्ती दिखाई जा रही है। ट्रेण्ट में होनेवाली पादरियों की महान पंचायत ने जिस सख्ती से अधर्मियों को दण्ड देना निश्चय किया है उसी प्रकार नेदरलैण्ड में अधर्मियों को दण्ड दिया जाय। परमा की गति साँप-छछूँदर की सी हो रही थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि नेदरलैण्ड की प्रजा इतनी ऊब उठी है कि यदि और अधिक सताई जायगी तो उबल पड़ेगी। डाक्टर विग्लियस की राय थी कि अधर्मियों के साथ ज़रा भी नरमी का व्यवहार नहीं करना चाहिए। 'स्टेट कौंसिल' में निश्चय हुआ कि ट्रेण्ट की पादरियों की सभा के उस निश्चय के अनुसार, जिसे यूरोप के किसी देश ने स्वीकार नहीं किया है, नेदरलैण्ड में दूसरे मत वालों को दण्ड देना असम्भव है। यह भी निश्चय हुआ कि फिलिप को समझाने के लिए एग्मोण्ट को स्पेन भेजा जाय। डाक्टर विग्लियस को एग्मोण्ट के कागज़ात तैयार करने

का काम सौंपा गया। जब उन काग़ज़ातों पर 'स्टेट-कौंसिल' में चर्चा चली तो और सब सदस्यों ने तो कुछ न बोलकर काग़-ज़ातों को एग्मोण्ट के साथ स्पेन भेजने के लिए केवल अपनी राय दे दी परन्तु विलियम आरेञ्ज, जो प्रायः बहुत कम बोला करता था, आज दिल खोलकर बोला। उसने कहा—"अब साफ़-साफ़ बोलने का समय आ गया है। एग्मोण्ट-जैसा यूरोप का प्रख्यात मनुष्य फिलिप के पास इसी विचार से भेजा जा सकता है कि फिलिप को सब हाल सच्चा-सच्चा बताकर उसको इस देश की यथार्थ परिस्थिति का परिचय करा दिया जाय। मैं समझता हूँ कि फिलिप से हम लोगों की तरफ़ से अब यह बात साफ़-साफ़ कह दी जाय कि फाँसी, सूली, महन्त, जल्लाद, ख़ूनी क़ानून, धार्मिक दण्ड और मुख़बिरों के द्वारा शासन करना नेदरलैण्ड में एक पल भर के लिए कठिन है। इन सब असहनीय अत्याचारों की तुरन्त अन्त्येष्टि-क्रिया हो जानी चाहिए। अत्याचार का दिन उठ चुका है। नेदरलैण्ड स्वतन्त्र भूखण्ड है। उसके चारों ओर स्वतन्त्र देश हैं। और नेदरलैण्ड के लोग अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा जान पर खेलकर करने को तैयार हैं। फिलिप को यह भी साफ़-साफ़ कह देना चाहिए कि उसके अधिकारी इस देश में लूट मचा रहे हैं। चारों तरफ़ रिश्वत का बाज़ार गर्म है, न्याय की बिक्री होती है। इन सब बातों का भी तुरन्त ही अन्त हो जाना अत्यन्त आवश्यक है। 'स्टेट कौंसिल' के अतिरिक्त और सब समितियों को तोड़ देना चाहिए और 'स्टेट कौंसिलों' में ही दस-बारह और ऐसे सदस्य को नियुक्त कर देना चाहिए जो देश-सेवा, ईमानदारी और

योग्यता के लिए प्रख्यात हों। ट्रेण्ट के पादरियों के जिस निश्चय को सारे यूरोप ने ठुकरा दिया है उसपर नेदरलैण्ड में अमल नहीं किया जा सकता। मैं स्वयं रोमन कैथलिक हूँ परन्तु मैं दूसरों की आत्मा पर शासन करने के पक्ष में नहीं हूँ। धर्म में मतभेद होने के कारण किसी की जान लेना मुझे असहनीय है। एग्मोण्ट भेजा जाता है तो हमारा यह सन्देशा भी फिलिप के पास साफ़-साफ़ शब्दों में भेज दिया जाय।" आरेञ्ज का यह व्याख्यान शाम के सात बजे समाप्त हुआ। कौंसिल की बैठक दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। सब पर आरेञ्ज के व्याख्यान का बड़ा प्रभाव पड़ा। डाक्टर विग्लियस को पूरा विश्वास हो गया कि इस व्याख्यान को सुनकर सबका मत फिर जायगा। उसे रात भर नींद नहीं आई। बेचैनी से करवटें बदलता रहा। विग्लियस को अपनी वक्तृत्व और तर्क-शक्ति पर बड़ा भरोसा था। रात भर पड़ा-पड़ा सोचता रहा कि कल मेरा ऐसा तर्कपूर्ण भाषण कौंसिल में होना चाहिए कि आरेञ्ज के व्याख्यान का सारा प्रभाव मिट जाय। प्रातःकाल अँधेरे ही उठा, और कौंसिल में जाने के लिए कपड़े पहनने लगा। रात-भर सोच-विचार और चिन्ता के कारण नींद नहीं आई थी। इसलिए दिमाग़ की रगों में ख़ून दौड़ पड़ा और वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया। नौकरों ने उठाकर चारपाई पर लिटा दिया।

विग्लियस कार्य्य करने के बिलकुल अयोग्य हो गया, इसलिए उसकी जगह एक दूसरा विद्वान् हौपर नियुक्त कर दिया गया। आरेञ्ज के विचारों के अनुसार एग्मोण्ट के काग़ज़ात में कुछ फेर-फार तो किया गया परन्तु इस थोड़े से

फेरफार से आरेञ्ज को अधिक सन्तोष नहीं हुआ। एग्मोण्ट ने बड़ी शान के साथ नेदरलैण्ड से बिदाई ली। मित्रों ने ख़ूब दावतें दीं। एक दावत में ब्रेडरोड, ह्यूग्सट्रेटन, छोटा मेन्सफील्ड इत्यादि ने उत्पात भी मचा डाला। ग्रेनविले के मित्र एक पादरी को दावत में बुलाकर उसका मज़ाक उड़ाया गया। सलाह ठहरी कि पादरी को ख़ूब शराब पिलाकर मेज़ के नीचे बन्द कर दिया जाय। एक ने पादरी की टोपी उतारकर अपने सिर पर रख शराब पी और फिर दूसरे को टोपी दे दी। उसने भी उसी तरह शराब पीकर तीसरे को टोपी दे दी। शराब के प्याले के साथ-साथ बेचारे पादरी की टोपी भी चारों तरफ़ चक्कर लगाने लगी। किसी ने पादरी के ऊपर पानी भी उँडेल दिया। पादरी को बहुत क्रोध आया। एग्मोण्ट ने बड़ी कठिनाई से झगड़ा होते-होते बचा लिया। जहाँ ब्रेडरोड साहब पधारते थे, वहाँ ऐसे उत्पातों की कभी कमी नहीं रहती थी। चलते समय ब्रेडरोड सैकड़ों क़समें खाकर एग्मोण्ट को विश्वास दिलाने लगा कि, यदि स्पेन में तुम्हारा बाल भी बाँका हो गया तो ग्रेनविले और उसके सारे साथियों की जान ले ली जायगी। तुम्हारी सेवा के लिए मैं परमात्मा को भी छोड़ सकता हूँ।

स्पेन की राजधानी मेड्रिड पहुँचने पर एग्मोण्ट का बड़ी धूमधाम से स्वागत हुआ। जैसे ही वह महल में पहुँचा, फिलिप 'कार्य्यकारिणी समिति' से उठकर भागता हुआ आया। एग्मोण्ट को घुटनों पर बैठने अथवा प्रणाम करने का अवकाश न देकर उसके गले से चिपट गया और बड़े स्नेह से आलिंगन किया। दरबार में सबने उसकी बड़ी खातिर की। भला जिसकी

खातिर करने का स्वयं राजा को इतना ध्यान था उसकी खातिर में दरबारी एक दूसरे से स्पर्द्धा क्यों न करते ? एग्मोएट को फिलिप रोज अपने साथ खाना खिलाता और अपनी गाड़ी पर साथ-साथ टहलाने ले जाता था। रुइगामज़ के घर पर एग्मोएट के ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। गोमज़ एक चालाक आदमी था। रोज़ एग्मोएट को सरकार की तरफ़ फोड़ लेने का प्रयत्न किया करता। ग्रेनविले की सलाह के अनुसार फिलिप एग्मोएट से व्यवहार करके, जिस कार्य्य के लिए एग्मोएट आया था, उसे निष्फल करने का प्रयत्न करने लगा। खाने-पीने, हँसी-मज़ाक और खेल-तमाशों में ही सारा समय बीत जाता। जब एग्मोएट मतलब की बात चलाता तो फिलिप उससे बाल-बच्चों का समाचार पूछने लगता अथवा और इधर-उधर की बातें करके मुख्य विषय टाल देता। एग्मोएट पर बहुत-सी मालगुज़ारी और सरकारी कर्ज़ा चढ़ गया था। फिलिप ने सब माफ़ कर दिया और लगभग एक लाख रुपये के मूल्य की भिन्न-भिन्न वस्तुयें भी एग्मोएट को भेंट में दीं। दावतें देकर, भेंट चढ़ाकर और खूब खातिर करके फिलिप ने एग्मोएट का हृदय जीत लिया। एग्मोएट फिलिप के व्यवहार से प्रसन्न होकर अपना कार्य्य भूल गया। नेदरलैंड चलते समय फिलिप ने परमा के लिए उसे एक पत्र देकर कहा—"डचेज़ परमा से कहना कि नेदरलैंड में अधर्मियों का ज़ोर बढ़ते देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है। कौंसिल को तुरन्त एक विशेष बैठक बुलाकर शास्त्रियों, पण्डितों और महन्तों की सलाह से विचार करना चाहिए कि ट्रेण्ट के निश्चय पर किस प्रकार अमल हो सकता है। जिससे अधर्मियों की बाढ़ भी

रुक जाय और उनको शहीद बनकर सम्मान पाने का मौक़ा भी न मिल सके।" एग्मोएट पर ऐसी जादू की लकड़ी फिर गई थी कि वह ये सब बातें बड़े सन्तोष से खड़ा चुपचाप सुनता रहा। फिलिप ने और किसी सम्बन्ध में कोई बात न छेड़ी। एग्मोएट ने फिलिप के व्यवहार से समझा कि फिलिप नेदरलैण्ड की भलाई के लिए बड़ा उत्सुक है। सीधा-सादा एग्मोएट फिलिप के कौटिल्य में फँस गया। ब्रसेल्स लौटकर उसने फिलिप की महानता, दयाशीलता और आतिथ्य-सत्कार के बड़े गुण गाते हुए कौंसिल में कहा—"फिलिप वास्तव में नेदरलैण्ड के हित के लिए बहुत चिन्तित है। यहाँ के सरदारों से ज़रा भी नाराज़ नहीं हैं। अन्य समितियों को तोड़कर 'स्टेट कौंसिल' को बढ़ाना उसकी राय में देश के लिए लाभदायक नहीं है, इसलिए वह ऐसा करने को तैयार नहीं। अधर्मियों के दण्ड के सम्बन्ध में महाराज ने डचेज़ परमा के पास सन्देशा भेज कहा है कि धर्म्मशास्त्रियों और विद्वानों की सभा करके यह सारा मामला तय कर लिया जाय।" आरेञ्ज और उसके साथियों को एग्मोएट की बातें सुनकर सन्तोष नहीं हुआ। परन्तु वे चुप बैठे रहे।

कुछ समय बाद फिलिप की तरफ़ से परमा के पास धार्मिक मामले में सख्ती करने और कठोर दण्ड देने के सम्बन्ध में नये आदेश आये। इस पर आरेञ्ज और उसके साथियों को बड़ा क्रोध आया। वे कहने लगे कि एग्मोएट से बड़ी मीठी बातें हुई थीं। बड़े दया के भाव दिखाये गये थे। और एग्मोएट की पीठ फिरते ही ये नये क्रूर आदेश आते हैं! फिलिप पर कैसे विश्वास किया जाय? एग्मोएट की भी आँखें खुलीं। फिलिप के धोका देने पर

उसे बड़ा क्रोध आया और जलकर कौंसिल में उसने ख़ूब कड़ी बातें सुनाईं। आरेञ्ज ने एग्मोराट को फटकारकर कहा कि 'तुमने स्पेन में ख़ूब मज़े उड़ाये। अपनी मुट्ठी गर्म की। देश और साथियों को भूल गये।' अपने प्रिय मित्र आरेञ्ज के मुख से ये शब्द सुनकर एग्मोराट को बड़ा दुःख हुआ। कई दिन तक वह घर से नहीं निकला और कहने लगा कि अब ऐसे कार्यों का भार मैं कभी अपने ऊपर नहीं लूँगा।

फिलिप के आदेशानुसार शास्त्रियों और पण्डितों की एक सभा की गई। उसमें यह निश्चय हुआ कि धार्मिक मामलों में उसी कठोरता से काम लिया जाय जिस कठोरता से ३५ वर्ष से काम लिया जाता रहा है। अन्यथा सच्चे सनातनधर्म का नाश हो जायगा। जनता के लिए दिन-प्रति-दिन अन्याय असह्य होता जा रहा था। नागरिक प्रायः म्युनिसिपल्टियों पर दोषारोपण करते थे कि म्युनिसपल्टियाँ हमें इस जुल्म से क्यों नहीं बचातीं। टिटेलमैन और उसके साथियों ने पूरा रावण-राज्य स्थापित कर रक्खा था और फिर भी असन्तुष्ट थे। फिलिप को लिखते थे कि 'सरकारी कर्मचारी हमारी हृदय से सहायता नहीं करते, इसलिए हम पूरी तरह परमात्मा की सेवा करने में असमर्थ हैं। अधर्म की बाढ़ बढ़ रही है। हमारी जान ख़तरे में है। कृपया हमारी सहायता कीजिए।" फिलिप ने लिखा—"अधर्मियों को जनता के सामने सूली पर चढ़ाना ठीक नहीं है क्योंकि जनता जय-घोष से उनका उत्साह बढ़ाती है। मरते समय उन्हें सन्तोष मिल जाता है। रात के समय घुटनों के बीच सिर बाँधकर, कालकोठरी में अपराधियों को पानी की नाँदों में डुबा-डुबाकर दम घोटकर

मारना चाहिए ।" टिटेलमैन को अपने हाथ से स्वयं पत्र लिख-कर फिलिप ने उसकी बड़ी प्रशंसा की और लिखा—"मैं तुम्हारी रुपये-पैसे और आदमी से हर समय सहायता करने को तैयार हूँ। धर्म और ईश्वर के लिए मैं अपनी जान तक दे सकता हूँ।" डचेज़ को फिलिप ने लिखा—"मैंने एग्मोण्ट से बातचीत करके उन्हें जो विश्वास दिलाया था उसके अतिरिक्त कोई भी नवीन आदेश नहीं हैं। धार्मिक मामलों में किसी पर रियायत नहीं की जायगी। शास्त्रियों और पण्डितों की सभा ने जो निश्चय किया है, उसी के अनुसार अमल किया जाय। छोटे-बड़े किसी भिन्न मत-वाले को छोड़ा न जाय। सब सरकारी नौकरों के पास नये फ़रमान भेज दो कि खूब सख़्ती से काम लें। टिटेलमैन और उसके साथियों की हर प्रकार से फ़ौरन सहायता पहुँचाओ।" एग्मोण्ट को भी फिलिप ने एक पत्र लिखा—"धर्म के सम्बन्ध में ढिलाई और कमज़ोरी दिखाना पाप है। शास्त्रियों ने जो फैसला किया है, वह उपयुक्त है। मुझे विश्वास है कि इस धार्मिक कार्य्य में तुम मेरी पूरी सहायता करोगे।"

इन नये आदेशों के कारण देश-भर में एक आग भड़क उठी। बहुत से जोश दिलाने वाले परचे जनता में चारों ओर बँटने लगे। आरेञ्ज और एग्मोण्ट के घरों पर भी लोग लिख-लिखकर काग़ज़ लगा जाते थे—"अब क्या सोचते हो? समय आ गया है। देश और जाति का साथ दो।" सरदारों के घरों पर दावतों में सरकार की तीव्र आलोचना होने लगी। नौजवान एक दूसरे से देश की रक्षा करने के लिए प्रतिज्ञायें लेने लगे। 'स्टेट कौंसिल' में फिलिप के नये आदेशों पर चर्चा चली।

सरकार की तरफ से कहा गया कि इन आदेशों पर अमल होना चाहिए। शाहज़ादा आरेञ्ज ने उठकर कहा कि 'हुक्म उदूली' और 'हुक्म मानने' की बीच अब कोई रास्ता बचा नहीं है। फिलिप के आदेश ही ऐसे हैं कि उनको मानने के अतिरिक्त चर्चा के लिए स्थान नहीं है। परन्तु हम इतना कह देना चाहते हैं कि इन आदेशों से देश में जो दुष्परिणाम होंगे उसके लिए हम लोग जिम्मेवार नहीं हैं। हार्न और एग्मोएट ने आरेञ्ज का अनुमोदन किया। डाक्टर विग्लियस खूनी क़ानूनों का रचयिता था। सदा से वह धार्मिक मामलों में सख़्ती करने का पक्षपाती था। आरेञ्ज इत्यादि को ज़िम्मेवारी से अलग होते हुए देख और आने वाले तूफ़ान का विचार करके वह भी घबरा गया, एवं कहने लगा कि जब आरेञ्ज-जैसे सरदारों की राय है कि इन आदेशों पर अमल करने से देश में बड़ी दुर्घटनायें होंगी, तो सरकार को इस मामले में जल्दी नहीं करना चाहिए। परन्तु, फिलिप के आदेशों में ढिलाई करने की गुञ्जाइश नहीं थी। अस्तु; निश्चय हुआ कि फिलिप के हुक्म के अनुसार नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में खूनी क़ानूनों की घोषणा कर दी जाय और अधि-कारियों को आज्ञा दे दी जाय कि सख़्ती से काम लें। डचेज इस ज़ुल्म के परिणाम से घबराती थी। परन्तु भाई की आज्ञा भंग करना भी उसकी शक्ति के बाहर था। आरेञ्ज ने अपने पड़ोसी के कान में झुककर कहा—"भाई! अब ऐसा भयंकर दृश्य आरम्भ होने वाला है जिसका हम लोगों ने कभी स्वप्न में भी विचार नहीं किया होगा।" आरेञ्ज की आज की भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई।

इसी वर्ष सरदार मौण्टनी और डचेज़ परमा के पुत्रों के बड़ी धूमधाम से विवाह हुए। दावतों और खेल-तमाशों के शौकीन नेदरलैण्ड के सरदार इन मौक़ों पर सदा की भांति एकत्र हुए। परन्तु अब की बार सब सरदार केवल नाच-रंग देखकर चले जाने के लिए ही नहीं आये थे। कुछ नौजवानों के हृदय सरकार के अत्याचार के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा करने के लिए तड़प रहे थे। उन्होंने इन मौक़ों का फ़ायदा उठाया। आपस में बात-चीत करके एक से विचार के कुछ नौजवानों ने निश्चय किया कि सरकार के अत्याचार के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा करने के लिए एक 'गुप्त संस्था' बनाली जाय। एक शपथ-पत्र भी तैयार किया गया, जिस पर लोगों ने हस्ताक्षर कर दिये। यह भी निश्चित हुआ कि जो लोग इस में सम्मिलित होने के लिए तैयार हों, उन सब के हस्ताक्षर करा लिये जायँ। शपथ-पत्र पर सबसे पहले ब्रेडरोड, मैंसफ़ील्ड और आरेञ्ज के छोटे भाई लुई ने हस्ताक्षर किये। कहा जाता है कि शपथपत्र की भाषा सेण्ट एल्डगोण्डे ने लिखी थी। एल्डगोण्डे उस समय का प्रख्यात देशभक्त-कवि, लेखक और राजनीतिज्ञ था। आगे चलकर आरेञ्ज को एल्डगोण्डे से बड़े-बड़े कठिन अवसरों पर अच्छी सहायता मिली। एल्डगोण्डे लुई का घनिष्ट मित्र था। उसकी अवस्था भी लुई के बराबर ही थी। परन्तु इस अट्ठाईस वर्ष की अवस्था में ही एल्डगोण्डे ने बहुतसी भाषाओं में पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त कर लिया था। विद्वत्ता में बड़े-बड़े शास्त्रियों के कान काटता था। सरकारी अत्याचार और धार्मिक जुल्म का घोर विरोधी था।

लुई में पूर्व समय के आदर्श योद्धाओं के सारे गुण थे। वह सज्जन, उदार और दयावान था। युद्ध में जाने से पहले सदा अपनी माता की भेजी हुई प्रार्थनायें पढ़ता था। लड़ाई के मैदान में शत्रु पर सिंह की तरह झपटता था। कठिन से कठिन संग्राम में उसकी भौंहों पर बल नहीं पड़ता था। बड़ी दृढ़ता से लड़ता था। अपने प्रसन्न स्वभाव से लुई मित्रों और भाइयों सभी को प्यारा था। वह ब्रेडरोड की तरह ठट्ठे भी लगाता। परन्तु, ब्रेडरोड के अवगुण उसमें नहीं थे। उन्नीस वर्ष की अवस्था में ही उसने एग्मोण्ट के साथ सेंट क्विण्टेन की लड़ाई में बड़ी वीरता दिखाई थी। जब लुई ने देश की स्वतन्त्रता के लिए खड्ग उठा लिया। तो फिर अन्त तक चैन से नहीं बैठा। आयु के हिसाब से उसका जीवन छोटा हुआ; काम के अनुसार बहुत बड़ा । शाहज़ादा आरेञ्ज ने उसके सहारे और बल पर बड़े-बड़े काम किये। जब देश के लिए लड़ता-लड़ता वह लड़ाई में मारा गया, तब आरेञ्ज की बाँह-सी कट गई। लुई का कद छोटा था; बदन गठा हुआ था; मुख पर सदा हंसी रहती थी। वह युद्धकला में प्रवीण था।

गुप्त-संस्था के प्रथम कार्यकर्ताओं में निकलस नाम का एक मनुष्य था। यह भी बड़ा जोशीला था और सरकार का उद्दण्ड विरोध करना उसके स्वभाव में शामिल हो गया था। 'गोल्डन फ्लीस' संस्था का नौकर होने के कारण उसे उस संस्था का एक झब्बा मिला था। उसे लगाकर वह व्याख्यान देता फिरता। जिससे सरकार के विरुद्ध सर उठाने में लोग यह विचार कर न करें कि जब सरकारी संस्था के पुरुष ही सरकार का विरोध करते फिरते हैं तो फिर हमें क्या डर है ? उसकी राय थी कि हथियार और

मनुष्यों के लिए इन्तज़ार करने में समय बिताना ठीक नहीं है। सरकार पर तुरन्त हल्ला बोल देना चाहिए। ऑरेञ्ज के साथी निकलस के अन्ध-जोश पर असन्तोष प्रकट करते थे। इसलिए उसने दुःखी होकर लुई को लिखा—"लोगों की राय है कि सरकारी भेड़ियों के प्रति हम लोग केवल अपना असन्तोष प्रकट करें। हम मीठे-मीठे शब्दों में उन्हें समझाने का प्रयत्न करें; वे हमारे सिरों पर आरे चलायें, हमें अग्नि में झोंकें। अच्छा तो फिर ऐसा ही होने दीजिए। वे तलवार लें; हम कलम सम्हालें। उनकी तरफ से काम हो; हमारी ओर से शब्दों की बौछार हो। वे हँसे; हम आँसू बहायें। ईश्वर हो कृपा करे। मेरी तो छाती फटी जाती है।" इस पत्र से निकलस के भावों का पता चलता है। मैंसफील्ड कुछ ही दिन बाद गुप्त-संस्था से अलग हो गया।

गुप्त-संस्था के शपथ-पत्र में कोई ऐसी बात नहीं थी कि जिस पर हस्ताक्षर करने में किसी कैथलिक मत वाले को आपत्ति हो सके। केवल इतना लिखा था—"फिलिप के विदेशी कर्मचारी धर्म के नाम की ओट में लोगों पर अत्याचार करते हैं। लोगों का माल ज़ब्त करके अपना घर भरते हैं। इस अन्याय से एक दूसरे की रक्षा करने और राजा को बदनामी से बचाकर उसकी सच्ची सेवा करने को हम सब शपथ खाते हैं।" ऑरेञ्ज, हॉर्न, एग्मोण्ट, बरघन, मोण्टनी इत्यादि गुप्त-संस्था में सम्मिलित नहीं हुए। उनसे इस संस्था के बनाने के सम्बन्ध में भी कोई राय नहीं ली गई थी। आरेञ्ज को अपने भाई लुई और सेण्ट ऐल्ड-गोण्डे पर विश्वास था। परन्तु ब्रेडरोड-जैसे मनुष्यों पर उसे भरोसा नहीं था। कुछ ही दिनों में शपथ-पत्र पर बहुत से लोगों

के हस्ताक्षर करा लिये गये। छोटे-छोटे सरदारों के अतिरिक्त दुकानदारों, सौदागरों और कारीगरों के पास भी यह शपथ-पत्र घुमाया गया। सरदारों में अधिकतर छोटे सरदारों और नवयुवकों ने ही हस्ताक्षर किये थे। इन सरदारों में से कुछ तो ऐसे थे जो वास्तव में कैथलिक मत के थे परन्तु अत्याचार के विरुद्ध थे। कुछ नये पन्थ के कट्टर पक्षपाती थे। कुछ तमाशा देखने के शौक से सम्मिलित हो गये थे। कुछ बिगड़े हुए सरदार अपनी जायदादें नाच-रंग में उड़ा चुकने पर इस विचार से आ मिले थे कि महन्तों की जायदादें हमें मिल जायेंगी। आरेञ्ज इत्यादि ने इस संस्था में सम्मिलित न होकर अच्छा ही किया। जिस संस्था में ऐसे भिन्न-भिन्न स्वार्थ रखने वाले लोग आ मिले थे उससे देश-हित होना तो दूर रहा उलटे कार्य्य में बाधा पड़ने की ही अधिक सम्भावना थी। गुप्त-संस्था के सदस्यों की संख्या बढ़ जाने से इन लोगों का जोश भी बढ़ा। सभाओं में, दावतों में, जहाँ कहीं संस्था के दो-चार सदस्य एकत्र हो जाते, सरकार की कड़ी आलोचना होने लगती। तीखी, कड़वी, अश्लील और अण्डबण्ड बातें सरकार के विरुद्ध कही जातीं। स्पेन के जासूस हर जगह लगे ही रहते थे। ज़रा-ज़रा-सी बात की खबर फिलिप के पास पहुँचा दी जाती। इधर विलियम आरेञ्ज ने भी अपने जासूस फिलिप के शयनागार तक में लगा रक्खे थे। फिलिप के सन्दूक़, कोट, जाकेट की जेबों और तकिये के नीचे रक्खे हुए गुप्त पत्रों तक की नक़लें विलियम के पास आ जाती थीं। कुछ लोग यह दोषारोपण करने का प्रयत्न कर सकते हैं कि विलियम-जैसे साधुचरित्र मनुष्य को ऐसा चाणक्य-व्यवहार करना उचित

नहीं था। परन्तु यदि विलियम ने कुटिल नीति का प्रयोग न किया होता तो उस कुटिल काल में स्पेन-जैसे महान् साम्राज्य के हथकण्डों से देश की रक्षा करना असम्भव था। फिलिप के चंगुल में फँसकर अन्य प्रख्यात नेताओं की तरह उसे भी अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता और देश का भी कुछ कल्याण न हो पाता। गुप्त-सूत्रों द्वारा फिलिप की मन्त्रणाओं का पता लगाकर विलियम आरेञ्ज आने वाली आपत्तियों से बचने का पहले ही से उपाय सोच लेता था। उसकी इस सजगता से फिलिप की बहुत-सी चालें व्यर्थ हो जातीं और देश का बड़ा कल्याण होता। बड़े-बड़े सरदार गुप्त-संस्था में सम्मिलित नहीं हुए थे। परन्तु सरकार की नीति के विरुद्ध उन्होंने भी अपना मत ज़ाहिर कर दिया था। बरघन ने डचेज़ के पास इस्तीफ़ा भेजकर लिख दिया—"धार्मिक मामलों में राजा की आज्ञा का पालन नहीं किया जा सकता।" मेवम ने भी डचेज़ को ऐसा ही पत्र लिख भेजा। एग्मोण्ट ने डचेज़ से कहा कि अगर मुझे पता होता कि फिलिप ऐसी अनीति करेगा तो मैं स्पेन में ही उसके हाथ पर इस्तीफ़ा रख देता। आरेञ्ज तो लिख ही चुका था। मौण्टनी, क्यूलेम्बर्ग इत्यादि अन्य सरदारों ने भी इस्तीफ़े भेज दिये। बेचारी डचेज़ परमा की साँप और छछूँदर की सी गति हो रही थी। बड़ी घबराती थी। फिलिप को ख़त पर ख़त लिखती कि "काले क़ानूनों पर अमल नहीं किया जा सकता। लगभग सारे प्रान्तों के गवर्नरों ने आज्ञा पालन करने से इन्कार कर दिया है। सारा देश एक स्वर से कह रहा है कि ऐसे क्रूर क़ानून आज तक कभी नेदरलैण्ड में जारी नहीं हुए।" फिलिप के सम्मुख दो ही मार्ग थे।

या तो वह नेदरलैण्ड-निवासियों की इच्छानुसार काले-कानूनों को रद्द कर दे या तलवार के जोर पर आज्ञा-पालन कराने का प्रयत्न करे। फिलिप ने दूसरा मार्ग चुना। नेदरलैण्ड में तलवार चमकाने की तैयारियाँ शुरू कर दीं। स्पेन में फौजों की भरती होने लगी। डचेज परमा के प्राण सूखने लगे।

आये-दिन के कष्टों से तंग आकर लोग देश छोड़-छोड़ भाग चले। परदेशी व्यापारियों ने अपना माल-असबाब समेटकर घरों की राह ली। नेदरलैण्ड के आबाद नगरों में उल्लू बोलने लगे। केवल एक देश इङ्गलैण्ड में ही नेदरलैण्ड के लगभग तीन हजार कारीगर जा बसे। इङ्गलैण्ड के होशियार लोगों ने उनका खूब स्वागत किया। कारीगरों को बस जाने के लिए हर प्रकार की सुविधायें दी गईं, परन्तु साथ-साथ एक शर्त भी लगा दी गई कि प्रत्येक कारीगर-परिवार को काम सिखाने के लिए कम से कम एक अंगरेज अपने यहाँ रखना पड़ेगा। दूरदर्शी इंग्लैण्ड ने इस प्रकार नेदरलैण्ड के कारीगरों से कला-कौशल सीखकर अपने देशको मालामाल कर लिया। स्पेन-वालों ने नेदरलैण्ड के लोगों का खून बहाकर धर्म के पवित्र नाम को अपवित्र किया; इतिहास में कलंकित हुए और अपनी मूर्खता से अपना साम्राज्य भी खोया। विलियम आरेञ्ज के कथनानुसार इस समय तक सरकार लगभग पचास हजार आदमियों का बध कर चुकी थी। जब देश में इस प्रकार दिन दहाड़े मनुष्यों का शिकार खेला जा रहा हो तब व्यापार और उद्योग-धन्धे क्योंकर फल-फूल सकते हैं? नेदरलैण्ड का उजड़ जाना स्वाभाविक ही था।

जन-साधारण और छोटे सरदारों का खूनी कानूनों के विरुद्ध

आन्दोलन शुरू हुआ। निश्चय हुआ कि पहले डचेज़ परमा के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा जाय। आरेञ्ज ने सोचा कि लोग कहीं उत्पात न कर बैठें। इसलिए उसने आन्दोलन उठाने वालों की एक सभा बनाई। अन्य बड़े सरदारों को भी बुलाया। आरेञ्ज ने सब को यह समझाने का प्रयत्न किया कि, 'उद्दंडता से काम लेना अनुचित है।' राजा के प्रति अपमान अथवा अश्रद्धा भी नहीं दिखानी चाहिए। नरमी से काम निकल सकता है। परन्तु लोगों ने उसकी सलाह पर ध्यान नहीं दिया। सब बड़े आवेश में थे। क्रोध से परिस्थिति भयंकर हो चली। आरेञ्ज ने डचेज़ परमा को परिस्थित का यथार्थ ज्ञान करा देने का विचार किया। आन्दोलनकारियों की गुस्ताख़ी पर सरदार मेघम को बड़ा क्रोध आ गया। बोला—"ये सब बदमाश और राजद्रोही हैं। डचेज़ परमा को धमकाकर अपमानित करना चाहते हैं। यदि महाराज फिलिप मेरी सहायता करें तो मैं सबका सिर उड़वा दूँ।" आरेञ्ज ने झिड़ककर कहा कि पायजामे से बाहर होने से काम नहीं चलेगा। इनमें अनेक जिम्मेदार आदमी भी हैं। आरेञ्ज ने प्रयत्न करके प्रार्थनापत्र की भाषा नरम करवा दी। परन्तु, इसके अतिरिक्त लोगों ने उसकी और कुछ सलाह नहीं मानी। मेघम, आरेञ्ज से अलग होकर सरकार के पक्ष में हो गया। 'कार्यकारिणी-समिति' में प्रार्थनापत्र के आन्दोलन का जिक्र छिड़ा। सरदार मेघम लम्बी चौड़ी बात बनाकर कहने लगा—"लोगों ने बड़ा भारी षड्यन्त्र रचा है। मैंने विश्वस्तसूत्र से सुना है कि देश के भीतर-बाहर सब मिलाकर आन्दोलनकारियों के पास ३५ हजार फौज हो गई है। इसी सप्ताह पन्द्रह सौ अस्त्र-शस्त्रों से सु-

सज्जित मनुष्य डचेज परमा के पास आने वाले हैं।" एग्मोएट ने भी उसकी इन बे-सिर-पैर की गप्पों में हाँ-में-हाँ मिलाते हुए कहा—"मुझे भी पता चला है कि षड्यन्त्र के सरदार, कप्तान, नायक सब नियत हो चुके हैं। शीघ्र ही उपद्रव उठने वाला है। एरमबर्ग और बेरलमोएट की राय हुई कि प्रार्थनापत्र लेकर आने वाले मनुष्यों को महल में घुसने न दिया जाय। यदि घुसने से न रोका जा सके तो घुस आने पर सबके सिर कटवा लेने चाहिएँ। आरेञ्ज ने कहा कि, 'ऊल-जलूल काम करने से मामला बिगड़ जायगा। प्रार्थनापत्र लाने वालों की शिकायतें आदरपूर्वक सुननी चाहिएँ। उनमें बहुत से सरदार हैं; अच्छे-अच्छे कुलों के मनुष्य हैं। प्रार्थनापत्र लाने का अधिकार तो भिखारी तक को है। फिर इन सरदारों की प्रार्थना न सुनकर उन्हें अपमानित क्यों किया जाय?' परमा आन्दोलन का हाल सुनकर घबरा उठी। फिलिप को लिखा—"अब जनता की बात मानकर ख़ूनी क़ानून रद्द करने या सैनिकों की सहायता से शासन करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। मेरी राय से ख़ूनी क़ानूनों की कठोरता कम कर देनी चाहिए।" परमा की राय हुई कि ब्रसेल्स में उत्पात होने का डर है इसलिए मुझे किसी दूसरे नगर में चला जाना चाहिए। सरदारों ने कहा कि ऐसा करने से जनता पर बड़ा बुरा असर पड़ेगा। आपको ब्रसेल्स छोड़कर नहीं जाना चाहिए।

प्रार्थना-पत्र का आन्दोलन खड़ा करने वालों ने निश्चय किया था कि परमा के पास प्रार्थना-पत्र लेकर सरदार ब्रेडरोड जायँ। उनके पीछे तीन सौ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित मनुष्य

हों। ब्रेडरोड का कुछ परिचय पाठकों को मिल चुका है। उसका हालैण्ड के सब से प्राचीन राजवंश में जन्म हुआ था। शायद इसीलिए वह समझता था कि स्पेन से आने वाले फिलिप से हालैण्ड का राजा बनने का मुझे अधिक अधिकार है। ब्रेडरोड जितना स्पेन वालों का शत्रु था, उतना ही पानी पीने का भी शत्रु था। शराब की बोतलों पर बोतलें हर वक्त लुढ़काता रहता था। शराब के प्याले की सहायता से विदेशियों का राज्य नष्ट कर डालने का उसे विश्वास था। बड़ा हिम्मत वाला भी था। परन्तु देश के लिए फाँसी चढ़ना अथवा युद्ध में प्राण गँवाना उसके भाग्य में नहीं था। उद्दण्ड, उद्धत, शराबी और ऐयाश होते हुए भी वह सहृदय और दयालु था। हालैण्ड के अत्यन्त प्राचीन शराबी, लड़ाकू और लूटमार करने वाले राजवंशों का वह एक नमूना था। सोलहवीं सदी के बजाय यदि वह ग्यारहवीं सदी में पैदा हुआ होता तो देश के लिए बड़ा लाभदायक सिद्ध होता। परन्तु, ब्रेडरोड में नेता बनने के गुण नहीं थे। राजकुमार तथा अक्खड़ होने के कारण लोगों ने उसे अगुआ बना लिया था।

३ अप्रैल सन् १५६६ ई० के दिन ब्रेडरोड स्वयं कमर में पिस्तौल लगाये, और अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित तीन सौ सवारों को साथ लिए, संध्या समय राजधानी ब्रसेल्स में घुसा। शहर में शोर मच गया। लोगों ने जयघोष के साथ उसका स्वागत किया। ब्रेडराड का कद लम्बा था। शरीर सुडौल-सुन्दर और गठीला था। तीन सौ जवानों की टुकड़ी के साथ आता हुआ ऐसा फबता था, मानों प्राचीन समय का कोई राजपूत वीर रणचण्डी का पूजन करने निकला हो। ब्रसेल्स में ब्रेडरोड लुई नसाऊ के महल में ठहरा था

५ एप्रिल को सरदार क्यूलमबर्ग के महल में, जो परमा के राजगृह से कुछ ही दूर था, सब सरदारों की एक सभा हुई। सभा समाप्त होते ही सब अपने-अपने दरबारी कपड़े पहनकर दो-दो की लाइन में राजभवन की ओर चले। सबसे पीछे हाथ में हाथ मिलाये लुई और ब्रेडरोड थे। महल के आगे असंख्य मनुष्यों की भीड़ जमा हो गई थी। देश को परतन्त्रता की जंजीरों से मुक्त कराने का प्रयत्न करनेवाले वीरों को आता देख लोग जय-जयकार करने लगे। सब सरदार परमा के सामने पहुँचकर खड़े हो गये। परमा ने देखा कि नेदरलैण्ड के बड़े से बड़े परिवारों के सम्बन्धी आन्दोलन में शरीक होकर आये हैं। उसे बड़ा धक्का लगा। ब्रेडरोड ने आगे बढ़कर परमा को झुककर सलाम किया और कहा—"हुजूर! मैं जानता हूँ लोगों ने हमारे सम्बन्ध में आपसे बहुत-सी झूठी-सच्ची बातें कहीं हैं और चारों ओर अफवाह फैलाई गई है कि 'हम लोग राजद्रोही हैं, षड्यन्त्र रच रहे हैं, धमकियाँ देकर आपका अपमान करना चाहते हैं, शासन में अड़चनें डालना चाहते हैं, विदेशों से मिलकर फिलिप का राज्य उलट देने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह सब सफेद झूठ है। हमारी प्रार्थना है कि जो लोग आपसे ऐसी बातें कहते हैं, उनके नाम आप प्रकट कर दें। और हमारी व्यर्थ बदनामी करने वालों को समुचित दण्ड दें।" इतना कहकर ब्रेडराड ने प्रार्थना-पत्र परमा के सामने रख दिया। प्रार्थनापत्र में लिखा था—"खूनी कानूनों से नेदरलैण्ड के लोग उकता उठे हैं। हम लोग समझते थे कि पंचायतें प्रयत्न करके इन क़ानूनों को रद्द करवा देंगी। परन्तु हम लोग प्रतीक्षा करते-करते थक गये हैं। क़ानूनों

की कठोरता में जरा भी कमी नहीं होती। हमें भय है—देश में विद्रोह हो जायगा। यदि विद्रोह हो गया, तो हमी लोगों को सब से अधिक मुसीबत उठानी पड़ेगी। हमारे घर-बार और जायदादें लुट जायँगी। हमें बड़ी चिन्ता है। इस चिन्ता के कारण ही हम लोग आपके पास प्रार्थना करने आये हैं। खूनी क़ानूनों के कारण भी हमारी जायदादें और जीवन प्रत्येक क्षण खतरे में रहते हैं। क़ानूनों के अनुसार जो मनुष्य धर्म के विरुद्ध चलने वाले अपराधी को पकड़वायेगा, उसको अपराधी की जायदाद मिल जायगी तथा अपराधी को प्राण-दण्ड मिल जायगा। धार्मिक मुकदमों में गवाहों की भी ज़रूरत नहीं पड़ती है। हमारी जायदादों पर दाँत रखने वाले किसी मनुष्य के झूठमूठ शिकायत कर देने पर ही हमें प्राणदण्ड हो सकता है। भला जब हमारा जानो-माल इस प्रकार अधिकारियों के स्वेच्छाचार पर छोड़ दिया गया है, तब हम चुप कैसे बैठ रहें? श्रीमतीजी से हमारी नम्र प्रार्थना है कि महाराज फिलिप को सब बातें समझाकर खूनी क़ानूनों को शीघ्र से शीघ्र रद्द करवा दिया जाय। जब तक महाराज का उत्तर नहीं आता, तब तक अपनी ओर से तुरन्त आदेश निकालकर खूनी क़ानूनों के अनुसार लोगों के प्राण लेना बन्द करवा दीजिए।" प्रार्थनापत्र सुनकर डचेज़ परमा का रंग पीला पड़ गया उसकी आँखों में आँसू आ गये। बड़ी कठिनता से सम्हलकर बोली—"अच्छा, आप लोग जाइए। मैं सलाह करके उचित उत्तर दूँगी।" ब्रेडरोड और उसके साथी एक-एक करके परमा के सामने आये और फर्शी सलाम करके बाहर चले गये। बाद को स्टेट कौंसिल में बहुत देर तक चर्चा होती रही। विलियम

आरेञ्ज ने परमा को शान्त करने के विचार से कहा—"वास्तव में प्रार्थनापत्र लाने वाले लोग बागी नहीं हैं। सब अच्छे कुटुम्बों के राजभक्त मनुष्य हैं। आपके पास अर्जी इस विचार से लाये हैं कि उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई तो देश बहुत-सी आपत्तियों से बच जायगा। बेरलामोएट ने परमा से कहा—"क्या हुजूर, इन भिखारियों से डर गईं? इन लोगों को कौन नहीं जानता? अपनी जायदादें कुप्रबन्ध से नष्ट करके सरकार को सुप्रबन्ध का पाठ पढ़ाने आये हैं? मेरी राय है कि इनकी प्रार्थना का उत्तर हुजूर को तलवार से देना चाहिए। जितनी शीघ्रता से ये लोग महल पर चढ़कर आये थे उससे अधिक शीघ्रता से उन्हें वापिस भेजना चाहिए था।" एरेम्बर्ग ने कहा कि 'सब आन्दोलनकारियों को तुरन्त ब्रसेल्स से निकाल देना चाहिए।' बहस जोरों से हो रही थी। शायद हाल में पीछे रह जाने वाले ब्रेडरोड के कुछ साथियों ने चर्चा का कुछ अंश सुन लिया।

६ एप्रिल को ब्रेडरोड फिर बहुत से साथियों के साथ प्रार्थना-पत्र का उत्तर लेने आया। परमा की तरफ से यह उत्तर पढ़ा गया:—"डचेज़ परमा महाराज फिलिप के पास आप लोगों की प्रार्थना मंजूर कराने के लिए एक आदमी भेजेंगी। महाराज फिलिप जो कुछ कर सकते हैं, करेंगे। धार्मिक क़ानूनों की सख्ती कम करने के लिए स्टेट कौंसिल एक मसविदा तैयार कर रही है। आप लोग जानते ही हैं कि इससे अधिक और कुछ करना श्रीमती के हाथ में नहीं है। महाराज से प्रार्थना की जायगी कि खूनी क़ानून रद्द कर दिये जाँय। श्री महाराज का उत्तर आने तक उनकी तरफ से अधिकारियों को नर्मी से काम लेने का हुक्म भेज दिया

जायगा। आशा की जाती है कि तब तक आप लोग भी कोई ऐसा व्यवहार न करेंगे जिससे प्रतीत हो कि सनातन धर्म में परिवर्तन कराने की आपकी इच्छा है।"

८ एप्रिल को ब्रेडरोड फिर अपने साथियों सहित इस उत्तर का प्रत्युत्तर लेकर डचेज़ के पास गया और कहा—"सनातन-धर्म की रक्षा के लिए पंचायतों की राय से जो कुछ महाराज निश्चय करेंगे, हम सब मानने और करने को तैयार हैं। कोई ऐसा कार्य हमारी तरफ़ से नहीं होगा, जिससे हुजूर को शिकायत का मौक़ा मिले। परन्तु, यह हुक्म अभी निकल जाना चाहिए कि जब तक महाराज फिलिप का उत्तर नहीं आता किसी मनुष्य को धर्म के नाम पर पकड़ा अथवा सूली पर चढ़ाया नहीं जायगा।" डचेज़ ने कहा—"जो कुछ मैं कह चुकी हूँ उससे अधिक और नहीं कर सकती। पहले हुक्म के अनुसार अधिकारियों को पत्र लिखे जा चुके हैं। यदि वह पत्र आप लोग देखना चाहें तो देख सकते हैं।" सरदार कुछ देर तक आपस में सलाह करते रहे। फिर परमा से प्रार्थना की गई कि 'कम से कम यह घोषणा तो कर दी जाय कि प्रार्थनापत्र लाने वालों ने कोई कार्य्य अनुचित अथवा महाराज फिलिप को अपमानित करने के लिए नहीं किया है।' परमा ने रूखे स्वर से कहा—"इसका फैसला मैं नहीं कर सकती। काल और आपके भविष्य कार्य्य इस बात के साक्षी होंगे। मैं जो कुछ उत्तर दे चुकी हूँ, उसमें एक अक्षर अधिक नहीं जोड़ सकती।" यह रूखा उत्तर पाकर सरदार चल दिये।

परन्तु विजय जन-पक्ष की हुई। डचेज़ परमा ने कहा तो था

कि 'धार्मिक क़ानून' रद्द करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है; लेकिन वह रद्द करने पर लगभग राज़ी हो गई थी। उसने स्वीकार कर लिया था, कि अन्य क़ानूनों की तरह धार्मिक क़ानून भी पंचायतों की राय से ही बनाये जायँगे। लोगों को और क्या चाहिए था? नेदरलैंगड वाले जो अधिकार चाहते थे, उन्हें मिल गये। लोगों को ख़ून की एक बूँद भी नहीं बहानी पड़ी और न त्याग की भट्टी में ही जलना पड़ा। देखते-देखते ही नेदरलैंगड में धार्मिक और राजनैतिक क्रान्ति सफल हो गई। ब्रेडरोड और उसके साथियों ने रंग-बिरंगे कपड़े पहिनकर और डचेज़ परमा के पास प्रार्थना-पत्र ले जाकर ही देश की स्वाधीनता का संग्राम जीत लिया था। परन्तु यह सब स्वप्न था। अभी स्वाधीनता बहुत दूर थी। नेदरलैंगड को रक्त की नदियों में तैरकर निकलना था। कष्टों के पहाड़ टूटने थे। स्वतन्त्रता देवी के मन्दिर का मार्ग बड़ा कठिन है।

ब्रेडरोड ने विजय की खुशी में क्यूलमवर्ग के राजभवन में मित्रों को एक ठाठ की दावत दे डाली। तीन सौ सरदार दावत में आये। शराब की बोतलों पर बोतलें चलीं। सरलता से विजय मिल जाने के कारण लोग उन्मत्त हो रहे थे। लोगों की राय हुई कि अपने दल का कुछ नाम रख लेना चाहिए। किसी ने कहा दल का नाम 'मित्र-मण्डली' उचित होगा। किसी ने कहा नहीं, 'स्वतन्त्रता के सिपाही' नाम अधिक उपयुक्त होगा। ब्रेड-रोड शराब का प्याला लेकर उठा और बोला—"भाइयो, सरदार बेरलामौगट ने स्टेट कौंसिल की बैठक में हम लोगों को भिखारी बताया। अपने दल का नाम 'भिखारियों का दल' बहुत उप-

युक्त होगा।" अधिकतर सरदारों को यह बात नहीं मालूम थी। ब्रेडरोड के मुँह से जब उन्होंने सुना कि बेरलामौण्ट ने हम लोगों को 'भिखारी' कह कर पुकारा था, तो उन्हें बड़ा क्रोध आया। परन्तु ब्रेडरोड ने सबको शान्त करके कहा—"भाइयो! इसमें नाराज़ होने की क्या बात है? इन 'खूनी क़ानूनों' का विरोध करते-करते हमें भिखारी बन जाना पड़े तो हमारा बड़ा सौभाग्य होगा। भिखारी की उपाधि हमें खुशी से धारण कर लेनी चाहिए।" ब्रेडरोड ने तुरन्त नौकर से एक खप्पर मँगवाया। खप्पर को लबालब शराब से भरकर बोला—"बोलो 'भिखारियों' की जय" और एक घूँट में सब शराब चढ़ा गया। लोग 'भिखा-रियों की जय' 'भिखारियों को जय' जोर-जोर से चिल्लाने लगे। सब सरदारों ने ब्रेडरोड की तरह उठकर खप्पर-खप्पर भर शराब चढ़ाई।

मज़ाक ही मज़ाक में बेरलामौन्ट के क्रोध और ब्रेडरोड के परिहास से निकला हुआ 'भिखारी' शब्द नेदरलैण्ड वालों के लिए जादू भरा शब्द हो गया। जबतक नेदरलैण्ड में स्वतन्त्रता का संग्राम जारी रहा, तबतक इस शब्द की गूँज कोने-कोने से आती रही। 'भिखारी' शब्द का कुछ ऐसा प्रभाव हुआ कि अमीरों के राजभवनों से लेकर ग़रीबों के झोपड़ों तक विद्रोह की लहर बह उठी। फिलिप को मालूम हो गया कि जिस जाति को उसने छेड़-छेड़कर पागल बना दिया था, वह किन वीरों की बनी थी। शराब पी चुकने पर खप्पर बीच के एक थमले में लटका दिया गया। सब सरदार उठे और खप्पर में थोड़ा-थोड़ा नमक डाल-लकर एक साथ गाने लगे—

"इस नमक, इस रोटी, इस खप्पर की क़सम है,
कोई कितने ही दाँत पीसे ये भिखारी न बदलेंगे।"

यह तुकबन्दी उसी समय वहीं किसी ने गढ़ ली थी।

इसके बाद भी दावत समाप्त नहीं हुई। सरदार नशे में चूर हो रहे थे। किसी ने टोपी उलटकर लगा ली। किसी ने जाकट उल्टी करके पहिन ली। कुछ सरदार कुर्सियों और मेज़ों पर चढ़-चढ़ कर नाचने लगे। इतने में सरदार आरेञ्ज और एग्मोण्ट भी आ पहुँचे। आरेञ्ज वहाँ इस विचार से आया था कि हो सके तो लोगों को समझा-बुझाकर उनके इस तमाशे को बन्द कराये और ह्यूरसट्रेटन को अपने साथ ले जाय। एग्मोण्ट ब्रेड-रोड से पहिले ही लड़ चुका था। एग्मोण्ट इन सब तमाशा करने वाले सरदारों को घृणा की दृष्टि से देखता था फिर भी आज की इस दावत में आने के कारण एग्मोण्ट पर आगे चलकर सरकार की ओर से राजद्रोह का दोषारोपण किया जायगा और उसे अपनी जान से ही हाथ धोने पड़ेंगे। 'भिखारियों' ने आरेञ्ज और एग्मोण्ट के घुसते ही जय-घोष के नाद से आकाश गुंजा दिया। आरेञ्ज और एग्मोण्ट को भी थोड़ी-थोड़ी शराब पीने पर बाध्य किया गया। अन्त में आरेञ्ज के बहुत कहने-सुनने से 'भिखारियों' की सभा विसर्जित हुई। ह्यूरसट्रेटन को साथ लेकर आरेञ्ज और एग्मोण्ट 'स्टेट कौंसिल' की बैठक में सम्मि-लित होने डचेज़ के महल में चले गये। डचेज़ ने आरेञ्ज को सरदारों का तमाशा बन्द करा देने के लिए धन्यवाद दिया। 'भिखारियों' ने अपने दल के लिए खाकी कपड़े की एक नई वर्दी भी निश्चित कर ली थी। उसीको पहिने-पहिने बाज़ार में इधर-

उधर घूमते फिरते थे। बहुत से लोग उनको देखने को जुड़ जाते थे। जब ब्रेडरोड ब्रसेल्स से अपने सवारों के साथ वापिस चलने लगा, तब लोगों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई और सबने ख़ूब जयध्वनि के साथ उसको बिदाई दी। ब्रेडरोड के सब सवारों ने एक साथ पिस्तौलों का फ़ैर करके जनता को सलामी दी। रास्ते में एएटवर्प इत्यादि नगरों में भी ब्रेडरोड ऐसे ही दृश्य रचाता गया। शराब का प्याला हाथ में ले-लेकर हर स्थान पर उसने लोगों के सामने क़समें खाईं कि 'जबतक दम में दम है ब्रेड-रोड ख़ूनी क़ानूनों का विरोध करता रहेगा। तुम्हारे अधिकारों के लिए लड़ता रहेगा। एएटवर्प से ब्रेडरोड उत्तर-हालेण्ड चला गया और वहाँ से लुई को एक पत्र में लिखा कि 'भिखारियों की संख्या रेत के कणों की तरह असंख्य हो गई है।' लोगों में चारों तरफ़ गरम ख़बर फैल रही थी कि सरदारों के प्रार्थनापत्र का अच्छा प्रभाव पड़ा है। डचेज़ परमा ने अधिकारियों को हुक्म भेज दिये हैं कि अधिक सख़्ती न की जाय। स्टेट कौंसिल कानूनों को बदलने का विचार कर रही है। थोड़े ही दिन में 'ख़ूनी क़ानून' रद्द हो जायँगे।

भिखारियों के इस आन्दोलन, सभा, दावत इत्यादि ज़रा-ज़रा सी बात की सब ख़बरें फ़िलिप के पास स्पेन भेज दी गई थीं और वहाँ सब बातें शाही दफ़्तर में यहाँ तक लिखकर रख ली गई थीं कि ब्रेडरोड ने शुक्रवार के व्रत के रोज़ ब्रसेल्ज़ में मांस खाया। यह व्रत के रोज़ मांस खाने की बात कुछ ऐसी छोटी नहीं है, जो इतिहास में लिखने के अयोग्य हो। ऐसी-ऐसी ख़बरें पाकर ही तो फ़िलिप आग बबूला हो जाता था। भारत-

वर्ष में तो केवल धर्म-ग्रन्थों में लिखा ही मिलता है कि यदि शूद्र के कान में वेदमन्त्र की ध्वनि पहुँच जाय तो कान में गरम सीसा डालकर उसे दण्ड देना चाहिए। परन्तु इतिहास से पता नहीं चलता कि किसी राजा ने ऐसे क़ानून बनाकर कभी शूद्रों को उनके अनुसार दण्ड दिया हो। पर यूरोप का इतिहास क्रूरता से भरा पड़ा है। ऐसी छोटी-छोटी बातों पर लोगों को सलाख़ों से बाँधकर भून डाला जाता था। जिस समय यह ख़ूनी क़ानूनों के बदलने की चर्चा चल रही थी, और परमा की ओर से अधिकारियों को सख़्ती न करने के आदेश निकल चुके थे, उस समय भी तो रोज़ लोगों की क्रूरता से जानें ली जाती रहीं। इसी समय की दशा का वर्णन लिखते हुए परमा ने फिलिप को एक पत्र में यों लिखा था कि, 'एक तुच्छ मनुष्य ने जिसका कि नाम लिखना मेरी शान के ख़िलाफ़ है, अभी हाल में पुजारी के हाथ से चरणामृत लेकर स्वयं न पीकर पृथ्वी पर फेंक दिया था। मैंने उस बदमाश का मुकदमा स्वयं किया और सनातन-धर्म का अपमान करने के अपराध में मैंने उसे दण्ड दिया कि जिस दाहिने हाथ से चरणामृत लेकर उसने फेंक दिया था उस हाथ को पहिले काट लिया जाय। फिर सलाख़ से बदमाश को बाँध-कर धीमी-धीमी अग्नि पर भून डाला जाय। याद रहे यह हाल उस समय का है, जब सख़्ती बन्द कर दी गई थी। जिस अभागे 'तुच्छ' मनुष्य का नाम लिखना भी नवाबज़ादी परमा अपनी शान के ख़िलाफ़ समझती थी, वह बेचारा उसी नगर का झोंपड़े में रहने वाला एक ग़रीब था, जिसमें कि सिंहासनारूढ़ चार्ल्स की पुत्री ने स्वयं एक दिन 'तुच्छ' माता के पेट से जन्म

लिया था। चार्ल्स की रखेली स्त्री से पैदा परमा आज एक गरीब आदमी का नाम लिखना भी अपनी शान के ख़िलाफ़ समझने लगी थी। प्रभुता पाकर नीच मनुष्यों का दिमाग़ आसमान पर चढ़ जाता है।

ख़ूनी क़ानूनों को नरम बनाने के प्रयत्न होने की जो गरम ख़बर सारे देश में फैल रही थी, उसका भी हाल सुनिए। प्रीवी कौंसिल ने अपने बुद्धिमान सलाहकारों की राय से खूनी क़ानूनों में यह नरमी कर दी कि सनातन-धर्म के विरुद्ध चलने वालों को लोहे की गरम सलाखों पर भूनने के स्थान में फाँसी पर लटकाया जाय। खुले शब्दों में घोषणा कर दी गई कि सनातन-धर्म के अतिरिक्त किसी धर्म में विश्वास रखने का अधिकार किसी को नहीं है। 'सनातन-धर्म' का विरोध करने वालों को कहीं मिल-बैठकर बातें करने अथवा सभा करने का भी अधिकार नहीं है सनातन-धर्म के विरुद्ध लेख लिखकर यदि कुविचार फैलाने का प्रयत्न कया जायगा तो, जैसे बनेगा, सरकार इन लेखों को भी दबाने का प्रयत्न करेगी। धार्मिक ग्रन्थों के सम्बन्ध में संदेह करने या विचित्र प्रश्न पूछने अथवा कोई नई शोध करने का भी किसी को अधिकार नहीं है। अपराधियों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया था। एक साधारण अपराधी, दूसरे जनता को भड़काने वाले अपराधी। साधारण अपराधियों पर कुछ दया दिखाई जा सकती थी, परन्तु भड़काने वालों को बिना पूछे-ताछे तुरन्त फाँसी पर लटका देने का हुक्म था। नेदरलैंड-वासियों की जानें सरकारी अधिकारियों के हाथ में दे दी गई थीं। अधिकारी जब चाहें कोई न कोई इलजाम लगाकर हर किसी को फाँसी

पर लटका सकते थे। 'धर्म की चर्चा' करने वालों को प्राण-दण्ड का हुक्म था। किसी सुविख्यात धार्मिक विद्यालय से 'धर्मशास्त्री' की उपाधि बिना प्राप्त किये धार्मिक ग्रन्थावलोकन करने वाले को प्राण-दण्ड मिलता था। सनातन-धर्म के विरुद्ध दल के पादरियों को घर में छिपाने वालों को प्राण-दण्ड था। जिसके घर पर सनातन-धर्म के विरुद्ध कोई घटना अथवा कार्य हो जाय उसको प्राण दण्ड था।' हाँ इतनी दया अवश्य हो सकती थी कि अपराध मान कर क्षमा प्रार्थना करने वाले अपराधी को गला घोटकर मारने के बजाय सिर काटकर मारा जा सकता था।

सुधार की सिफारिश की प्रार्थना करने के लिए फिलिप के पास तिनिधि भेजना निश्चय हुआ। पहिले एग्मोण्ट को भेजने की बात चली परन्तु एग्मोण्ट ने जाने से इन्कार कर दिया। उसने कहा कि मेरे पिछली बार स्पेन जाने का ही क्या फल हुआ? इसलिए मौण्टनी और बरघन स्पेन भेजने के लिए चुने गये। ये दोनों सरदार हृदय से ग्रेनविले की तरह कट्टर सनातनधर्मी थे। इसलिए उन्हें फिलिप से कोई आशंका नहीं हो सकती थी। परन्तु ये अभागे स्पेन जाकर फिर न लौटे। मातृभूमि के उनके यह अन्तिम दर्शन थे। मौण्टनी का विवाह हुए तो एक ही वर्ष हुआ था। इस समय उसकी स्त्री गर्भिणी थी। परन्तु उसकी कोख से जन्म लेने वाले बालक के भाग्य में पिता का मुख देखना नहीं था। रास्ते में पेरिस में रहने वाले स्पेन के राजदूत ने मौण्टनी को समझाया भी कि नेदरलैण्ड के आन्दोलन में भाग लेने के कारण फिलिप तुम पर कुपित है। स्पेन जाने में तुम्हारी खैर नहीं। किसी बीमारी-बीमारी का बहाना करके टाल जाओ। परन्तु

मौएटनी को विश्वास नहीं हुआ। उसकी समझ में ही नहीं आया कि मैंने ऐसा क्या दोष किया है कि जिसके कारण फिलिप मुझ पर क्रुद्ध हो सकता है।

चलने से पहिले डचेज परमा ने उन्हें सब बातें समझाते हुए १८ अध्याय का एक व्याख्यान दिया और उनके पहुँचने के पहले ही एक विशेष दूत द्वारा नेदरलैंएड का सब हाल फिलिप के पास पहुँचा दिया। नेदरलैंएड में रहने वाले फिलिप के अलेन्जो केएटो नाम के एक जासूस ने भी फिलिप को लिखा कि यही दोनों सरदार, जो आपके पास आ रहे हैं, नेदरलैंएड के सारे उपद्रवों की जड़ हैं। ग्रेनविले ने फिलिप को एक पत्र में लिखा—"बरघन और मौएटनी से अधिक अच्छे प्रतिनिधि नेदरलैंएड की ओर से और कौन हो सकते थे? उन्हींका खड़ा किया हुआ सारा उत्पात है। इसलिए सारा हाल वही आपको अच्छा बतला सकते हैं।" ये सब पत्र फिलिप के पास पहुँच चुके थे। परन्तु जब बरघन और मौएटनी १७ जून को मेड्रिड पहुँचे तो फिलिप ने बड़े स्नेह से स्वागत किया। तुरन्त आकर उनसे मिला। फिलिप तो भीतर ही भीतर षड्यन्त्र रचने वाला मनुष्य था। अपने ऊपरी बर्ताव से आन्तरिक विचार कभी आसानी से प्रकट नहीं होने देता था। इन दो सरदारों से मुक्ति पाने के उसने जो काले उपाय रचे थे, वे अब तीन सौ वर्ष बाद जाकर कहीं संसार को मालूम हो पाये हैं। बेचारे सीधे-सच्चे सहज वीर कैसे समझ सकते थे कि फिलिप के मीठे व्यवहार के भीतर विष भरा हुआ था!

सन् १५६६ ई० की ग्रीष्म ऋतु के साथ-साथ नेदरलैंएड का सार्वजनिक आन्दोलन भी गरम हो उठा। हजारों दुकानदार,

किसान, कारीगर, ग़रीब, अमीर, सब पुराने ढंग की बन्दूकें, भाले, फरसे और तलवारें ले-लेकर मैदानों में खुल्लमखुल्ला सुधारकों के व्याख्यान सुनने के लिए इकट्ठे होने लगे। सार्वजनिक विद्रोह का नेदरलैंएड में पहला अध्याय प्रारम्भ हुआ। सरकार के किसी हुक्म और क़ानून की परवाह न करके लोग खुल्लमखुल्ला विद्रोह करने लगे। सरकार की तरफ से यह भी विज्ञप्ति निकाली गई थी, कि जो कोई किसी मरे या जीवित सुधारक पादरी को सरकार के सामने हाज़िर करेगा, उसे ७००) रु० इनाम दिया जायगा। परन्तु सुधारक पन्थों के जो पादरी पहले छिप-छिपकर प्रचार करते थे, अब मैदानों में व्याख्यान देने लगे। ७००) रु० के लालच से कोई उन्हें पकड़ाने की चेष्टा नहीं करता था। पहले की अपेक्षा अत्याचार भी कुछ कम हो गया था। प्रार्थना-पत्र-आन्दोलन की घटनाओं ने भी लोगों का उत्साह कुछ बढ़ा दिया था। नवीन दल के लोगों की संख्या भी काफ़ी बढ़ गई थी इन सब कारणों से लोगों को उपद्रव करने की हिम्मत हो उठी। जिधर देखो उधर मैदानों नवीन युग के प्रचारक दुन्दुभी बजाते नज़र आते थे। २८ वीं जून सन् १५६६ ई० की रात को ग्यारह बजे टूरनी नगर के निकट एक पुल पर छः हज़ार आदमी एम्ब्रोज़ विले नाम के—एक नवीन दल के पादरी का व्याख्यान सुनने इकट्ठे हुए। यह पादरी यूरोप के नवीन युग के विधाता स्वयं महात्मा कालविन से दीक्षा लेकर आया था, और बड़े निर्भीक स्वर से नवीन मत का प्रचार करता था। ७ जुलाई को फिर उसी पुल पर इस पादरी का व्याख्यान हुआ। बीस हज़ार आदमियों की भीड़ एकत्र हुई। एम्ब्रोज़ का सिर लाने के

लिए सरकार ने इनाम लगा रक्खा था। परन्तु जनता का प्रत्येक मनुष्य हथियारों से सुसज्जित होकर व्याख्यान सुनने आता था। एम्ब्रोज की रक्षार्थ जनता के सौ सशस्त्र सवार उसको चारों ओर से घेरकर चलते थे। एम्ब्रोज़ ने बड़ा ही निर्भीक और ओजस्वी भाषण देते हुए कहा कि 'भाइयो सरकार के डर से धर्म मत गवाँ बैठना। मुझे तो मौत का कुछ डर नहीं है। मैं मर जाऊँगा तो क्या? मेरे रक्त से पचास हज़ार मेरा बदला लेने वाले पैदा हो जायँगे।'

डचेज़ हुकम भेजती थी कि अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित सभायें न हों। परन्तु उसके हुक्मों का पालन करने वाले कहाँ थे? नये विचारों की बीमारी गरीब, अमीर, सौदागर, साहूकार, धुनिये, जुलाहे, कोली, चमार सभी में फैल गई थी। सब बड़े चाव से सभाओं में आ-आकर नवीन व्याख्यान सुनते थे। जिन सरकारी फ़ौजों के देशी सिपाहियों को सभायें भंग करने की आज्ञा भेजी जाती थी, वे स्वयं श्रोता बने हुए सभाओं में पहले ही से मौजूद होते थे। नागरिकों का बच्चा-बच्चा सभाओं में पहुँचता था। शहर खाली हो जाते थे। फ्लेण्डर्स भर में ऐसे ही दृश्य देखने में आते थे। सभायें क्या थीं, फ़ौजी पड़ाव लगते थे! प्रत्येक मनुष्य नखसिख हथियारों से लैस होता था। सभा-स्थल के चारों ओर गाड़ियों, शाखाओं और तख्तों का परकोटा बना लिया जाता था। प्रत्येक द्वार पर सवारों का पहरा होता था। दूर-दूर तक ख़तरे की ख़बर देने को जासूस लगे रहते थे। फेरी लगाने वाले खुल्लमखुल्ला ज़ब्त किताबें बेचते फिरते थे। फ्लैण्डर्स के बाद वेलून प्रान्तों में होती हुई यह उपद्रव की हवा

उत्तर की तरफ़ पहुँचो। जिस समय हालैण्ड प्रान्त में हारलेम के निकट नवीन मत की प्रथम सभा एकत्र होने की घोषणा हुई, तो सारे हालैण्ड में बिजली-सी दौड़ गई। अधिकारी घबरा उठे। ग्रामों से हज़ारों आदमियों की भीड़ें शहर की ओर उमड़ चलीं। अन्य नगरों से भी हज़ारों आदमी एक रात पहले ही हारलेम में आ जमे। प्रातःकाल अधिकारियों ने नगर के द्वार ही नहीं खोले। परन्तु जनता तो जोश से उन्मत्त थी। लोग खाई तैरकर, दीवारों पर चढ़कर और फाटक तोड़कर अन्दर घुस आये। आज का व्याख्यानदाता भी हज़ारों में एक था। था तो पतला-दुबला, छोटासा, दो हड्डी का मनुष्य, परन्तु चार घण्टे तक उसने वह धारा-प्रवाह वक्तृता दी कि लोगों के दिल हिल उठे। आँखों से आँसू बह निकले। जिस समय उसने हाथ ऊपर को उठाकर अपने ग़रीब, अत्याचार से पीड़ित देश-वासियों और अत्याचार करने वाले अधिकारियों और फिलिप के लिए भगवान से प्रार्थना की तो सबकी आँखों से आँसू झर उठे। इसके बाद इसी प्रकार की सभायें हालैण्ड के नगर-नगर में होने लगीं।

शाहज़ादा आरेञ्ज अब तक नवीन पन्थ के पक्ष में नहीं था परन्तु कुछ कुछ उसकी वृत्ति भी बदल चली थी। परमा बड़े चक्कर में थी। आन्दोलन इतना बढ़ गया था कि सभाओं का बन्द करना असम्भव था। नई फ़ौज खड़ी करते भी वह बहुत डरती थी। फिलिप का अभी तक कुछ उत्तर नहीं आया था। बिना आज्ञा पाये नई फ़ौज भरती करने से उसके क्रुद्ध हो जाने का भय था। दूसरे, परमा यह भी अच्छी तरह जानती थी कि

यदि मैंने एक फ़ौज खड़ी की तो जनता की तरफ से दस फौज उठ खड़ी होंगी। आन्दोलन बढ़ जायगा। फ़ौजें खड़ी करने का निश्चय भी कर लेती तो पास रुपया नहीं था। ख़जाने में चूहे लोट रहे थे। लोगों का विचार था कि एग्मोएट जनता का नेता बनकर सरकार का सामना करेगा। परन्तु एग्मोएट न तो सरकार की तरफ़ से लोगों पर हाथ उठाने को तैयार था और न लोगों के आन्दोलन का ही नेता बनने को तैयार था। फ्लेण्डर्स में आन्दोलन बहुत बढ़ गया था। जनता की ओर से किसी भी क्षण चालीस पचास हज़ार फ़ौज खड़ी हो सकती थी। सनातन धर्मियों के प्राण सूखने लगे थे। इसलिए परिस्थिति सम्भालने के लिए एग्मोएट फ्लेण्डर्स चला गया। एण्टवर्प में भी उत्पात हो उठे थे। मशहूर 'भिखारी' ब्रेडरोड अपने बहुत से साथियों सहित इस नगर में उपस्थित था। वह इधर उधर 'भिखारियों' की वर्दी पहने घूमता फिरता था। मेघम और एरमबर्ग भी शहर में आये हुए थे। परन्तु उनके सम्बन्ध में लोगों में ख़बर फैल रही थी कि वे जनता के ऊपर हमला करने की योजना कर आये हैं। जनता और डचेज़ परमा दोनों की राय थी कि ऐसे कठिन समय में शाहज़ादा आरेञ्ज ही स्थिति सम्हाल सकता है। इस लिए आरेञ्ज को एण्टवर्प भेज दिया गया। जिस समय आरेंज एण्टवर्प में घुसा चारों तरफ से हज़ारों आदमियों की भीड़ उसका स्वागत करने को आई। सड़कों के दोनों ओर घरों पर जिधर देखो उधर आदमी ही आदमी नज़र आते थे। सरदारों को लेकर ब्रेडरोड़ शाहज़ादे की अगवानी को पहुँचा। आरेञ्ज का सामना होते ही ब्रेडरोड़ और उसके साथियों ने पिस्तौल का वार करके

आरेञ्ज़ को सलामी दी । पिस्तौल छूटते ही चारों ओर से शाह-ज़ादे की जयध्वनि होने लगी । लोग आरेञ्ज को 'हमारा रक्षक' 'हमारा पिता' 'हमारी एकमात्र आशा' पुकार-पुकारकर चिल्लाने लगे । एक तरफ़ से 'भिखारियों की जय' ध्वनि भी उठी । परन्तु आरेञ्ज़ ने तुरन्त फटकारकर कहा—"मैं आप लोगों को शीघ्र ही यह शब्द भुला दूँगा ।" आरेञ्ज को व्यर्थ का शोर-गुल बहुत नापसन्द था । जब लोगों को यह मालूम हो गया तो बहुत से लोग तुरन्त अपने-अपने घरों को चले गये । अपने 'रक्षक' और 'पिता' को पाकर लोगों की जान में जान आई । आने वाली आपदाओं से बचने का कुछ विश्वास हुआ ।

आरेञ्ज ने एण्टवर्प में पहुँचते ही सब दलों से मिलकर लोगों का आपस का मनमुटाव मिटाने और शान्ति स्थापन करने का प्रयत्न शुरू कर दिया था । अन्त में सब की राय से निश्चय हुआ कि नगर के अन्दर नये मतवाले प्रचार न करें । नगर के बाहर कर सकते हैं । आरेञ्ज की राय थी कि नगर में शान्ति कायम रखने के लिए बारह सौ आदमियों की एक सेना रक्खी जाय और उसका खर्च नगर की तरफ़ से दिया जाय । परन्तु जनता के प्रतिनिधि राज़ी नहीं हुए । उन्होंने कहा कि नगर में शान्ति रखने की हम अपने ऊपर ज़िम्मेदारी ले सकते हैं । परन्तु फ़ौज खड़ी करने के लिए हम तैयार नहीं हैं ।

जुलाई और अगस्त भर आरेञ्ज शान्ति स्थापन करने का प्रयत्न करता रहा । शान्ति कायम रखना परमा का कर्तव्य था, परन्तु वह इस कार्य के बिलकुल अयोग्य थी । उसकी और सुधा-रक दल की, दोनों की राय थी कि बस आरेञ्ज ही एक ऐसा

मनुष्य है जो जनता के उठते हुए तूफान को संभाल सकता है। आरेञ्ज राजा और प्रजा में फैसला कराने का प्रयत्न कर रहा था। परमा और फिलिप उसको प्रशंसापूर्ण पत्र पर पत्र लिखते थे। फिलिप ने इसी समय आरेन्ज को अपने हाथ से एक पत्र लिखा उसमें आरेञ्ज के बड़े गुण गाये। एन्टवर्प में शान्ति स्थापन करने में सफल होने के लिए उसे धन्यवाद दिया और उसका इस्तीफा नामंजूर करके लिखा कि मेरा तुम पर अत्यन्त विश्वास है। आरेञ्ज खूब जानता था कि फिलिप उसपर कितना विश्वास करता है। इसलिए यह पत्र उसे भुलावे में न डाल सका। इधर परमा ने, जो फिलिप की ही तरह आरेञ्ज को बहुत से पत्र लिख-लिखकर उस पर अपना विश्वास जताती थी। फिलिप को एक पत्र में लिखा कि 'आरेञ्ज ही इन सारी आपत्तियों की जड़ है। शायद वह इस प्रदेश पर अधिकार जमाकर अपने भाई बंदों में बाँट लेना चाहता है।' यह बिलकुल बे सिर-पैर का दोषारोपण था। आरेञ्ज का व्यवहार शुरू से सीधा और सच्चा रहा था। जनता की माँग थी कि पंचायत बुलाई जाय। फिलिप के हाथ में था कि पंचायत की बैठक करके जनता को शांत कर देता। परंतु यदि फिलिप जनता की बात मान लेता तो फिर फिलिप फिलिप ही न होता। और यदि शाहजादा आरेञ्ज उसको इस मार्ग पर लानेकी चेष्टा करना छोड़ देता तो आरेञ्ज आरेञ्ज न होता। यदि आरेञ्ज फिलिप को मार्ग पर ले आने में सफल हो गया होता तो न तो हालैण्ड में विद्रोह ही हुआ होता और न प्रजातंत्र की स्थापना हो पाती। कभी-कभी अत्याचारियों का हठ संसार को बड़ा लाभदायक होता है।

(८)

क्रान्ति के पथ पर

विद्रोह की अग्नि दिन पर दिन भड़कती जाती थी। यदि आरेञ्ज विद्रोह दबाने का प्रयत्न करना भी चाहता तो अब असम्भव था। जो कुछ शांति स्थापित करने का प्रयत्न हो सकता था आरेञ्ज करता था। तरह-तरह की अफ़वाहें उठती थीं। अमुक स्थान पर सरकारी फौज जनता पर आक्रमण करने को इकट्ठी हो रही हैं। अमुक दिशा से अत्याचार करने के लिए फौज बुलाई जा रही है। ये अफ़वाहें और भी अनर्थ कर डालती थीं। सरकार की ओर से दमन होने की खबर सुनकर दस-बारह हज़ार आदमियों के स्थान पर पचीस-पचीस हज़ार आदमी सुधारकों के व्याख्यान सुनने के लिए शहर के बाहर मैदानों में आकर एकत्र हो जाते थे। एक दिन एक ऐसी ही सभा में एक साधारण प्रचारक, जिसे शास्त्रों इत्यादि का अधिक ज्ञान नहीं था, व्याख्यान दे रहा था। एक सनातनी पण्डित ने जाकर उससे प्रश्न पूछे और उसके अज्ञान का मज़ाक उड़ाया। जनता को यह सहन न हुआ। लोगों ने सनातनी पण्डित को पकड़कर उसकी कुन्दी कर डाली। जनता में से ही उठकर यदि कुछ लोग पंडित की रक्षा न कर लेते तो उसकी जान चली गई होती।

आरेञ्ज ने पण्डित को उसकी इस उद्दण्डता पर बहुत फटकारा और एक दिन के लिए इस विचार से जेल में बन्द कर दिया कि कहीं लोग उसे पकड़कर मार न डालें। जब तक शाहज़ादा आरेञ्ज राजधानी में रहा, विद्रोह का स्फोट-जिसकी बहुत दिनों से प्रतीक्षा हो रही थी रुका रहा। परन्तु उधर आरेञ्ज

की जागीर हालैण्ड और जेलैण्ड में उपद्रव होने लगे थे। मैदानों में बड़ी-बड़ी सभायें होने लगीं थीं। एमस्टर्डम के निकट हथियारों से सुसज्जित मनुष्यों की इतनी बड़ी-बड़ी सभायें एकत्र होती थीं कि वे सरकारी अफसरों की संभाल के बाहर हो गई थीं। शाह-जादा को स्वयं अपनी जागीर में देखभाल करने की आवश्यकता थी। वह अपने प्रान्त में जाना चाहता था। परन्तु परमा उसे जाने नहीं देती थी। एण्टवर्प इत्यादि में उत्पातों के भय के अति-रिक्त सरदारों का मण्डल भी उलझन खड़ी कर रहा था। ऐसी अवस्था में परमा आरेञ्ज की सहायता के बिना कर ही क्या सकती थी? सौ सरदारों ने जुलाई मास में मिलकर एक सभा कर डाली थी। उस सभा में हर एक सरदार अपने अपने लड़ैत जवानों को साथ लेकर आया था। ऐसी सभा में शान्ति से विचार होना तो असम्भव ही था। तलवारें और ढालें खटकती थीं। अण्टसण्ट व्याख्यानों के साथ-साथ भाले भी घूम उठते थे। खैर, किसी प्रकार सभा में दो बातों पर विचार हुआ। एक तो यह कि सरदारों ने जो 'प्रार्थना-पत्र' भेजा था, यदि वह मंजूर हो जाय तो आगे और मांगें रखनी चाहिएँ अथवा नहीं। दूसरी इस बात पर विचार हुआ कि क्या सरकार से वादा ले लेना चाहिए कि किसी सरदार से इस आन्दोलन में भाग लेने के कारण बदला नहीं लिया जायगा। दो प्रस्ताव भी पास हुए। एक तो यह कि यदि जनता पर सरकार अत्याचार करे तो हम लोगों को उसकी रक्षा करनी चाहिए। दूसरा यह कि चार सवार और चालीस कम्पनियों की जर्मन सिपाहियों की एक फौज खड़ी कर लेनी चाहिए। यह सब प्रबन्ध सरदार आत्मरक्षा के विचार से कर

रहे थे। उनका विचार था कि यदि राजा ने नेदरलेण्ड पर आक्रमण किया तो पहले प्रबन्ध कर लेने से उसका सामना करने के लिए सामग्री तैयार रहेगी।

परमा के बहुत प्रार्थना करने पर आरेञ्ज १८ जुलाई को सरदारों के प्रतिनिधियों से डफ़ल में मिला। एग्मोण्ट भी उसके साथ था। सरदारों के प्रतिनिधि ब्रेडरोड और क्यूलमबर्ग इत्यादि थे। आरेञ्ज ने कहा कि 'परमा ने आप लोगों की बात मानकर दो आदमियों को राजा से सलाह करने स्पेन भेज दिया है। जब तक परमा अपने वादे पर डटी है तब तक आप को भी अपने वादे के अनुसार शान्ति रखनी चाहिए। हथियारों से सुसज्जित जनता की सभाओं को बन्द करने का आप लोगों को प्रयत्न करना चाहिए। परन्तु आप लोग तो स्वयं जनता को सभाओं में हथियार ले-लेकर आने का मार्ग दिखाते हैं। यदि आप इन उद्दण्ड सभाओं को रोकने का हृदय से प्रयत्न करने का विश्वास दिलावें तो डचेज़ परमा सरकार की ओर से यह कह देने को तैयार है कि आप लोगों के प्रार्थनापत्र से फ़ायदा हुआ है।" परन्तु सरदारों की ओर कहा गया कि 'सरकारी वादों का क्या ठीक है? जो वादे आज किये जाते हैं कल तोड़ डाले जाते हैं। परमा के दो तरह के व्यवहार से हमारा विश्वास उठ गया है। सरकारी अत्याचार बराबर जारी हैं। सरकार की ओर से 'नम्रता' का व्यवहार करने के लिए अफ़सरों को पत्र भेजे गये थे उन सबको अफ़सरों ने न मालूम घूरे में फेंक दिया या क्या हुए? सुधारक दल के प्रचारकों के सिर काटकर लाने के लिए इनाम जारी कर दिये गये हैं। मानों वे हिंसक जन्तु हैं! स्पेन से

आक्रमण होने की बराबर धमकी दी जा रही है। कानूनों को ताक पर रखकर पंचायतों की बैठक ही रोक दी गई है। लोग हताश हो गये हैं। सरकार के दुर्व्यहार के कारण ही लोग सीमा लांघ-जांघकर हज़ारों की संख्या में मैदानों में एकत्र होने लगे हैं। हमारे व्यवहार का जनता पर कुछ असर नहीं पड़ा है। परंतु लोग राजा की आज्ञा का उल्लंघन करने के उद्देश से एकत्र नहीं होते है। ईश्वरोपासना के लिए आते हैं।"

इस बातचीत का कुछ संतोषजनक फल न हुआ। मास के अन्त में सरदारों की ओर से लुई एक पत्र लेकर परमा के दरबार में हाज़िर हुआ। पत्र में लिखा था कि 'यवनों से संग्राम करने को हम लोग सदा तैयार हैं। परंतु अपने देश-वासियों पर हम लोग कभी हाथ नहीं उठावेंगे। यदि हमको विश्वास दिला दिया जाय कि परमा का दिल सच्चा है, पिछली बातों का बदला नहीं निकाला जायगा, हार्न, एगमोरट और आरेञ्ज की सलाह से सब काम किये जायँगे, पंचायतों की बैठकें बुलाई जायँगी तो हम सब लोग शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करने का वचन दे सकते हैं, अन्यथा नहीं।' परमा पत्र पढ़कर जल गई। बोली—"मैं खूब समझती हूँ। तुम सब लोग शासन अपने हाथ में लेकर स्वयं राजा बनना चाहते हो।"

इसी समय एक और घटना घट गई, जिससे मामला और बिगड़ गया। नेदरलैण्ड धनवान देश था। सदियों से लोगों ने कारीगरी कर-करके सैकड़ों सुंदर-सुंदर गिरजे बनाये थे। एण्टवर्प के मुख्य गिरजे का मध्य स्तम्भ तीन सौ फुट ऊँचा था उसकी कला और कारीगरी का वर्णन पढ़कर मालूम होता है

कि उसमें भी ताजमहल की तरह पत्थरों में कविता की गई थी। उसके धन और जवाहरातों का हाल सुनकर सोमनाथ की याद आती है। १८ अगस्त को सदा की भांति इस वर्ष भी गिरजे से देवी मेरी का जुलूस धूमधाम से निकला। धार्मिक अत्याचारों से उकताकर लोग धार्मिक चिन्हों से घृणा करने लगे थे। मेरी के जुलूस के पीछे ठलुए और आवारों की एक भीड़ लग गई। यह लोग मुँह बना-बनाकर मेरी को गालियां सुनाने लगे। कोई बोला 'बच्ची मेरी तुम्हारा समय आ गया है'! किसी ने कहा 'देवी यह तुम्हारी अन्तिम सवारी है। नगर तुमसे घबरा उठा है।' जुलूस जब लौटकर आ गया तो पुजारियों ने डर के कारण सदा की भांति मूर्ति को खुले में न रखकर एक सीखचों के कठघरे में रख दिया। दूसरे दिन सुबह फिर ठलुओं की भीड़ गिरजे में आ जमी। मेरी को कठघरे में रक्खा देख ठलुए हंसकर कहने लगे—"बच्ची मेरी! डर गई? बस इतनी जल्दी डर गई? घोंसले में जा घुसी! क्या वहां हमारा हाथ नहीं पहुँच सकता? होशियार हो जाओ बच्ची! अब तुम्हारा समय आ पहुंचा है।" एकाएक भीड़ को चीरकर चीथड़े लपेटे हुए एक आदमी निकला और पुजारी की चौकी पर चढ़ गया। फिर बाइबिल हाथ में लेकर वह मनुष्य के धार्मिक प्रवचनों की नकल करके एक बड़ा बेहूदा व्याख्यान झाड़ने लगा। कुछ लोग तालियां पीटकर उसका उत्साह बढ़ाने लगे। कुछ धिक्कारने लगे। किसी ने टांगें पकड़ कर उसे नीचे खींचना चाहा। किसी ने इधर-उधर जो कुछ पड़ा मिला उठाकर उसके मारा। परन्तु वह सब को लात का उत्तर लात और बात का उत्तर बात से देते हुए अपना अश्लील व्याख्यान

झाड़ता ही रहा। इसपर एक सनातनी मल्लाह को बड़ा क्रोध हो आया। मल्लाह ने गरदन पकड़कर उसे दे मारा। दोनों ज़मीन पर लोटकर कुश्ती लड़ने लगे। मल्लाह को उस मनुष्य से लड़ता देख दर्शक मल्लाह पर टूट पड़े। मुश्किल से कुछ लोग मल्लाह की जान बचाकर उसे बाहर निकाल ले गये। दूसरे दिन फिर उसी प्रकार एकत्र होकर लोग धार्मिक अत्याचारों से प्रपीड़ित हृदयों की जलन मेरी को गालियाँ दे-देकर निकालने लगे। गिरजे के सामने वर्षों से एक बुढ़िया बैठकर पूजा-पत्री का सामान बेचा करती थी। कुछ लोग जाकर उसे चिढ़ाने लगे, 'बस, तुम्हारी तिजारत के दिन हो चुके! तुम्हारी मेरी और तुम दोनों ही हमारे हाथों शीघ्र ही नष्ट होने वाली हो।' इस पर बुढ़िया चिढ़कर गालियाँ देने लगी और उठा-उठाकर लोगों के सामान मारने लगी। लोग उमड़ कर गिरजे में घुस पड़े। सीखचे तोड़कर मेरी की मूर्ति निकाल ज़मीन पर पटक दी गई। क्षण भर में तोड़-फोड़ और घसीट-घसीट कर मूर्ति के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गये। मोती और जवाहरात चारों ओर बिखेर दिये गये। कुछ लोग मूर्तियों और पुजारियों के पवित्र कपड़े निकाल लाये और उन्हें पहन-पहनकर नाचने लगे। किसी ने बड़ी मेहनत और कारीगरी से बनाई हुई मूर्तियों, झिल्मरियों और खिड़कियों को तोड़ फोड़कर चकनाचूर कर दिया। किसी ने राजाओं के मस्तक पर लगने वाले 'पवित्र-तेल' को निकालकर जूतों पर मला। चारों तरफ कुल्हाड़ी, हथौड़ों और घनों की आवाज़ ठनठनाने लगी। भयंकर कोलाहल था। बन्दरों की तरह कूद कूदकर उन लोगों ने इस सुंदर गिरजा घर के सदियों के एकत्र किये हुए सारे सौंदर्य को

क्षण भर में मिट्टी में मिला दिया। लेकिन मूर्तियों और पत्थरों पर ही क्रोध उतारा गया। किसी मनुष्य के रक्त से किसी ने हाथ नहीं रँगे। न एक पैसे की चीज ही कोई उठाकर घर ले गया। क्रोध और पागलपन की यह लहर धार्मिक अत्याचार के विरुद्ध आई थी। इसलिए पहला आक्रमण उन धार्मिक चिन्हों पर ही किया गया जिनके कारण रोज मनुष्यों को जानें ली जाती थीं। इतने दिन तक शाहजादा आरेञ्ज की व्यवहार-कुशलता और चातुर्य्य के कारण एन्टवर्प का ज्वालामुखी फटने से रुका रहा था। इस घटना के समय वह वहाँ नहीं था। उसके बहुत मना करने परमा ने राजकार्य्य में सहायता लेने के लिए उसे ब्रसेल्स बुला लिया था।

एन्टवर्प के उपद्रव की खबर फैलते ही अन्य स्थानों में भी इसी प्रकार के बलवे खड़े हो गये। हर जगह मूर्तियों और मन्दिरों पर ही हमला हुआ। लेकिन कहीं जरा भी लूटमार नहीं हुई। और न किसी आदमी पर हाथ ही उठाया गया। छः-सात दिन में नेदरलेण्ड में हजारों गिरजे तबाह हो गये। अकेले फ्लेण्डर्स के प्रान्त में ४०० गिरजे नष्ट कर डाले गये। उपद्रव के समय हर जगह सौ डेढ़-सौ लघु श्रेणी के मनचले आदमी तोड़-फोड़ का काम करते थे। शेष हजारों को संख्या में खड़े-खड़े तमाशा देखते थे। परन्तु यह लघु श्रेणी के मनुष्य भी होते अपनी लगन के बड़े सच्चे थे। जवाहरात, सोना, चांदी बिखरी पड़ी रहती थी। परन्तु कोई किसी चीज पर हाथ नहीं लगाता था। उन्हें तो मूर्तियां नष्ट करने की धुन होती थी। किसी एक मनुष्य ने केवल चार-पांच रुपये की कोई छोटी-सी चीज चुरा

ली थी। उसी के लिए लोगों ने तुरन्त उसे फांसी पर लटका दिया।

आख़िरकार प्रजा ने सरकार के अन्याय से घबरा कर क्रान्ति के पथ पर क़दम रख दिया था। यह उपद्रव क्रांति के मार्ग पर पहला क़दम था। फिलिप ने जब स्पेन में उपद्रव का हाल सुना तो क्रोध से दाढ़ी नोच कर बोला—"इस उद्दण्डता के लिए लोगों को खूब मज़ा चखना पड़ेगा। अपने बाप की क़सम खाकर कहता हूँ—कि लोगों को खूब मज़ा चखना पड़ेगा।" ब्रसेल्स में भी उपद्रव न हो जाय इस डर से परमा राजधानी छोड़कर भागने पर तैयार हो गई थी। आरेञ्ज, हार्न, एग्मोएट इत्यादि ने उसे समझाया कि आपके भागने का जनता पर बड़ा बुरा असर पड़ेगा। सरदारों ने अपनी ज़िम्मेदारी पर बड़ी कठिनता से परमा को भागने से रोक पाये। परन्तु परमा ने डरकर जनता को शांत करने के विचार से २५ अगस्त को यह घोषणा निकाल दी कि 'इन्क्विज़िशन बन्द हो जायगा। पिछले कामों के लिए किसी को कुछ सज़ा नहीं मिलेगी। सुधारक लोग जिन-जिन स्थानों पर उपासना करते हैं वहाँ-वहां उनको उपासना करने की इजाज़त है।' इस घोषणा ने जनता का दिल और भी बढ़ा दिया। नेदरलैण्ड भर में क्षण भर के लिए आनन्द का सागर उमड़ पड़ा। लोग समझे—'हमारी जीत हो गई।'

---

(६)

प्रारंभिक चिनगारियां

आरेञ्ज, एग्मोण्ट और हार्न को इस उपद्रव के हो जाने से बड़ा दुःख हुआ। यह सब सरदार अपने सूबों में शांति स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे। मौण्टनी और बरघन फिलिप से नेदरलैण्ड के सम्बन्ध में चर्चा करके स्पेन से अभी तक नहीं लौटे थे। फिलिप ने भुलावा देने के लिए उनका खूब स्वागत किया था। रोज़ बुलाकर उनसे मीठी-मीठी बातें करता था। परन्तु अन्दर ही अन्दर दोनों के लिए ऐसा जाल रचा जा रहा था कि बेचारे फिर लौटकर अपने देश के दर्शन भी नहीं कर पाये। ये दोनों वीर बड़े अभागे थे। उन्हें फिलिप के आन्तरिक भावों का जरा भी पता नहीं था। बातों-बातों में सरल स्वभाव से कभी कभी कह देते थे कि 'नेदरलैण्ड के लोग ऐसे निर्बल नहीं हैं कि अन्याय चुपचाप सह लें।' उनके ऐसे-ऐसे वाक्यों से फिलिप की आन्तरिक हिंसक-वृत्ति और भी प्रज्वलित हो उठती थी। डचेज़ परमा ने नेदरलैण्ड से फिलिप को इस आशय का एक बिल्कुल झूठा पत्र लिखा था कि 'यहां के सरदारों ने मुझे क़ैद करके सुधारकों को रियायतें दे देने की घोषणा मुझसे करवा दी है। हार्न तो सब महंतों और पुजारियों को मार डालने पर ही उतारू हो गया था। आरेञ्ज ने कह दिया था कि यदि परमा

शहर छोड़कर चली जायगी तो मैं पंचायतों की बैठक बुला लूँगा। एग्मोण्ट ने ६० हजार फ़ौज लेकर मुझे घेर लेने की धमकी दी थी। इस प्रकार बिलकुल लाचार होकर मैंने अपनी इच्छा के विरुद्ध जान बचाने के विचार से घोषणा निकालने का पाप कर डाला है। आशा है महाराज मुझे क्षमा करेंगे, रुपया और फौज भेजेंगे तथा स्वयं नेदरलैण्ड आकर इन बदमाशों से बदला लेंगे। यदि शीघ्र ही सहायता न आई तो मेरी जान चली जायगी। नेदरलैण्ड भी हाथ से जाता रहेगा।' इस पत्र की बातों में लेशमात्र भी सत्य नहीं था। फिलिप ने जब यह पत्र पढ़ा तो हिंसक जन्तु की तरह वह व्याकुल हो उठा। परमा की घोषणा मान लेने का संदेश तो फिलिप को नेदरलैण्ड भेज ही देना पड़ा। परंतु हृदय में नेदरलैण्ड की सारी प्रजा को घोर दण्ड देने का संकल्प उसने कर लिया। इस संकल्प को पूरा करने के लिए फिलिप ने उस युग के प्रचण्ड महारथी ड्यूक आव् एलवा को नेदरलैण्ड जाने के लिए सेना सजाने की आज्ञा दी।

आरेञ्ज, एग्मोण्ट और हार्न फिलिप का नया फरमान पाकर अपने-अपने सूबों में शांति और सुव्यवस्था करने चले गये थे। एग्मोण्ट में इस समय के बाद से एक बिलकुल विलक्षण परिवर्तन हो गया। वह सदा का हृदय से कट्टर सनातनी था। लोगों के मूर्तियां तोड़ने से उसके हृदय पर बड़ी चोट पहुँची थी। क्रोध में भरा हुआ अपने सूबे में पहुँचा और सुधारकों को पकड़-पकड़कर फांसी पर लटकाने लगा। लोगों में हाहाकार मच गया सैकड़ों खानदान फ्लैण्डर्स प्रान्त छोड़-छोड़ भागने

लगे। एग्मोएट प्रारम्भ से ही कभी प्रजा का दृढ़ नेता नहीं रहा था। उच्च कुल का अभिमानी मनुष्य होने के कारण देश के शासन में विदेशियों का हस्तक्षेप उसे असह्य था। उसकी वीरता के कारण लोग उससे प्रेम करते थे। सर्व-साधारण की आशा थी कि एग्मोएट जनता का पक्ष लेकर लोगों का नेता बनेगा। फ्लैण्डर्स में साठ-साठ हज़ार मनुष्य अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हो-होकर सभाओं में आने लगे थे। यदि एग्मोएट ने इन लोगों का नेता होना स्वीकार किया होता तो एक बृहत् सेना खड़ी करके उसने फिलिप को नाकों चने चबवा दिये होते। फिलिप को बैठकर दर्जनों पत्र लिखने का अवकाश न दिया होता। परंतु लोगों का पक्ष न लेकर जब यह जनता का हृदय-वीर परमा की आज्ञा अथवा सहायता के बिना ही लोगों के सिर उड़ाने लगा तो लोग आश्चर्य-चकित रह गये। सबको बड़ी निराशा हुई। आरेञ्ज और हार्न अपने-अपने सूबों में फिलिप के नई रियायतों वाले समझौते के अनुसार चलने का प्रयत्न कर रहे थे। परन्तु स्पेन से रुपये और फौज की सहायता आ जाने से परमा का ढंग बदल गया। वह हार्न के कार्य्य में अड़चनें डालने लगी। वास्तव में फिलिप तथा परमा किसी की इच्छा रिआयतें देने की नहीं थी। रिआयतों का ढकोसला केवल इसलिए खड़ा किया गया था कि अत्याचार की नई सामग्री एकत्र करने के लिए सरकार को अवकाश मिल जाय। जैसे ही थोड़ी-सी फौज आ गई। टूर्नी नगर के लोगों के हथियार रखवा लिये गये। आरेञ्ज, एग्मोएट और हार्न को परमा बराबर पत्रों में लिखती रहती थीं कि मेरा और महाराज फिलिप का आप

लोगों पर अटल विश्वास है। जिस राजभक्ति से आप लोग कार्य्य कर रहे हैं उसके लिए बधाई है। फ़िलिप को लिखती थी कि आरेञ्ज, हार्न और एग्मोएट आपका राज्य छीन लेने का प्रयत्न कर रहे हैं। सारे सनातनधर्मियों का क़त्लआम कर डालने का निश्चय कर चुके हैं। मैं अपनी जान के डर से उन पर प्रकट रूप से अविश्वास नहीं दिखा सकती। एग्मोएट को सेनापति रखना ही पड़ता है। परन्तु उसके नीचे रहने वाले हरएक सिपाही को सरकार का शत्रु ही समझना चाहिए। एग्मोएट अपने सूबे में सनातनधर्म की वेदी पर दिन रात लोगों की भेंट चढ़ा रहा था। जनता हाहाकार कर रही थी। परंतु यह औरत एग्मोएट को सनातन धर्म का कट्टर शत्रु और सनातनियों के क़त्लआम का षड़यंत्र रचने वाला बता-बताकर फिलिप के हाथों उसकी कब्र तैयार करवा रही थी। दुर्भाग्य इसको कहते हैं। परंतु इसको किसका दुर्भाग्य कहें? एग्मोएट का? फिलिप का? परमा का? सनातन धर्म का? अथवा इतिहास का? बेचारा हार्न भी दिन-दिन मकड़ी के जाल में फँसता चला जा रहा था। हार्न समझता था कि फिलिप और परमा ने सच्चे हृदय से रियायतें दे दी हैं। इसलिए वह समझौते के अनुसार काम करने का प्रयत्न कर रहा था। परन्तु परमा हार्न के प्रत्येक कार्य्य का अर्थ फिलिप को उल्टा समझा-समझाकर उसको गड्डे में ढकेलने का प्रयत्न कर रही थी। आरेञ्ज अपनी स्थिति और सरकार की चालें अच्छी तरह समझता था। परमा तथा फिलिप के मीठे शब्द उसे भुलावे में नहीं डाल सकते थे।

आरेञ्ज शान्ति स्थापित करने का भरसक प्रयत्न करता था। नेदरलैण्ड के व्यापारिक केन्द्र एण्टवर्प में नई रियायतों को बुनियाद पर उसने शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न किया था। कुछ लोगों को उपद्रव करने के अपराध में फाँसी का हुक्म दिया गया। उसका भी उसने ज़रा विरोध नहीं किया। कई बार अपना जीवन खतरे में डाल अकेला ही तलवार देकर उपद्रवकारियों की भीड़ में घुस गया। और सब को क्षण भर में तितर-बितर कर डाला था। उसके प्रान्त में भी बखेड़े उठ रहे थे। उसका वहाँ पहुँचना बहुत ज़रूरी था। परन्तु एण्टवर्प के अधिकारियों की राय थी कि यदि शाहज़ादा आरेञ्ज चला गया तो सारे सनातनधर्मी सन्त, पण्डे और पुजारी तुरन्त मार डाले जायँगे। व्यापारी आरेञ्ज की पीठ फिरते ही जानोमाल के डर से शहर छोड़कर भाग जायँगे। शान्ति स्थापित करने के प्रयत्न में संलग्न रहने पर भी आरेञ्ज सरकार के अपने प्रति विचार अच्छी तरह जानता था। कुशाग्र-बुद्धि आरेञ्ज अपनी तीव्र दृष्टि से लोगों के हृदय के भाव फौरन ताड़ लेता था। वह अच्छी तरह जानता था कि परमा और फिलिप के मधु-माखन से सने हुए शब्दों के भीतर प्रतीकार वैर और कपट का विष भरा हुआ है। उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि विदेशी सेनाओं की सहायता से शीघ्र ही नेदरलैण्ड पर आक्रमण किया जायगा। वह समझता था कि फिलिप उसके तथा अन्य कई सरदारों के प्राण लेने का निश्चय कर चुका है। यदि आरेञ्ज के सन्देह सच्चे थे तो उसे अपनी और अपने देश की रक्षा के लिए अब इधर-उधर सहायतार्थ देखना उचित था। उसको अपना मार्ग निश्चित कर लेने का समय आ गया था।

आरेञ्ज के भाग्य में अन्ध-अत्याचार का शिकार बनना, विद्रोही होकर मारे-मारे फिरना और निर्वासन के दुःख सहना लिखा था। भविष्य को सूँघकर पहचान लेने वाले विलियम ने सोचा कि अब इस बात का निश्चय करने में देर करने का समय नहीं कि मुझे जनता का साथ देना है अथवा सरकार का। आरेञ्ज जैसे देशभक्त के लिए एक ही मार्ग था। जैसे बने वैसे अत्याचार से अपने देश की रक्षा करने का दृढ़ निश्चय उसने कर लिया। अभी तक वह बिलकुल राजभक्त रहा था। केवल प्रजा पर अनुचित अत्याचार करने के विरुद्ध था। परन्तु अब उसने जाना कि विदेशियों के राज्य में राजभक्त और देशभक्त दोनों होना असम्भव है। आज से उसके हृदय में विद्रोह का स्रोत फूटा। विदेशियों के अत्याचार से देश की रक्षा करने को यदि बग़ावत कहा जा सकता है तो आज से विलयम आरेञ्ज अवश्य बाग़ी हो गया। उसने चुपचाप एक आदमी भेजकर एग्मोण्ट को अपने सारे सन्देह बतलाये और कहलवाया—"देश की यह लड़ाई सुधारक और सनातनियों का झगड़ा नहीं है। देश वालों और विदेशियों का युद्ध है। विदेशी सिपाहियों की सहायता से नेदरलैण्ड में अपने पैर मजबूत कर चुकने पर फिलिप सुधारक और सनातनियों को अत्याचार की चक्की में एकसा ही दलेगा। अत्याचार का यह दृश्य देखने के लिए मैं तो देश में नहीं ठहरूँगा। हाँ, यदि तुम और हार्न मेरी सहायता करने का वचन दो तो पंचायतों की सहायता से देश की रक्षा करने का प्रयत्न मैं करूँ?

एग्मोण्ट के पास से कुछ उत्तर नहीं आया। परन्तु जब आरेञ्ज हालैण्ड की तरफ चल पड़ा तो रास्ते में एक जगह हार्न,

एग्मोण्ट, हूर्नस्ट्रेटन और काउण्ट लुई उससे आकर मिले। दो तीन घण्टे तक बातचीत होती रही। एलवा का अभी हाल में परमा को भेजा हुआ एक गुप्त पत्र इन लोगों के हाथ लग गया था। पत्र में ड्यूक ऑव एलवा ने परमा को लिखा था कि 'आरेञ्ज, एग्मोण्ट और हार्न से ऊपरी प्रेम का व्यवहार बनाये रक्खे। काम निकल चुकने पर महाराज फिलिप ने मौका मिलते ही पहले इन तीनों को प्राण-दण्ड का पुरस्कार देने का निश्चय कर लिया है। आप इन लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करती रहें जैसा स्पेन में मौण्टनी और बरघन के साथ किया जाता है। उन दोनों से बातें तो यहाँ हँस-हँसकर की जाती हैं परन्तु उन्हें ज़िन्दा घर लौट जाने का मौका नहीं दिया जायगा।' इस पत्र के सम्बन्ध में भी चर्चा चली। परन्तु दुर्भाग्य से किसी को विश्वास नहीं हुआ कि पत्र वास्तव में एलवा का लिखा हो सकता है। सब ने सोचा कि यह किसी जालसाज का काम है। देश की रक्षा करने की बात उठी। लुई की राय हुई कि जर्मनी से सेना की भरती करनी चाहिए। परन्तु एग्मोण्ट के सिर पर मौत खेल रही थी। उसने कहा—"फिलिप-जैसे सहृदय राजा पर सन्देह करना ठीक नहीं है। उसने कभी जनता पर अन्याय नहीं किया है। जिन लोगों को भय लगता हो वे स्वयं देश छोड़कर चले जायँ।" सरदार मिलकर किसी एक बात का निश्चय न कर सके। खा-पीकर घोड़ों पर सवार हो सब ने अपनी अपनी राह पकड़ी। आज से इन सरदारों के मार्ग भिन्न हुए। एग्मोण्ट के सर पर ऐसा राजभक्ति का भूत सवार हो गया था कि अन्त को वह उसे मृत्यु के मुँह में खींच ही ले गया।

एग्मोण्ट की सहायता के बिना स्पेन से होने वाले आक्रमण का विरोध संगठित करना स्वप्न-सा लगता था। हार्न सारे झगड़ों से उकताकर वैराग्य ले लेने का विचार करने लगा था। अकेला आरेञ्ज मैदान में रह गया था। सरदारों का संघ भी तितर-बितर हो चला था। संघ ने गुल-गपाड़ा मचाकर सरकार से कुछ रियायतें पा ली थीं। रियायतों के मिलते ही उसने समझ लिया कि हमारा काम समाप्त हो गया। जो सरदार जनता को स्वतंत्र करने चले थे वे सरकार से समझौता करके ज़रूरत के वक्त चुप हो बैठे, अपनी जागीरों में जा-जा सुधारकों को पकड़कर दण्ड देने लगे थे। क्यूलम्बर्ग की तरह कुछ ने गिरजों और मूर्तियों को तोड़ कर सनातनियों को अपमानित करना ही अपना कर्तव्य समझ लिया था। सब मुख्य ध्येय को भूल बैठे थे। आरेञ्ज को ये बातें कैसे अच्छी लग सकती थीं ? उसे एक दल का दूसरे पर अत्याचार असह्य था क्योंकि इससे देश में मनोमालिन्य, अविश्वास और फूट का विष फैलता था। संघ में कुछ सरदार ज़रूर ऐसे थे जो आगे चलकर अपने देश के लिए वीरता से लड़े। लुई ऑव् नसाऊ, मार्निक्स आव् सेण्ट, एल्डगोण्डे, और बर्नार्ड डेमेरोड इत्यादि के नाम नेदरलैण्ड क इतिहास में सुवर्णाक्षरों लिखे हुए हैं। परन्तु संघ के अधिकांश सरदार बेसब्र, उत्सुक, और जल्दबाज़ थे। विलियम आरेञ्ज के बस के बाहर थे। लुई कहता था—"फिलिप को अपनी सेना लेकर नेदरलैण्ड में आने भी दो! ज़रा रीछ, का नाच शुरू होने तो दो!" ब्रेडरोड अपने विदूषकपने से विद्रोह की आग तो भड़काता था परन्तु काम भी बिगाड़ता था। व्यर्थ लोगों को जान ख़तरे में डालता फिरता

था । आरेञ्ज ऐसी अवस्था में क्या करता ? उसकी बातें सुनने और समझने वाला ही कोई नहीं था । जो सरदार पहले बड़ी-बड़ी डींगें हाँककर कहा करते थे कि एक बड़ी फौज जर्मनी से मँगवा लेंगे, साठ हज़ार सेना देश से एकत्र कर लेंगे, आज ज़रूरत के समय कावा काटकर अलग हो गये ।

आरेञ्ज को एग्मोराट पर बड़ा भरोसा था । सब की राय थी कि एग्मोराट की वीरता पर लोग इतने मुग्ध हैं कि वह जब चाहे ६० हज़ार देश के सैनिक लेकर एक झपाटे में नेदरलैराड पर अधिकार जमा सकता है । यदि इस सुअवसर पर एग्मोराट और आरेञ्ज मिल गये होते तो शायद नेदरलैराड में बेगुनाहों के रक्त की नदियाँ न बहतीं । देश कष्ट और यातनाओं की खाड़ी को एक छलाँग में लाँघकर स्वतंत्र हो गया होता। परन्तु स्वतंत्रता एक छलाँग में नहीं मिला करती । बद्रिकाश्रम पहुँचने से पहले संकट, आपदा और यातनाओं से परिपूर्ण पथ पार करना पड़ता है।

विलियम आरेञ्ज को सरकार की सारी आन्तरिक गोष्ठियों की ख़बर रहती थी । फिलिप सारे काग़ज़ात स्वयं बक्स में बन्द करके चाबी अपनी जेब में रखकर सोता था । परन्तु रात को चाबी उसकी जेब से चुपचाप निकालकर बक्स में लग जाती थी और काग़ज़ों की नक़लें विलियम के पास नेदरलैराड पहुँच जाती थीं । चाणक्य नीति के पुजारी फिलिप के साथ आरेञ्ज ने ऐसा व्यवहार न किया होता तो उसे भी एग्मोराट और हार्न की तरह अपनी जान से हाथ धोना पड़ता । नेदरलैराड के त्राणकर्ता विलियम आरेञ्ज के उठ जाने पर नेदरलैराड अनाथ हो गया होता । नहीं तो कम से कम सदियों तक सदा

गुलामी में पड़ा होता। यदि एग्मोएट को राज-भक्ति की धुन न समाई होती, यदि हार्न ने फिलिप पर विश्वास न करके आरेञ्ज का कहा मान लिया होता तो इन वीरों को व्यर्थ अपनी जान न गँवानी पड़ती। साथियों के बिछुड़ जाने पर आरेञ्ज ने सरकारी पदों से इस्तीफ़ा दे दिया। जिस अत्याचार का वह विरोध करता था उसी अत्याचार की मशीन का पुर्जा कैसे बना रह सकता? पद त्याग करने की इच्छा तो उसने बहुत दिन पहले ही दिखलाई थी परन्तु अब सरकार से कुछ सम्बन्ध न रखने का उसने दृढ़ संकल्प कर लिया। और फिलिप की गोष्ठियों की अधिक सजगता से खबर रखने लगा। वर्ष के अन्त में देश की परिस्थिति पर अपने विचार भी छपवाकर बँटवाये।

सन् १५६६ ई० का साल नेदरलैण्ड के लोगों और उनके अभागे बाल-बच्चों के लिए शान्ति का अन्तिम वर्ष था। सरकार ने प्रारम्भ में जितनी ढील ढाल दिखाई थी, अब उतनी ही कठोर हो चली थी। सरदारों का संघ छिन्न-भिन्न हो चुका था। पहले जितना शोरगुल उठा अब उतनी ही शान्ति थी। टूर्नी नगर ने सरकार की भेजी हुई नई सेना को अपने यहाँ रखना चुपचाप स्वीकार कर लिया। कान भी नहीं हिलाये। एग्मोएट प्रत्येक नगर को सरकारी फौज रखने पर बाध्य कर रहा था। फ्लेएडर्स और आर्टोयज प्रान्तों के सारे नगरों में सरकारी फ़ौज मजे से अपने पैर जमाती चली जा रही थीं। परमा खुशी से फूल रही थी।

हेनाल्ट के सूबे में फ्रांस की सीमा पर महाराज वेलेंशियन का बसाया वेलेन्सेनीज़ नाम का एक शहर था। इसमें भागे

हुए अपराधियों को आकर पनाह लेने का अधिकार था। हर जगह के भागे हुए चोर, लुटेरे, डाकू एवं हत्यारों का इस नगर में जमघट रहा करता था। पुरानी प्रथा के अनुसार सरकार उन्हें नहीं छेड़ती थी। आजकल सनातनधर्म के विरुद्ध पाप करने वालों का वेलेन्सेनीज़ अड्डा हो रहा था। लुटेरे और क़ातिल दण्ड पाने से बच जायँ यह तो सरकार सहन कर सकती थी। परन्तु यह असह्य था कि ईश्वर का राज्य पलटने का प्रयत्न करने वाले वेलेन्सनीज़ में रहकर जान बचालें। अतः सुधारकों की खबर लेने के लिए वेलेन्सनीज़ में फौज भेजी गई। परन्तु सदियों से स्वतन्त्रता की हवा चखने वाले वहाँ के मदमाते लोगों ने अपने जन्मसिद्ध अधिकारों के अनुसार नगर में विदेशी फौज रखने से साफ़ इन्कार कर दिया। सरकार ने घोषणा कर दी कि "वेलेन्सनीज़ नगर बाग़ी हो गया है। वहाँ के लोग गिरजों में घुस-घुसकर नये मत का प्रचार करते हैं। सरकारी फौज शहर में रखने से इन्कार करते हैं।" घोषणा निकलते ही सरकारी फौज ने चारों ओर से घेरा डालकर शहर का दूसरी जगहों से सम्बन्ध काट दिया। सरकारी सेना का सरदार नोयरकार्मस्स था। सरदारों के संघ ने नागरिकों को सहायता देने का वचन दिया। आरेञ्ज ने भी नागरिकों को अपने सत्य अधिकारों के लिए लड़ने की उत्तेजना दी। ब्रेडरोड, ने जहाँ-तहाँ फिर ऊधम मचाना शुरू कर दिया था। परन्तु, नागरिकों को सारा भरोसा अपने हाथ के हथियारों और हृदय के उत्साह पर ही था। लोग बड़ी वीरता से युद्ध की तैयारी करने लगे। आसपास के महन्तों को लूटकर लड़ाई का सामान

एकत्र कर लिया गया। एक भागा हुआ नागरिक सरकार की ओर से संधि का संदेशा लेकर आया उसे तालियां पीटकर भगा दिया गया। शहर के बीच में बहने वाली शेल्ड नदी पर तोड़ी गई मूर्तियों के पत्थरों का एक पुल बांधकर घृणा से उसका नाम 'बुतों का पुल' रक्खा गया। चारों तरफ़ नगर में जोशीले व्याख्यानों की भरमार थी। लोगों की नसों में वीर रस की बिजली दौड़ रही थी। अड़ोस-पड़ोस में होने वाले उत्पातों से नागरिकों को सारे देश में आग लग जाने की आशा थी। परन्तु बेचारों की यह आशा पूरी न हुई। नगर से कुछ ही दूर लेनोय नाम के स्थान पर एक लोहार की अध्यक्षता में वेलेन्सेनीज़ के बन्धुओं की सहायता करने के इरादे से तीन हज़ार सुधारक कुल्हाड़ियाँ, गदा और तोड़ेदार बन्दूकें ले-लेकर आ डटे। इस असङ्गठित भीड़ में किसान, विद्यार्थी और फौज से निकाले हुए सिपाही सभी प्रकार के लोग सम्मिलित थे। एक ओर ये लोग थे; दूसरी ओर वाटरेलोट्स नाम के स्थान पर भी इसी प्रकार बारह सौ सुधारकों का एक झुण्ड एकत्र हो गया। आशा की जाती थी कि बाद को बहुत से लोग इकट्ठे हो जायँगे और दोनों झुण्ड वेलेन्सनीज़ में मिलकर एक हो जायँगे। कुछ बेफ़िक्रे शेखी बघारते फिरते थे कि शीघ्र ही तीस हज़ार आदमी सरकारी सेना का मुकाबला करने के लिए मैदान में आने वाले हैं। नोयरकार्मस् के धीरे-धीरे काम करने के कारण नागरिकों ने उसका और उसके छः सरदारों का नाम 'सात पिनकी' रख दिया था। परन्तु १५९७ ई० के जनवरी मास में 'सात पिनकियों' ने एकाएक दो टुकड़ियों में बटकर लेनोय और वाटरेलो-

टस् में एकत्र सुधारकों के झुण्डों पर छापा मारा। नोयरकार्मेस् की सेना को एकाएक आते देख सुधारक हथियार डालकर भागे। नोयरकार्मेस् ने भागते हुए लोगों को खेतों, गिरजों और नदी में घेर कर मारा। घण्टे भर में २६ सौ आदमियों की लाशें पृथ्वी पर गिर पड़ीं। नेदरलैण्ड की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने वालों का पहली लड़ाई में ऐसा बुरा हाल हुआ। देशभक्तों के दिल बैठ गये। सरकारी पक्ष के लोग ख़ुशियां मनाने लगे। ड्यूक एअरशॉट और काउण्ट मेघम ने तो जीत की ख़ुशी में लोगों को दावतें दीं। वेलेन्सेनीज़ के लोगों ने अपनी सहायता के लिए आने वाले लोगों की इस भयंकर हार का जब हाल सुना तो उनके चेहरे भय से पीले पड़ गये। फिर भी नागरिकों ने बड़े साहस से नगर की चहारदीवारी की रक्षा करने के लिए हथियार उठाये। जिन मज़दूर और कारीगरों ने कभी रणक्षेत्र के स्वप्न में दर्शन नहीं किये थे उन्होंने वेलेन्सेनीज़ में रणधीर योद्धाओं की भांति युद्ध किया। नोयरकार्मेस् नगर की ओर बढ़ा। आस-पास के ग्रामों को उसने इस विचार से उजाड़ डाला कि नागरिकों को किसी ओर से कोई सहायता न पहुँच सके। बेचारे ग्रामवासी लूट डाले गये। जाड़े के दिनों में काँपते हुए दरिद्र बालकों के शरीरों पर से चीथड़े तक उतार लिये गये। स्त्रियां और कुवारी बच्चियां नगाड़े की चोट पर बाजार में नीलाम कर दी गईं। बीमार और घायलों को धीमी आग पर भून-भून कर सैनिकों ने मनोरंजन किया। और यह सब परमात्मा और धर्म के नाम पर हो रहा था। पीड़ित लोगों का बस इतना अपराध था कि वे रोम की प्रथा को न मानकर अपनी प्रथा के

अनुसार उपासना करते थे। उस समय जो पर्चे निकलते थे, उनमें अधिक तत्व की बात नहीं होती थी। जिस प्रकार सन् १९२१ की असहकार की आँधी में "बोल गई माई लार्ड कुकडूँ कूँ" नाम की सरकार की मज़ाक उड़ाने वाली एक निरर्थक, ऊटपटाँग तुकबन्दी की लाखों प्रतियाँ बिक गई थीं, उसी प्रकार सरकार की हँसी उड़ाने वाले ब्रेडरोड के प्रेस से निकले हुए परचों की ख़ूब खपत होती थी। इन पर्चों का जनता पर बड़ा भयंकर असर होता था। ब्रेडरोड के पीछे खुफ़िया पुलिस का कोई न कोई आदमी वेश बदले हमेशा लगा रहता था परन्तु सरकार की उसको पकड़ने की हिम्मत नहीं होती थी। सरकार का विचार था कि ब्रेडरोड ने विद्रोह की बड़ी तय्यारियाँ कर ली हैं। परमा के हृदय में दहशत बैठ गई थी। परमा ने विलियम आरेञ्ज से प्रार्थना की कि ब्रेडरोड को शान्त करने में मुझे सहायता करो। परन्तु आरेञ्ज नहीं आया। अब उसके शब्दों से सरकार के प्रति घृणा टपकने लगी थी। जो कुछ किया जा सकता था उसने एण्टवर्प में शान्ति स्थापित करने के लिए किया था। वहाँ से अवकाश मिलते ही आरेञ्ज, हालैण्ड, जेलैण्ड और यूट्रेक्ट को शान्त करने चला गया था। एण्टवर्प की तरह उन प्रान्तों के नगरों में भी उसने नई रियायतों के अनुसार जनता से समझौता कर लिया था। सुधारकों को इसके अतिरिक्त कुछ नहीं मिला था कि जिन स्थानों पर वे उपासना करते थे—उन स्थानों पर उपासना करें। सनातनियों ने कुछ खोया नहीं था। उनकी जागीरें और मठ ज्यों के त्यों बने थे। परमा ज़रूरत पड़ने पर शान्ति स्थापित करने में

आरेञ्ज की सहायता तो हमेशा लेती थी परन्तु नोयाकार्मस् की विजय से सरकार का दिल बढ़ गया था। आरेञ्ज के पीठ फेरते ही नगरों में किये हुए उसके समझौते को परमा ने कुछ सप्ताह में ही उलट डाला। हुक्म निकाल दिया गया कि किसी शहर के भीतर कोई सुधारक उपासना नहीं कर सकता। सरकार के एक अन्य नये कृत्य के कारण भी आरेञ्ज को खुल्लमखुल्ला विरोध करने पर उतारू हो जाना पड़ा। सरकार की तरफ़ से एक प्रतिज्ञा-पत्र आया था जिस पर सब अधिकारियों को हस्ताक्षर करना आवश्यक थे। प्रतिज्ञा यह लेनी थी कि सरकार की जो आज्ञा होगी उसका अधिकारी पालन करेंगे। सरदार मेन्सफील्ड ने बड़े उत्साह से प्रतिज्ञा ले ली। एअरशॉट, मेघम, बेरलामोएट और थोड़ी हिचकिचाहट के बाद एग्मोएट ने भी प्रतिज्ञा ले ली। परन्तु आरेञ्ज ने प्रतिज्ञा लेने से साफ़ इन्कार कर दिया। उसने कहा कि मैं ऐसी अन्धी प्रतिज्ञा कभी नहीं ले सकता। मैं वह आज्ञा कदापि नहीं मानूँगा जो मेरी समझ में राजा की मर्यादा के विरुद्ध, जनता के लिए अहितकर और मेरे लिए अपमानजनक होगी। आरेञ्ज को सारे पदों और अधिकारों को तिलांजलि दे देनी पड़ी परन्तु उसने यह सहर्ष स्वीकार कर लिया। डचेज़ ने उसका इस्तीफ़ा स्वीकार नहीं किया। वह जानती थी कि आरेञ्ज की सहायता के बिना देश में शान्ति स्थापित करना असम्भव है। वह उसका इस्तीफ़ा वापिस ले लेने के लिए समझाने लगी—"तुमको तो ऐसा काम करना चाहिए जिससे ब्रेडरोड उपद्रव करना बन्द कर दे। परन्तु तुमने तो उल्टे उसे,—मैंने सुना है, हथियार भेजे हैं।" शाहज़ादे ने घृणा से

उत्तर दिया—"अच्छा ! अब तो ज़रा-ज़रा सी बातों की ख़बर रक्खी जाती है। बहुत दिन हुए मैंने ब्रेडरोड को तीन बन्दूकें देने का वादा किया था। ये बन्दूकें मैंने भेजी थीं। भगवान की कृपा से हमें इस देश में कम से कम अपने मित्रों को, जो चाहे भेंट देने का अधिकार रहा है। ब्रेडरोड आक्रमण के डर से अपनी रक्षा की व्यवस्था कर रहा है। यह कौन बुरा काम है ? अपनी रक्षा का प्रबन्ध करने का उसे अधिकार है।" ब्रेडरोड जैसे फक्कड़ की मित्र कहकर उसका बचाव करना आरेञ्ज के लिए नई बात थी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आरेञ्ज सरकार से अब बिलकुल निराश हो चुका था। ब्रेडरोड फक्कड़ सही परन्तु अत्याचार का विरोध तो करता था। आरेञ्ज ने सोचा कि जब सरकार का मार्ग मैं नहीं रोक सकता तो ब्रेडरोड के मार्ग में ही मैं क्यों आऊँ ?

फ़रवरी के प्रारम्भ में ब्रेडरोड, ह्यूग्सट्रेटन और हार्न इत्यादि आरेञ्ज से मिलने ब्रेडा आये। वहाँ ब्रेडरोड ने एक नया आन्दोलन खड़ा करने के सम्बन्ध में आरेञ्ज से सलाह मांगी। आरेञ्ज ने उसका कुछ उत्साह नहीं बढ़ाया। परन्तु ब्रेडरोड निराश नहीं हुआ। उसने अकेले ही जाकर परमा के पास एक दूसरा प्रार्थना पत्र भेजा कि, 'सुधारकों को नगरों में प्रचार करने का अधिकार है। अपनी अगस्त की घोषणा के अनुसार आपको उस अधिकार में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। परमा ने उत्तर भेजा "जाओ, चुपचाप जाकर अपने सूबे के प्रबन्ध में लगो। सरकारी काम में हस्तक्षेप करते इधर-उधर मत घूमो। वर्ना फिर जैसा मुझे सूझेगा तुम्हें समझूँगी।" इस उत्तर

के बाद ब्रेडरोड एण्टवर्प में जाकर चुपचाप फौज की भर्ती करने लगा। उसने समझ लिया कि अब स्पेन से आक्रमण हुए बिना न रहेगा। उसने सोचा कि शीघ्र ही तैयारी करके वालचरेन के टापू पर कब्जा कर लेना चाहिए। स्पेन के आक्रमण से बचाव करने का एक यही मार्ग था। आरेञ्ज के चले जाने पर सरकार की ओर से एण्टवर्प का शासन ह्यूग्सट्रेटन के हाथ में सौंप दिया गया था। ह्यूग्सट्रेटन स्वयं धार्मिक स्वतंत्रता का पक्षपाती और आरेञ्ज का बड़ा मित्र था। परन्तु विद्रोहियों को खूब कुचलता फिरता था। आरेञ्ज की तरह सौम्य स्वभाव का नहीं था। कई विद्रोहियों को तो पकड़कर रात ही रात उसने बिना मुक़द्दमा चलाये फाँसी पर लटका दिया था। अब आरेञ्ज भी लौटकर एण्टवर्प में आ गया था। लेकिन अब वह कोई सरकारी पदाधिकारी नहीं था। एण्टवर्प उसकी मौरूसी जागीर थी। इसलिए वह जागीरदार की हैसियत से प्रबन्ध देखने आया था। उसने ब्रेडरोड को फौज भरती करने से नहीं रोका। मगर जब परमा की तरफ से बार-बार पैगाम आने लगे तो उसने ब्रेडरोड के आदमियों को शहर छोड़कर चले जाने का हुक्म दिया। अपनी जागीर के सारे नगरों को भी उसने आज्ञा भेज दी कि बिना मेरे हुक्म के सरकारी फौजों को शहरों में न दाखिल होने दिया जाय।

इसी बीच ब्रसेल्स में एक नया बखेड़ा खड़ा हो गया। वीर मार्निक्स एल्डगोण्डे का छोटा भाई मार्निक्स थोलूज भी बड़ा जोशीला था। वह अपना कालेज छोड़कर चला आया था। और असुन्तुष्ट लोगों की एक छोटी-सी सेना बनाकर ब्रसेल्स के निकट इधर-उधर घूम रहा था। एक दिन यह टोली नावों में बैठकर एण्टवर्प

से एक मील दूर शेल्ड नदी के किनारे आस्ट्रेवैल नाम के एक ग्राम में आ डटी। यहाँ ये लोग खाइयाँ खोदकर युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। चारों तरफ़ से आदमी भी आ-आकर उनमें शामिल होने लगे। परमा ने सरदार डेवी वीयर के साथ आठ सौ चुने हुए लड़ैतों की एक सेना इन लोगों का सामना करने के लिए भेजी। मार्निक्स के लोग एकाएक इस सेना को आते देख घबराकर भाग उठे। डेवीवीयर ने युद्ध क्या किया, भागते हुए आदमियों का आखेट किया। ज़रा देर में सैकड़ों की लाशें मैदान में लोटने लगीं। सैकड़ों ने शेल्ड में कूदकर जान गँवाई। सात-आठ सौ भागकर एक खलियान में जा छुपे। डेवी वीयर ने खलियान में आग लगाकर सब को भीतर ही भून डाला।

मार्निक्स के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गये। प्रातःकाल से केवल १० बजे तक यह युद्ध चला था, उसी में सब कर्म हो गये।

एण्टवर्प में लगभग ४० हजार सुधारकों के साथी थे। शहर की दीवारों पर चढ़े हुए हज़ारों आदमी अपने भाइयों के इस भीषण रक्तपात को आँखों से देख रहे थे। मार्निक्स की स्त्री शहर की गलियों में चिल्लाती फिरती थी—"चलो, चलो, अपने भाइयों की जान बचाओ।" लोगों में अशान्ति भड़क उठी। दस बजे के क़रीब लगभग दस हज़ार आदमी तीर-कमान, कुल्हाड़े, फरसे और हथौड़े ले-लेकर लाल दरवाज़े पर इकट्ठे हो गये और बाहर मैदान की तरफ़ जाने का प्रयत्न करने लगे। शाहज़ादा आरेञ्ज को फिलिप का ताज बचाने की अब तनिक भी चिन्ता नहीं थी। ताज की रक्षा का भार तो अब उन किराये के टट्टुओं पर था जो दिन-रात प्रजा का रक्त बहा रहे थे। परन्तु हाँ, नगर की जनता

की रक्षा का भार आरेञ्ज ने अपने ऊपर लिया था। आरेञ्ज घोड़े पर सवार होकर अकेला ही लाल दरवाजे पहुँचा और १०हज़ार क्रोध से उबलती हुई प्रजा के सम्मुख जा खड़ा हुआ। लोग उसे गालियाँ सुनाने लगे। 'यह आया पोप का गुलाम! परमात्मा का दुश्मन!' एक आदमी ने कमान पर तीर चढ़ाकर आरेञ्ज की छाती पर निशाना लगाते हुए कहा कि 'बदमाश तेरे ही कारण आज हमारे भाइयों की उस मैदान में जानें गई हैं। ले तू भी अब मृत्यु का मजा चख!'। परन्तु तीर छूटने के पहले ही भीड़ में से किसी ने उसकी कमान छीन ली। विलियम सब की गालियां चुपचाप सुनता रहा। अपनी जान को ज़रा परवाह न करके वहीं खड़ा-खडा लोगों को समझाने लगा,—'भाई! वह सब तो उस मैदान में खप चुके हैं। तुम्हें अब वहाँ जाकर अपनी भी जान दे देने से क्या फायदा होगा? ब्रूसट्रेटन भी आ पहुँचा था। बहुत से आदमी विलिअम का कहना मानकर लौट गये। परन्तु पाँच सौ मनुष्यों ने कहना न माना। दरवाज़े से निकलकर मैदान में पहुँच ही गये। उन्हें अपनी ओर आते देख और शहर का कोलाहल सुनकर डेवीवीयर ने समझा कि शायद शहर की ओर से हम लोगों पर आक्रमण होने वाला है। उसने अपने आठ सौ योद्धाओं को तुरन्त एकत्र करके रणक्षेत्र में पकड़े हुए ३०० क़ैदियों को क्षण भर में कत्ल कर डाला। फिर शहर की तरफ़ दौड़ा। शहर से आये हुए—पाँचसौ आदमियों ने जब डेवी वीयर की सेना को अपनी ओर आते देखा तो दौड़कर तुरन्त फिर शहर में घुस गये। डेवी वीयर ने शहर की दीवार के पास आकर झण्डे गाड़ दिये और धौंसा बजाकर नागरिकों को युद्ध की

चुनौती देने लगा, परन्तु शहर से निकलकर उससे किसी ने युद्ध नहीं किया डेवी बीयर लौट गया।

शहर के भीतर तूफ़ान बढ़ने लगा था। १५ हज़ार कालविनिस्ट नगर के राजपथ मीयर पर आ डटे थे। बोटें और गाड़ियाँ उलटकर चारों ओर एक परकोटा बना लिया गया था। मेगज़ीन तोड़कर हथियार निकाल लिये गये थे। जेलखाने के फाटक गिराकर क़ैदियों को मुक्त कर दिया गया था। क़ैदी भी हथियार ले-लेकर लोगों में आ मिले थे। भीड़ केवल कालविनिस्टों की ही नहीं रही थी। चोर, लुटेरे और कातिलों की मिलकर एक बड़ी सेना तैयार हो गई थी। सब अमीर सनातनियों को लूट लेने और गिरजों को तोड़कर नष्ट कर डालने की धमकियाँ दी जाने लगीं। चारों ओर से भीत स्त्री-बच्चों की हृदय-विदारक आवाज़ आती थी। तीन दिन और रात यह भीड़ परकोटे के भीतर बन्दूकें भरे और हथियार लिए पड़ी रहीं। अपने प्राण हथेली पर रखकर विलियम ने किसी प्रकार लोगों को यह विश्वास दिलाकर बड़ी कठिनता से शान्त किया कि 'सुधारकों को अपने स्थानों में उपासना करने का अधिकार है। सरकारी सेना एण्टवर्प में कभी नहीं घुसेगी।' परन्तु परमा ने आरेञ्ज का यह समझौता स्वीकार नहीं किया। वह आरेञ्ज-जैसे शान्तिप्रिय मनुष्य के इन प्रयत्नों का अर्थ ही नहीं समझ सकती थी। उसके चारों ओर तो एरम्बर्ग, मेघम, नोयरकार्मेस और डेवी बीयर जैसे मनुष्य रहते थे जो रात-दिन उसे उलटी-सीधी समझाकर सरकार को युद्ध के पथ पर लेजाने का प्रयत्न कर रहे थे। इन सरदारों का भला युद्ध में ही था। उन्हें शान्ति क्यों प्रिय लगती? वे तो देश

को अशान्ति का फायदा उठाकर अपनी जेब भरना चाहते थे। डेबी वीयर ने डचेज़ को लिखा था, कि 'मैंने मार्निक्स को पराजित किया है, उसको और उसके भाई को सारी जागीर मुझे मिलनी चाहिए।' मेघम और एरम्बर्ग अपनी फौजें लिये इधर-उधर लूटमार मचाते फिरते थे।

(१०)

अत्याचार की पराकाष्ठा

वेलेन्सनीज़ का भाग्य भी बाहर की अन्य घटनाओं पर निर्भर था। मार्निक्स थौल्ज़ की पराजय और ब्रेडरोड के सरकार का ध्यान बटाने के सब प्रयत्न असफल हो जाने पर सरकार की तरफ से एग्मोएट और एयरशॉट की अध्यक्षता में वेलेन्सनीज़ का सर नीचा करने के लिए एक सेना भेजी गई। सरकार की ओर से नागरिकों से अन्तिम बार कहा गया कि नगर के दरवाजे खोलकर सरकारी सेना को अन्दर रख लेने और सनातन रोमन धर्म के अतिरिक्त और किसी धर्म पर न चलने का वादा करो तो सरकार तुम्हारे पिछले सब अपराध क्षमा कर देने को तैयार है। नागरिकों के यह बात स्वीकार न करने पर एग्मोएट शहर पर गोलाबारी करके सब नागरिकों को उड़ा देने का हुक्म देकर ब्रसेल्स लौट गया। वहां पहुँचकर उसने परमा को सब हाल सुनाया और फिलिप को एक लम्बा-चौड़ा राजभक्ति-पूर्ण पत्र लिखा कि वेलेन्सनीज़ के सब बदमाशों को मैंने तोप से उड़ा देने का हुक्म दे दिया है। इधर नोयरकार्मस ने जैसे ही शहर पर गोलाबारी शुरू की पहले ही दिन इतने समय तक बहादुरी से दुःख सहन करने वाले नागरिकों ने घबराकर हारमान ली। केवल यह शर्त ठहरी की शहरवालों की जान न ली जाय। लेकिन जब नोयरकार्मस की फौजें एक बार शहर के अन्दर घुस

गई तो फिर कौन इस शर्त को मानता है ? क़त्ले आम तो नहीं हुआ लेकिन अमीरों की खूब खबर ली गई । एक लेखक के अनुसार दो वर्ष तक बराबर प्रत्येक सप्ताह आठ-दस आठ-दस को फाँसियां होती रहीं ।

वेलेन्सनोज के घुटने टेकते ही सारे सुधारक-दल का दिल टूट गया । एक के बाद एक सब शहरों ने सरकारी फौजें रखना स्वीकार कर लिया । जितने जोश के तूफान उठे थे सब ठण्डे हो गये । उत्साहहीनता की वायु देश में चारों ओर बहने लगी । एण्टवर्प ने भी ऑरेञ्ज के पीठ फेरते ही सरकार की सब शर्तें क़बूल कर लीं । मैन्सफील्ड ग्यारह कम्पनियां लेकर एण्टवर्प में दाखिल हुआ । पीछे परमा भी वहाँ पहुँची । नागरिकों ने उनका बड़ा स्वागत किया । ऐसा मालूम होने लगा मानों देश में जरा भी विद्रोह नहीं हुआ था । लोग सुधार की बातें भूल-सी गये । इसी समय स्पेन में यह निश्चय हुआ कि ड्यूक ऑव एल्वा फौजें लेकर नेदरलैण्ड जाय । जब परमा ने यह समाचार सुना तो उसे बड़ा दुःख हुआ कि विद्रोह तो सब मैंने दबा दिया है अब एल्वा को उसका श्रेय लेने के लिए क्यों भेजा जा रहा है ? उसने लिखकर तथा आदमी भेजकर फिलिप पर अपना दुःख प्रकट भी किया । मगर फिलिप ने उसकी एक न सुनी, उलटे उसको फटकार बताई । फिलिप तो एल्वा को भेजकर नेदरलैण्ड का अच्छी तरह गला घोटने का दृढ़ निश्चय कर चुका था ।

ऑरेञ्ज का कार्य समाप्त हो चुका था । देश में शान्ति स्थापित करने, लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता दिलाने और उनकी

अत्याचार से रक्षा करने, देश की प्राचीन स्वाधीनता सुरक्षित रखने और फिलिप की सेवा करने के लिए जो कुछ वह ईमानदारी से कर सकता था सच्चे हृदय से करने का उसने पूर्ण प्रयत्न किया था। वह स्पेन से आने वाले नये प्रतिज्ञा-पत्र पर आंखें मींचकर हस्ताक्षर करने और इस प्रकार अत्याचार का हथियार बनने को तैयार नहीं था। उसने अपने सब पद त्याग दिये थे। परन्तु फिलिप और परमा उसका त्यागपत्र मंजूर नहीं करते थे। एग्मोएट इत्यादि की तरह वे दोनों ऑरेञ्ज से भी अपने अत्याचार में सहायता लेना चाहते थे। परन्तु आरेञ्ज उनके जाल में नहीं फँसता था। वह बार-बार लिखता था कि कृपया मेरा त्याग-पत्र स्वीकार कर लीजिए। परमा ने अपने मन्त्री बरटी को ऑरेञ्ज को समझाने भेजा। बरटी ने जाकर बड़ी होशयारी से नमक-मिर्च मिली भाषा में ऑरेञ्ज को त्याग-पत्र वापिस कर लेने के औचित्य पर व्याख्यान सुनाना शुरू किया। कुछ देर तो ऑरेञ्ज सुनता रहा। फिर उससे न रहा गया। वह बोला—"आपका क्या मतलब है? क्या मैं नई प्रतिज्ञा लेकर यह बात स्वीकार कर लूँ कि मैंने पिछली प्रतिज्ञाओं का पालन नहीं किया है। क्या मैं यह प्रतिज्ञा ले लूँ कि जब सरकार हुक्म देगी तो जनता के प्रति की हुई अपनी पिछली प्रतिज्ञायें मैं तोड़ डालूँगा? क्या मैं खूनी कानूनों को, जिनको मैं हृदय से घृणा करता हूँ, मानने की प्रतिज्ञा ले लूँ? क्या मैं जल्लाद बन भिन्न मत के ईसाई बन्धुओं का खून बहाने की प्रतिज्ञा ले लूँ? क्या मैं एक ऐसी प्रतिज्ञा ले लूँ जिसके कारण मुझे अपनी स्त्री तक के भी प्राण केवल इसलिए ले लेने पड़ें कि वह सुधारक पन्थ की है? क्या मैं ऐसी प्रतिज्ञा

ले लूँ जिसके अनुसार मुझे फिलिप के प्रतिनिधि को अपना सरताज मान लेना पड़े चाहे वह मेरी शान के खिलाफ ही हो ? क्या विलियम ऑरेञ्ज ऐलवा से आदेश लेगा ?" आखिरी वाक्य बहुत घृणा से बोलकर वह चुप हो गया। बेचारा बरटी अपनी सब वक्तृता और सट्टी-पट्टी भूल गया। उठकर चलने लगा तो बोला कम से कम एयरशॉट, मैन्सफील्ड और एग्मोएट से मिलने में तो आपको कुछ आपत्ति न होगी ?

एएटवर्प और ब्रसेल्स के बीच एग्मोएट और ऑरेञ्ज की अन्तिम भेंट हुई। मैन्सफील्ड भी साथ था। एअरशॉट नहीं आ सका था। दोनों सरदार ऑरेञ्ज को समझाने का प्रयत्न करने लगे। परन्तु ऑरेञ्ज ने कहा कि मैं तो सारे पदों से त्याग-पत्र दे चुका हूँ। अब जर्मनी जाने की तैयारी है। ऑरेञ्ज ने अन्तिम बार एग्मोएट को समझाने की चेष्टा की जिससे उसका प्यारा मित्र आने वाली आपत्ति से बचने के लिए देश छोड़कर चला जाय। उसने कहा—"हाय एग्मोएट ! जिस राजा के अनुग्रह के तुम इतने गीत गाते हो वही तुम्हें नष्ट करने का निश्चय कर चुका है। भगवान करे मेरा विचार झूठा निकले मगर मुझे तो साफ दीखता है कि स्पेनवाले तुम्हें पुल बनाकर तुम पर से पार उतरेंगे और फिर काम निकल जाने पर तुम्हीं को नष्ट कर डालेंगे।" ये शब्द कहकर ऑरेञ्ज एग्मोएट को छाती से चिपटाकर इस भांति रोने लगा मानो यह उसकी अन्तिम भेंट हो। एग्मोण्ट की आंखों से आँसू बहने लगे। फिर भी एग्मोएट आने वाली आपत्ति न देख सका और उसे फिलिप में विश्वास बना रहा। अगर एग्मोएट ने ऑरेञ्ज की बात मान ली होती तो उसे आगे

चलकर बुरी तरह प्राण न गंवाने पड़ते। यदि उसे मरना ही पड़ा होता तो देश के लिए लड़ते हुए रणक्षेत्र में उसने वीर-गति पाई होती। यदि एग्मोराट ने अपनी तलवार अत्याचारी राजा के पक्ष में न उठाकर देश और जनता के लिए ऊंची की होती तो वह लोगों के हृदय का अमर वीर बनकर नेदरलैण्ड के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में ख्याति पाता। ऑरेञ्ज ने कुछ दिन बाद फिलिप को फिर एक पत्र लिखा—"मैंने त्यागपत्र भेज ही दिया है। अब मैं देश छोड़कर जर्मनी जाता हूँ।" नेदरलैण्ड की सीमा छोड़ने से पहले उसने एग्मोराट और हार्न को एक-एक पत्र लिख कर उनसे फिर विदा मांगी। हार्न को उसने लिखा कि "देश के विरुद्ध और मेरी आत्मा के विरुद्ध होने वाले आये दिन के अत्याचार अब मुझसे अधिक नहीं देखे जा सकते। सरकार देश के ऊपर काठी रख-रखकर देश को जीन और लगाम पहनने के लिए तैयार कर रही है। मेरी पीठ इतना भार सहन करने में असमर्थ है; मैं जाता हूँ। निर्वासन में जो यातनायें आयेंगी, सह लूँगा परन्तु जिनको हम सदा से दोषी समझते आये हैं उन के अत्याचार की मशीन का पुर्जा नहीं बनूंगा।"

एग्मोराट को उसने याद दिलाया कि "तुम बार-बार मुझे लिखते हो कि मैं देश छोड़कर न जाऊँ। मैं तो बहुत दिन पहले ही यह निश्चय कर चुका था। मित्रों से कह भी चुका था। मैं नई प्रतिज्ञा लेने को बिलकुल तैयार नहीं हूँ। फिर मैं अकेला बिना प्रतिज्ञा लिये विद्रोही बनकर देश में रहना नहीं चाहता। क्योंकि सब की नजरें मेरी ही तरफ पड़ती हैं। जो कुछ आपत्ति

आयेगी मैं भुगत लूंगा परन्तु मातृभूमि की स्वाधीनता और अपनी आत्मा का हनन करके मैं दूसरों को प्रसन्न करने को तैयार नहीं हूँ। एग्मोण्ट ! मुझे आशा है कि अब तुम सब कारण अच्छी तरह समझकर मेरा जाना अनुचित न समझोगे, शेष सब परमात्मा के हाथ है। जैसी उसकी मर्जी होगी, करेगा। एग्मोण्ट ! विश्वास रखना तुम्हारा मुझ-सा हितैषी दूसरा मित्र नहीं। मेरे हृदय में तुम्हारे लिए अगाध प्रेम है; तुम भी सदा की भांति अपने हृदय में मेरे लिए जगह बनाये रखना।"

१३ अप्रेल को यह पत्र लिखकर २२ को ऑरेञ्ज जर्मनी में अपने पूर्वजों के निवासस्थान डिलनबर्ग चला गया। एग्मोण्ट पर जब ऑरेञ्ज के मिलने पर ही कुछ असर नहीं हुआ था तो इस पत्र का क्या असर होता ? उसके सर पर तो मृत्यु नाच रही थी। वह सोचता था कि नोयरकार्मस मेरे कामों की प्रशंसा करता है; उचेज प्रशंसा करती है; फिलिप का अभी हाल में पत्र आया है कि "भाई एग्मोण्ट ! तुम्हारे कार्य्यों से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। प्रतिज्ञा लेने की तुम्हारे लिए जरूरत नहीं थी। परन्तु तुमने प्रतिज्ञा लेकर बड़ी बुद्धिमत्ता दिखाई है क्योंकि यह दूसरों के लिए अच्छा आदर्श होगा।" मक्कारी की हद थी। यह पत्र फिलिप ने उन्हीं हाथों से लिखा था जिनसे वह अभी कुछ ही दिन पहले एग्मोण्ट के मृत्यु-दण्ड का हुक्म लिखकर एल्वा को सौंप चुका था और जिसे एल्वा अपने साथ लेकर नेदरलैण्ड को चल भी पड़ा था। हार्न अपनी एकान्त गुफा में ही चुपचाप सुस्त पड़ा-पड़ा स्पेन से आने वाले मनुष्यों का आखेट खेलने वाले शिकारियों की राह देखने लगा। ऑरेञ्ज जैसे ही जर्मनी

पहुँचा उसे अपने स्पेन के गुप्तचर, फिलिप के निजी मन्त्री का एक पत्र मिला कि मैंने फिलिप के एलवा को लिखे हुए पत्र पढ़े हैं। उनमें एलवा को सलाह दी गई है कि जितना शीघ्र हो ऑरेञ्ज को पकड़ लेना और २४ घण्टे से अधिक उसके मुकदमे में मत लगाना।

ब्रेडरोड ने मार्निक्स थोल्डज की टोली को तैयार करके भेजा था। जब वह नष्ट हो गई तब वह वियान और एम्सटर्डम में ही रहने लगा। वह अधिकारियों, सनातनियों और सुधारक पन्थ के समझदार लोगों—सबको असन्तुष्ट करता फिरता था। शैतानियाँ बहुत करता परन्तु लोगों को उससे कुछ आशा नहीं बंधती थी। गंभीर आदमी उसके साथ नहीं रहते थे। जागीरें उड़ा चुकने वाले सरदार, दिवालिये व्यापारी और सब प्रकार के अपराध करके भागे हुए निकम्मे लोगों का गुट्ट उसके चारों ओर जमा रहता था। भिखारियों की प्रचण्ड जयघोष के साथ खूब शराब उड़ा करती थी। परमा ने उसको शहर से निकालने के लिए अपने मंत्री को यह आदेश देकर भेजा कि यदि वह न माने तो सरदार मैन्सफील्ड को खबर कर देना, डण्डे के जोर से उसे वहां से निकाल देगा। मन्त्री को ब्रेडरोड इतना अच्छी तरह पहचानता था जितना अपने बाप को। परन्तु बेचारा मंत्री परमा के पत्र में डण्डे का जिक्र होने से पत्र ब्रेडरोड को मांगने पर न दिखा सका। ब्रेडरोड़ ने उसे फटकारकर कहा—'तुम कौन हो? मैं तुम्हें नहीं पहचानता। क्यों झूठ बकते हो कि तुम्हारे पास परमा का हुक्म है फिर ब्रेडरोड़ ने परमा को भी खूब गालियाँ सुनाईं। मंत्री [illegible]ो कैद करके दो-तीन दिन तक हवालात में

रक्खा। यह बात उस समय की है जब ऑरेञ्ज एण्टवर्प में विद्रोह के तूफान को शान्त करनेका प्रयत्न कर रहा था। पीछे से जब सारा देश घुटने टेकने लगा तब ब्रेडरोड ने भी एग्मोण्ट को लिखा कि 'मेरा सरकार से समझौता करवादो। मैं सब शर्तें मानने को तैयार हूँ।' परन्तु परमा की तरफ से कुछ आशाजनक उत्तर न मिलने से ब्रेडरोड एक रात को चुप-चाप देश छोड़कर जर्मनी चला गया। वहां हार्डनबर्ग किले में उत्साह-हीन होकर पड़ा पड़ा शराब पीता था और क्रोध करके कहता था कि 'गरीब सिपाही की तरह हाथ में तलवार लिये मैं देश के लिए लड़ता-लड़ता लुई के चरणों में मर जाऊँगा।' परन्तु एक साल में ही अपनी जीवन-लीला समाप्त करके ब्रेडरोड चल बसा। उसके देश से चले जाने पर उसके सब फक्कड़ साथी भी इधर-उधर बिखर गये थे। सरदारों का संघ टूट ही गया था। जिन सरदारों को और लोग आशा से आखें उठाये देख रहे थे उनमें से कुछ तो सरकार से जा मिले थे, कुछ देश छोड़कर चले गये थे और कुछ जेलों में पड़े सड़ रहे थे। बरघन और मौण्टनी स्पेन जाकर लौटे ही नहीं थे। बरघन तो सौभाग्य से मर चुका था। परन्तु बेचारा मौण्टनी अपनी नव-विवाहिता स्त्री और उस बच्चे के लिए, जिस अभागे के भाग्य में अपने बाप का मुख देखना नहीं लिखा था,—स्पेन में पड़ा-पड़ा तड़पता था परन्तु उसे घर लौटने की आज्ञा नहीं मिलती थी।

ऑरेञ्ज के देश से चलते ही नेदरलैण्ड पर घटायें घिर आईं। देश अनाथ हो गया था। लोग भय से कांपते थे। वे सब मनुष्य जिनका पिछले विद्रोहों में कुछ भी हाथ रहा था, अथवा जिनपर

अधिकारी सन्देह करते थे देश छोड़-छोड़कर भागने लगे थे। सेना छोड़कर भागने वाले सिपाहियों को पकड़-पकड़कर उनके चीथड़े उड़वा दिये गये थे अथवा खदेड़–खदेड़कर नदियों में कुत्तों की तरह डुबा दिये गये थे। कारीगर, कलाकार, व्यापारी देश छोड़–छोड़कर भागने लगे थे। नेदरलैण्ड फिर वैसा ऊजड़ दीखने लगा था जैसा मनुष्यों के बसने के पहले था। सुधारक-पन्थ के जो लोग भाग नहीं सके थे वे इधर–उधर छिप रहे थे। किसी शहर में नये पन्थ का कोई चिन्ह नहीं दीख पड़ता था। नये पन्थ के प्रचारक और मुख्य-मुख्य सदस्य पकड़कर फांसी पर लटका दिये गये थे। उनके अनुयायियों को लोहे की छड़ों से पीट-पीटकर मार डाला गया था। जो फांसीसे बच गये थे वे माल-असबाब जब्त करके जेलों में ठूँस दिये गये थे। अगणित आद-मियों के धर्म के लिए प्राण लिये जा चुके थे। उस समय का एक लेखक लिखता है कि 'शायद ही कोई ऐसा गाँव छूटा हो जहाँ सौ, दो सौ या तीन सौ आदमियों को प्राणदण्ड न मिला हो!' नये पन्थ के गिरजे ढा दिये गये थे। ढाये हुए गिरजों की लकड़ी से फाँसी के तख्ते तैयार किये गये थे। जिन तख्तों की छत के नीचे सुधारक लोग बैठकर अपनी रीति से भगवान का भजन करना चाहते थे उन्हीं तख्तों पर चढ़ाकर उनके प्राण लिये जाते थे। जिन्होंने मजाक में अपना नाम 'भिखारी' रखा था वे सच-मुच भिखारी बना दिये गये थे। जिन्हें अपने धर्म से अपना माल अधिक प्यारा था वे तुरन्त पक्के सनातनी बनकर मजे से रोज सुबह-शाम गिरजों में जाने लगे थे।

२४ मई को परमा ने 'खूनी कानून' की एक नई आवृत्ति

प्रकाशित कर लोगों को इस प्रकार दण्ड देने की घोषणा की—

"जिन्होंने अपने घरों में नये मत का प्रचार कराया है उनको फाँसी दी जाय। जिनके बच्चों और नौकरों ने सभाओं में भाग लिया है उनको भी फाँसी मिले। बच्चों और नौकरों को लोहे की छड़ों से पीट-पीटकर मार डाला जाय। जिन्होंने अपने सम्बन्धियों की मृत्यु पर स्वयं प्रार्थना पढ़ी है, जिन्होंने अपने नये बच्चों का सनातनी पण्डितों के अतिरिक्त किसी और से नामकरण कराया है अथवा अन्य किसी मित्र को इस काम में सहायता दी है, जो धार्मिक पुस्तकें बेचें या खरीदें उन्हें फाँसी दी जाय। जो सनातनी पण्डितों का मजाक उड़ायें, उन्हें प्राणदण्ड दिया जाय और सब की जायदाद जब्त कर ली जाय।" यह घोषणा निकलते ही लोग प्राण बचाने के लिए देश छोड़-छोड़कर भागने लगे परन्तु सरकार की तरफ से जहाज वालों को हुक्म दे दिया गया था कि जो लोगों को भागने में सहायता देगा उसे भी प्राण-दण्ड होगा। फिलिप को परमा की घोषणा से सन्तोष नहीं हुआ। उसे परमा की नरमी पर बहुत क्रोध आया और उसने परमा को तुरन्त एक पत्र लिखकर बड़ी फटकार बताई कि "ईश्वर और अपने प्यारे सनातन रोमन धर्म के विरुद्ध सारे अपराध मुझे बिलकुल असह्य हैं। तुमने ईसा के धर्म के विरुद्ध यह क्या घोषणा निकाली है? जिन लोगों को जिन्दा भूनना चाहिए उन्हें केवल फाँसी की सजा दी है। बहुत से ऐसे छिद्र भी छोड़ दिये गये हैं जिनसे लोग प्राण बचाकर भाग सकते हैं।" आने वाले करुण और भयानक नाटक की यह तो भूमिका थी। नेदरलैण्ड में

अब ऐसा नाटक आरम्भ होने वाला था जिसमें त्राहिमाम्‌ त्राहिमाम्‌ की वेदनापूर्ण चीत्कार, सत्य और असत्य के लिए मनुष्य का त्याग, वीरत्व और सहन-शक्ति के दृश्य देखकर हृदय काँप उठता है। संसार के इतिहास में बहुत कम ऐसे पृष्ठ मिलते हैं।

पशुता का नंगा नाच

अब एक ही उपाय रह गया था। और वह यह कि नेदरलैण्ड पर स्पेन की सेना लेकर चढ़ाई कर दी जाय। निश्चय तो इस बात का फिलिप बहुत दिन पहले कर चुका था परन्तु अपने स्वभाव के अनुसार बहुत धीरे-धीरे चक्कर लगाकर वह रास्ते पर आया करता था। आखिरकार फरडिनेण्ड अल्वरेज दाटोलेडो ड्यूक ऑव एल्वा को स्पेन साम्राज्य के चुने हुए दस हजार सिपाही लेकर नेदरलैण्ड जाने का हुक्म हुआ। एल्वा इस समय का यूरोप का सब से प्रख्यात सेनापति था। जब वह चार ही वर्ष का था, तभी उसका बाप एक लड़ाई में मर गया था। उसके दादा ने उसे पाला था। बचपन से ही उसे अस्त्र-शस्त्र चलाने की अच्छी शिक्षा दी गई थी। जबसे उसने होश सम्हाला था अपने बाप का बदला लेने को उसका चित्त बेचैन था। सोलह वर्ष की अवस्था में फौण्टारेबिया की लड़ाई में वह इस वीरता से लड़ा कि लोग देखकर दाँतों तले उँगली दबाने लगे थे। १५३० ई० में वह चार्ल्स की अध्यक्षता में तुर्कों से ऐसी वीरता से लड़ा था कि बादशाह वाह-वाह कर उठा था। १५३५ ई० में उसने बादशाह के साथ ट्यूनिस पर हमला किया। १५४६-४७ ई में, जब चार्ल्स का समलकाल्डियन संघ के साथ युद्ध हुआ तो, वह चार्ल्स की सारी सेना का अध्यक्ष बनाया गया। एल्वा इतनी लड़ाइयां लड़ चुका था

और इतने युद्धों का अनुभव रखता था कि उसकी बराबरी करना तो दूर रहा उस समय के यूरोप के सारे सेनापति उसके चरणों की रज लेने के योग्य भी नहीं थे। उसकी बहादुरी का यह हाल था कि एक बार उसने आस्ट्रिया से स्पेन और फिर स्पेन से आस्ट्रिया तक का कुल रास्ता १७ दिन में दौड़ते हुए घोड़े पर अपनी नव-विवाहिता स्त्री से कुछ घण्टे मुलाकात करने के लिए तै किया था। युद्ध–शास्त्र में पूर्ण पण्डित और शस्त्र–विद्या में पारंगत एल्वा अब साठ वर्ष की अवस्था प्राप्त कर चुका था। वह लम्बे क़द का था। शरीर पतला परन्तु बिल्कुल सीधा था। सूखे पोले-पोले गाल, छोटा-सा सिर और छोटी-छोटी काली आखें थीं। लम्बी सफेद दाढ़ी दो भागों में उसकी छाती पर फहराती थी। १५५४ ई० में वह फिलिप के साथ इंग्लैण्ड गया था। बाद को इटली का वायसराय बना दिया गया। परन्तु सेण्ट क्विण्टेन की लड़ाई के बाद जब एग्मोण्ट की वीरता का सूर्य एकदम ख्याति के शिखर पर चमक उठा तो एल्वा की छाती पर साँप लोटने लगे थे। फिलिप ने अपने साम्राज्य की सोने की चिड़िया नेदरलैण्ड के पर कतरने के लिए अपने युग के प्रचण्ड शिकारी एल्वा को चुना था। एल्वा को बचपन से ही धर्म के विरुद्ध चलने वाले काफिरों से बड़ी घृणा थी। उसका यह भी विश्वास था कि यदि नेदरलैण्ड के काफिरों को कड़ी-कड़ी सजायें दी जायं तो वहाँ से स्पेन की ओर सोने की गंगा बह सकती है। अपने इरादों को पूरा करने के लिए भगीरथ प्रयत्न करने का दृढ़ संकल्प करके एल्वा स्पेन से चला था। उसे अपने पुराने शत्रु एग्मोण्ट को, जिसने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाकर एल्वा की प्रतिष्ठा का महत्व

कम करने का अनजान परन्तु घोर पाप किया था, नीचा दिखाने की बहुत दिनों की लालसा पूरी करने का अवसर भी अब हाथ आ गया था।

एल्वा यूरोप के १० हजार सर्व-श्रेष्ठ सैनिकों की सेना लेकर स्पेन से चला। सब सैनिक सोनहले कवच पहने सरदार से जँचते थे। पहले-पहल 'मसकेट' बन्दूक का यूरोप में प्रयोग इन्हीं सिपाहियों ने किया था। रणक्षेत्र के अतिरिक्त इनकी बन्दूकें नौकर लेकर चलते थे। सेना की तरह ही सङ्गठित साथ में दो हजार रण्डियों का झुण्ड भी था। पूरा रावण का दल था। पहाड़ों के टेढ़े-मेढ़े तंग और कठिन मार्ग पार करती हुई सेना नेदरलैण्ड पहुँच गई। नेदरलैण्ड-वासी यदि वास्तव में विद्रोही होते, यदि एग्मोण्ट सचमुच विद्रोह करने पर उतारू होता तो किसी दर्रे के मुंह पर खड़ा होकर छोटी-सी सेना से वह एल्वा की सारी वीर सेना के टुकड़े-टुकड़े कर सकता था। एक आदमी ऐसा न बचता जो लौटकर फिलिप को कहानी सुना पाता। पर बात ऐसी न थी।

परमा एल्वा के आने से बहुत दुःखी थी। एल्वा के नेदरलैण्ड में घुसते ही लोग जा-जाकर उससे मिलने लगे। और उसका स्वागत करके उसे प्रसन्न करने का इसलिए प्रयत्न करने लगे कि वह पुराने उपद्रवों की बात भूल जाय। परन्तु एल्वा इन खुशामदियों की कुछ परवा नहीं करता था। अपने आदमियों से कहता था कि 'लोग स्वागत करें या न करें। एल्वा नेदरलैण्ड में है इस बात में जरा भी सन्देह नहीं है। अरे! मैंने लोहे के मनुष्यों से नाकें रगड़वा ली हैं। ये बेचारे मोम के पुतले क्या

हैं ?' सरकार की तरफ से बेरलमौएट और नोयरकार्मेस ने जाकर एल्वा का स्वागत किया। टिरलामोएट स्थान पर एग्मोएट भी एल्वा से मिलने पहुँचा। साथ में कुछ सुन्दर घोड़े भी भेंट के लिए लेता गया था। उसके आने की खबर सुनकर एल्वा जोर से अपने आदमियों से बोला—'यह आता है अधर्मी काफिरों का सरदार! जरा देखना।' यह बात एग्मोएट ने भी सुन ली। मिलने पर भी एल्वा ने एग्मोएट से ऐसा शुष्क और विचित्र व्यवहार किया कि एग्मोएट की तरह अन्धा और बहरा बना रहने का दृढ़ संकल्प न कर चुकने वाला कोई और आदमी होता तो उसके हृदय में तुरन्त सन्देह हो गया होता। एल्वा परमा से मिलने गया तो परमा अपनी घृणा न छिपा सकी। एग्मोएट, बेरलामोएट और एयरशॉट के सामने ही एल्वा से बड़ी कठोरता से पेश आई। उससे बैठने तक को नहीं कहा। सबने खड़े-खड़े ही आध घण्टे तक बातचीत की।

एल्वा को फिलिप ने अधिकार दिया था कि बिना डचेज की सहायता के वह जिस-जिस नगर में जितनी सेना रखना मुनासिब समझे रख सकता है। इस सम्बन्ध में एल्वा का पूरा-पूरा हुक्म मानने के लिए सब अधिकारियों के नाम फिलिप का हुक्म भी एल्वा अपने साथ ही ले आया था। अपने अधिकारों की सूचना एल्वा ने परमा के पास भेज दी और परमा के हस्ताक्षर हुक्म पर कराकर हुक्म की नकलें अधिकारियों के नाम भेज दी गईं। फिर एल्वा ने खास-खास शहरों में अपनी इच्छानुसार फौजें बांट दीं। स्पेन में ग्रेनविले और स्पिनोजा ने एक पूरा नक्शा तैयार किया था कि किस तरह 'इनकिज़िशन' का

विरोध करने वाले दल के नेताओं को मारा जाय; कैसे नेदरलैण्ड के लोगों को अच्छी तरह कुचलकर स्पेन में बैठे हुए सात-आठ विदेशी मनुष्यों का सदा के लिए दास बना दिया जाय; किस तरह ऑरेञ्ज, एग्मोण्ट, हार्न, ह्यूग्सट्रेटन इत्यादि को पकड़कर तुरन्त फांसी पर लटका दिया जाय और ऐसी होशियारी से काम किया जाय कि इन लोगों को पहले से पता न लगे और वे देश छोड़कर भाग न सकें। इसी नकशे के अनुसार कार्य्य करने का निश्चय करके एल्वा स्पेन से चला था। नगरों में फौजें बाँटना इस भयङ्कर आयोजना का श्रीगणेश था। ऑरेञ्ज तो जाल फैलने से पहले ही वायु सूँघकर चल दिया था। परन्तु ऑरेञ्ज अभागे एग्मोण्ट को नहीं समझा सका था। कैसे आश्चर्य की बात है कि एग्मोण्ट को चारों तरफ से सचेत होने की चेतावनियाँ मिलीं परन्तु वह निश्चिन्त बना बैठा रहा। पोर्च्युगीज सरदार डेविल्ली सरकारी काम पर स्पेन गया था। वहां से लौटकर जैसे ही वह ब्रसेल्स आया तुरन्त एग्मोण्ट के घर पहुँचा और एग्मोण्ट से बोला-"सरदार एग्मोण्ट, तुम तुरन्त एल्वा के आने से पहले ही देश छोड़कर चले जाओ। तुम्हारे सम्बन्ध में स्पेन में बड़ी बुरी-बुरी खबरें उड़ रही हैं," परन्तु एग्मोण्ट खिल-खिलाकर हँस पड़ा, मानो डेविल्ली ने बेसिर पैर की बात कह डाली हो। इसी डेविल्ली ने हार्न को जाल में फंसाने के लिए यह पत्र लिखा था कि फिलिप तुमसे बहुत खुश है और तुम्हें शीघ्र ही किसी बड़े पद पर नियुक्त करेगा, परन्तु एग्मोण्ट को वह रोज समझाता था कि तुम देश छोड़कर भाग जाओ। प्रतीत होता है उसका एग्मोण्ट पर सच्चा स्नेह था। लेकिन एग्मोण्ट डेविल्ली की चेता-

बनियों की कुछ परवाह नहीं करता था और डेब्रिल्ली को इच्छा के विरुद्ध एल्वा के स्पेन में घुसने पर एल्वा का स्वागत करने गया था। फिर वहाँ एग्मोएट ने एल्वा का शुष्क व्यवहार देखा और तीक्ष्ण बातें सुनीं। एल्वा के सैनिकों का अपने प्रति निरादरपूर्ण व्यवहार देखा और आपस में ये बातें करते भी सुना कि एग्मोएट सुधारक और राजद्रोही है; सरकार का अब वह इतना विश्वास-पात्र नहीं है जितना बनना चाहता था। फिर भी एग्मोएट के हृदय में कुछ सन्देह नहीं हुआ।

बाद को एल्वा और उसका लड़का डॉन फर्डिनेएड, जो एल्वा के साथ सेना में सरदार होकर आया था, एग्मोएट से खूब हिलने-मिलने लगे। रोज दावतें उड़ने लगीं। हर जगह एल्वा और एग्मोएट साथ-साथ फिरते। स्पेन और फ्रान्स से एल्वा के लिए फलों की जो पारसलें आतीं वे एग्मोएट के घर भी भेजी जातीं। डॉन फरडिनेएड का तो सचमुच एग्मोएट पर स्नेह था। उसने बचपन ही में एग्मोएट की वीरता की कहानियाँ सुनी थीं और उनसे उसे बड़ा उत्साह मिला था। मगर एल्वा जाल में फँसाने के लिए एग्मोएट पर स्नेह दिखाता था। एग्मोएट को सन्देह करने का कोई कारण नहीं दीखता था। हॉर्न को भी इसी प्रकार ऊपरी स्नेह दिखा-दिखाकर एल्वा फँसा रहा था। एग्मोएट के विश्वास से भरे हुए पत्र पढ़कर हॉर्न का विश्वास भी अटल हो रहा था।

फिर एग्मोएट को चेतावनी मिली। ८ सितम्बर की रात को स्पेन का एक उच्च अधिकारी चुपचाप उसके घर आया और उसने कहा—"आप सुबह होते-होते भाग जाइए। मैं बड़ी गम्भीरता से कहता हूँ। इसी में आप की खैर है।" दूसरे दिन डॉन फर्डि

नेएड ने एग्मोएट और हॉर्न को एक बृहत भोज दिया। भोज में नोयरकार्मस और वायकौएट भेएट इत्यादि भी आये थे। ३ बजे एल्वा का एक सन्देशा आया कि दावत खत्म होने पर मेहमान मेरे घर पधारने की कृपा करें; मुझे एक आवश्यक सलाह लेनी है। पास में बैठे हुए फर्डिनेएड ने झुककर एग्मोएट के कान में कहा—'तुम तेज से तेज घोड़ा लेकर तुरन्त यह स्थान छोड़कर भाग जाओ। बस अब तुम्हारी खैर नहीं है।' एग्मोएट यह बात सुनकर घबरा उठा। उसे एकदम विचार आया कि मैं कितनी चेतावनियाँ सुनी अनसुनी कर चुका हूँ। एग्मोएट मेज छोड़कर उठा और पास के कमरे में चला गया। नोयरकार्मस एग्मोएट के चेहरे पर विह्वलता के चिन्ह देखकर ताड़ गया कि अवश्य कुछ दाल में काला है। वह भी उठकर एग्मोएट के पीछे-पीछे कमरे में पहुँचा और एग्मोएट से पूछा—"क्या बात है?" एग्मोएट ने सारी बात कह सुनाई। नोयरकार्मस सुनकर बोला—"अरे एग्मोएट! उस यवन की बात पर विश्वास मत करना। वह तुम्हें कुएं में ढकेलने का प्रयत्न कर रहा है। एल्वा और सारा स्पेन तुम्हारे इस तरह भाग जाने का क्या अर्थ निकालेगा? क्या वे नहीं समझेंगे कि तुम अपने अपराध के डर के कारण भाग गये? क्यों व्यर्थ अपने सर विद्रोह का इल्ज़ाम लेते हो?" इस नीच की यह बात सुनकर एग्मोएट का विचार बदल गया। कहाँ तो एक विदेशी ने अपनी जानपर खेलकर एग्मोएट को भाग जाने की सलाह दी थी, कहाँ देश का ही एक मनुष्य अपने देश के एक नररत्न के प्राण लेने का प्रपंच रचता है।

एग्मोएट फिर दावत में जा बैठा। चार बजे हॉर्न नोयर-

कार्मेस इत्यादि के साथ एल्वा के घर गया। एल्वा कुछ देर इधर-उधर की बातें करता रहा और फिर एक दम तबीयत खराब हो जाने का बहाना करके अन्दर चला गया। सात बजे शाम तक सरदार लोग बैठे-बैठे आपस में बातचीत करते रहे। जब चलने का समय हुआ तो एल्वा की सेना के एक अधिकारी ने एग्मोण्ट से कहा—"कृपया आप जरा ठहर जाइए। कुछ काम है।" जब एग्मोण्ट अकेला रह गया तब एक-दो साधारण बात करके अधिकारी एकदम बोला—"अपनी तलवार रख दो।" एग्मोण्ट को पहलेही चेतावनी मिल चुकी थी। फिर भी अधिकारी की यह बात सुनकर वह चौंक पड़ा। एग्मोण्ट की समझ में कुछ नहीं आया कि क्या करूं। वह सटपटा गया। अधिकारी फिर बोला—"मुझे तुम्हें गिरफ्तार करने का हुक्म हुआ है। तलवार रख दो।" पास का एक द्वार खुला और उसमें से सिपाहियों ने आकर एग्मोण्ट को घेर लिया। अपने को चारों ओर से घिरा देखकर एग्मोण्ट ने हसरत से यह कहते हुए तलवार रख दी कि 'इस तलवार ने कभी बादशाह की सेवा की थी।' इसके बाद एग्मोण्ट को छत पर ले जाकर एक कमरे में बन्द कर दिया गया। कमरे में चारों तरफ जँगले लगा दिये गये थे। काले-काले परदे डालकर कमरा अन्धेरा बना दिया गया था। इसी कमरे में ९ से २४ सितम्बर तक १४ दिन एग्मोण्ट बन्द रहा। किसी को उससे मिलने की आज्ञा नहीं दी गई। हॉर्न को भी इसी प्रकार पकड़कर एक दूसरे कमरे में बन्द कर दिया गया था। उसके साथ भी यही व्यवहार हुआ। २२ तारीख को बहुत से सिपाहियों के साथ दोनों घेण्ट के क़िले में भेज दिये गये।

इन दोनों की गिरफ़्तारी के साथ-साथ उसी दिन एग्मोएट का मन्त्री बेकरज़ील, हॉर्न का मन्त्री, एण्टवर्प का एक अमीर और एण्टवर्प नगर का कोतवाल इत्यादि भी गिरफ्तार कर लिये गये थे। एग्मोएट और हॉर्न के घरों की तलाशियां लेकर उनके सारे काग़ज-पत्र भी कब्जे में कर लिये गये थे। जब फिलिप के पास इन गिरफ्तारियों की खबर पहुँची तो उसे बड़ा हर्ष हुआ। परन्तु ग्रेनविले और पेन्शनर टिटेलमेन को ऑरेञ्ज के न पकड़े जाने से बड़ा खेद रहा। टिटेलमेन तो बोला—"आरेञ्ज नहीं पकड़ा गया इसलिए हमारा यह हर्ष कुछ अधिक दिन नहीं रहेगा। वह जर्मनी से जरूर कुछ तूफान खड़ा करेगा।" ह्यूग्सट्रेटन सौभाग्य से बच गया। उसको भी उसी तिथि पर ब्रसेल्स बुलाया गया था परन्तु चलते समय चोट लग जाने के कारण वह वहां नहीं जा सका था। जब उसने इन गिरफ्तारियों का हाल सुना तो तुरन्त देश छोड़कर चला गया। एग्मोएट के मन्त्री को एग्मोएट के विरुद्ध राजद्रोह के प्रमाण देने के लिए जेल में शिकंजे में कसकर यातनायें दी जाने लगीं। परन्तु एग्मोएट ने षड्यन्त्र किया हो तब तो प्रमाण मिले।

अभागे बरघन और मौण्टनी जब से स्पेन गये थे लौटने ही नहीं पाते थे। एल्वा के स्पेन से कूच करते ही इन दोनों के भाग्यों पर भी मुहर लग गई थी। बरघन तो ऐसा बीमार पड़ा कि कुछ ही दिनों में चल बसा। भगवान जाने उसे निराशा का धक्का लगा अथवा जहर देकर मार डाला गया। स्पेन के उन नारकीय जेलखानों के रहस्य तो तभी खुल सकते हैं जब मुर्दे जीवित होकर स्वयं अपनी-अपनी कहानी सुनायें। बरघन ने

मरते समय फिलिप के सलाहकार प्रिन्स इबोली को—जिसे वह अपना बड़ा मित्र समझता था—बुलाकर कहा था—"जिस आदमी को अब मैं अपना राजा नहीं कह सकता उससे मेरी तरफ से कह देना कि मैं सदा राज-भक्त रहा। मुझ पर सन्देह करके जिस तरह मुझे अपमानित किया गया, जिस तरह आज मैं मर रहा हूँ उसका फैसला भगवान करेंगे। शायद मेरे मरने के बाद लोग मुझे समझेंगे। परन्तु मरने के बाद समझने से क्या फायदा?" इबोली फिलिप की सलाह से बरघन की मृत्यु-शय्या पर झूठे आँसू बहाकर क्रूर और बीभत्स नाटक का पटाक्षेप करने गया था। बरघन की आखिरी साँस निकलने से पहले ही परमा के पास संदेशा लेकर दूत रवाना कर दिया गया था और यह भी लिख दिया गया था कि बरघन की सारी जागीर पर सरकारी कब्जा कर लिया जाय और उसके नातेदारों और भतीजो को विद्रोह के सन्देह में गिरफ्तार कर लिया जाय। मौण्टनी पर भी अधिक कड़ी दृष्टि रक्खी जाने लगी थी। ऐसा प्रबन्ध कर दिया गया कि वह किसी प्रकार निकलकर न भाग जाय। मौण्टनी और उसके भाई हॉर्न दोनों की बड़ी करुण कहानी है। दोनों बेचारे एक दूसरे को खतरे से दूर समझते रहे। हॉर्न समझता था अच्छा है, मौण्टनी स्पेन में है, अत्याचार का शिकार होने से बचा रहेगा। मौण्टनी समझता था कि मेरा भाई स्पेन नहीं आया, अच्छा किया; नेदरलैण्ड में रहने से बच जायगा।

जिस पत्र में एल्वा ने फिलिप को हॉर्न और एग्मोण्ट इत्यादि की गिरफ्तारियों की ख़बर दी थी उसी में उसने यह भी लिखा था कि मैं एक नई कचहरी खड़ी करने वाला हूँ जो नेदरलैण्ड

में होने वाले उपद्रवों में भाग लेने वालों का न्याय करेगी। इस कचहरी का नाम. एल्वा ने 'आपत्तियों की कचहरी' रक्खा था परन्तु देश के इतिहास में यह कचहरी 'खूनी कचहरी' के नाम से प्रख्यात है। इस कचहरी के बनने की न तो फिलिप ने ही फरमान निकालकर कोई आज्ञा दी थी, न एल्वा ने ही कचहरी बनाने का कोई बाकायदा फरमान निकाला था। यह एल्वा की घरेलू पंचायत थी। एल्वा स्वयं कचहरी का प्रमुख बन बैठा था। बेरलामोएट, नोयरकार्मेस इत्यादि कचहरी के सदस्य तो बहुत थे परन्तु वोट देने का अधिकार केवल दो स्पेन-वासियों को ही था। ये दो स्पेन-निवासी केवल अपनी क्रूरता के कारण कचहरी के सदस्य बनाये गये थे। एक तो इनमें से स्वभाव का पूरा बधिक था। छुटपन में उसने अपने आश्रय में रहने वाले एक अनाथ बच्चे का गला घोंट डाला था। बड़ा होने पर रक्तपात के अतिरिक्त उसे कुछ और सुहाता ही नहीं था। उसकी राय में मनुष्य का खून बहाना सबसे महान कार्य्य था। एल्वा का खूनी कार्य्य वह ऐसी लगन से करता था कि देखकर शैतान भी शरमा जाय। लोगों का दिन-रात रक्त बहता था। असहायों की चीत्कार से आकाश फटा जाता था। परन्तु यह राक्षस बैठा-बैठा ठट्ठे लगाया करता था। इन दोनों स्पेन वालों की राय मानने अथवा न मानने का अधिकार भी एल्वा ने अपने हाथ में रक्खा था। कचहरी के एक देशी सदस्य पर भी एल्वा बहुत प्रसन्न था। उन सज्जन का यह हाल था कि दिन भर बैठे-बैठे कचहरी में ऊँघा करते थे। जब अपराधी को दण्ड देने के विषय में सम्मति ली जाती थी तो आँख मींचते हुए बोल उठते थे—'फाँसी, फाँसी पर ले

जाओ ।' इन सदस्य महाशय का नाम हेसल्स था । यह फ्लेमिंग्स के निवासी थे । एक दिन इन की स्त्री ने इनकी इस क्रूरता से घबरा-कर कहा कि आप सोते जागते हमेशा फाँसी का ही विचार करते रहते हैं । कहीं एक दिन यह आपके ही गले न आ पड़े । स्त्री का भय सच्चा हुआ । खूनी कचहरी बड़ी विचित्र अदालत थी । देश के सारे कानूनों के विरुद्ध प्राचीनतम अधिकारों को कुचलकर एल्वा ने अपनी स्वेच्छा से बना ली थी । इस कचहरी में ही कानून बनते थे; कचहरी ही कानूनों का अर्थ करती थी और कानूनों के अनुसार वही दण्ड भी देती थी । एल्वा ने इस कचहरी की आवश्यकता बताते हुए फिलिप को लिखा था कि इसकी आवश्यकता इसलिए है कि साधारण कचहरियाँ तो केवल उन्हीं अपराधों के लिए दण्ड दे सकती हैं जो साबित हो जायँ । परन्तु भला कहीं साम्राज्य ऐसी साधारण कचहरियों के बल पर चल सकते हैं ? यही बात जनरल डायर ने कही थी । संसारभर में साम्राज्यवाद का एक ही सिद्धान्त रहा है । हिंसा उसका एक मात्र सहारा है ।

२० सितम्बर को एल्वा के घर पर खूनी कचहरी की पहली बैठक हुई । इसके बाद रोज सात घण्टे कचहरी में बैठकर एल्वा खून के पनाले बहाने लगा । जिस प्रकार बिना किसी कायदे अथवा कानून की परवाह किये कचहरी बना ली गई थी उसी प्रकार कचहरी के कार्य्य-संचालन की कोई प्रणाली निश्चित करने की भी जरूरत नहीं समझी गई । सब सदस्यों से प्रत्येक बात गुप्त रखने की क़समें ले ली गई थीं । सारे नेदरलैण्ड के लिए बस यह एक ही कचहरी थी । हजारों जासूस ऐसे लोगों की टोह में चारों तरफ

घूमते फिरते थे जिन्होंने सनातन धर्म के विरुद्ध मनसा-वाचा-कर्मणा कभी कोई कर्म किया हो। सब से बड़ा पाप अमीर होना था। एल्वा रुपये वालों को किसी न किसी बहाने पकड़ ही लेता था। वह नेदरलैण्ड में केवल खून बहाने ही नहीं आया था बल्कि वहां से एक गज गहरी सोने की गंगा बहाकर स्पेन की मरुभूमि सींचने का इरादा करके आया था। उसने फिलिप को विश्वास दिला दिया था कि लोगों की ज़ब्तियों से स्पेन के शाही खज़ाने की कम से कम ५ लाख सालाना की आय बढ़ जायगी।

कानून बिल्कुल रौलट ऐक्ट की तरह थे। किसी को किसी समय पकड़कर दण्ड दिया जा सकता था। नेदरलैण्ड के प्रत्येक मनुष्य को अपना सिर कन्धे पर हिलता नज़र आता था। अमीरों के लिए तुरन्त देश छोड़कर भाग जाने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं था। परन्तु देश छोड़कर भाग जाना बिलकुल असम्भव था। सब नाके बन्द कर दिये गये थे। जहाज़ और गाड़ी-घोड़े वालों को हुक्म हो गया था कि यदि किसी को भागने में सहायता दोगे तो प्राण-दण्ड मिलेगा। कचहरी के कुछ सदस्यों को ऑरेञ्ज, लुई, ब्रेडरोड, एगमोण्ट, हॉर्न, क्यूलम्बर्ग, बरघन और मौण्टनी के विरुद्ध मिसिल तैयार करने का काम खास तौर पर सौंपा गया था। जो साधारण मुक़दमे प्रतिदिन आते थे उनकी मिसिलें साधारण सदस्य ही तैयार करते थे। परन्तु यदि कोई सदस्य फाँसी से कम सजा की सिफारिश करता था तो उस पर कड़ी फटकार पड़ती थी। प्रत्येक नगर, ग्राम और नगले के रजिस्टरों से पता चलता है कि सैकड़ों पुरुष, स्त्री और बच्चों की भेंट नेदरलैण्ड पर अधिकार प्राप्त कर लेने वाले इस मानव-राक्षस

के ऊपर रोज चढ़ाई जाती थी। विरले ही मनुष्य इस योग्य समझे जाते थे जिनका मुक़द्मा सुना जाय। फिर जिस प्रकार मुक़द्मा होता था उसे मुकदमा कहना भी हास्यास्पद है। अधिकतर मनुष्य योंही भट्टी में जिन्दा झोंक दिये जाते थे। साम्राज्य-वाद का भड़भूँजा मनुष्यों को पत्तों की तरह भाड़ में झोंकता था। परन्तु भड़भूँजा भी पत्तों को अपना समझकर, ज़रा ठिठक-कर हाथ लगाता है। यहाँ उस 'अपने-पन' का सर्वथा अभाव था। एक त्योहार के दिन लोग आनन्दोत्सव मनाने के लिए इकट्ठा हुए थे। सरकारी फ़ौज ने जाकर उनमें लगभग ५०० को गिरफ्तार कर लिया। रंग में भंग पड़ गया। सब को तुरन्त फाँसी पर लटकाकर त्योहार का अन्त कर दिया गया। सच है, विदेशियों के राज्य में त्योहार सर देकर ही मनाये जा सकते हैं? गुलामी में फाग रचाना अपनी हँसी उड़ाना है। ख़ैर, जिन असंख्य अभागों ने नेदरलैण्ड में इस प्रकार जान देकर यमपुरी का रास्ता नापा, उन की सूची बनाने का दुःखप्रद कार्य आज इस बीसवीं सदी में कौन करे? वे मर मिटे और उनकी मिट्टी भी अपना काम पूरा कर चुकी। जिस भूमि पर उनका रक्त बहा था वहाँ आज स्वतंत्रता की ध्वजा फहराती है। और गुलामी में पड़े हुए लोगों को स्वाधीनता के रक्त-रञ्जित मार्ग की याद दिलाकर दृढ़ता से क़दम बढ़ाने के लिए आवाहन करती है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं मालूम पड़ती कि ख़ूनी कचहरी के सामने आये हुए मुक़द्मों में पुलिस की रिपोर्ट पर ही प्राण-दण्ड हो जाता था। मुलज़िम की बात सुनने का समय ही किसे था? जल्लाद इतने उत्सुक और सचेत रहते थे कि

कभी-कभी आज्ञा आने से पहले ही अपराधी को फाँसी पर चढ़ा देते थे। इस समय के पत्रों में एक आदमी का ज़िक्र आता है कि जब उसका मुक़दमा कचहरी में पेश होने की बारी आई तो पता चला कि उसे तो फाँसी भी हो चुकी है। कागज़ात देखने से पता चला कि मनुष्य इतना निर्दोष था कि वह खूनी कानून की लम्बी बाहों में भी नहीं आता था। एल्वा का जल्लाद, ठट्ठे लगाने वाला वास्गास हँसकर बोला—"अच्छा है, वह निर्दोष गया है तो ईश्वर के यहाँ न्याय में उसे कम कष्ट होगा?" एक दूसरे मनुष्य को इसलिए प्राण-दण्ड मिला कि उसने एक बार विद्रोहियों को सरकारी अफ़सरों पर गोली चलाने से रोक लिया था। यह इस बात का पक्का सबूत समझा गया कि उसका विद्रोहियों पर अवश्य प्रभाव रहा होगा। एक औरत को इस-लिए फाँसी हुई कि उसने एक मूर्ति का अपमान किया था और दूसरी औरत को इसलिए कि वह इस कार्य को खड़ी देखती रही थी। एक क़ैदी फाँसी पाने से पहले ही जेल में मर गया था। हकीम पर डाँट पड़ी कि ऐसा इलाज क्यों किया गया कि अप-राधी फाँसी पर न चढ़ाया जा सका। पाशविक सन्तोष की पूर्ति के लिए उसकी लाश कुर्सी पर बिठाई गई और उसका सर उड़वा दिया गया। वीभत्स प्रतिहिंसा की पराकाष्ठा था। सारा देश हड्डी और मुर्दों का भाण्डार बन रहा था। कोई परिवार ऐसा नहीं बचा था जिसमें से कोई न कोई फाँसी पर न चढ़ा हो; कोई घर ऐसा नहीं था जहाँ से क्रन्दन-ध्वनि न आती हो। एल्वा के देश में पदार्पण करने के कुछ ही मास बाद सारे देश की आत्मा हताश होकर रुदन करने लगी थी। जिन नेताओं से त्राण

की आशा थी वे परलोक, जेल या निर्वासन में जा चुके थे। खिर झुकाने से कुछ लाभ न होता था; भागने के मार्ग बन्द थे। अत्याचार का राक्षस डण्डा लिए चारों ओर शिकार ढूँढ़ता फिरता था। गली-गली में तथा प्रत्येक सड़क पर सूलियाँ गड़ी थीं। चौराहों और लोगों के मकानों के द्वारों पर जली-कटी लाशें लटका करती थीं। बागों में पेड़ों पर चारों ओर शवों के भयंकर फल लटकते थे। लोगों को किसी तरफ़ भागने का मार्ग नहीं था। अत्याचार के प्लेग ने ऐसा सर्वनाश कर डाला था कि जिन बाजारों में भीड़ के कारण कन्धा से कन्धा रगड़ता था वहाँ सदैव मध्य रात्रि-सा सन्नाटा छाया रहता था और सड़कों पर घास उग चली थी। परन्तु चापलूस डाक्टर विग्लियस अपने देश की इस दशा पर इतना सन्तुष्ट था कि उसने इसी समय के एक पत्र में किसी मित्र को लिखा है—"लोग एल्वा की बुद्धि और दयाशीलता की बड़ी सराहना करते हैं।"

डचेज़ परमा एल्वा के आकर उसके सारे अधिकार हड़प लेने पर बड़ी क्रुद्ध थी। उसे नेदरलैण्ड में दूध की मक्खी बना रहना गवारा नहीं था। अस्तु; उसने इस्तीफ़ा दे दिया। फिलिप ने इस्तीफ़ा मंजूर कर लिया। परमा को वर्तमान ८ हज़ार वेतन के स्थान पर १४ हज़ार को पेंशन दे दी गई। एल्वा को उसकी जगह पर नेदरलैण्ड का नवाब बना दिया गया। एल्वा ने १४ लाख रुपये की लागत का एक ऐसा दुर्ग दो प्रख्यात इटली के इंजीनियरों की देख-रेख में एण्टवर्प में बनवाना प्रारम्भ कर दिया था जिसमें बहुत-सा गोला-बारूद लड़ाई का सामान और सेना रक्खी जा सके। इस किले को पांच भागों में विभाजित किया गया था।

चार भागों का नाम एल्वा ने अपने नाम पर रक्खा था। एक का नाम ड्यूक, दूसरे का फर्डीनेण्ड, तीसरे का टोलेडो और चौथे का एल्वा। पाँचवें भाग का नाम इंजीनियर के नाम पर 'पचेको' रक्खा गया था। मुख्य द्वार पर एल्वा की एक विशाल मूर्ति थी।

अक्तूबर में यह क़िला बनकर तैयार हो गया। एल्वा ने उसमें प्रवेश किया। ऑरेञ्ज, लुई, काउण्ट वांडेनबर्ग, ह्यूगस्ट्रेटन, क्यूलमबर्ग और मौण्टनी इत्यादि के पास एल्वा के सामने हाज़िर होने के लिए सम्मन भेज दिये गये थे। ऑरेञ्ज पर दस अपराध लगाये गये। उनका सार यह था कि ऑरेञ्ज विद्रोहियों का सरदार रहा। फिलिप के नेदरलैण्ड से पीठ फेरते ही उसने नेदरलैण्ड पर अपना अधिकार जमा लेने, और यदि फिलिप लौटकर आये तो उसे डण्डे के ज़ोर से निकाल बाहर करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया था। ऑरेञ्ज लोगों को यह कहकर भड़काता था कि स्पेन का सा 'इनक्विज़िशन' नेदरलैण्ड में भी स्थापित होने वाला है। उसने ब्रेडरोड और सरदारों के संघ को सरकार का विरोध करने की उत्तेजना दी। एण्टवर्प में बलवे के समय उसने लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता देकर अधर्म करने के लिए उत्साहित किया।

कैसे मज़े की बात है! जो 'इन्क्विज़िशन' लोगों का दिन-रात खून चूस रहा था उसका नाम लेना लोगों को भड़काना था? परमा के किये हुए समझौते के अनुसार एण्टवर्प के लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता देने के लिए ऑरेञ्ज अपराधी गिना जाता है। परमा को ८ हज़ार की जगह १४ हज़ार की पेन्शन मिलती

है। सरदारों ने सम्मन मिलने की कुछ परवाह नहीं की। कोई एल्वा के सामने हाजिर नहीं हुआ। भला जान-बूझकर वे मौत के मुंह में पग क्यों रखते? ऑरेञ्ज ने उत्तर में लिख भेजा कि "मैं जर्मन-साम्राज्य का सदस्य हूँ। फ्रान्स में मुझे युवराज के अधिकार हैं, 'गोल्डन फ्लीस' संस्था का भी मैं सदस्य हूँ; नेदरलैण्ड का स्वतंत्र नागरिक हूँ। मैं एल्वा और उसकी इस घरेलू पंचायत का सम्मन भेजकर मुझे बुलाने का अधिकार नहीं मानता। जर्मनी के महाराज और उनकी कौंसिल अथवा 'गोल्डन फ्लीस' संस्था के सम्मुख अपना न्याय कराने के लिए उपस्थित होने को तैयार हूँ।" मालूम पड़ता है इस समय तक ऑरेञ्ज फिलिप के विरुद्ध हथियार उठाने को तैयार नहीं था। ऑरेञ्ज-जैसे बुद्धिमान मनुष्य ने भी एक बड़ी भूल की थी। खुद तो देश छोड़कर चला आया था परन्तु अपने १३ वर्ष के सबसे बड़े लड़के को लोवेन के प्रख्यात विद्यालय में पढ़ता छोड़ आया था। फिलिप ने उस लड़के को गिरफ्तार करके स्पेन मँगवा लिया। लड़के से कहा गया कि सम्राट फिलिप अत्यन्त स्नेह के कारण तुम्हें स्वयं अपनी देख-रेख में शिक्षा देना चाहते हैं जिससे तुम उच्च पदों के योग्य बनकर महान राज-पदों को भोग सको। वह नासमझ छोकरा भी राजसी ऐशोआराम में पड़कर सब-कुछ भूल गया और मौज करने लगा। स्पेन में रखकर फिलिप ने उसकी आदत ऐसी बदल दी कि जब वह २० वर्ष बाद देश को लौटा तो उसकी भयंकर आकृति अथवा क्रूर स्वभाव देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह उसी वंश में पैदा हुआ होगा जिसमें ऑरेञ्ज और लुई-जैसे वीरों ने जन्म लिया था।

अत्याचार की आँधी ने ज़ोर पकड़ा। रोम का जल्लाद पोप सोचता था कि अगर सारे नेदरलैंड वालों के सिर एक ही गरदन पर होते तो अच्छा होता। एक ही हाथ में सब आसानी से उड़ा दिये जाते। खैर जो हो, उसने अपने मतलब के लिए सारे नेदरलैंड वालों के सिरों का एक गरदन पर होना मान लिया था। १३ फरवरी सन् १५६८ ई० को धर्म्माचार्य्य पोप की ओर से सारे नेदरलैंड को कुफ्र के लिए प्राणदण्ड का हुक्म हुआ। सारे नेदरलैंड को! दस दिन बाद फिलिप ने 'इनक्विज़िशन' की इस आज्ञा का समर्थन करते हुए फ़रमान निकाला। तोन करोड़ स्त्री-पुरुष और बच्चों को तीन सतरों में फाँसी पर लटका देने का हुक्म लिख दिया गया। अधिकारियों को हुक्म हुआ कि 'पोप की आज्ञा पर फौरन अमल होना चाहिए। और किसी की उम्र, जाति और अवस्था का कुछ ध्यान न किया जाय।' जब से ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की तब से शायद ही कोई ऐसा राजा उत्पन्न हुआ हो जिसने ऐसा हुक्म निकाला हो। यह आज्ञा सुनते ही नेदरलैंड वालों के होश उड़ गये। यह ठीक है कि वास्तव में सबको फांसी दी नहीं जा सकती थी और इस हुक्म का यही अर्थ निकाला जा सकता था कि वह लोगों पर आतंक जमाने के लिए निकाला गया है। फिर भी यह तो स्पष्ट था कि इस आज्ञा के अनुसार किसी को भी किसी समय पकड़कर फाँसी पर लटकाया जा सकता है। अधिकारी अब इसके उदाहरण उपस्थित करने लगे। मुक़द्दमों का जो एक दिखावा था, वह भी दूर हुआ। हाँ, 'खूनी कचहरी' में इस बात की जाँच-पड़ताल अवश्य होती थी

कि फाँसी चढ़ने वाले मनुष्यों के पास कितना धन है। सरकार का विश्वास था कि फाँसियाँ यदि सोच-समझ और देख-भालकर दी जाँयगी तो एक सोने की फ़सल काटी जा सकती है। बहुत से नागरिक अमीरी के अक्षम्य पाप के लिए पकड़ लिये गये। पहले उनके हाथ पीठ के पीछे बाँध दिये जाते, फिर वे घोड़े की दुम से लटकाकर देर तक घसीटे जाते और अधमरे हो जाने के बाद फाँसी पर चढ़ा दिये जाते। गरीबी से भी कोई बचाव न था। मज़दूरों की भी ऐसी ही दुर्गति होती थी। लोग फाँसी पर जाते समय अपने हृदय के उद्गार चिल्ला-चिल्लाकर कहते थे। सुनने वालों में सनसनी फैलती थी। उपद्रव हो जाने की सम्भावना रहती थी। इससे अपराधियों की जबान बन्द करने का एक नया उपाय तुरन्त सोचा गया। अपराधियों की जिव्हा में एक छल्ला डालकर जिव्हा गर्म लोहे से दाग दी जाती थी जिससे मांस फूलकर छल्ले में भर जाता था। और अपराधी बोलने के अयोग्य हो जाता था। यह ठीक है कि इस समय तक नेदरलैण्ड के लोग एक संघटित सर्वदेशीय क्रान्ति करके विदेशियों को निकाल बाहर करने के लिए तैयार नहीं थे। फिर भी मनुष्य थे। कहां तक चुपचाप अत्याचार सहते ? कुछ लोगों के हृदय की भीतर धधकने वाली ज्वाला ने भयंकर रूप धारण कर लिया था। लूट-मार करने वाला एक झुण्ड उठ खड़ा हुआ। इन लोगों ने अपना नाम 'जंगली भिखारी' रख लिया। ये लोग सनातनी अमीरों, महन्तों और पण्डों को लूटते फिरते थे। सरकारी खजानों पर भी छापा मारते थे। सनातनी पंडितों की नाक-कान काट लेना तो उनका साधारण कार्यक्रम था। प्रायः पंडितों को

घोड़ों की पूँछ से बाँधकर भी घसीटते थे। एल्वा ने एक सेना भेजकर बड़ी कठिनाई से इन्हें दबाया।

हॉर्न और एग्मोण्ट महीनों से जेल में बन्द थे। न उन्हें किसी वकील से मिलने दिया जाता था, न साफ़-साफ़ उनका अपराध ही बताया जाता था। फैसला होने के पहले ही जागीर ज़ब्त हो जाने के कारण, राजसी ठाठ से रहने वाली एग्मोण्ट की स्त्री अपने छोटे-छोटे ग्यारह बच्चों के साथ भूखों मरने लगी थी। बेचारी रोटियों के लिए एक मठ में जा पड़ी। वह राजवंश में पैदा हुई थी, राजवंश में ब्याह कर आई थी। उसने ऐसा कष्टों का पहाड़ कभी स्वप्न में भी नहीं देखा था। तब भी उसने बड़े धैर्य से काम लिया। फिलिप, एल्वा, जर्मनी के शहंशाह, अपने भाई जर्मन सरदार पेलेण्टाइन और 'गोल्डन फ्लीस' के सरदारों को उसने कई पत्र लिखे कि मेरे पति को यदि छोड़ा नहीं जा सकता तो कम से कम उनका न्याय निष्पक्ष अदालत के सामने होना चाहिए। संस्था के सरदारों ने फिलिप को लिखा-एग्मोण्ट 'गोल्डन फ्लीस' संस्था का सदस्य है। इस संस्था के नियमों के अनुसार एग्मोण्ट का मुकदमा उसी संस्था के समक्ष होना चाहिए। नेदरलैण्ड के नागरिक की हैसियत से भी एग्मोण्ट का अभियोग देश के कानूनों के अनुसार नगर की पंचायत के सामने ही आना चाहिए था। परन्तु 'कानून' और 'अधिकारों' का जिक्र ही वहाँ कहाँ था? राज्य की ओर से प्रजा के कार्यकर्ताओं पर जो अभियोग चलाये जाते हैं उनमें 'न्याय' का ध्यान नहीं रक्खा जाता। एक दूसरे ही, 'न' से शुरू होने वाले शब्द 'नीति' का ध्यान रक्खा जाता है। फिलिप की नेदरलैण्ड के प्रति

'नीति' निश्चय हो चुकी थी। एल्वा इन सरदारों को फाँसी पर लटका देने का हुक्म भी फिलिप के हस्ताक्षर कराके लेता आया था। भेड़िया बकरी के बच्चे को किसी न किसी बहाने खाने का निश्चय कर चुका था। मुकद्मे की तैयारी तो ढोंग की पूर्ति थी। जर्मनी के सम्राट के पत्र के उत्तर में फिलिप ने लिखा कि 'चाहे नेदरलैंड मेरे हाथ से निकल जाय, आकाश-पाताल एक हो जाँय, परन्तु मैंने जो निश्चय कर लिया है वही करूँगा। मुझे विश्वास है पीछे से दुनिया मेरे कार्य की सराहना करेगी।' एल्वा को उसने लिखा कि 'मेरे पास चारों ओर से हॉर्न और एग्मोण्ट को छोड़ देने की प्रार्थनायें आ रही हैं। काम शीघ्र ही क्यों नहीं तमाम करते?' हॉर्न की बूढ़ी माँ बेचारी भी अपने बच्चे को छुड़ाने का प्रयत्न कर रही थी; चारों ओर सब का निहोरा करती फिरती थी। एग्मोण्ट के नागरिक अधिकारों की तो सरकार को कुछ चिन्ता नहीं थी। परन्तु 'गोल्डन फ्लीस' के नियम 'खूनी कचहरी' के सामने इन सरदारों का अभियोग लाने में कुछ बाधक हो रहे थे। यह अड़चन नेदरलैंड के धुरन्धर विद्वान डाक्टर विग्लियस ने दूर कर दी। उसने कहा कि मेरी अटल राय है कि 'गोल्डन फ्लीस' के नियम इस अभियोग में लागू हो ही नहीं सकते। गुलामी इसी का नाम है कि अपने ही अपनों का गला घोटें। सरकार की चिन्ता दूर हुई। इसी बीच मुकदमा 'खूनी कचहरी' के सामने आया। नेदरलैंड में होने वाली सभी घटनाओं का दोष एग्मोण्ट और हॉर्न के सिर मढ़ा गया। उन बेचारों ने अपने को निर्दोष बताते हुए अपनी राजभक्ति और जन्म-भर की अपनी राज-सेवा की दोहाई दी किन्तु इन बातों पर कौन

ध्यान देता था। इसी बीच कुछ ऐसी घटनायें घट गईं जिनके कारण सरकार को एग्मोएट और हॉर्न का काम तमाम करने में और भी शीघ्रता करनी पड़ी।

---

(१२)

बगावत का झण्डा

विलियम ऑरेञ्ज ने अत्याचार से तंग आकर आखिरकार विद्रोह का झण्डा खड़ा किया। सरकार ने विद्रोही क़रार देकर विलियम की सारी जागीर ज़ब्त कर ली थी और उसके लड़के को क़ैद कर लिया था। अब क्या रह गया था जिससे विलियम आगे बढ़ने से झिझकता? देश पर होने वाले अत्याचार को देखते-देखते उसका हृदय पक गया था। जर्मनी में लोगों से मिलकर नेदरलैण्ड से भागे हुए व्यक्तियों की सहायता से वह सेना और धन इकट्ठा करने लगा। डेमोस्थनीज़ व्याख्यान दे-देकर लोगों को फिलिप के विरुद्ध उकसाता फिरता था। ऑरेञ्ज ने एक विचित्र अधिकार-पत्र लिखकर लुई को फ़िलिप की, सेवा के विचार से, स्पेन की सेनाओं को नेदरलैण्ड से निकाल देने के लिए फ़ौजें खड़ी करने को आज्ञा दी थी। वाण्डेनबर्ग और ह्यूगस्ट्रेटन को भी इसी प्रकार के अधिकार दे दिये गये थे। जिस प्रकार नेदरलैण्ड की क्रान्ति का हृदय विलियम ऑरेञ्ज था, उसी प्रकार उसका छोटा भाई लुई क्रान्ति का दाहिना हाथ था। ऑरेञ्ज की राय में सब काम के लिए दो लाख रुपये की आवश्यकता थी। एक लाख रुपया तो नेदरलैण्ड के नगरों से आ गया। शेष सरदारों ने आपस में चन्दा कर लिया। ऑरेञ्ज ने अपना सामान इत्यादि बेचकर ५० हज़ार दिये। ह्यूगस्ट्रेटन ने ३०,

हज़ार दिये। लुई ने १००००; क्यूलम्बर्ग ने ३००००; वाण्डेन बर्ग ने ३००००; आरेञ्ज की माँ ने भी १० हजार दिये। ऑरेञ्ज अपना सब कुछ बेच-बाचकर जुआरी की तरह दाव नहीं लगा रहा था। ठण्डे हृदय का राजनीतिज्ञ विलियम ऑरेञ्ज अच्छी तरह सोच-समझकर क़दम बढ़ा रहा था। एल्वा को चुप-चाप उठा लाने और ब्रसेल्स पर अधिकार जमा लेने का एक बड़े उत्साह का प्रयत्न हाल ही में निष्फल हो चुका था। ऑरेञ्ज की राय थी कि नेदरलैण्ड पर खुल्लमखुल्ला तीन तरफ से हमला किया जाय। ऑरेञ्ज स्वयं चौथी तरफ़ से हमला करने के इरादे से क्लीव्स में जा डटा। एक सेना फ्रान्स की सीमा के निकट एट्रोअ्ज की तरफ से घुसने वाली थी। दूसरी ह्यूग्सट्रेटन की अध्यक्षता में मियूज और राइन नदी के बीच में लड़ने वाली थी। तीसरी लुई की अध्यक्षता में फ्रीसलैण्ड में झंडा उठाने वाली थी। परन्तु पहले दोनों स्थानों पर देशभक्तों की सेना को बुरी तरह हार खानी पड़ी। पहले स्थान पर १८ जुलाई को देशभक्तों के २५०० सैनिकों ने हमला किया परन्तु प्रायः सब खप गये; केवल ३०० किसी तरह जान बचाकर भाग आये। दूसरे स्थान पर ह्यूग्सट्रेटन के बजाय विलर्स नामी एक मनुष्य को सरदार बना दिया गया था। इसने ३००० सैनिकों को लेकर रोयरमोंडे नगर पर अधिकार करके नेदरलैण्ड में पैर जमा लेने का प्रयत्न किया। परन्तु नगर वाले क्रान्ति के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने उसे घुसने नहीं दिया। स्पेन की सेना ने आकर विलर्स की सारी सेना छाँट डाली और उसे क़ैद कर लिया। विलर्स ने फांसी से बच जाने के लोभ से बड़ी नीचता का काम किया। विलियम ऑरेञ्ज के सब

इरादे और उसकी फौज का नक़शा दुश्मन को बता दिया। यद्यपि इतनी नीचता करने पर भी उसकी जान न बची।

लुई अपने छोटे भाई एडोलफस के साथ फ्रीसलैण्ड में झण्डा उड़ाता हुआ घुसा। झंडे पर लिखा था 'स्वदेश और स्वधर्म के लिए'। घुसते ही उसने प्रान्त के सूबेदार एरेलबर्ग के किले के बेड़े पर छापा मारकर अधिकार जमा लिया। देखते-देखते ही डैम और स्लौचटेरेन पर भी लुई का झंडा फहराने लगा। चारो ओर से लोग आ-आकर उसके झंडे के नीचे एकत्र होने लगे। ग्रोनिंजन नगर के लोगों से लुई ने कुछ रुपया भी वसूल किया जिससे वह अपने दल का खर्च चला सका। परन्तु एल्वा भी सो नहीं रहा था। उसे सब हाल मालूम था। एरम्बर्ग के फ्रान्स से लौटते ही एल्वा ने उसे फौज लेकर इधर रवाना किया। एरम्बर्ग के साथ ४ हजार छटे हुए जवान थे। सरदार मेवम ने भी उससे आगे मिल जाने का वादा किया था। डैम के निकट होलीगरली नाम का एक मठ था। यह मठ एक ऊँचे स्थान पर था। और चारो ओर नीचे खेत थे। खेतों में से घास खोद-खोदकर जलाने के लिए निकाल ली गई थी। इसलिए उनमें गहरे गड्ढे हो गये थे। गड्ढों में पानी भरा रहता था। पानी की सतह पर एक प्रकार की हरी फफूँदी घास की तरह उगी दीखती थी। लोग फफूँदी को घास समझकर धोका खाकर गड्ढों में गिर सकते थे। लुई ने युद्ध के लिए यह स्थान चुनने में बड़ी होशयारी की थी। स्वयं तो अच्छी ऊँची जगह पर जा डटा था। आक्रमण करने वाले शत्रु के लिए यह धोखे की टट्टियों से भरा हुआ मैदान छोड़ दिया था। एरम्बर्ग अपनी सेना के साथ यहाँ पहुँच-

कर रुक गया। वह स्वयं नेदरलैण्ड का निवासी था और इसी प्रान्त का सूबेदार था। इसलिए वह इस स्थान से खूब परिचित था। उसने सोचा कि मेघम एक-दो दिन में आ पहुँचेगा। तब-तक शत्रु पर आक्रमण नहीं करना चाहिए। परन्तु स्पेन के सिपाही हाल की जीतों के नशे में चूर थे। और तुरन्त हमला करके शत्रु को छाँट डालने के लिए पागल हो उठे। लोग एरम्बर्ग पर फिकरे कसने लगे कि 'कायर है; आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं होती! घबराता है।' एरम्बर्ग अच्छी तरह जानता था कि इस मैदान में कूदना जान-बूझकर मौत के मुँह में कूदना है। परन्तु वह भी वीर था, गठिया के दर्द में चारपाई से उठकर लड़ने आया था। एरम्बर्ग से स्पेन वालों के ताने न सुने गये। उसके स्वाभिमान को चोट लगी। उसने सोचा कि यदि स्पेन के सिपाही मौत के मुँह में कूदने को उत्सुक हैं तो नेदरलैण्ड के सेनापति को उन्हें वहां ले चलने में आगा-पीछा करने की क्या जरूरत है? लुई बड़ी शांन्ति से मौका देख रहा था। एक दिन पहले ही उसके सिपाहियों में वेतन न मिलने से बलवा होते-होते बच गया था। परन्तु लुई ने बहुत समझा-बुझाकर सैनिकों को शान्त कर लिया था। और आज वह सब सैनिक जी-जान से लुई के लिए लड़ने को तैयार थे। एरम्बर्ग की फौज ने आगे बढ़कर देशभक्तों पर गोलाबारी शुरू की। लुई की सेना शत्रु को धोखा देने के लिए इधर-उधर भाग उठी। शत्रु को फँसाने के लिए लुई ने यह चाल चली थी। लुई की सेना को भागती देख स्पेन वाले अपने को काबू मे न रख सके। अपने नायक का हुक्म न मानकर शत्रु की तरफ दौड़े। दौड़ते ही सब के सब दलदल और

गड्ढों में जा फँसे। जब वे गड्ढों से निकलने का प्रयत्न कर रहे थे, लुई की सेना ने निकलकर ऊँचे स्थान पर खड़े होकर स्पेन वालों को भूनना शुरू कर दिया। जो गड्ढों से निकलकर भागने लगे उन्हें दूसरी तरफ से एक टुकड़ी ने निकलकर छाँट डाला अथवा फिर दलदल में भगाकर कुत्तों की तरह मारना शुरू किया। देखते-देखते स्पेन को सेना नष्ट हो गई। युद्ध में एरम्बर्ग और एडोल्फस का सामना हुआ था। एडोल्फस ने एरम्बर्ग पर पिस्तौल चलाई। एरम्बर्ग के गोली लगी परन्तु उसने झपटकर एडोल्फस को मार डाला। एरम्बर्ग का घोड़ा मरकर गिर पड़ा था। फिर भी वह घावों से भरपूर शरीर की चिन्ता न करके महाभारत के योद्धाओं की तरह अन्त तक खड़ा-खड़ा लड़ता रहा। स्पेन के जिस कर्नल ने एरम्बर्ग को कायर कहकर ताना मारा था, सबसे पहले वही भाग खड़ा हुआ। सरदार मेवम युद्ध-स्थल के बहुत निकट आ पहुँचा था। परन्तु जब उसने इस सर्वनाश की खबर सुनी तो उलटे पाँव ग्रोनिंजन लौट गया। ग्रोनिंजन नगर युद्ध की दृष्टि से प्रान्त की कुञ्जी था। देश-भक्त लुई ने विजय तो प्राप्त कर ली थी परन्तु यह शुष्क विजय थी। तन्नाजी-जैसे सिंह को खोकर शिवाजी को सिंहगढ़ की विजय पर अधिक उल्लास नहीं हुआ था। एडोल्फस की आहुति देकर लुई और ऑरेञ्ज भी हीलीगरली की विजय पर आनन्द न मना सके परन्तु हृदय का दुःख हृदय में ही रख लुई ने आगे बढ़कर शत्रु का पीछा किया। ग्रोनिंजन के पास पहुँचकर मैदान में खाइयां खोदकर अपना डेरा डाल दिया। इस विजय का यह असर अवश्य हुआ कि नेदरलैण्ड वालों का यह विश्वास कि स्पेन की

सेना हराई ही नहीं जा सकती, दूर हो गया। स्वतन्त्रता के युद्ध में यह भी एक बड़ी जीत है। विदेशियों का राज्य प्रायः शासकों के अटल बल के भय पर निर्भर करता है। जब शासित जातियों में शासकों का बल नष्ट कर सकने का विश्वास प्रबल हो उठता है तो वे सिर उठाकर क्रान्ति कर डालती हैं। एल्वा ने जब इस भयंकर हार का हाल सुना तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने स्वयं जाकर लुई को शिक्षा देने का निश्चय कर लिया।

ब्रसेल्स छोड़ने से पहले एल्वा को बहुत से काम कर लेने थे। एक के बाद एक जल्दी-जल्दी एल्वा एक से एक क्रूर हुक्म निकाल रहा था। २८ मई को उसने ऑरेञ्ज, लुई, ब्रूग्सट्रेटन और वाण्डेनबर्ग इत्यादि की जागीरें जब्त करके उनके देशनिकाले का एलान कर दिया। क्यूलमबर्ग के दुर्ग को ढाकर उसके ऊपर मीनार बनाई गई ताकि लोगों को याद रहे कि जिस स्थान पर बैठकर ऑरेञ्ज इत्यादि ने षड्यन्त्र रचा था वह स्थान तक मिट्टी में मिला दिया गया। १ जून को १८ प्रख्यात मनुष्यों को ब्रसेल्स के घोड़ा-बाजार में एल्वा के हुक्म से सूली पर चढ़ा दिया गया। २ जून को विलर्स को फाँसी दी गई। ३ री जून को एग्मोण्ट और हार्न मेण्ट से बन्द गाड़ी में लाकर ब्रसेल्स में रख लिये गये थे। ४ जून को एल्वा ने ईश्वर और संसार को अपने न्याय का साक्षी बताते हुए दोनों सरदारों के सिर उड़ा लेने का हुक्म सुना दिया।

ऐरस के बिशप को बुलाकर एल्वा ने कहा—"जाइए, एग्मोण्ट को प्राणदण्ड का हुक्म सुना दीजिए। उसे कल ही यमराज से भेंट करने के लिए तैयार कीजिए।" यह हुक्म सुनते ही बिशप

के होश उड़ गये। बेचारा घुटने टेककर गिड़गिड़ाने और एग्मोण्ट की प्राण-भिक्षा माँगने लगा। एल्वा बोला—"आप को वायसराय ने सरकारी कामों में सलाह लेने के लिए नहीं बुलाया है। जाइए, मुलज़िम को मरने के लिए तैयार करने का अपना काम कीजिए।" यह डाँट सुनकर बेचारा बिशप निराश होकर चला गया। एग्मोण्ट की स्त्री को ऐसे दण्ड की स्वप्न में भी आशा नहीं थी। एरम्बर्ग की मृत्यु का समाचार सुनकर उसकी स्त्री के दुःख पर अपना शोक प्रकट करने के लिए वह उसके घर गई थी। वहाँ उसे अपने पति के प्राण-दण्ड का समाचार मिला। वह नंगे पाँव दौड़ी हुई वायसराय के पास पहुँची। जिस स्त्री के पूर्वज शहंशाह थे, वह आज अपनी मान-मर्यादा सब-कुछ भूलकर केवल पत्नीत्व और मातृधर्म का ध्यान रखकर एल्वा के चरणों पर जा गिरी और अपने पति के लिए हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगी। एल्वा ने व्यङ्ग से कहा—"कल तुम्हारे पति को अवश्य छुटकारा मिल जायगा।" यह अभागी एल्वा के व्यङ्ग के गूढ़ार्थ को न समझ सकी। उसे सचमुच विश्वास हो गया कि कल मेरा पति छूट जायगा। वह एल्वा को हजारों आशीर्वाद देती हुई चली आई। दूसरे दिन उसे एल्वा के शब्दों का अर्थ मालूम हुआ। मनुष्य भी कितना नीच बन सकता है! आसन्न-मृत्यु मनुष्य की पत्नी से भी व्यङ्ग!

रात के ग्यारह बजे बिशप ने एग्मोण्ट को सोते से जगाकर उसकी मृत्यु का वारण्ट दिखाया। एग्मोण्ट भयभीत न हुआ। परन्तु वह इस प्रकार अपनी महीनों की यातनाओं का एकाएक अन्त सुनकर चौंक पड़ा। कहाँ तो इतने धीरे मुकद्मा चल रहा

था; कहाँ इतनी जल्दी फैसला भी हो गया ! दूसरे दिन फाँसी हो जायगी ! एग्मोएट ने बिशप से पूछा कि 'क्या क्षमा की कुछ आशा नहीं है ? क्या कुछ दिन के लिए फाँसी नहीं टल सकती ?' इस पर बिशप ने अपनी और एल्वा की बातचीत कह सुनाई । एग्मोएट निराश हो गया । सोचने लगा कि अब तो जीवन-नौका पार लगी । फिर आवेश में आकर बोला कि 'यह क्रूर और कठोर दण्ड बिल्कुल अन्यायपूर्ण है । मैं सदा राज-भक्त रहा हूँ । यदि मैंने कोई गलती की हो तो हे भगवान् ! मेरी मृत्यु से मेरे कलङ्क धो डालना । मेरी स्त्री और निर्दोष बच्चे मेरी मौत और जब्ती के कारण बड़े दुःख झेलेंगे । कलङ्क के कारण उन्हें सिर नीचा न करना पड़े ।'

बिशप ने कहा—"भाई भगवान को याद करो । अब दुनिया की चीजों का मोह छोड़ो । तुम्हें शीघ्र ही ईश्वर में जाकर मिलना है । उसी का नाम लो । बाल--बच्चों को भूल जाओ ।" एग्मोएट ने आह भरकर कहा—"हाय ! मनुष्य की प्रकृति कितनी निर्बल है । जिस समय भगवान् की याद करनी चाहिए उस समय बाल--बच्चों की याद आती है ।" फिर वह सम्हलकर बैठ गया और दो पत्र लिखे । एक फिलिप को, दूसरा एल्वा को । फिलिप के पत्र में लिखा—

"श्री महाराज !

आज शामको मुझे मालूम हुआ कि श्रीमान् ने मुझे क्या दण्ड देना निश्चय किया है । मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने स्वप्न में भी कभी कोई ऐसा विचार और कार्य किया है जो श्रीमान् के अथवा सनातन--धर्म के विरुद्ध कहा जा सकता हो । परन्तु

भगवान् की इच्छा; जो दण्ड मुझे मिला है उसे मैं सब्र से सह लेने को तैयार हूँ। यदि मैंने कभी कोई ऐसा कार्य्य किया हो, जो आपके विरुद्ध कहा जा सकता है, तो मैं आप से सच कहता हूँ कि मैंने वह कार्य्य बिल्कुल सद्भाव से ईश्वर की और आप की सेवा करने के विचार से अथवा समयानुकूल होने के कारण ही किया होगा। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे क्षमा करें। मेरी स्त्री, मेरे बच्चों और मेरे नौकरों पर, मेरी पिछली सेवाओं का ध्यान रखकर, दया करें।

ब्रसेल्स से,

मरने को तैयार, ५ वीं जुलाई सन् १५६८ ई०

श्री महाराज का दीन और स्वामिभक्त गुलाम और सेवक

लेमोरेल डी एग्मोण्ट।"

एग्मोण्ट का फिलिप को पत्र लिखना अनावश्यक और व्यर्थ स्वामिभक्ति दिखाना था। जो हाथ उसका खून बहाने की तैयारी कर चुके थे, एग्मोण्ट उन्हीं को चूम रहा था। फिर रातभर एग्मोण्ट ने प्रातःकाल के लिए तैयारी करने में बिताई। अपनी कमीज का कालर फाड़ डाला, जिससे जल्लाद को हाथ लगाने की जरूरत न पड़े। सारी रात परमात्मा की प्रार्थना करता रहा। उसका विचार हुआ कि फाँसी जाते समय जनता से अपने हृदय के कुछ उद्गार कहूँ। परन्तु बिशप ने कहा—"भाई! यह सब व्यर्थ जायगा। जनता बहुत दूर खड़ी होगी। पास में तो स्पेन के सिपाही होंगे। वे आपकी बातें जरा भी समझ न सकेंगे। इस से अच्छा यही है कि किसी बात की चिन्ता न करके शान्ति से भगवान का भजन करते हुए आप फाँसी पर

चले जाँय।" एग्मोएट की समझ में बात आ गई। उसने बिशप की राय मान ली। जिस प्रकार एग्मोएट प्रातःकाल फाँसी पर चढ़ने की तैयारी कर रहा था उसी प्रकार हार्न भी तैयार हो रहा था।

ब्रसेल्स के मशहूर चौक में फाँसी होने वाली थी। रातभर में वहां फाँसी की सब तैयारी कर ली गई थी। इसी चौक में बहुत से देशभक्तों को पहले भी फाँसियाँ लगी थीं। जिस चौक में प्रत्येक वर्ष सरदारों के खेल हुआ करते थे; जिस चौक में एग्मोएट बहुत से खेलों को जीतकर लोगों की आंखों में बस गया था, आज उसको उसी चौक में फाँसी पर चढ़ाकर सरकार जनता के हृदय पर आतङ्क बैठाना चाहती थी। प्रातःकाल होते ही फाँसी के चबूतरे पर दो मखमली कुर्सियां रख दी गईं। चबूतरे के चारों ओर तीन हज़ार हथियारबन्द सैनिक खड़े कर दिये गये। फिर एग्मोएट को लाया गया। एग्मोएट अपनी निर्दोषिता और राजभक्ति दिखाने के हेतु रास्ते भर फिलिप के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता आया। चबूतरे पर चढ़कर एग्मोएट टहलने लगा। फिर सरदार रोमेरो से पूछा--"क्या सचमुच क्षमा नहीं मिलेगी?" रोमेरो के उत्तर में 'न' कहने पर एग्मोएट क्रोध से ओठ चबाने लगा। प्रार्थना कर चुकने पर जैसे ही वह कुर्सी पर बैठा, एक तरफ से जल्लाद ने निकलकर खट से उसका सिर उड़ा दिया। क्षण भर के लिए लोगों के दिल दहल उठे। स्पेन के सिपाहियों की आंखें भी आंसू से भर आईं। वीर एग्मोएट को सभी हृदय से सराहते थे। फ्रांस के राजदूत के मुँह से निकला—"जिस मनुष्य के भय से फ्रांस दो दफे काँप उठा आज

उसका ऐसा दीन अन्त होता है।" एल्वा एक मकान से छिपकर सारा दृश्य देख रहा था। उसकी आँखों से भी आंसू बह रहे थे।

एग्मोराट की लाश पर एक काला कपड़ा डाल दिया गया। कुछ ही देर बाद हार्न भी भीड़ में से आता दिखाई पड़ा। वह अपने जान--पहचान के इधर--उधर खड़े हुए लोगों को प्रणाम करता आता था। चबूतरे पर चढ़कर उसने पूछा कि "क्या इस काले कपड़े के नीचे एग्मोराट की लाश है?" जवाब मिला 'हाँ'। हार्न स्पेनिश भाषा में कुछ कहने लगा जो किसी की समझ में नहीं आया। प्रार्थना कर चुकने पर उसका सिर भी एग्मोराट की तरह उड़ा दिया गया। एग्मोराट के कारण ही उसका मित्र हार्न उस दिन ब्रसेल्स चला आया था। इसलिए एग्मोराट ने प्रार्थना की थी कि मेरे मित्र के मरने के पहले मुझे मार डाला जाय। सरकार ने कृपा करके उसकी यह अन्तिम प्रार्थना स्वीकार कर ली थी। दोनों के सिर काट लेने के बाद दोनों सिरों को भालों पर लगाकर दो घण्टे तक जनता के सामने रखा गया। लाशें वहीं चबूतरे पर पड़ी रहीं। फौज की जरा भी चिन्ता न करके बहुत-से लोग चबूतरे के चारों ओर एकत्र हो गये और रो-रोकर श्राप देने लगे। कुछ लोगों ने अपने रूमाल इन वीरों के रक्त से भिगोकर बदला लेने की प्रतिज्ञायें लीं। अन्त में दोनों लाशें नातेदारों को दे दी गईं। हजारों की भीड़ शवों के साथ श्मशान तक आँसू गिराती हुई गई। एग्मोराट की स्त्री ने अपने पति की ढाल और झण्डे इत्यादि सारे कीर्ति-चिन्ह अपने घर के द्वार पर लटका दिये। परन्तु एल्वा के हुक्म से वे सब

तुरन्त ही उतार लिये गये। दो घण्टे भालों पर रहने के बाद एग्मोण्ट और हार्न के सिर दो घंटे तक जलती हुई मशालों के बीच में रक्खे गये। बाद को बकसों में बन्द करके स्पेन भेज दिये गये ताकि फिलिप अपनी की हुई शिकार आँखों से देखकर तृप्त हो जाय। नेदरलैण्ड के दो प्रख्यात वीरों—एग्मोण्ट और हॉर्न का इस प्रकार अन्त हुआ। एग्मोण्ट को लोग बहुत प्यार करते थे। इसलिए एग्मोण्ट की आहुति की ज्वाला में हॉर्न की आहुति का प्रकाश मन्द पड़ गया।

एग्मोण्ट के एक महान ऐतिहासिक व्यक्ति होने में कोई सन्देह नहीं है परन्तु उसे महान् पुरुष नहीं कह सकते। वह अपने ढीलेपन से मृत्यु का शिकार बना था। प्रारम्भ से कभी उसमें वे गुण नहीं देखे गये जो किसी देश के जन-प्रिय नेता में होते हैं। उसे जनता से अधिक सहानुभूति और प्रेम न था। कई बार 'खूनी कानूनों' के पक्ष में होकर उसने जनता पर अत्याचार भी किये थे। स्वाभिमान और राजपूती गर्व उसमें भरा था। जब उसके इस गर्व को ठेस लगती थी तब वह उफन पड़ता था। ऑरेञ्ज का असर कुछ उस पर अवश्य पड़ा था। पर ऑरेञ्ज के देश छोड़कर चले जाने पर उसका एग्मोण्ट पर जो असर था वह भी नष्ट हो गया था।

एग्मोण्ट ने फिलिप को लिखा था कि 'जो कुछ मेरे योग्य सेवा हो मैं करने को तैयार हूँ।' उसने एल्वा से पहली बार मिलने के समय जिस प्रकार चुपचाप अपमान सह लिया वह हमारे हृदय में उसके प्रति तिरस्कार कराने के लिए अवश्य काफी होता यदि उसमें वीरता इत्यादि अन्य अच्छे गुण न रहे होते। ग्रेनविले

अच्छी तरह समझता था कि एग्मोएट की जान ले लेने से कुछ लाभ नहीं होगा। फिलिप चाहता तो एग्मोएट को रक्त की नदियाँ बहाने में अपने हाथ का अच्छा हथियार बना सकता था। परन्तु फिलिप ने एग्मोएट का खून बहाकर एग्मोएट को शहीद बना दिया। नेदरलैण्ड के नौजवानों को देश पर मर मिटने के लिए प्रोत्साहन दिलाने वाली कविता का एग्मोएट एक नायक बन गया। हार्न बिल्कुल साधारण मनुष्य था। परन्तु अपने पद के कारण उसका इस समय के इतिहास में विशेष स्थान है। उसे भी जनता अथवा सनातन-धर्म दोनों में से किसी पर विशेष स्नेह नहीं था। उसे केवल इस बात का दुःख था कि चार्ल्स और फिलिप ने उसकी काफ़ी क़दर नहीं की थी। परन्तु टूर्नी के बलवे के समय सरकार के क्रोध का पात्र बन जाने की ज़रा भी चिन्ता न करके उसने एग्मोएट की तरह जनता के खून से हाथ नहीं रँगे थे।

हार्न और एग्मोएट के प्राण ले चुकने पर भी एल्वा का क्रोध दिन-दिन बढ़ता ही गया। एग्मोएट की स्त्री बेचारी अपने ग्यारह बच्चों को साथ लिये मठ में पड़ी थी। बच्चों को साथ लिये, नङ्गे पैर, गिरजे में अपने पति की आत्मा के लिए प्रार्थना करती फिरती थी। एल्वा ने फिलिप को लिखा कि 'एग्मोएट की पत्नी के पास शाम के लिये खाना भी नहीं है। किसी स्पेन के मठ में उसके रहने का प्रबन्ध कर दीजिए और उसकी लड़कियों को भिक्षुणियाँ बना दीजिए। इन सब बातों का जनता पर अच्छा असर पड़ता है।'

लुई की विजय के बाद एल्वा ने सारी फौज लेकर स्वयं

लुई से लोहा लेने का निश्चय किया था परन्तु यदि हार्न और एग्मोएट को क़ैद में छोड़कर एल्वा लुई से लड़ने चल देता तो उसकी पीठ फिरते ही राजधानी में गड़बड़ हो जाने का भय था। एग्मोएट और हार्न की रक्षा के लिए भी काफी फौज ब्रसेल्स में रखनी पड़ती। इसलिए एल्वा ने हार्न और एग्मोएट का काम तमाम शीघ्र कर डालना ही उचित समझा। लुई ग्रोनिंजन के सामने डटा हुआ था। परन्तु रुपया पास न होने से धावा नहीं बोल सकता था। सैनिक वेतन न मिलने से बलवा करने पर तैयार थे। शहर वालों को डरा-धमकाकर किसी तरह कुछ रुपया वसूल होता था। सिपाहियों को समझा-बुझाकर बड़ी मुश्किल से बलवा करने से रोके हुआ था। एल्वा के डर से रुपया देते नागरिकों के प्राण सूखते थे। इधर लुई धमकी देता था कि यदि विदेशियों को देश से निकालने में मुझे सहा-यता नहीं मिलेगी तो नागरिकों के घर फूँक डालूँगा। बेचारी जनता की दोनों तरह से मुश्किल थी। एल्वा, सरदार मेघम, नोयरकार्मस और ड्यूक ब्रंसविक के साथ सेना लेकर पहुँचा। लुई फौज समेटकर युद्ध के लिए बनाये हुए किले में जा बैठा। लुई की सेना दस-बारह हजार थी। किले के चारों ओर खाईं खोद ली गई थी। खाईं के आगे नदी थी। शहर के लिए जाने को दो काठ के पुल थे। इन दोनों के निकट भी लुई ने अपने आदमी तैनात कर रखे थे। उन्हें आज्ञा दे दी गई थी कि आव-श्यकता पड़ने पर तुरन्त पुलों में आग लगा दी जाय। ग्रोनिंजन के एक मकान की छत पर एल्वा ने चढ़कर देखा कि शत्रु बहुत सुरक्षित स्थान में बैठा है। उसने पाँच सौ चुने हुए

जवानों को इसलिए आगे भेजा कि किसी तरह शत्रु को लालच देकर खाई से बाहर निकाल लिया जाय। परन्तु लुई के सैनिकों ने बाहर निकलने की इच्छा नहीं दिखाई। सब जहाँ के तहाँ डटे रहे। एल्वा ने और एक हज़ार जवान भेजे। लुई की सेना में पिछले दिन ही बलवा हो चुका था, इसलिए उसे अपनी सेना पर विश्वास नहीं रहा था। जैसे बने वैसे वह पीछे हट जाने की ताक में था। एल्वा के एक हज़ार नये जवानों के आगे बढ़ने पर भी उसने अपनी सेना को बाहर नहीं निकलने दिया। दिन भर ऐसे ही बीता। शाम को लुई के सैनिकों से न रहा गया। बाहर मैदान में निकलकर स्पेन की सेना से लड़ने लगे। कुछ ही मिनटों में स्पेन वालों ने राष्ट्रवादियों की सेना को तितर-बितर कर डाला। लुई के लोग पीछे खाइयों की ओर भागे। उनको भागते देख सारी सेना भाग उठी। उन्हों ने इतना अच्छा किया कि पुलों में आग लगाकर भागे। परन्तु इनके पैर उखड़ते ही स्पेन के सिपाही भूखे भेड़ियों की तरह झपटे। अपने जलते हुए कपड़ों और दाढ़ियों की चिन्ता न करके काठ के पुलों पर उठती हुई ज्वालाओं को चीरकर दौड़े। कुछ नदी में से तैरकर पार आये। सवारों ने अपने घोड़े नदी में डाल दिये। स्वयं घोड़ों की पूँछ पकड़कर घोड़ों को भालों से हाँक-हाँककर पार ले आये। मैदान में पहुँचते ही स्पेन के सिपाहियों ने ३०० देश-भक्तों को जमीन पर सुला दिया और लगभग इतने ही देशभक्त खाई-खन्दकों में गिरकर मर गये। रात हो जाने से शेष को भाग जाने का मौका मिल गया।

पाँच दिन बाद एल्वा एम्स नदी के किनारे रीडन ग्राम

में पहुँचा। उसका विश्वास था कि लुई अवश्य यहीं होगा। यह स्थान बड़े मार्के का था। यहाँ एम्स नदी पर एक पुल था। उसे पार करते ही जर्मनी की सरहद आ जाती थी। यदि लुई ने युद्ध के लिए यह जगह चुनी होती तो खूब निर्भय होकर देर तक लड़ सकता था क्योंकि मौका पड़ने पर तुरन्त पार करके सेना-सहित जर्मनी में घुस जा सकता था। ऑरेञ्ज स्ट्रासबर्ग में बैठा नेदरलैण्ड के बीचोबीच में घुस पड़ने का प्रयत्न कर रहा था। उस को भी सहायता मिल जाती। परन्तु लुई ने बड़ी भूल की; उसने रीडन के बजाय जेमिंजन नाम का स्थान चुना था। वहां जाकर वह बिल्कुल एक कोने में फँस गया था। एल्वा लुई को एक कोने में फँसा देखकर बड़ा ही खुश हुआ।

लुई की सेना करीब १० हजार थी। परन्तु सब सैनिक बलवा करने की धमकियाँ दे रहे थे। उन्हें बहुत दिनों से वेतन नहीं मिला था। हाल ही में उन्हों ने कहीं सुन लिया था कि लुई के पास सोना आया है। इसलिए वे सब दुन्द मचाने लगे कि सोना हम को बाँट दिया जाय। लुई ने सैनिकों को खाली खजाना खोलकर दिखा दिया और कहा—"सोना-ओना तो कहीं है नहीं परन्तु यदि स्पेन वालों के हाथों कुत्तों की मौत मरने की इच्छा न हो तो लड़ने के लिए जल्द ही कमर बाँधकर तैयार हो जाओ। देर लगाओगे तो एक की जान न बचेगी।" बड़ी मुश्किल से समझा-बुझाकर लुई ने सैनिकों को लड़ने के लिए तैयार किया। लुई ने सोचा कि जिधर से स्पेन की सेना आने वाली है उस मार्ग में समुद्र का बाँध खोलकर अगर पानी भर दिया जाय तो सेना का रास्ता बन्द हो जायगा। तुरन्त

उसने बहुत से आदमियों को एक दम जाकर बाँध काट देने का हुक्म दिया। स्वयं भी फावड़ा लेकर बाँध पर जा डटा। मनुष्यों को बाँध काटने के काम पर लगाकर लुई लौट आया और सेना को युद्ध के लिए तैयार करने लगा। कुछ भाग बाँध का काटते ही घुटनों तक तथा कहीं-कहीं कमर तक पानी आ पहुँचा। इतने में ही स्पेन की सेना का अगला भाग दौड़ता हुआ आया। और बाँध पर कब्जा कर लिया। बांध तोड़ने वाले सब मनुष्य वहाँ से भाग आये। बाँध पर शत्रु का का अधिकार हो जाने से लुई को बड़ा दुःख हुआ। सारी सेना लेकर लुई बाँध की तरफ झुका। उसकी इच्छा थी कि जैसे बने तैसे बाँध पर कब्जा जमाकर काम पूरा कर दिया जाय। परन्तु स्पेन वाले ऐसे निश्चल होकर लड़े मानो पृथ्वी में पाँव गड़ाकर लड़ रहे हों। बाँध का जो भाग टूट गया था उसे फिर भर लिया। लुई की सेना को अपने स्थान पर लौट आना पड़ा। एल्वा ने रीडन से कूच कर दिया। यहाँ भी उसने ग्रोनिंजन की चाल चलकर देश-भक्तों को नष्ट कर डालने का निश्चय किया था। रीडन के पुल, रास्तों और खलियानों पर एल्वा ने अपने आदमी तैनात कर दिये थे। किसी तरफ देश-भक्तों को भागकर निकल जाने के लिए मार्ग नहीं छोड़ा गया था। एल्वा की चाल फिर सफल हुई। जैसे ही देशभक्त एल्वा की सेना पर आक्रमण करने के लोभ में पड़कर खाइयों से बाहर निकले स्पेनवालों ने झपटकर ७०० मनुष्यों को थोड़ी ही देर में मैदान में बिछा दिया। स्पेन की तरफ के कुल सात मनुष्य काम आये। जो देशभक्त शेष रह गये थे वे हथियार फेंककर भाग खड़े हुए। लुई ने इन कायरों को तल-

कार कर लड़ने के लिए लौटाने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु भगदड़ में उसकी कौन सुनता था ? बेचारा अकेला ही जाकर कुछ देर तक अपने हाथों सारी तोपें दागता रहा। परन्तु जिन तोपों के लिए बीसों हाथों की आवश्यकता थी वहाँ दो हाथ कहाँ तक काम कर सकते थे ? अब उसे विजय की कुछ आशा न रही। निदान वह अपने कुछ साथियों को लेकर एम्स में कूद पड़ा और तैरकर उस पार जर्मनी की सीमा में घुस गया। इधर दो दिन तक स्पेन वाले भागे हुए सैनिकों को खन्दकों, झाड़ियों और अन्य छिपने की जगहों से निकाल-निकालकर मारते और जलाते फिरे। एक लेखक लिखता है—"स्पेन की फ़ौज में ऐसा कोई छोकरा भी नहीं था जिसका किसी मनुष्य का सिर काटने अथवा जिन्दा जलाने का हौसला पूरा न हुआ हो।" एल्वा विजय-पताका फहराता हुआ ग्रोनिजन लौट गया। रास्ते भर विजय के नशे से पागल एल्वा के सिपाहियों ने जवान स्त्रियों की इज्जत नष्ट की; बुढ़ियों को क़त्ल किया और गरीब किसानों के झोंपड़े फूँके। जनता अनाथ और असहाय थी। सैनिकों के पास हथियार थे इसलिए उनके मन में जो आता था, करते थे। इतना अत्याचार हुआ था कि संगीन-दिल एल्वा तक को अपने कुछ सैनिकों को फाँसी देने को मजबूर होना पड़ा तब कहीं जाकर स्पेन वालों का हाथ रुका। ग्रोनिजन पहुँचकर एल्वा ने पंचायत की बैठक बुलाई और राजभक्ति का उपदेश देते हुए लोगों को ठीक तरह से रहने की चेतावनी दी। ग्रोनिजन में लड़ाई का एक किला बनाने का हुक्म देकर वह एम्सटर्डम होता हुआ यूटरेक्ट गया। वहाँ उसका पुत्र सेना लेकर आ पहुँचा

था। एल्वा ने २०००० पैदल और ८००० सवारों की सारी सेना का मुआयना किया। प्रान्त पर विजय प्राप्त हो चुकी थी, इसलिए इतनी फौज की अब आवश्यकता न थी। रुपये की बहुत आवश्यकता थी। एल्वा ने यूटरेक्ट की एक बड़ी अमीर विधवा को धर्म-विरुद्ध आचरण करने का अपराध लगाकर फाँसी पर चढ़ा दिया और उसका सारा धन जब्त करके शाही खजाने में रख लिया। ब्रसेल्स लौटकर एल्वा ने लोगों की जान लेने और जलाने का काम फिर जोर--शोर से प्रारम्भ कर दिया। उत्तरीय प्रान्त फ्रीसलैंड को दबा लेने से एल्वा का हौसला बढ़ गया था। एग्मांएट का मन्त्री बकरजील और हार्न का मन्त्री लाल्डू तथा एण्टवर्प के बर्गोमास्टर इत्यादि अभी तक जेलखाने में बंद थे। शिकंजे में रोज कसकर उन्हें अधमरा कर दिया गया था। अन्त को कुर्सी पर बाँधकर उन अभागों का सिर उड़ा दिया गया। ब्रेबेण्ट का कोतवाल जनता पर इतना जुल्म करता था कि उसका नाम ही 'खूनी डंडा' पड़ गया था। परन्तु एल्वा ने उस पर रिश्वतें लेकर दोषी आदमियों को छोड़ देने का अपराध लगाया और फाँसी पर चढ़ा दिया। बेचारे कोतवाल को अपने जीवन-काल में कभी विचार भी नहीं आया होगा कि जिस फाँसी पर वह निर्दय बनकर लोगों को दिन-रात चढ़ाया करता था उसी पर किसी दिन उसे भी मरना पड़ेगा।

देशभक्तों ने जहाँ-जहाँ प्रयत्न किया था वहां-वहां उन्हें एक छोटी-सी हीलीगरली की विजय के अतिरिक्त बुरी तरह पराजय ही मिली थी। परन्तु इससे ऑरेञ्ज ज़रा भी विचलित नहीं

हुआ। हां, दुःख उसे अवश्य हुआ। लुई ने फ्रीसलैण्ड में ऑरेञ्ज के बताये हुए ढग के बिलकुल विरुद्ध ढग पर युद्ध किया था। परन्तु हार के बाद ऑरेञ्ज ने लुई पर क्रोध नहीं किया। वरन् सान्त्वना देते हुए लिखा—"भाई! निराश मत होना। भगवान की जो इच्छा होती है वही होता है।" इस समय से शाहजादा ऑरेञ्ज में एक और नया परिवर्तन शुरू होता है। अभी तक वह सनातन रोमन कैथलिक पन्थ में विश्वास करता चला आया था। प्रोटेस्टेण्ट इत्यादि दूसरे पन्थों के लोगों पर अत्याचार करने के विरुद्ध था। परन्तु अब उसका भी हृदय सनातन-धर्म को ओर से फट गया। अभी तक ऑरेञ्ज सांसारिक चिन्ताओं और सांसारिक कार्यों में ही लिप्त रहा था। अब उसका मन भगवान् की ओर भी फिरा। चारों ओर क्लेश, आपदायें और अपनी असहाय अवस्था देखकर उसका विश्वास हो चला कि जो भगवान् करता है वही होता है, परन्तु उसका यह विश्वास संसार में असफल रहने वाले अकमेरायता के पुजारी, जवानी में रणक्षेत्र छोड़ चिमटा लेकर भाग उठने वाले निकम्मे पुरुषों का विश्वास नहीं था। ऑरेञ्ज भगवान् पर भरोसा रखकर डंका बजाते हुए रणक्षेत्र में प्रवेश करने वाला मनुष्य था। विजय और पराजय भगवान् के हाथ अवश्य समझता था। इस समय के अपनी स्त्री को लिखे हुए एक पत्र से उसकी मनोदशा का पता चलता है। वह लिखता है—

"मैं कल चल दूंगा। कब लौटूँगा और कब तुम्हारा मुँह देख सकूँगा, कुछ ठीक नहीं। मैंने तो अपने को भगवान् के हाथों में सौंप देने का निश्चय कर लिया है। जिधर उसकी इच्छा

होगी मुझे ले जायगा। मुझे स्पष्ट दीखता है कि मेरा यह जीवन मेहनत और कष्ट में ही कटेगा। परन्तु मैं सन्तुष्ट हूँ। भगवान् की ऐसी ही इच्छा है। मैंने जिन्दगी भर घोर पाप किये हैं। जो दण्ड मुझे दिया जाय थोड़ा है। मेरी भगवान् से केवल यही प्रार्थना है कि दया करके कष्ट झेलने की शक्ति मुझे दे।"

लुई की जेमिंजन में हार होते ही ऑरेञ्ज के सारे जर्मनी के मित्र ढीले पड़ गये। सब उसको सलाह देने लगे कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, चुप होकर बैठना ही ठीक है। नेदरलैण्ड को बचाना तुम्हारी शक्ति के बाहर है। जर्मनी के सम्राट ने फिलिप को नेदरलैण्ड और ऑरेञ्ज के सम्बन्ध में एक पत्र लिखा था इसलिए सब की राय थी कि पत्र का उत्तर आने तक ऑरेञ्ज को खामोश रहना चाहिए। जो आदमी ऑरेञ्ज के साथ लड़ने को तैयार थे लुई की हार से उनके उत्साह पर भी पानी पड़ गया था। परन्तु ऑरेञ्ज ने किसी की कुछ चिन्ता न की। अपनी तैयारी में लगा रहा। मई सन् १५६८ में जर्मन सम्राट ने ऑरेञ्ज को स्पष्ट लिखा—"यदि तुम जर्मन-साम्राज्य के भीतर मेरे भाई फिलिप के विरुद्ध सेना अथवा युद्ध की अन्य सामग्री एकत्र करने का प्रयत्न करोगे तो तुम्हारी सारी जागीर, उपाधियां इत्यादि जब्त करली जांयगी और तुम्हें बड़ी बेइज्जती के साथ जर्मनी से निकाल दिया जायगा।" ऑरेञ्ज इस धमकी की जरा भी चिन्ता न करके अपना काम करता रहा। जिस देश की रक्षा करना उसने अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था वहां लोग दिनरात अत्याचारों से पीड़ित होकर त्राहिमाम्-त्राहिमाम् चिल्ला रहे थे। भला फिर ऑरेञ्ज हाथ पर

हाथ रखकर कैसे बैठ सकता था ? उसने सम्राट को उत्तर में लिखा—

"मैं फिलिप से लड़ने की तैयारी नहीं कर रहा हूँ । फिलिप-जैसा दयावान राजा ऐसे क्रूर आदेश कभी नहीं निकाल सकता । जो कुछ अत्याचार नेदरलैण्ड की अनाथ प्रजा पर हो रहा है वह सब एल्वा की करतूत है । एल्वा के घोर अत्याचार से प्रजा का त्राण करने का मैं प्रयत्न कर रहा हूँ । मैंने 'उत्तर' नाम की एक पत्रिका छपवाकर बटवाई है । उसमें अपने विरोध के जो कारण बताये हैं उसे पढ़कर श्रीमान् समझ जायंगे कि मैंने धर्म और शान्ति के लिए ही हथियार उठाये हैं । मुझे आशा है कि श्री महाराज मेरे मार्ग में कोई बाधा खड़ी न करके स्वयं नेदरलैण्ड के गरीब, अनाथ और अत्याचार-पीड़ित लोगों की रक्षा करने में मुझे सहायता करेंगे ।" इसी समय ऑरेञ्ज ने एल्वा के प्रति युद्ध की एक घोषणा भी छपवाकर बटवाई । यदि नेदरलैण्ड के इस संकट के समय ऑरेञ्ज न रहा होता तो नेदरलैण्ड गुलामी में पड़ा-पड़ा सड़ा करता । यदि नेदरलैण्ड की जनता का हृदय स्वतंत्रता के लिए न चीख रहा होता तो ऑरेञ्ज का सारा प्रयत्न व्यर्थ गया होता । ऑरेञ्ज अपने देश के लोगों का हृदय अच्छी तरह पहचानता था । देश के लोगों की ऑरेञ्ज पर अटल श्रद्धा थी । ऑरेञ्ज एक छोटे से प्रान्त का सूबेदार था । परन्तु उसने निर्भय होकर यूरोप के सबसे शक्तिशाली राजा के विरुद्ध नेदरलैण्ड की रक्षा में अपना हाथ ऊंचा किया था । अपना निजी धन खर्च करके बड़ी कठिनता से उसने करीब २०००० सेना एकत्र कर ली । संसार तथा विशेषतः नेदरलैण्ड वालों की जानकारी

के लिए अपने उद्देश और आशाओं की घोषणा निकाली। ऑरेञ्ज ने यह अपील भी की कि जनता के कार्य के लिए रुपये की बड़ी जरूरत है। अमीरों को अपनी थैलियों का मुँह खोल देना चाहिए; गरीबों को झोलियां उलट देनी चाहिए। परन्तु इस अपील का अधिक असर नहीं हुआ। नेदरलैण्ड के सरदारों और व्यापारियों की ओर से ३ लाख के वचन मिले थे। मगर कठिनाई से १ लाख मिल सका। एक गरीब पादरी निर्वासित निर्धनों से कुछ पैसे इकट्ठा करके जानपर खेलकर ऑरेञ्ज के पास पहुँचा। ऑरेञ्ज के हृदय पर इस बात का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। वह बोला—"यह गरीबों का भेजा हुआ धन अमूल्य है। रकम की ओर ध्यान न देकर उन गरीबों के भावों का विचार करना चाहिए जिन्होंने अपना पेट काटकर ये थोड़े--से पैसे भेजे हैं।"

सितम्बर में ऑरेञ्ज ने अपनी सेना ट्रेव्स प्रान्त में एकत्र की। तीस हजार सेना में ९ हजार सवार थे। लूमी काउण्ट डेलामार्क भी अपने छटे हुए जवानों की एक टुकड़ी लेकर आ मिला। सरदार लूमी एग्मोण्ट का कुटुम्बी था। उसने प्रतिज्ञा की थी कि जबतक देश स्वतन्त्र नहीं हो जायगा या जबतक एग्मोण्ट का बदला नहीं चुका लूँगा तबतक न सिर के बाल कटाऊँगा, न दाढ़ी ही मुड़ाऊँगा। इस आक्रमण में देशभक्तों के भाग्य में बहुत जयमालायें नहीं लिखी थीं। ऑरेञ्ज सेण्टफीट नाम के अपनी जागीर के गाँव के निकट राइन नदी पार करके नदी के किनारे-किनारे कोलोन तक उतर आया। जूलियर्स और लिम्बर्ग के आस-पास उद्देश्य-रहित सा घूम-घामकर एक दिन चाँदनी रात में उसने अचानक सेना-सहित स्टौचेम के निकट

मियूज नदी पार की। नदी पार करने में बड़ी वीरता और होशयारी से काम लिया गया था। घुड़सवार धार के बीच में दो क़तारें बनाकर खड़े होगये थे। उनके बीच में से सारी सेना मजे से नदी पार कर गई। संसार के प्रख्यात महारथी जूलियस सीजर ने भी इसी प्रकार कई बार नदियाँ पार की थीं। मियूज में इस समय पानी कम था। फिर भी सैनिकों के गले तक था। तीस हजार सेना का इस तरह मियूज पार कर जाना बड़ी बहादुरी का काम समझा गया। चारों ओर समाचार फैल गया। स्पेन वाले ऑरेञ्ज के नाम पर घृणा से मुँह सिकोड़ा करते थे। परन्तु यह खबर सुनकर उनके दिल दहल गये। सरकार की ओर से खबर बिल्कुल झूठी मानी गई। यहां तक कि एम्सटर्डम के एक निवासी को इसलिए कोड़ों की सजा दी गई कि वह यह खबर उड़ाता फिरता था। एल्वा ने जब विलियम ऑरेञ्ज के सेना-सहित एक रात में नदी पार कर आने का समाचार सुना तो उसे विश्वास नहीं हुआ। बोला—"ऑरेञ्ज की सेना में मनुष्य है या बत्तखें? मियूज-जैसी नदी इस प्रकार कैसे पार की जा सकती है?" परन्तु ऑरेञ्ज की सेना में मनुष्य हों या बत्तखें, बात सच्ची थी। शहजादा विलियम को देशनिकाले का हुक्म था। परन्तु वह तीस हज़ार सङ्गठित सेना लिए ब्रेबण्ट की सरहद पर जा बैठा और एल्वा से एकदम भिड़ जाने का मौका देखने लगा। जेमिंजन की भयङ्कर हार का विलियम को कलंक मिटाना था। उसने सोचा —"यदि मैं इतनी सेना लेकर देश में घुस पड़ूंगा तो चारों ओर से देश के हजारों आदमी भी आ मिलेंगे। अत्याचारियों पर एक विजय मिलते ही फिर देश का

बच्चा-बच्चा साथ हो जायगा।" इसलिए वह झंडे फहराकर रण-वाद्य का घोर नाद करते हुए ब्रेबेण्ट में ऐसे घुसा था मानो किसी विजयी सेनापति ने प्रवेश किया हो। ऑरेञ्ज ने बढ़कर एल्वा की छावनी से केवल छः हज़ार कदम की दूरी पर अपना डेरा डाल दिया। उसकी इच्छा थी कि जैसे भी हो शत्रु को लड़ने के लिए लालच देना चहिए। एल्वा का पड़ाव कासरस्लेजा नाम के स्थान पर था। उसके पीछे मेसट्रिश्ट नगर था। वहां से एल्वा को रसद मिलती थो। ऑरेञ्ज ने एल्वा के पास एक दूत को सन्देशा लेकर भेजा कि लड़ाई के बन्दी कत्ल न किये जाँय। दोनों पक्ष कैदियों को आपस में बदल लें। दूत एल्वा के पास पहुँचकर घोड़े से उतरा ही था कि तुरन्त पकड़कर सूली पर चढ़ा दिया गया। ऑरेञ्ज के एक समुचित सन्देश का ऐसा अमानुषिक उत्तर दिया गया। एल्वा तो केवल लड़ना जानता था। लड़ाई के पहले विद्रोहियों से बात नहीं करता था। लड़ाई के बाद शत्रु पर दया दिखाना नहीं जानता था। मारना, काटना, जलाना ही उसे आता था। ऑरेञ्ज की तरह लोगों की जान बचाने की उसे चिन्ता नहीं थी।

एल्वा ने विचार लिया था कि ऑरेञ्ज कितना ही लड़ने के लिए लालच दे परन्तु मैं हमला नहीं करूँगा। उसे विश्वास था कि यहाँ बिना लड़े ही जीत हो जायगी। फ्रीसलैंड की बात दूसरी थी वहां लड़ने की बहुत जरूरत थी। लुई के स्पेन की वीर सेना को एकबार हरा देने के कारण देश में उत्साह फैल गया था। चारों ओर से आदमी आ-आकर लुई से मिल रहे थे। इस उत्साह को शीघ्र भङ्ग कर देने की जरूरत थी। परन्तु यहाँ

लड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी। पिछली हार से देश में निरुत्साह और भय छा गया था। कहीं से ऑरेञ्ज को कोई सहायता मिलने की आशा नहीं थी। फ्रीसलैंड में लोगों ने लुई की सहायता इसलिए भी की थी कि दूसरी ओर से ऑरेञ्ज की तैयारी के समाचार आ रहे थे। लोगों को आशा थी कि ऑरेञ्ज और लुई की सेना का मिलाप हो जाने से देशभक्तों के पास बड़ी भारी शक्ति हो जायगी। ऐसी अवस्था में कायरों को भी लुई की सहायता करना ही अधिक उपयुक्त जँचता था। लुई की हार हो जाने से कहीं से सहायता मिलने की आशा न रही थी। अकेला ऑरेञ्ज मैदान में था। उसकी सेना देशभक्तों की अन्तिम आशा थी। एल्वा समझता था कि फ्रीसलैण्ड में सरकार की भी हार हो जाती तो अधिक हानि नहीं थी। देश का एक कोना ही तो हाथ से निकल जाता। ब्रेबेण्ट नेदरलैण्ड का केन्द्र था। यहाँ हार जाने से सारे देश में क्रान्ति हो जाने का भय था। एल्वा डण्डे के बल पर राज्य करता था। ऑरेञ्ज लोगों के हृदय का राजा था। यदि एल्वा हार जाता तो उसे कहीं पैर रखने को भी ठिकाना नहीं मिलता। ऑरेञ्ज को विजय मिलते ही लोग सिर आँखों पर उठा लेते। एल्वा को विश्वास तो था कि मेरी सेना मैदान में बढ़कर ऑरेञ्ज को हरा सकती है परन्तु वह खतरा उठाना ठीक नहीं समझता था क्योंकि ऑरेञ्ज के पास काफी सेना थी। एल्वा के पास केवल पन्द्र-सोलह हजार पैदल और ५५०० सवार थे। जाड़े का मौसम आ पहुँचा था। एल्वा ने सोचा कि 'ऑरेञ्ज की सेना स्वयं ही ठण्ड के कारण भाग जायगी। सैनिकों का वेतन चुकाने के लिए भी ऑरेञ्ज के पास रुपया

नहीं है । लूटमार की भी आशा न रहने से कुछ ही सप्ताह में फौज निराश होकर लौट जायगी ।' शत्रु की सेना को जब इस चाल से ही कुछ दिन में तितर-बितर किया जा सकता था तो फिर मुठभेड़ करके ऑरेञ्ज को जीत का मौका देना सरासर मूर्खता थी । ऑरेञ्ज के पाँव देश में गड़ जाने से फिलिप का साम्राज्य संकट में पड़ जाता ।

एल्वा ने ऑरेञ्ज को लड़ाई का मौका न देने का दृढ़ संकल्प कर लिया और यहां उसने लुई की लड़ाई से भी अधिक युद्ध-कौशल दिखलाया । एक मास तक दोनों पक्ष की सेनायें एक दूसरे के सम्मुख पड़ी रहीं । २९ बार ऑरेञ्ज ने अपना पड़ाव बदला । परन्तु जिधर वह जाता था उधर ही सामने एल्वा का पड़ाव आ लगता था । तीन बार तो दोनों सेनायें एक दूसरे के निशाने के भीतर पड़ी रहीं । दो बार दोनों सेनाओं के बीच में खुले मैदान के अतिरिक्त कोई खाई या खन्दक नहीं थी । लोग एल्वा के भय से ऑरेञ्ज को रसद देने से इन्कार करते थे और एल्वा ने प्रान्त भर की आटा पीसने की चक्कियां तोड़वा डाली थीं । आटा पीसने का जब साधन ही नहीं था तो ऑरेञ्ज को आटा मिलता कहाँ से ? उसकी सेना में वेतन न मिलने से तथा लूट का मौका हाथ न लगने से उपद्रव होने लगा । एकबार तो ऑरेञ्ज की कमर से उपद्रवी सैनिकों ने तलवार तक छीन ली । बड़ी कठिनाई से उस ने बलवा रोका । एल्वा की चालों से उसकी सेना ऊब उठी थी । एल्वा की सेना सामने ही लड़ाई के लिए तैयार दीखती थी । जब ऑरेञ्ज के सैनिक लड़ने की तैयारी करते तो भूत की तरह एल्वा की सेना क्षण भर में लुप्त हो जाती । जाड़ा आ जाने

से कष्ट भी बढ़ चला था। सरदार जेनलिम एक फ्रान्सीसी सेना लिए ऑरेञ्ज से वेवरन पर मिलने की राह देख रहा था। ऑरेञ्ज और उसकी सेना के बीच में गीटा नदी बहती थी। ऑरेञ्ज अपनी सेना के साथ गीटानदी के पार जाने लगा। पीछे रक्षा के लिए सरदार ह्यूसट्रेटन की अध्यक्षता में तीन हजार सैनिकों को एक पहाड़ी पर रख दिया। एल्वा ने अपने लड़के डॉन फ्रेडरिक को चार हजार पैदल और तीन हजार सवार लेकर ह्यूसट्रेटन की सेना नष्ट कर डालने के लिए भेजा। उसने थोड़ी ही देर में सारी सेना नष्ट कर डाली और एल्वा के पास तुरन्त एक दूत द्वारा सन्देशा भेजा कि 'मैंने अपना काम पूरा कर दिया है। आप सारी सेना लेकर आगे बढ़िए और शत्रु की शेष सेना को भी नष्ट कर डालिए।' एल्वा ने दूतसे चिल्लाकर कहा—"डॉन से पूछना कि वह सेनापति है या मैं? एक आदमी भी नदी के उसपार न जाय। अगर दूसरा दूत तेरी तरह सन्देशा लेकर आया तो कसम खाकर कहता हूँ उसका सिर उड़ा दूँगा।" दूतने उलटे पांव जाकर एल्वा का हुक्म डॉन को सुना दिया। पहाड़ी के तीन हजार आदमियों में से करीब दो सौ मनुष्य भागकर एक मकान में जा छिपे थे। स्पेन के सैनिकों ने उस घर में आग लगा दी और चारों ओर भाले लेकर खड़े हो गये। जो निकलकर भागने का प्रयत्न करता उसे भाले से छेदकर मार डाला जाता था। कुछ सैनिक आग में भुन गये; कुछ स्पेन वालों के भालों का शिकार बने। कुछ ने स्नेह से गले लगाकर स्वयं ही एक दूसरे को मार डाला। स्पेन वाले शत्रुओं को अग्नि में भुनता देखकर ठट्ठे लगाते थे मानों नाटक में विदूषक का अभिनय देखकर प्रसन्न हो रहे हों। देश-

भक्तों के तीन हज़ार सिपाही काम आये । परन्तु सबसे बड़ी हानि ह्यूग्सट्रेटन की मृत्यु से हुई । युद्ध में अपनी ही पिस्तौल का एक मामूली घाव लग जाने से ह्यूग्सट्रेटन तीन-चार दिन बीमार रहकर मर गया ।

इस विजय के बाद भी एल्वा लड़ाई से जहाँतक संभव था बचने का ही प्रयत्न करता रहा । उसकी सारी सेना लड़ने को उत्सुक थी । एक सरदार को तो इतना क्रोध आया कि पिस्तौल जमीन पर पटककर एल्वा से बोला--'आप कभी लड़ने नहीं देंगे ।' एल्वा ने सरदार के उत्साह की सराहना की परन्तु हँसते हुए बोला—"सैनिकों का काम लड़ना है; जीतना सेनापति का काम है । यदि बिना रक्तपात किये ही विजय मिल जाय तो सब से अच्छा है ।" ऑरेञ्ज की युद्ध की अभिलाषा एल्वा ने पूरी नहीं होने दी । देश की कुम्भकर्ण-निद्रा से भी ऑरेञ्ज को बड़ी निराशा हुई । किसी स्थान पर देश-वासियों ने उसका साथ नहीं दिया । किसी नगर ने उसके स्वागत को द्वार नहीं खोले; चारो ओर लोग भय से दुम दबाये गरदन नीची किये बैठे थे । ऑरेञ्ज के सैनिक ऊबकर बलवा करने लगे । जो एल्वा ने सोचा था वही सच्चा होता दिखाई देने लगा । फ्रांस में नवीन पन्थ के लोग अपने सनातनी राजा चार्ल्स नवम् का मुक़ाबला कर रहे थे । उन्होंने आरेञ्ज को अपनी सहायता के लिए आमंत्रित किया था । परन्तु आरेञ्ज के सैनिक एल्वा से लड़ने आये थे; चार्ल्स से नहीं । वे सब जर्मनी लौट जाने को उत्सुक थे । निदान आरेञ्ज फ्रान्स होता हुआ जर्मनी लौट गया । स्ट्रासबर्ग में पहुँचकर उसने सारी सेना को छुट्टी दे दी । अपना माल-असबाब, बरतन-भाड़े, मेज़-कुर्सी गिरवी

रखकर आरेंञ्ज जितना रुपया इकट्ठा कर सका उतना उसने सैनिकों की भेंट किया। शेष अपनी जागीर वापिस मिलने पर अदा कर देने का वादा किया। उसने कहा—"यदि मैं फ्रान्स से लौटकर भी तुम्हारा रुपया न अदा कर सका तो मेरे शरीर पर तुम्हारा अधिकार होगा। फिर तुम्हारा जो जी चाहे करना।" एल्वा की चाल सफल हुई। आरेंञ्ज का सारा प्रयत्न निष्फल गया। जिस सेना पर सारे देशभक्तों की आँखें लगी थीं वह बिना लड़े ही तितर-बितर हो गई। ८ हजार सैनिक लुई की लड़ाइयों में काम आये थे। बीस हजार निराश होकर लौट गये। जो कुछ रुपया एकत्र हो सकता था, आरेंञ्ज ने किया था। परन्तु सारा धन व्यय हो गया और कुछ हाथ न आया। नेदरलैंड के उद्धार की आशा न रही। फ्रांस में स्वतन्त्रता का संग्राम छिड़ गया था। आरेंञ्ज अपने दो भाई लुई और १८ वर्ष के छोकरे हेनरी को लेकर इस युद्ध में भाग लेने चला गया। हेनरी कालेज छोड़कर अपने भाइयों के साथ स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ने आया था। अपने भाइयों की तरह ही उसने भी अपने कुटुम्ब के रक्त का अच्छा परिचय दिया। एल्वा आरेंञ्ज को भगाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। ब्रसेल्स लौटकर उसने खूब दावतें दीं। नागरिकों को दीपावली करने और फूल-पत्तों से घर सजाने तथा अपनी राह में फूल बिछाने का हुक्म दिया। खुशी के बाजे चारों ओर बजने लगे। एल्वा ने अपनी एक बहुत बड़ी मूर्ति भी बनवाकर एण्टवर्प के क़िले में स्थापित कर दी। खैर किसी तरह नेदरलैंड में शोक के बाजों के स्थान पर हर्ष-वाद्य तो बजे! थोड़े ही समय के लिए सही। मगर दरवाजों पर लाशों की बजाय पुष्प-मालायें तो लटकीं।

आरेंञ्ज की निष्फलता से उसके जर्मनी के सारे मित्र ठण्डे पड़ गये। फ़िलिप की स्त्री भी मर गई थी। शहंशाह जर्मनी अपनी लड़की का विवाह फ़िलिप से करना चाहता था; इसलिए वह भी फिलिप के पक्ष में हो गया।

ब्रसेल्स लौटने के कुछ ही दिन बाद एल्वा और इङ्गलैण्ड की महारानी में झगड़ा छिड़ गया। स्पेन से एल्वा के लिए खज़ाना आ रहा था। महारानी ने साधारण-सा बहाना ढूंढकर उसे ज़ब्त कर लिया। एल्वा को जब खबर मिली तो उसने दो आदमियों को महारानी से इस सम्बन्ध में बातचीत करने भेजा। महारानी उन मनुष्यों से न मिलीं वरन् बोलीं—"क्या एल्वा कोई तख्तनशीन बादशाह है जो मुझ से बातचीत करने को आदमी भेजता है?" एल्वा यह डाट सुनकर बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने नेदरलैण्ड में रहने वाले सारे अंग्रेजों का माल ज़ब्त कर लेने का हुक्म निकाल दिया। उत्तर-स्वरूप महारानी ने इङ्गलैण्ड में रहने वाले नेदरलैण्ड-वासियों की ज़ब्तियां शुरू कर दीं। एल्वा और एलिज़बेथ के झगड़े में नेदरलैण्ड के व्यापार का बड़ा नुक़सान हुआ। परन्तु इस झगड़े के समय भी एल्वा अपना मुख्य कार्य्य नहीं भूला था। सनातनधर्म के विरोधियों को रोज़ भट्टियों में झोंकने और सूली पर चढ़ाने का काम जारी था। सरकार का हुक्म था कि देशभर में दाइयां केवल सनातनधर्मी ही हों। जिससे जो बच्चा पैदा हो उसकी ठीक-ठीक सूचना सरकार को तुरन्त लग जाय और बच्चा सनातनधर्मी बना लिया जाय। असंख्य जासूस केवल यह देखते फिरते थे कि यदि किसी ने मरते समय सनातन-धर्म की प्रार्थना न की हो तो सरकारी

हुक्म के अनुसार उसकी जायदाद ज़ब्त कर ली जाय और उसकी लाश बाज़ारों में घसीटकर अपमानित की जाय। एल्वा की इन सब धार्मिक सेवाओं और आरेंज इत्यादि पर विजय से प्रसन्न होकर पोप ने रोम से एल्वा के लिए जवाहरात से जड़ा हुआ एक टोप और एक तलवार भेजी। साथ आशीर्वाद भेजा कि "धर्म और ईश्वर का हाथ तुम्हारे सिर पर है। यह टोप उस ताज की निशानी है जो तुम्हें स्वर्ग में पहनाया जायगा।" ईसा-मसीह के स्वनियोजित स्थानापन्न का आशीर्वाद पाकर एल्वा का उत्साह और बढ़ गया।

एल्वा का विश्वास था कि लोगों की जब्तियों से स्पेन के लिए एक स्थायी सोने की गंगा बह उठेगी। परन्तु उसका विश्वास पूरा नहीं हुआ। नेदरलैण्ड से आमदनी बढ़ने के बजाय और कम हो गई। एल्वा जैसा युद्धशास्त्री था वैसा ही अपने को अभिमान में अर्थ-शास्त्री भी समझने लगा था। उसने कहानी के प्रसिद्ध मूर्ख की तरह मुर्गी का पेट फाड़कर सोने के अण्डे निकालने का निश्चय किया। नेदरलैण्ड में प्राचीन काल से कर के सम्बन्ध में एक प्रथा चली आती थी। वह यह थी कि जितने कर की राजा को आवश्यकता होती थी वह जनता की पंचायतों को बुलाकर माँगता था। पंचायत के प्रतिनिधि जाकर जनता की राय लेते थे। यदि जनता राजा की माँग स्वीकार कर लेती थी तो कर भर दिया जाता था। अन्यथा राजा को अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी ऐसे दूसरे सुअवसर की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी जब पंचायतें उसकी माँग स्वीकार कर लें। नेदरलैण्ड के कानूनों के अनुसार किसी को इस प्रथा में हस्तक्षेप करने का

अधिकार नहीं था। कर के सम्बन्ध में निश्चय करना प्रजा का अधिकार था। मगर एल्वा को यह बात कैसे सहन हो सकती थी? जिस देश के प्रत्येक मनुष्य को विद्रोही क़रार देकर प्राण-दण्ड का अपराधी ठहरा दिया गया था उस देश की प्रजा के अधिकारों की चिन्ता ही कौन करता? एल्वा ने सारी पंचायत बुलाकर मनमाना हुक्म सुनाया—"सारी जायदाद पर एक सैकड़ा कर तुरन्त सरकार को देना होगा। यह कर स्थायी नहीं होगा। यदि फिर कभी सरकार को रुपये की जरूरत पड़ेगी तो देखा जायगा। किसी जायदाद के तब्दील होकर एक आदमी से दूसरे के पास जाते समय ५ सैकड़ा कर लगेगा और यह कर स्थायी है। हर माल पर १० सैकड़ा लगेगा। जितनी बार माल बिकेगा उतनी बार कर देना पड़ेगा। यह कर भी स्थायी है।" एल्वा के इस हुक्म को सुनकर पंचायतें अवाक् रह गईं। धर्म और परलोक की बातों के लिए चाहे लोग न लड़ सकें क्योंकि सबके रक्त में इन बातों के लिए उत्साह की बिजली नहीं होती। परन्तु लोगों को तात्कालिक स्वार्थों पर कुठाराघात असह्य होता है। नेदरलैण्ड में कई बार लोगों ने अपना माल और व्यापार बचाने के लिए धर्म की चिन्ता नहीं की थी। पर एल्वा के नये हुक्म की चोट सनातनी, नवीन-पन्थी, ग़रीब-अमीर सब के ऊपर एक सी पड़ी। मान लो कि एक मकान बेचा गया। जायदाद की तब्दीली पर ५ सैकड़ा कर देने वाले नियम के अनुसार मूल्य का २० वाँ भाग सरकार को मिलना चाहिए। यदि मकान साल भर में २० बार बिका तो मकान का पूरा मूल्य सरकार को मिलना चाहिए। डाक्टर विग्लियस ने एल्वा की इस आज्ञा का स्टेट

कौंसिल' में विरोध करते हुए कहा कि इस प्रकार का कर नेदरलैंड से मिलना असम्भव है। डाक्टर ने इस समय एल्वा का जैसा विरोध किया वह प्रशंसनीय है। डाक्टर जानता था कि फ़िलिप स्वयं एल्वा की इस कर-व्यवस्था को पसन्द नहीं करता। इसलिए उसने देखा कि एल्वा का विरोध करने में कुछ खतरा नहीं है। पंचायतों ने एल्वा को नाराज न करने विचार से सारी जायदाद पर १ सैकड़ा कर देने का पहला नियम स्वीकार कर लिया। परन्तु अन्य कर स्वीकार नहीं किये। चारों ओर से एल्वा के पास अर्जियों का तांता लग गया कि, "इन करों से देश का सारा व्यापार नष्ट हो जायगा।" परन्तु एल्वा ने किसी की एक न सुनी। उसने सबको अपनी आज्ञा मनवाने का निश्चय कर लिया था। यूटरेक्ट प्रान्त ने एल्वा के सारे कर देने से इन्कार कर दिया। यूटरेक्ट की पंचायत ने सरकार को पहले ७००००) और बाद को २०००००) तक देने का वादा तो किया परन्तु कर देना स्वीकार नहीं किया। एल्वा ने यूटरेक्ट प्रान्त के प्रत्येक घर में स्पेन के सिपाही रख दिये। सिपाही रात-दिन लोगों को तंग करने लगे। परन्तु किसी तरह यूटरेक्ट वालों ने कर देना स्वीकार नहीं किया। एल्वा ने 'खूनी कचहरी' के सामने यूटरेक्ट प्रान्त का मुक़दमा पेश करके प्रान्त को विद्रोही क़रार दे दिया। सरकारी हुक्म निकल गया कि 'यूटरेक्ट प्रान्त के लोगों को किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं है। प्रान्त भर की म्युनिसिपल्टियों के कर, लोगों की जागीरें, और माल-असबाब, सब सरकार ने जब्त कर लिया है।"

प्रान्त की ओर से फ़िलिप के पास दो आदमियों को अपील

लेकर भेजा गया। फ़िलिप ने अपील नहीं सुनी। परन्तु इतनी कृपा की कि अपील के ले जाने वाले आदमियों के सिर नहीं कटवाये। यदि देश में इतना खून बह चुकने के पहले ऐसी अपील लेकर कोई मनुष्य फिलिप के पास गया होता तो अपना सिर कन्धों पर लेकर कभी न लौट पाता। एल्वा ने बड़ी खुशी से फ़िलिप को लिखा था कि प्रान्तों की पंचायतों ने नये कर स्वीकार कर लिये हैं। इससे शासन का खर्च निकालकर बीस लाख सालाना की स्थायी आमदनी सरकारी खज़ाने को हो जायगी। परन्तु एल्वा का स्वप्न सच्चा न हो पाया। पंचायतों की प्रथा थी कि यदि एक प्रान्त किसी कर को स्वीकार नहीं करता था तो अन्य सारे प्रान्तों की पंचायतें भी वह कर देना स्वीकार नहीं करती थीं। यूटरेक्ट के इन्कार करने पर अन्य प्रान्तों को भी बहाना मिल गया। सबने नये कर देने से इन्कार कर दिया। एल्वा को बड़ा क्रोध आया परन्तु कुछ कर न सका। बड़ी कठिनाई से पंचायतें इस बात पर राज़ी हुईं कि दो वर्ष तक अर्थात् अगस्त सन् १५७१ ई० तक सरकार को बीस लाख सालाना दे दिया जाय। कुछ दिन के लिए लोगों को दम लेने का अवसर मिल गया।

अत्याचार सीमा पर पहुँच चुका था। डाक्टर विग्लियस को डर था कि 'सीमा लांघने का प्रयत्न किया गया तो क्रान्ति हो जायगी। स्पेन वालों का नेदरलैण्ड से सदा के लिए मुँह काला कर दिया जायगा। सरकार की सेवा करने वालों की जागीरें ज़ब्त करके फाँसी पर लटका दिया जायगा।' इसी डर से वह अब लोगों को क्षमा दे देने की घोषणा निकाल देने के

पक्ष में था। सरकार को ऊँचा-नीचा दिखाने की बहुत चेष्टा कर रहा था। फ़िलिप की प्यास बुझाने के लिए काफ़ी खून बहाया जा चुका था इसलिए वह भी कुछ ठण्डा दीखता था। फ़िलिप को डर था कि एल्वा के नये करों के कारण नेदरलैण्ड का सारा व्यापार ही नष्ट न हो जाय जिससे सरकारी आमदनी का ज़रिया ही मिट जाय। एल्वा जानता था कि फ़िलिप की अब उस पर पहले की तरह कृपा-दृष्टि नहीं है। एल्वा यह भी समझ गया था कि नेदरलैण्ड की भूमि में जितना खून सोखने की शक्ति थी उतना खून बहाया जा चुका है। फिलिप को कई बार लिख चुका था कि अब यहाँ से मुझे हटा लिया जाय तो बड़ा अच्छा हो। अपनी करतूतों पर शेख़ी बघारते हुए उसने लिखा था कि मैंने लोगों को ऐसा दबा दिया है कि प्रलय काल तक पत्ता नहीं खटकेगा। और यह सब मैंने बिना रक्त-पात किये, किया है अपने सम्बन्ध में उसे इतना विश्वास था कि उसने लिखा कि १ सैकड़े वाले कर से कम से कम ५० लाख आय होगी। सरकारी प्रबन्ध के लिए स्पेन से रुपया भेजने के स्थान में आप यहां से स्पेन के लिए रुपया मँगा सकेंगे। डाक्टर विगलियस ने फिलिप को लिखा था कि नेदरलैण्ड के शासन में जितनी दया आज-कल दिखाई जा रही है, इतिहास में उससे अधिक भी कहीं-कहीं मिलती है। डाक्टर ने ऐसी बात अपने मुँह से यदि कुछ वर्ष पहले निकाली होती तो न वह आज इतनी बड़ी जागीर का मालिक होता और न उसके नाम के पीछे इतने खिताब लगे होते। खैर इन सब विभिन्न कारणों और एल्वा की स्वयं लौटने की इच्छा से फिलिप एल्वा को वापिस बुला लेने और लोगों को

क्षमा देने के लिए एक क्षमा-पत्र निकालने का विचार करने लगा। अन्त को चार क्षमा-पत्र तैयार करके स्पेन से एल्वा के पास भेजे गये। एल्वा के कहने के अनुसार उसने उन चार में से सब से नरम को पसन्द किया। एक बृहत् दरबार लगाया गया। एल्वा पोप का भेजा हुआ टोप और तलवार लगाकर सिंहासन पर बैठा। दाहिने-बायें एगटवर्प का दो अत्यन्त सुन्दरी स्त्रियाँ 'दया' और 'शान्ति' की देवियाँ बनकर उसके चरणों के पास बैठीं। एल्वा की तरफ से क्षमा-पत्र पढ़ा गया। इस नरम क्षमा-पत्र के अनुसार सिर्फ उन लोगों को क्षमा दी गई थी जो पक्के सनातनी और बिल्कुल निर्दोष थे। सो भी इस शर्त पर कि दो मास में आकर वे लोग अपने अपराधों के लिए क्षमा माँग लें। लोगों को बड़ी आशायें थीं। इस क्षमा-पत्र को सुनकर फिर सबके दिल बैठ गये। डाक्टर विग्लियस तक को असन्तोष रहा। मगर एल्वा ने फिलिप को लिखा कि 'सबने इस क्षमा-पत्र का हृदय से स्वागत किया है। थोड़े से मनुष्य जो आजन्म सन्तुष्ट न होंगे असन्तोष प्रकट करते हैं।' परन्तु थोड़े ही दिन बाद उसे अपनी भूल सुधारकर लिखना पड़ा—"लोग उतने सन्तुष्ट नहीं हैं जितनी मेरी आशा थी।" लोगों के असन्तुष्ट रहने से फिलिप को बड़ी निराशा हुई।

इसी समय फ़िलिप की नव-वधू स्पेन जा रही थी। जब वह नेदरलैण्ड होकर गुज़री तो हार्न की अभागी माता—जो अपने बड़े लड़के की हृदय-विदारक मृत्यु देख चुकी थीं, इसलिए जिस तरह हो सके मोण्टनी के बचाने का प्रयत्न कर रही थी—महारानी से मिली और खुशामद की कि किसी तरह मेरे लड़के

को छुड़ा दो। महारानी ने वचन दिया कि पहली चीज, जो मैं फिलिप से माँगूगी, वह तुम्हारे लड़के की रिहाई होगी। बेचारी मौराटनी की माता को विश्वास हो गया कि अब मेरा लड़का जरूर छूट जायगा। लेकिन फिलिप जिसको मारना निश्चय कर लेता था उसे काल के अतिरिक्त और कौन छुड़ा सकता था? जिस समय एग्मोराट और हार्न इधर गिरफ्तार हुए थे उसी समय स्पेन में मौराटनी को गिरफ्तार करके एक बुर्ज में बन्द कर दिया गया था। उस बेचारे को कहीं का कुछ समाचार नहीं मिलता था। एक त्योहार के दिन कुछ नेदरलैण्ड के निवासी फ्लेमिश भाषा में धीरे-धीरे गीत गाते हुए उसकी बुर्ज के पास से निकले। मौराटनी अपने देश की भाषा और उनके गीतों का अर्थ सुनकर चौंक पड़ा। यात्रियों के भेष में धार्मिक गीत गाने का बहाना करने वाले उसके देश के कुछ लोग उसे एग्मोराट और हार्न की मृत्यु का सारा हाल सुना रहे थे और उसे चेतावनी दे रहे थे कि जैसे बने प्राण बचाकर भाग जाओ नहीं तो तुम्हारी भी वही दशा होगी। मौराटनी के कान खड़े हुए। उसने एक पहरे वाले को फोड़कर बाहर के मित्रों से पत्र-व्यवहार किया और शीघ्र ही भागने का सारा प्रबन्ध ठीक कर लिया। मेजर डोमो नाम का एक अधिकारी, जो मौराटनी का बड़ा मित्र था और उसके भगाने का प्रबन्ध कर रहा था, एक स्त्री के प्रेम फँसा था। वह मौराटनी के पास पत्र खाने में छिपाकर भेजा करता था। अन्तिम पत्र में सब हाल लिखकर कि किस समय तुम्हारे पास सीढ़ी पहुँचेगी, कहाँ घोड़े खड़े रहेंगे और कहाँ आगे गाड़ी मिलेगी, डोमो ने एक मनुष्य को भेजने के लिए दे दिया। उसे अपनी

प्रेमिका के पास जाने की जल्दी थी। उस आदमी की लापरवाही से पत्र पकड़ा गया। जो-जो अधिकारी षड्यन्त्र में शामिल थे उन सब को तुरन्त फाँसी अथवा कालापानी की सज़ायें हो गईं। अभागे डोमो को दो सौ कोड़े लगाकर काले-पानी रवाना कर दिया गया। मौण्टनो के सारे मित्र पकड़ गये थे। अब उसके स्पेन से भाग निकलने की कोई आशा न रही। फिलिप ने एल्वा की 'खूनी कचहरी' में मौण्टनो का अभियोग भेज दिया था। एल्वा ने एग्मोण्ट और हार्न की तरह मौण्टनी को भी प्राणदण्ड की आज्ञा सुना दी। फ़िलिप ने मौण्टनी को खुल्लमखुल्ला मारना उचित नहीं समझा। इसलिए मौण्टनी को एक दूरवर्ती पहाड़ी किले में बन्द करके बीमार मशहूर कर दिया गया। उसे बाध्य किया गया कि वह अपने मित्रों को ऐसे पत्र लिखे जैसे कोई मृत्यु के निकट पहुँच चुकने वाला बीमार लिखता है। एक हकीम भी लोगों के दिखाने को रख लिया गया था। वह रोज़ दवाइयों के बंडल लेकर मौण्टनी के पास जाता था। अन्त को एक दिन चुपचाप गला घोंटकर मौण्टनी का काम समाप्त कर दिया गया। लोगों से कहा गया कि मौण्टनो बीमारी से मर गया। संसार की आँखों में धूल झोंकने के लिए सरकार की तरफ़ से उसका अन्त्येष्टि-संस्कार बड़ी धूम-धाम से किया गया और उसकी कब्र भी बनवा दी गई। इस कत्ल का ज़रा-ज़रा सा प्रबन्ध फिलिप के उपजाऊ दिमाग से निकला था। एल्वा रणक्षेत्र में लोगों को चूहों की तरह पकड़-पकड़कर मारने अथवा फाँसी पर चढ़ाने और जलाने में सिद्ध-हस्त था तो उसका मालिक ठण्डे दिल से चुपचाप जहर देकर अथवा गला घुटवाकर मरवा

डालने में उस्ताद था। कहा जाता है कि फिलिप ने अपने पुत्र को भी इसी प्रकार मरवा डाला था। मौण्टनी के प्राण लेने में अन्य किसी बात का ध्यान तो रक्खा ही नहीं गया पर फिलिप ने इस बात का भी जरा विचार नहीं किया कि मौण्टनी स्वयं उसकी बहन का भेजा हुआ राजदूत था। राजदूत के प्राण संसार में कहीं नहीं लिये जाते। इतिहास के महान् पुरुषों के कार्य और बड़ी-बड़ी लड़ाइयों के वर्णन तो पढ़े ही जाते हैं परन्तु इन छोटी-छोटी घटनाओं और हत्याओं का हाल पढ़कर पता चलता है कि स्वतन्त्रता के लिए कितनी अज्ञात और भयङ्कर आहुतियाँ देनी पड़ती हैं।

विपत्ति अकेली नहीं आती। सन् १५७० का अन्त होते होते नेदरलैण्ड पर समुद्र ने भी कोप किया। सन् १९२९ के आसाम के तूफान की तरह गांव के गांव बह गये। जहाँ शहर थे वहां जहाज चलने लगे। केवल फ्रीसलैण्ड प्रान्त में लगभग २०००० जानें गईं। स्पेन वाले हँस-हँसकर कहने लगे कि 'अधर्मियों पर यह दैवी प्रकोप है।' नेदरलैण्ड वालों को विधाता भी विपरीत दीखने लगा। लेकिन इसी तूफान के समय एक उल्लेखनीय घटना हो गई। एक दिन शाम को लोवेस्टीन के प्रसिद्ध किले के कप्तान के पास चार भिखारी आकर पूछने लगे कि 'यह फिलिप का किला है कि ऑरेञ्ज का?' कप्तान ने मुँह बनाकर कहा कि 'ऑरेञ्ज कौन चिड़िया है मुझे पता नहीं?' इस पर एक भिखारी ने पिस्तौल निकालकर कप्तान को मार डाला और अपने अन्य पन्द्रह-बीस साथियों की सहायता से किले पर अधिकार कर लिया। यह ऑरेञ्ज का भक्त हरमैन नाम का बंजारा था।

बाद को स्पेन की सेना ने चढ़ाई करके दुर्ग तोड़ डाला। बहुत देर तक तो हरमैन तलवार लिये अकेला ही लड़ता और शत्रुओं को गिराता रहा। अन्त में जब भुजायें थक गईं, एक बड़े हाल में घुस गया। स्पेन के सिपाही उसे पकड़ने के लिए हाल में घुसे। मगर हरमैन ने वहाँ बारूद जमा कर रक्खी थी। उसने तुरन्त बारूद में बत्ती लगा दी। स्वयं तो मरा ही लेकिन अपने शत्रुओं को भी साथ लेता गया। स्पेन के पागल हिंसकों ने गिरी हुई इमारत की मिट्टी खोदकर उसकी लाश निकाली और लाश को सूली पर चढ़ाकर अपना कलेजा ठण्डा किया। लोवेस्टीन के नागरिकों पर अत्याचार करके हरमैन की धृष्टता का बदला चुकाया गया।

सन १५६९ और १५७० ई० में नेदरलैण्ड की यह दशा थी। शाहज़ादा आरेंज सब-कुछ गवाँ चुका था परन्तु हिम्मत और आशा नहीं गवाँई थी। स्ट्रासबर्ग पर अपनी फौज को छुट्टी दे दी थी और ड्यूक ऑव ड्यूक्स पोण्ट्स की सेना में अपने दो भाइयों के साथ सम्मिलित होकर फ्रांस में प्रजा-पक्ष की ओर से कोलग्नी (Cologne) के झण्डे के नीचे लड़ने चला गया था। परन्तु फिर शीघ्र ही नेदरलैण्ड की घटनाओं और मित्रों के बुलावे के कारण उसे किसान का भेष रमाकर दो-चार साथियों सहित जर्मनी लौट आना पड़ा। अपनी ग़रीबी के कारण वह बिल्कुल तबाह हो रहा था। सैनिकों का शेष वेतन देने तक के लिए उसके पास रुपया न था। नई सेना तो कहाँ से खड़ी करता? उसका सारा खेल बिगड़ चुका था। जर्मनी में कोई आदमी उसकी सहायता को आगे बढ़ता नज़र नहीं आता था। जर्मनी

और नेदरलैण्ड के अमीर और व्यापारी सहायता के वायदे करके भूल से गये थे। अमीर तो उस पक्ष का साथ देते हैं जिसकी जीत की आशा होती है। आरेञ्ज की जीत अब असम्भव दीखती थी। फिर भी जर्मनी और नेदरलैण्ड के ग़रीबों से जो-कुछ बन पड़ता था आरेञ्ज के पास, धार्मिक स्वतंत्रता के युद्ध की सहायता के लिए भेजते रहते थे। आरेञ्ज ने भाई को लिखा था कि, 'किसी न किसी प्रकार १ लाख रुपया तो एकत्र करना ही पड़ेगा। मेरा बचा-बचाया सामान थोड़ा-थोड़ा करके मेले में बिकवाओ। इकट्ठा बेचने से इस प्रकार बेचने में अधिक दाम मिलेगा।' जिस आरेञ्ज के चारो ओर अनेक सरदार, नौकर-चाकर और सन्तरी रहते थे; जो आरेञ्ज शहंशाहों का मित्र और स्वयं राजकुल में जन्म लेने वाला था; जो अपनी जागीर में युवराज के अधिकार रखता था और अत्यन्त ऐशोआराम की जिन्दगी बिताया करता था वही ऑरेञ्ज आज पीड़ित मनुष्यों की रक्षा की धुन में साईस और नोकरों का काम करता फिरता था। अपने पास कुछ न होने पर भी वह अपने मित्रों की आवश्यकताओं का सदा ध्यान रखता था और जैसे बनता वैसे उन्हें सहायता करने का प्रयत्न करता था। इस ग़रीबी के समय अपने भाई को लिखता 'कम से कम सौ रुपये की कोई चीज वुल्फ को भेंट में भेज देना।' 'एफेंसटीन को एक घोड़े की बहुत जरूरत है। कई बार कह चुका है। एक घोड़ा तलाश करके उसका मूल्य मुझे लिख भेजना, मैं रुपया भेज दूँगा। एफेन्सटीन ने हमारा साथ देने की इच्छा दिखाई है। हमें उसकी सहायता जरूर करनी चाहिए।'

एल्वा और पंचायतों के बीच में नये करों के सम्बन्ध में दो वर्ष के लिए जो फैसला हो गया था उसकी अवधि समाप्त होने को आ गई थी। एल्वा और पंचायतों में फिर झगड़ा आरम्भ हुआ। पंचायतों को विश्वास हो गया था कि नये करों के लिए जितना एल्वा उत्सुक है उतना फ़िलिप नहीं है। शायद एल्वा को वापिस भी बुला लिया जाय। इसलिए पंचायतें निर्भय होकर एल्वा का दृढ़ता से विरोध करने लगीं। 'स्टटे कौंसिल' में भी इस विषय पर रोज़ चर्चा चलती थी। वहाँ डाक्टर विग्लियस एल्वा का भयंकर विरोध कर रहा था। एल्वा ने डाक्टर को फोड़ लेने के लिए बड़ी चालें चलीं। पर जब किसी तरह डाक्टर ने विरोध न छोड़ा और यही कहता गया कि 'यह कर लगाना प्रवाह के विरुद्ध तैरना है। लोग कभी इस कर को स्वीकार न करेंगे। लोगों की वाणी ईश्वर की वाणी है' तब एल्वा ने क्रोधित होकर एक दिन कहा कि 'ऐसे विचार रखने वालों को मज़ा चखा दिया जायगा।' विग्लियस ने दृढ़ता से कहा कि 'कौंसिल के मेम्बरों को अपने विचार प्रकट करने का अधिकार सदा से रहा है। आज तक कभी उन्हें मज़ा चखाने की धमकी नहीं दी गई। मैंने राजाओं, महाराजाओं और महारानियों के सामने ऐसी ही निर्भयता से सदा विचार प्रकट किये हैं। अब बुढ़ापे में अपने सफ़ेद सिर के लिए क्या भय खाऊँगा। लेकिन मुझे आशा है कि महाराज फ़िलिप फाँसी देने से पहले मेरी बात सुनने का मुझे मौक़ा देंगे।' एल्वा ने कहा कि गलती से मेरे मुँह से ये शब्द निकल गये और उसने अपनी धमकी के लिए क्षमा माँगी। फिर भी सारे देश में खबर उड़ गई कि विग्लियस के भी प्राण

लिये जाने वाले हैं; लोग बड़े प्रसन्न हुए। जो विल्लियस जन्म भर राजा का पक्ष लेता आया था आज बुढ़ापे में निर्भय प्रजा का पक्षपाती हो गया। परन्तु एल्वा ने कर जमा करने के विषय में कौंसिल की सम्मति लिए बिना ही हुक्म निकाल दिया। सारी पंचायतों ने बैठकें करके विरोध प्रकट किया। लोगों ने कार-बार और बाजार बन्द कर दिये। जनता एल्वा का खुल्लमखुल्ला अपमान करने लगी।। सात आना रोज़ पर जिन बहुत से जासूसों को सरकार ने राज-विद्रोह की बातों की खबरें लाने को रख छोड़ा था उन्हें अब गली-गली दुकान—दुकान राज-विद्रोह की इतनी बातें सुनने को मिलती थीं कि रिपोर्ट करना असम्भव हो गया था। एल्वा जब सड़क पर होकर निकलता तो कोई उसे सलाम तक न करता। कर वसूल करना बिल्कुल असम्भव हो गया। हारकर एल्वा ने खाने-पीने की वस्तुओं और कारीगरी के काम आने वाले माल पर से १० सैकड़ा का कर हटा लिया। फिलिप को लिखा कि "इस देश के लोगों में अभी वैसी ही रजूपती बाक़ी है जिसकी जूलियस सीजर ने प्रशंसा की थी। पंचायतें देश के व्यापार के हित के लिए कर का विरोध नहीं करती हैं। राजा के लिए कानून बनाने का अधिकार सदा अपने हाथ में रखना चाहती हैं।"

स्पेन से एल्वा को कुछ सहानुभूति नहीं मिली। एल्वा की कर-योजना का स्पेन के कौंसिलर तो बहुत दिनों से मज़ाक उड़ाते ही थे, फिलिप का काला हृदय भी एक नये काले काम में लग रहा था। फिलिप ड्यूक ऑव नार्फ़ोक की सहायता करके इंग्लैण्ड की महारानी एलिज़बेथ को किसी तरह मरवा डालने और उसकी

जगह सनातन-धर्म के हितार्थ स्काटलैण्ड की रानी मेरी को कैद से छुड़ा गद्दी पर बिठाने का षड्यंत्र रच रहा था। इस षड्यंत्र में पोप भी शरीक था। इधर फिलिप की तुर्कों से लड़ाई छिड़ ही रही थी। नेदरलैण्ड के विद्रोह को दबा रखने के लिए स्पेन-साम्राज्य की सारी सेना की जरूरत थी। परन्तु फिलिप ने एल्वा को लिख भेजा कि ड्यूक नार्फोक की सहायतार्थ दस हजार सेना चुपचाप इंग्लैण्ड भेज दो। नेदरलैण्ड की ऐसी दशा में दस हजार सेना का वहाँ से हटा लेना और चुपचाप इंग्लैण्ड भेज देना फिलिप को अपनी धर्मान्धता में बिलकुल संभव जँचता था। एल्वा ने फिलिप को लिखा कि "ऐसा करना सर्वथा असम्भव है। जर्मनी और फ्रान्स हमारा विरोध करेंगे। यदि ये दो देश विरोध न करें तो अगली शरद तक इंग्लैण्ड के सिंहासन पर आपको बैठा देने का मैं वादा करता हूं। परन्तु आजकी परिस्थिति में नेदरलैण्ड से इंग्लैण्ड सेना भेजना असम्भव है।" ड्यूक ऑव् नार्फोक का षड्यंत्र अन्त में पकड़ा गया और वह अपने साथियों-सहित गिरफ्तार कर लिया गया। फिलिप फिर भी अपने धार्मिक इरादे से न हटा। एल्वा की सहायता से कई बार गुप्त हत्यारों को भेजकर एलिज़बेथ को मरवा डालने का प्रयत्न करता रहा। अपने कला-कौशल से स्पेन का नाम संसार में प्रख्यात करने वाले स्पेन में बसे हुए मुसलमान फिलिप के अत्याचारों से ऊबकर कारीगरी के औजार छोड़ हथियार लेकर मैदान में आ गये थे। उनको दबाने का काम आस्ट्रिया के डॉन जॉन को सौंपा गया था जो उन लोगों के बूढ़े-बच्चे-स्त्रियों और बीमारों को चारपाइयों पर कत्ल करता फिरता था। टर्की का खलीफा सलीम दिन-रात अंगूरों

के रसास्वाद में मस्त न रहकर यदि इन वीर मुसलमानों की इस समय सहायता करता तो एलिजबेथ को तख्त से उतारने का प्रयत्न करने वाले फ़िलिप को स्वयं अपने तख्त के लाले पड़ गये होते। खैर, हमारे इतिहास का विषय और है। फिलिप ने एल्वा को लौटा लेने की प्रार्थना मंजूर कर ली और उसके स्थान पर डॉन लुई डे रेकुइसेन्स एगड क्युनिगा, मिलन के भूत गवर्नर और केस्टील के ग्राण्ड कमाण्डर को नियुक्त किया। परन्तु जान को घर के झगड़े निवटाने थे इसलिए एल्वा को कुछ दिन और नेदरलैण्ड में ठह-रने की आज्ञा हुई। बेचारा एल्वा बड़ी मुसीबत में था। जनता उसके नाम पर गालियों की बौछार करती थी और कलतक उसके धार्मिक अत्याचार में हाँ में हाँ मिलाने वाले विग्लियस, बेरला-मोण्ट, नोयरकार्मेस और एअरशॉट इत्यादि आर्थिक अत्याचार प्रारम्भ होने पर उससे अलग हो गये थे और उसकी नाव डूबती समझकर दिन-रात करों के सम्बन्ध में उसका प्रचण्ड विरोध करते थे। ब्रेबण्ट की पंचायत की ओर से कर के विरोध में एक दिन कौंसिल में एक अर्जी पढ़ी जा रही थी। उसे सुन एल्वा क्रोध से बोला—"क्या नेदरलैण्ड-निवासी सचमुच समझते हैं कि नेदर-लैण्ड के हित की उन्हें मुझसे अधिक चिन्ता है? यह कर केवल इसलिए लगाया जा रहा है कि नेदरलैण्ड की बाहर के आक्रमण से रक्षा की जा सके।"

---

(१३)

प्रजातन्त्र की नींव

'भिखारी' और 'जंगली भिखारी' इत्यादि के अतिरिक्त 'सागर के भिखारियों' का एक नया गिरोह और खड़ा हो गया था। जागीरें खो चुकने वाले सरदार, व्यापार नष्ट कर डालने वाले व्यापारी, लुटेरे विद्रोही सब इस गिरोह में आ मिले थे। इन लोगों का नेता सरदार डेलामार्क था जो बाल बखेरे भयंकर रूप धारण किये फिरता था। उत्तरी सागर में जहाजों में ये लोग रहते थे और जहाँ मन में आता लूटमार करते थे। सरकार के अत्याचार से बचने का कोई मार्ग न देखकर इन लोगों ने लूटमार का पेशा इख्तियार कर लिया था। डेलामार्क ने अपने हृदय में भभकती हुई प्रतीकार की आग बुझाने के लिए इतने अत्याचार किये कि एल्वा और उसकी 'खूनी कचहरी' को मानना पड़ा कि हाँ विद्रोहियों में भी हमारे शास्त्र का एक पण्डित है। इन लोगों पर जितना ऑरेञ्ज दबाव रख सकता था, रखने का प्रयत्न करता था। उसने नेदरलैण्ड के वलीअहद की हैसियत से इन लोगों का सेना का संगठित स्वरूप देकर डेलामार्क को उसका सेनापति बना दिया था। लूटमार को जहाँतक हो सके नियमित करने और सेना का संचालन करने के लिए कुछ नियम भी बना दिये थे। अत्याचार को नीचा दिखाने के लिए ऑरेञ्ज को शक्ति की आवश्यकता थी। सागर के भिखारियों की इस शक्ति

को भला वह कैसे खो सकता था ? इधर-उधर अपने आदमी भेजकर जहाँ-जहाँ से सहायता की जरा भी आशा थी वहाँ-वहाँ वह टटोल चुका था। गरीबों के पास से लगातार धन आते रहने से काम के लायक कुछ धन भी इकट्ठा हो चला था। इधर नेदरलैण्ड में करके विरुद्ध जो आन्दोलन खड़ा हो गया उसे ऑरेञ्ज ने धन एकत्र करने और लोगों की सहायता पाने का बड़ा सुअवसर समझा। चीजें बेचने से बिक्रीपर कर देना पड़ता था इसलिए देश भर के लोगों ने बिक्री ही बन्द करदी थी। सारी दूकानें बन्द रहती थीं। बाजारों में उल्लू बोलते थे। एल्वा ऑरेञ्ज के नाम से इतना चिढ़ उठा था कि उसने ऑरेञ्ज की मूर्ति को सूली पर चढ़ा दिया था और लाश को घोड़े की दुम से बांधकर बाजारों में घसिटवाया। उसने सोचा कि कुछ नहीं तो ऑरेञ्ज और उसके परिवार का इसी प्रकार अपमान किया जाय। ऑरेञ्ज के भावी इतिहास के दो एक पृष्ठ यदि इस समय एल्वा ग्रेनविले अथवा फिलिप के सम्मुख रक्खे जा सकते और उन्हें दिखाया जा सकता कि जिस मनुष्य को वे लोग अपमानित करने का बिचार कर रहे हैं उसका और उसके परिवार का भविष्य में कितना सम्मान होने वाला है, तो शायद निकृष्ट प्राणियों की इस त्रिमूर्ति ने ऑरेञ्ज को अपमानित करने का प्रयत्न छोड़ दिया होता। एल्वा ने व्यापारियों पर आतङ्क जमाने के लिए निश्चय किया कि १८ विख्यात व्यापारियों को पकड़ कर उन्हीं के दरवाजों पर लटका दिया जाय जिससे लोग इस प्रकार द्वार पर ही न्याय पाने से डरें और दूकानें खोल दें। यह काम पूरा करने की सब तैयारियां भी हो चुकी थीं। रात को जल्लाद ने १८ रस्सियाँ तैयार कर ली

थीं। मगर ब्रिल शहर के हाथ से निकल जाने का एकाएक समाचार आजाने से एल्वा के इस शुभ कार्य्य में बाधा पड़ गई। ऐसे समय पर लोगों को फांसियाँ देकर अधिक आग भड़काना उसने खतरनाक समझा।

'सागर के भिखारी' लूटमार करते थे परन्तु उनका शिवाजी की टोली की तरह मुख्य उद्देश्य देश को स्वतंत्र कराना था। एलिज़बेथ फ़िलिप से लड़ने के अयोग्य थी इस कारण उसने एल्वा की शर्त स्वीकार करके डेलामार्क के जहाजी बेड़े को इंग्लैण्ड के दक्षिणी किनारे से निकलजाने का हुक्म दे दिया। 'सागर के भिखारियों' के पास खाने तक का नहीं था। इनके २४ जहाजों ने वहाँ से निकलकर उत्तर हालैण्ड के किनारे पर छापा मारने का विचार किया। स्पेन के दो जहाज उन्होंने रास्ते में लूट लिये और जेलैण्ड की तरफ़ जाकर मियूज़ नदी का मुहाना पार करके ब्रिल नगर की ओर बढ़े। कोपिलस्टीक नामका एक केवट नाव पर मुसाफिर लिये जा रहा था। वह हृदय से ऑरेञ्ज के पक्ष का था। उसने इस जहाजी बेड़े को आते देखा तो मुसाफ़िरों से बोला मालूम पड़ता है 'सागर के भिखारी' आ पहुँचे!" लोग घबरा गये। उतरते ही दौड़कर शहर में पहुँचे और सबको 'सागर के भिखारियों' के आ पहुँचे की खबर सुना दी। कोपिलस्टोक मुसाफिरों को उतारकर निर्भयता से अपनी नाव लौटाकर भिखारियों के बेड़े की ओर गया और वहाँ विलियम डेब्लाय नाम के एक जहाज के सरदार से पूछने लगा कि 'तुम लोग किधर जाना चाहते हो?' विलियमडेब्लाय का पिता ब्रिल में गवर्नर रह चुका था। उसने तुरन्त कोपिलस्टोक को पहचान लिया और उसे डेलामार्क के पास लेजा-

कर कहा—"यह विश्वासी मनुष्य है। ब्रिल में सन्देशा लेकर इसी को भेजिए।" डेलामार्क का सन्देशा लेकर जब कोपिलस्टोक शहर में पहुँचा तो भीड़ की भीड़ आकर उससे पूछने लगी कि कितने भिखारी हैं? उसने गप्प हाँककर कहा—कोई पाँच हजार होंगे। लोग घबरा कर शहर छोड़ छोड़ भागने लगे। केवल ५० आदमी शहर में रह गये। डेलामार्क के २५० आदमियों ने शहर पर जाकर कब्जा कर लिया और विलियम ऑरेञ्ज के नाम पर हालैण्ड प्रजातन्त्र का झण्डा ब्रिल शहर पर गाड़ दिया। इस प्रकार इन विचित्र हाथों से हालैण्ड के भावी प्रजातंत्र की ब्रिल नगर में नींव पड़ी। अधिकतर लोग अपना माल असबाब साथ लेकर भागे थे। जो कुछ शहर में रह गया था भिखारियों ने उस पर अधिकार किया। १२ सनातनी पादरी ब्रिल में रह गये थे। उनकी बड़ी दुर्गति की गई। सब के सब पकड़ कर जेलखाने में डाल दिये गये। सनातनी गिरजों की खूब लूट हुई। विलियम डेलामार्क ने तो उस दिन से गिरजों में चरणामृत रखने में काम आने वाले चांदी के प्यालों के अतिरिक्त और किसी प्याले में शराब पीना ही बन्द कर दिया। एल्वा इस अचानक विजय का समाचार सुनकर चौंक पड़ा। उसे क्या खबर थी कि एलिजबेथ के सारी मेरी शर्तें मान लेने का यह परिणाम होगा? व्यापारियों को फाँसी पर लटकाने के उसके मनोनीत कार्य्य में भी बाधा पड़ गई। हाँ, लोगों को अवश्य बड़ी खुशी हुई। देशभर में एल्वा का मजाक उड़ने लगा और एक तुकबन्दी चारों ओर फैल गई जिसका भावार्थ था।

'पहली अप्रेल के दिन एल्वा का चश्मा उड़ गया।'

साथ में एक कार्टून भी खूब बटा, जिसमें डेलामार्क एल्वा की नाक पर से चश्मा उतार रहा था और एल्वा अपने स्वभाव के अनुसार कह रहा था—"कुछ नहीं है! कुछ नहीं है! कुछ पर-वाह की बात नहीं है!"

ऐल्वा ने तुरन्त सरदार बोस्सू को ब्रिल पर फिर से अधि-कार जमाने के लिए भेजा। बोस्सू ऑरेञ्ज के चले जाने पर हालैण्ड और जेलैण्ड का सूबेदार बना दिया गया था। वह जब उत्तर दरवाज़े पर पहुँचा तो नगर के एक ऑरेञ्ज-भक्त बढ़ई ने निकलकर अकेले ही चुपचाप समुद्र का बाँध काट दिया। बोस्सू का रास्ता बन्द हो गया। घूमकर बोस्सू दक्षिण के द्वार पर पहुँचा तो ऊपर से देशभक्तों ने गोलियाँ बरसानी शुरू कीं। विलियम डे ब्लॉय ने बड़ी वीरता दिखाई। केवल एक साथी को लेकर चुप-चाप समुद्र तैर कर पार किया और शत्रु के जहाज़ों में जा कर आग लगा दी। स्पेन वाले सामने से गोलियाँ बरसाते और एका-एक अपने जहाज़ को जलते देखकर घबरा गये। तुरन्त जहाज़ों में बैठकर भागे। नगर पर देशभक्तों का कब्ज़ा जम चुकने पर अधिकतर नागरिक लौट आये थे। उनको एकत्र करके डेलामार्क ने ऑरेञ्ज के प्रति मित्रता की सबसे पहले शपथ ली और यह घोषणा की कि आज से नगर का सूबेदार शाहज़ादा ऑरेञ्ज है। ऑरेञ्ज को डेलामार्क की इस विजय से अधिक आनन्द नहीं हुआ क्योंकि अभी तक उसकी आक्रमण की तैयारी नहीं हो पाई थी। ब्रिल को बहुत दिनों तक हाथ में रखने की उसे आशा नहीं थी। डेलामार्क पर उसे विश्वास भी नहीं था। ऑरेञ्ज का सन्देह ठीक ही निकला। डेलामार्क को लूटमार प्रिय थी। कुछ ही दिन बाद

वह ब्रिल नगर में आग लगाने पर तैयार हो गया। बड़ी मुश्किल से समझा बुझाकर डेल्बोय ने उसे ऐसा करने से रोका। ब्रिल में स्थायी रूप से प्रजातन्त्र जमाने का सारा श्रेय बहादुर डेल्बोय को है। नहीं तो डलामार्क तो कुछ दिन बाद ब्रिज को उजाड़ कर चल दिया होता।

बोस्सू जब यहाँ से मार खाकर भागा तो उसने सोचा कि रास्ते के मुख्य-मुख्य नगरों को काबू में कर लेना चाहिए। नहीं तो वे भी कहीं देशभक्तों से न मिल जाँय। वह धोखा देकर राटर्डम नगर में घुस गया। वहां स्पेन की सेना ने अपने स्वभाव के अनुसार खूब लूटमार की। स्त्रियों को भी अपमानित किया।

बालचरेन नाम के द्वीप पर बसे हुए शिंग नगर ने भी कान खड़े किये। यहाँ डहार्ट नामके एक मनुष्य ने लोगों को सरकार के विरुद्ध भड़काया। लोगों से कहा कि, पासा फेंका जा चुका है। बस दाव जीतने की देर है, प्रशिंग पश्चिमी शेएड के मुहाने पर बड़े मार्के का शहर था। यहाँ बहुत दिनों से एल्वा एक दुर्ग बनवा रहा था। कुछ फौज तो नगर में मौजूद थी। उसको निकाल देने के लिए डहार्ट लोगों को उभाड रहा था। दुर्भाग्य से दुर्ग में रहने के लिए आनेवाली शेष सेना भी जहाजों में चढ़कर इसी समय आ पहुँची। लोगों की भीड जमा होकर जहाजों को देख रही थी। एक शराबी ने आकर कहा—'मुझे एक अद्धा मिले तो किले पर चढ़कर स्पेन के जहाजों पर दो चार तोपें दाग दूँ।' लोगों ने कहा—'हाँ हाँ जाओ मिलेगा' इस पागल ने किले पर चढ़कर जैसे ही तोपें दागनी शुरू की कि स्पेन के जहाज घबराकर भाग चले। लोगों को हँसी हँसी में विजय मिल गई। नगर देश-भक्तों के

हाथ आ गया। नगर का कोतवाल लेक्चर झाड़कर लोगों को फिर से पक्ष में करने का प्रयत्न करने लगा। लोगों ने तालियाँ पीटकर उसे शहर से बाहर निकाल दिया। डेलामार्क और ऑरेञ्ज के पास शहर की सहायता करने का संदेशा भेजा गया। डेलामार्क की सेना अब काफी बड़ी हो गई थी। उसने वीर डेब्लाय की अध्यक्षता में तीन जहाजों पर २०० जवान भेजे। यह सब बड़े उत्साह से हल्ला गुल्ला करते हुए आये। उतरते ही इन्हें एल्वा का इटेलियन इंजीनियर ऐण्टवर्प का मशहूर दुर्ग बनाने वाला पचेको मिल गया। वह बेचारा उसी समय वहाँ पहुँचा था और उसे वहाँ हो जाने वाली घटनाओं का कुछ पता नहीं था। देशभक्तों का पहला क्रोध एल्वा के इन्जीनियर पर ही उतरा। पचेको को पकड़ कर फौरन फाँसी पर लटका दिया गया। कुछ दिन बाद जेरोम नामी एक विश्वस्त मनुष्य को कुछ फ्रान्सीसी सेना के साथ सारे वालचरेनद्वीप का अधिकारी नियत करके भेज दिया गया। इँग्लैण्ड से कुछ स्वयं सेवक आजाने के कारण देश-भक्तों की शक्ति और भी बढ़ी।

नव--प्रभात

ब्रिल और फ्लशिंग ने देश को रास्ता दिखा दिया। सन १५७२ के पूर्वार्द्ध में एक के बाद दूसरे हालैएड और जेलैएड के सब मुख्य-मुख्य नगरों ने क्रांति करके ऑरेञ्ज का झण्डा फहराना शुरू कर दिया। फ्लशिंग था तो छोटा सा बंदरगाह लेकिन बड़े मार्के का था। ऑरेञ्ज की उस पर बहुत दिनों से नज़र थी। इस नगर के अचानक ऑरेञ्ज के हाथ में आजाने के बाद ही वालचरेन द्वीप के दूसरे अर्धभाग ने भी एल्वा का जुआ गले से उतार फेंका। उसके बाद ज्यूडरजी खाड़ी की कुंजी एन्खुइजन नगर पर जिस में सरकारी गोला-बारूद का कारखाना था और जो देश के प्रधान व्यापारिक नगरों में से एक था, एक दिन एकाएक ऑरेञ्ज का झण्डा लहराने लगा। बाद को ऊडवाटर, डोर्ट, हार्लेम, लीडन, गोरकम, लोवेन्स्टीन गूडा, मेडेनब्लिक होर्न, एल्कमार, इडाम, मौनीकेएडम, पुरमेरेएडे और वीयर इत्यादि अन्य अनेक नगरों ने भी आपसे आप बिना एक क़तरा खून बहाये एल्वा के अधिकारियों को निकाल बाहर किया और अपना प्रबन्ध खड़ा करके शाहज़ादा आरेञ्ज को राजा के सूबेदार होने की घोषणा निकाल दी। यह क्रान्ति हालैएड और जेलैएड तक ही सीमित नहीं रही। जेल्डर-लैएड, ओवरीसेल, यूट्रेक्ट तथा फ्रीसलैएड के सारे नगर भी इसी प्रकार क्रान्ति कर बैठे। पाताल फोड़कर स्वतन्त्रता की गंगा बहने लगी

और उमड़ कर चारों ओर बहने लगी। नये प्रभात की इस सुंदर उषा के प्रकाश में इस-काल के मृतप्राय यूरोप में जीवन फूँकने वाला समीर बह चला। लगभग सब नगरों में बड़ी शान्ति से बिना खून बहाये ही क्रान्ति होगई थी। वालचरने द्वीप में दो पक्ष थे, इसलिए वहाँ भयँकरता और रक्तपात का दृश्य जरूर दीख पड़ा। दोनों दल एक-दूसरे के कैदियों को तुरन्त मार डालते थे। एक-बार कैदी इतने अधिक हो गये कि उनको मारना कठिन था। इस-लिए दो दो को एक दूसरे की पीठ से बाँध कर समुद्र में फेंक-दिया गया। स्पेन के मनुष्य तो उनकी दृष्टि में मनुष्य ही नहीं थे जहाँ मिलते थे वहीं खत्म कर दिये जाते थे। एक डाक्टर ने तो बड़ा ही घृणित कार्य्य किया। एक स्पेन के कैदी को काटकर दिल-निकाल लिया और उसे खूँटी पर टाँग कर लोगों को बुलावा भेजा कि आओ इसे दाँतों से काटो। बहुत से मनुष्यों ने राक्षस बनकर इस बीभत्स कार्य में भाग भी लिया। परन्तु देश में एक जगह क्रोध से पागल होकर लोग यदि क्रूरता में स्पेनवालों से भी बढ़ गये तो दोष किसका था? स्पेनवालों ने ही तो अत्याचार की भट्टी पर चढ़ाकर लोगों के दिल पका डाले थे। बहुत से स्थानों पर लोगों ने जिन अधिकारियों के हाथों अत्याचार सहे थे उन्हीं को छिपा छिपाकर उनके प्राणों की रक्षा भी की थी। स्वतन्त्र हो जाने वाले नगरों ने एल्वा के अधिकारियों के स्थान में चुनाव करके अपने अधिकारी नियुक्त कर लिये थे। इन नये अधिका-रियों को शपथ लेनी पड़ती थी कि "महाराज फिलिप और उसके सूबेदार ऑरेञ्ज के प्रति हम श्रद्धा रक्खेंगे। ड्यूक आव एल्वा और उसके करों का विरोध करेंगे। स्वतन्त्रता और देश के हित

का समर्थन करेंगे। अनाथ विधवाओं, दुखियों की रक्षा और न्याय तथा सत्य का पालन करेंगे।"

दूसरी जून को डिडिरिश सोनोय ऑरेञ्ज की तरफ़ से उत्तर हॉलैण्ड का गवर्नर नियुक्त हो कर आया। विद्रोहियों ने अस्थायी सरकार (Provisional Government) इस सिद्धान्त पर खड़ी कर ली थी कि नेदरलैण्ड के लोग फ़िलिप के प्रति राजभक्त हैं। एल्वा की क्रूरता के कारण उसका विरोध करते हैं और उसका अधिकार नहीं मानते। इस समय लोग केवल अपनी वह प्राचीन स्वतंत्रता और अधिकार माँगते थे, जिनकी रक्षा के लिए फ़िलिप ने गद्दी पर बैठते समय शपथ खाली थी। एल्वा ने अपने अधिकार में केवल 'खूनी-कचहरी', 'इनक्विज़िशन' और 'मार्शल ला' से ही काम लिया था। देश के प्राचीन अधिकारों को तिलांजलि दे दी गई थी। केवल प्राचीन अधिकारों को फिर से प्राप्त कर लेने और एल्वा के शासन का अन्त करने का ही इस समय जनता और ऑरेञ्ज का विचार था। ऑरेञ्ज ने अपने अधिकारियों से यह भी क़सम ली थी कि सनातनधर्मी इत्यादि सबको अपने विश्वास के अनुसार धर्म पर चलने का अधिकार रहेगा। किसी को धार्मिक विश्वास के लिए कष्ट नहीं दिया जायगा। ऑरेञ्ज जर्मनी में सेना इकट्ठी कर रहा था। परन्तु हालैण्ड की अस्थायी सरकार का भी सारा प्रबन्ध वहीं बैठे-बैठे करता था। इसी समय वीर लुई ने एक और अद्भुत वीरता का काम कर दिखाया। लुई फ्रांस में सरदारों और राजा से मिल कर नेदरलैण्ड के लिए सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था। सारी दुनिया जानती थी कि लुई फ्रांस में है।

एकाएक खबर आई कि लुई ने मौन्स के प्रख्यात नगर पर कब्जा कर लिया। यह प्रसिद्ध नगर हेनाल्ट प्रान्त की राजधानी और फ्रांस की सरहद पर होने से विद्रोहियों के बड़े काम का था। मौन्स का निवासी नक्शानवीस एएटनी ओलीवर नाम का मनुष्य एल्वा का बड़ा विश्वस्त हो गया था। एल्वा ने उसे लुई की खबर रखने को जासूस बनाकर फ्रांस भेज दिया था। पर वास्तव में एएटनी आरेंज का जासूस था। इसी की सहायता से लुई ने एकाएक मौन्स पर अधिकार कर लिया। २३ मई को ओलीवर मौन्स में दो तीन छकड़ों में अनाज के बहाने हथियार भरकर घुसा। अन्दर पहुँच कर चुपचाप सब मित्रों को हथियार बाँट दिये गये। लुई पाँच सौ सवार और एक हजार पैदल लेकर पास ही के एक जँगल में आ छिपा था। रात के दो तीन बजे पचास सवारों को लेकर लुई नगर के एक द्वार पर पहुँचा। द्वारपाल को घूस देकर कहा—"हम लोग चुपचाप शराब अन्दर लेजाना चाहते हैं। हमें घुस जाने दो।" जैसे ही उसने उठकर द्वारखोला उस का सर धड़ से अलग जा गिरा और लुई अपने सवार लेकर शहर में घुस पड़ा। ये लोग बाजार और गलियों में दौड़-दौड़ कर चिल्लाने लगे फ्रांस! आजादी! नगर हमारा है। शाहजादा आरेञ्ज आता है! एल्वा की क्षय! उसके करों की क्षय! इन लोगों ने इतना शोरगुल मचाया मानो हजारों सिपाही घुस आये हों। परन्तु शहर के मित्र हथियार लेकर न निकले। सब गलियाँ और बाजार खाली थे। पचास आदमियों ने शहर में घुस कर हल्ला तो कर दिया था परन्तु इन थोड़े से आदमियों की सहायता से शहर पर अधिकार जमा लेना असम्भव

था। लुई को शङ्का हुई कि कहीं धोखा तो नहीं हुआ। जोश में सवारों को लेकर वह अपनी सेना को पीछे छोड़ कर बहुत आगे निकल आया था। सेना के इतनी देर तक न पहुँचने पर उसे चिन्ता हुई। शहर के बाहर फिर अकेला ही सेना का हाल लेने लौट गया। देखा कि सेना जँगल में रास्ता भूल कर भटक रही है। तुरन्त आज्ञा दी कि शीघ्र ही सब सवार घोड़ों पर एक-एक और सैनिक को बिठाकर दौड़ें और शहर में घुस कर नगर पर अधिकार जमा लें। लुई अपनी सेना के साथ दौड़ता हुआ जब लौट कर आया तो देखा कि शहरवालों ने उठकर नगर के सब द्वार बन्द कर लिये थे। केवल एक द्वार बन्द होने से रह गया था। परन्तु वह भी बन्द हो रहा था। द्वार की खाई का पुल ऊपर को उठ चला था। इतने में एक फ्रांसीसी सवार घोड़े से कूदकर पुलपर जा गिरा। पुल नीचे गिर गया। लुई की सेना दौड़ती हुई शहर में घुस गई। लुई ने नागरिकों, पादरियों और अधिकारियों को एकत्र करके कहा कि "यहाँ केवल एल्वा का विरोध करने आया हूँ। फिलिप के प्रति मैं बिलकुल राजभक्त हूँ। मेरा किसी के धार्मिक विश्वास में जरा भी बाधा डालने का इरादा नहीं है। आप सब लोगों को भी एल्वा के विरुद्ध घोषणा कर देनी चाहिए। अधिकारियों ने एल्वा के डर से लुई का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया परन्तु जनता ने उसकी बात मान ली। व्यापारियों ने लुई की सहायता करने को बहुत सा रुपया इकट्ठा किया। नगर-वासियों ने अपने लोगों में से सेना की ग्यारह कम्पनियाँ तैयार कर लीं। तीन दिन के बाद दो हजार फ्रांसीसी सैनिक भी आ पहुँचे। दूसरा मास प्रारम्भ होते-होते

काउराट मौराटगोमरी भी बारह सौ सवार और तेरह सौ पैदल लेकर लुई से आ मिला। एल्वा ने देखा विद्रोह की आँधी एका एक उठ रही है। एक के बाद एक नगर निकल जाने की खबरें उसके पास आ रही थीं। परन्तु जब मौन्स पर लुई का अधिकार हो जाने की खबर उसके पास पहुँची तो उसे विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा—"मुझे कल ही खबर मिली है कि लुई पेरिस में टेनिस खेलता था। मौंस में वह कैसे पहुँच सकता है?" परन्तु जब उसे विश्वास दिलाया गया कि सचमुच लुई ने मौंस ले लिया है तो टोप पृथ्वी पर पटक कर बोला—"यह सब फ्रांस की महारानी की बदमाशी है। समझ लूँगा। अभी हाल में उसने मुझे फ्रांस से कमल भेजे थे। मैं उसके लिए स्पेन के कीड़े भेजूँगा।" चारों तरफ से एकाएक विद्रोह की खबरें आने से एल्वा सिटपिटा गया था। बेचारे को निश्चय करना कठिन हो गया था कि किधर फौजें भेजी जायँ किधर न भेजी जायँ। मौन्स की खबर सुनते ही एल्वा ने अपने पुत्र डॉन फ्रेडरिक को मौंस नगर घेर लेने के लिए भेजा। फ्रेडरिक ने जाकर मौंस के पास बेन्थेलहम ग्राम पर कब्जा कर लिया और चार-हजार सैनिक लेकर मौंस के इर्द-गिर्द घेरा डाल दिया।

इसी समय नेदरलैण्ड का नया वायसराय रेकुइसेन्स ड्यूक ऑव मेडीना कोली अपने जहाजी बेड़े को लिये फ्लशिंग के निकट पहुँचा। उसे देश में हो जाने वाली नवीन घटनाओं और फ्लशिंग की परिस्थिति की बिलकुल खबर नहीं थी। वह समझता था कि नेदरलैण्ड में पैर रखते ही धूमधाम का स्वागत होगा। परन्तु फ्लशिंग ने उसका जैसा स्वागत किया उसे देखकर वह

चकरा गया। बड़ी मुश्किल से दो बार जहाज़ों के साथ अपनी जान बचा कर भागा और ज्यों-त्यों करके ब्रसेल्स पहुँचा। बिसके की खाड़ी में रहने वाला सरकारी जहाज़ों का बेड़ा जवाहरात, रुपया इत्यादि बहुत सा कीमती माल लादे आ रहा था। जैसे ही जहाज़ किनारे आकर लगे क्रांतिकारियों ने लूट लिये। एक हज़ार स्पेन के सिपाहियों को भी कैद कर लिया। ऐसी कीमती लूट आजतक देशभक्तों के हाथ नहीं लगी थी। लोग कहने लगे कि इस लूट से दो वर्ष तक लड़ाई का खर्चा चल सकेगा। एल्वा के पास रुपया बिल्कुल नहीं था। खून की घूँट पी कर बड़ी कठिनाई से १० सैकड़ा वाला कर रद्द करने को वह राजी हुआ था। परन्तु उसने यह शर्त रखी थी कि नेदरलैण्ड की पंचायतें एक मुश्त २० लाख सालाना दे दिया करें। उसकी इस शर्त पर विचार करने के लिए सरकार की ओर से १५ जुलाई को हालैण्ड की पँचायतों की बैठक बुलाई गई थी। मगर अब मामला एल्वा के हाथ से निकल चुका था। १५ जुलाई को पँचायतों की बैठक हुई। परन्तु एल्वा से बातचीत करने के लिए हेग में नहीं हुई। ऑरेञ्ज ने प्रजा के प्रतिनिधियों को बुलाया था। १५ जुलाई को वह सब डोर्ट में यह विचार करने को इकट्ठे हुए कि देशभक्तों को अब आगे क्या करना चाहिए।

ऑरेञ्ज ने फिर जर्मनी में १५,००० पैदल और ७,००० सवारों की सेना खड़ी कर ली थी। इस में २००० नेदरलैण्ड के वैलून सिपाही भी आ मिले थे। लेकिन युद्ध करने से पहले इस बात की आवश्यकता थी कि सैनिकों को कम से कम तीन महीने का वेतन मिल जाने का पक्का विश्वास दिला दिया जाय। ऑरेञ्ज

के पास नेदरलैण्ड के नगरों के खाली वायदों के अतिरिक्त कुछ न था। उसने सारे नगरों से अपील की कि "अपना और अपने देश का विचार करो। रुपये से मत चिपटो। रुपये के लिए अपनी स्त्री, बच्चों और भावी सन्तान का गला न घोटो। हमने सेना इकट्ठी कर ली है। अगर तुम हमारी सहायता करो तो हम इन हिंसक विदेशी भेड़ियों और गिद्धों को देश से निकाल कर तुम्हारी लाज रख सकते हैं। हमारी सहायता नहीं करोगे तो हमारे मर मिटने का अपराध तो तुम्हारे सर लगेगा ही पर तुम्हारे गलों पर भी सदा ही छुरियाँ चलती रहेंगी और संसार के लोग तुम्हारा मजाक उड़ायेंगे।"

१५ जुलाई को डॉर्ट में आरेञ्ज की इसी अपील और बुलावे पर नेदरलैण्ड के सरदार, नगरों के प्रतिनिधि इत्यादि सब लोग एकत्र हुए थे। संसार के इतिहास का यह वह जमाना था जब राजा को पृथ्वी पर भगवान् का अवतार माना जाता था। साधारण लोगों के विश्वास के अनुसार फिलिप भगवान् की ओर से नेदरलैण्ड का मालिक बनाया गया था। इस विश्वास के कारण नेदरलैण्ड के साधारण लोग फिलिप के स्वामित्व पर कुठाराघात करना तो स्वप्न में भी नहीं सोच सकते थे। हाँ! वे आरेञ्ज को भी भगवान् की दी हुई इस मालिकी का थोड़ा-थोड़ा हिस्सेदार अवश्य समझते थे क्योंकि आरेञ्ज भी राजकुल में जन्मा था। फिलिप के स्वामि-भक्त सूबेदार आरेञ्ज के कहने से, नेदरलैण्ड के लोग फिलिप के लाभ के विचार से, एल्वा का विरोध करने को तैयार थे। इस विचित्र सिद्धान्त पर डॉर्ट में हालैण्ड की पँचायत इकट्ठी हुई थी। इस बैठक में केवल इतना कार्य हुआ कि आरेञ्ज

का मित्र लीडन का निवासी पालबुइस विचार करने के लिए हालैण्ड का वकील चुन लिया गया। सभा १८ जुलाई के लिए स्थगित हो गई। १८ जुलाई को सेण्ट एल्डगोण्डे आरेञ्ज की अनुपस्थिति में काम चलाने का अधिकार आरेञ्ज से लेकर आया। उसने पँचायत के सामने एक बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान दिया और शहज़ादा आरेञ्ज के त्याग की प्रशंसा करते हुए कहा—"सन् १५६५ में आरेञ्ज एक बड़ी सेना लेकर देश को मुक्त करने के इरादे से आया था। परन्तु किसी ने उसकी सहायता नहीं की। किसी नगर ने उसके स्वागत के लिए द्वार नहीं खोला। आरेञ्ज को निराश हो कर लौटना पड़ा। परन्तु उसकी हिम्मत नहीं टूटी। उसके दिल की आग नहीं बुझी। भगवान की कृपा से अब लोगों की आँखें खुल गई हैं। बहुत से नगरों ने अत्याचार के विरुद्ध झण्डा भी खड़ा कर दिया है। इस सुअवसर को देख और हज़ारों दुखियों की आये दिन आने वाली आजयों का विचार करके आरेञ्ज ने कौड़ी पास न होने पर भी अपने नातेदारों और मित्रों की सहायता से फिर एक सेना तैयार कर ली है। ऐ मेरे देश के लोगों! क्या यह मौका भी हाथ से निकल जाने दोगे? उठो-उठो स्वतंत्रता के युद्ध के लिए अपनी थैलियाँ लुटा दो। झिझकने वाले नगरों के सामने आदर्श रक्खो।" इस व्याख्यान का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। जनता के प्रतिनिधियों ने एल्डगोण्डे का प्रस्ताव तुरन्त स्वीकार कर लिया। देशभर में 'तिलक स्वराज्य फण्ड' की तरह चन्दा एकत्र होने लगा। रुपया-पैसा, सोना-चाँदी; गहने जवाहरात; जिससे जो बन पड़ा लोगों ने दिल खोल कर दिया। अमीरों ने कर्ज के तौर

पर भी बहुत सा धन दिया। ऐसा प्रतीत होता था कि लोग एल्वा को कर में १० वाँ भाग भी देने को तैयार नहीं थे, परन्तु आरेञ्ज को सब कुछ दे डालने को तैयार थे। एल्वा ने फिलिप को लिखा कि हुजूर के लिए रुपया इकट्ठा करने में तो इतनी मुश्किल पड़ती है परन्तु आश्चर्य है, इस बागी को लोग खूब रुपया देते हैं। हालैण्ड के सूबेदार बोस्सू को भी इस बात पर बड़ा ताज्जुब था।

पंचायत ने एक मत से आरेञ्ज को हालैण्ड, जेलैण्ड, फ्रीसलैण्ड और यूट्रेक्ट का हकदार सूबेदार मान लिया था। यह भी निश्चय हुआ था कि शीघ्र ही दूसरे प्रान्तों को समझाकर आरेञ्ज को एल्वा के स्थान पर सारे नेदरलैण्ड का नवाब मान लिया जाय। आरेञ्ज से पंचायत की ओर से प्रार्थना की गई कि नौ-सेना के सेनाध्यक्ष की नियुक्ति हो जाना आवश्यक है। अन्त में निश्चय हुआ कि, डेलामार्क बन्दरगाहों के कुछ प्रतिनिधियों की सहायता से जल-युद्ध का संचालन करे। स्थल पर डॉर्ट, लीडन और एनखुइजेन नगरों से आक्रमण किया जाय। जब तक जल-थल दोनों सेनाओं का एकमत न हो तब तक सरकार से सन्धि न की जाय। धर्म के सम्बन्ध में सनातनी, रोमन कैथोलिक और नवीन पन्थी प्रोटेस्टेण्ट दोनों को अपने अपने मतानुसार चलने का अधिकार रहे। जो मनुष्य किसी दूसरे के धर्म में बाधा डालने का प्रयत्न करेगा वह मृत्यु-दण्ड का अपराधी माना जायगा। डार्ट की इस कांग्रेस ने आरेञ्ज को बिल्कुल 'स्वाधीन शासक (Dictator) बना दिया था। परन्तु आरेञ्ज को अपना अधिकार और शक्ति बढ़ाने की चिन्ता न थी। वह तो उस जालिम को देश से निकालने की

फ़िक्र में था, जो पाँच वर्ष से लोगों को रावण की तरह काट-काट और जला-जलाकर मार रहा था। उसने लोगों के दिये हुए पूर्ण-स्वाधीन शासक के अपने असीम अधिकार को स्वयं सीमा-बद्ध कर लिया। आरेञ्ज ने घोषणा निकाली कि बिना पंचायत की राय लिए मैं कोई काम नहीं करूँगा। सेना के अधिकारियों को मेरे अतिरिक्त पंचायत के प्रति भी स्वामिभक्ति की शपथ लेनी पड़ेगी।'

मौन्स में स्पेन की फौज ने लुई को चारों ओर से घेर लिया था। ऐसी अवस्था में बिना नई सेना की सहायता मिले लुई के लिए स्पेन वालों पर विजय प्राप्त करना असम्भव था। लुई ने अपने मित्र जेनलिस को नई सेना ले आने के लिए फ्रान्स भेजा था। लुई ने जेनलिस को अच्छी तरह समझा दिया था कि बड़ी होशियारी से आना। जहाँ तक बने ऑरेञ्ज की सेना से मिल जाने का प्रयत्न करना। परन्तु जेनलिस ने ऑरेञ्ज को सेना से न मिल कर अकेले ही ख्याति लूटने का प्रयत्न किया और ऐसी मूर्खता से लौटा कि स्पेन वालों ने रास्ते में ही उसकी सेना को पकड़ कर छाँट डाला और जेनलिस को एएटवर्प के किले में कैद कर दिया; १६ महीने बाद चुप चाप एक दिन जेनलिस का गला घोंट कर मारा डाला गया और यह मशहूर कर दिया गया कि जेनलिस बीमारी से मर गया। जेनलिस की सेना के सौ आदमी किसी तरह लड़ते भिड़ते मौंस पहुँचे। फ्रान्स से आनेवाली सहायता पर लुई की सारी आशा थी। परन्तु वहाँ से आनेवाली सहायता का यह हाल हुआ।

ऑरेञ्ज ने भी अपनी सेना के साथ नेदरलैण्ड की तरफ

कूच कर दिया था। २३ जुलाई को उसने एकाएक छापा मार कर रोअरमोण्डे नगर पर अधिकार कर लिया। उसकी सेना ने उनकी इच्छा के विरुद्ध, बहुत रोकने पर भी नागरिकों को स्पेन वालों की तरह लूटा। ऑरेञ्ज ने क्रुद्ध होकर हुक्म निकाला कि 'मेरी सेना का जो सैनिक नागरिकों को लूटे-मारेगा उसे मैं गोली से मार दूँगा। परन्तु बेचारा ऑरेञ्ज सैनिकों को कहां तक रोक सकता था? आखिर उसकी सेना भी तो उन्हीं जर्मनों की बनी थी, जो स्पेन की फ़ौज में भरे पड़े थे। अन्तर इतना अवश्य था कि एल्वा लूट-मार सेना का धर्म एवं कर्तव्य समझता और ऑरेञ्ज लूट-मार रोकने का भरसक प्रयत्न करता था। ऑरेञ्ज को रोअर-मोण्डे पर एक मास तक पड़ा रहना पड़ा। उसके पास सेना का खर्च चलाने को रुपया ही नहीं था। २७ अगस्त को हालैण्ड की पंचायत की ओर से रुपया देने का वादा आते ही ऑरेञ्ज ने बढ़-कर मियूज़ नदी पार की और चक्कर लगा कर डाइस्ट, टिरलमौण्ट, लुवेन और मेचलिन होता हुआ बढ़ने लगा। बहुत से शहरों और ग्रामों ने ऑरेञ्ज का अधिकार मान लिया और उसकी फ़ौज को अपने खर्च पर अपने यहाँ रख लिया। इन नगरों में मुख्य नगर मेचलिन था। मेचलिन नगर के ऑरेञ्ज का अधिकार मान लेने की खबर सुनकर एल्वा ने कहा था कि इस शहर को ऐसा मज़ा-चखाया जायगा कि याद रहे। ऑरेञ्ज आगे बढ़ने तो लगा था परन्तु उसे भी फ्रान्स से आनेवाली सेना पर ही सारा भरोसा था। फ्रान्स के राजा ने लुई से स्वयं सेना भेजने का वादा किया था। फ्रान्स के सुधारक दल के प्रख्यात सेनापति कौलिग्नी के साथ १२००० पैदल और ३००० सवार नेदरलैण्ड के उद्धार के लिए

भेजना निश्चय हुआ था। कौलिग्नी ने ऑरेञ्ज को अपनी सेना लेकर आने के सम्बन्ध में पत्र लिखा था। परन्तु फ्रान्स के चालबाज राजा ने धोखा देकर एक दिन कौलिग्नी को अपने यहाँ बुलाया और उस पर तथा उसके १००० साथियों पर एकाएक हमला करके सबको कत्ल कर डाला। ऑरेञ्ज को जब यह खबर मिली तो उसे बड़ा धक्का पहुँचा। अपनी सेना की सफलता तथा मौंस के बचाव की अब ऑरेञ्ज को कुछ आशा न रही।

वर्षों से फिलिप और एल्वा प्रयत्न कर रहे थे कि फ्रान्स का राजा भी उनके धार्मिक कार्य में सम्मिलित हो जाय और उनकी तरह अधर्मियों को संसार से उठा देने का बीड़ा उठा ले। परन्तु फ्रान्स के राजा ने यह कहकर एल्वा को निराश कर दिया था कि प्रजा के विरुद्ध हथियार उठाना महा पाप है। उसी फ्रान्स के राजा को अन्त में उसकी पागल माने बेवकूफ बनाकर फ्रान्स को नवीन पन्थ पर चलने वाली प्रजा को नष्ट कर डालने पर तत्पर कर लिया था। अब तो उसको धुन समा गई कि नवीन पंथ का फ्रान्स में नामो-निशान नहीं रहना चाहिए। सेंगट बार्थलमो के वध के बाद कुछ ही समय में फ्रान्स में कम से कम २५०००, और किसी-किसी के मतानुसार नवीन मत के १,००,०००, आदमियों का वध हो गया। स्वयं राजा ने महल की खिड़की से गोलियाँ दाग-दागकर सड़कों पर फिरने वाली प्रजा को ऐसे चाव से मारा मानों जानवरों का शिकार खेला जा रहा हो। यही राजा कलतक ऑरेञ्ज और लुई को सहायता देकर 'नवीन-पंथ' के पक्ष का हृदय से समर्थन करने का दम भरता था। परन्तु जो राजा यूरोप के चाणक्य मैकविले की राजनीति में विश्वास

रखकर मानता था कि, राजनीति शास्त्र में निपुण होने का अर्थ है असत्य-भाषण-शास्त्र में निपुण होना, उस राजा पर विश्वास रख कर कौन फ़ायदा उठा सकता था ? फ़िलिप की सलाह से फ्रांस के राजा ने अपनी प्रजा का वध नहीं किया था । फ्रान्स का राजा नेदरलैंएड के देशभक्तों की सहायता करता रहता था इस लिए फ्रान्स और स्पेन में अनबन थी । लेकिन फ्रान्स के राजा के इस एका-एक धार्मिक झुकाव की खबर सुनकर फिलिप उछल पड़ा। तुरन्त गिरजे में जाकर प्रार्थना की और भगवान को हज़ार धन्यवाद दिया । पोप भी अधर्मियों के वध का समाचार सुनकर बहुत खुश हुआ । उसने भी तुरन्त गिरजे में जाकर फ्रान्स के सच्चे ईसा-भक्त राजा के पाखण्डियों के बधकर डालने के इस सत्कार्य की प्रशंसा करते हुए उसके लिए ईश्वर की विशेष प्रार्थना की। ऑरेञ्ज को फ्रान्स से सहायता मिलने की आशा जाती रही। फिलिप और एल्वा की खुशी का ठिकाना न रहा । फ्रान्स से उन्हें दिन-रात खटका रहता था। अब नेदरलैंएड को सहायता करने वाला पड़ोसी भी फिलिप का मित्र हो गया । फ्रान्स के राजा ने फिलिप को लिखा कि मैंने जो अफ़सर और सैनिक लुई की सहायता को मौन्स भेजे थे उनमें से कुछ अभी तक आपकी कैद में है। कृपया इन्हें तुरन्त यमपुर पहुँचा दीजिए। फिलिप ने कहा ठीक है इन पौधों के पृथ्वी पर रहने से औरों के उग आने का डर है। जेनलिस इत्यादि सब अभागे बन्दी तुरन्त मार डाले गये । फ्रान्स के राजा ने इनको मरवा डालने के लिए जो पत्र लिखा था उसका एक और भी कारण था । फ्रान्स का राजा चार्ल्स नवम डरता था कि जैनलिस और उसके साथी यदि किसी प्रकार फ्रांस

लौट आये, तो कहीं फिर फ्रान्स में उत्पात न खड़े हो जायँ। इस लिए एक तरफ तो वह एल्वा को फ्रान्सीसी बन्दियों को तुरन्त मार डालने और मौन्स को इसी के नाम पर नष्ट कर देने के लिए लिखता था। दूसरी तरफ इस सारी हत्या वध और धोखेबाजी के बाद भी आरेञ्ज को चुपचाप पत्र लिखकर सहायता देने के झूठे वायदे करता था। उसे ऑरेञ्ज से बहुत डर था। इसलिए वह चाहता था कि यह बला नेदरलैण्ड में ही रहे तो अच्छा। कहीं ऑरेञ्ज फ्रान्स में घुस पड़ा तो कौलिग्नी का कत्ल व्यर्थ जायगा। मौन्स के सामने एल्वा के पड़ाव में फ्रान्स का समाचार सुनकर खुशी के बाजे बजने लगे, दावतें उड़ने लगी। सबको विश्वास हो गया कि अब मौन्स बड़ी आसानी से नष्ट कर दिया जा सकेगा।

इसी समय ऑरेञ्ज ने पेरोन पर पहुँच कर विन्चे और मौंस के सम्मुख अड़ी हुई एल्वा की फौज के बीचो-बीच पड़ाव डाल दिया। शत्रु की सेना महारथियों से भरी थी। डॉन फ्रेड-रिक तो था ही; ड्यूक आव् एल्वा, ड्यूक आव् मेडीनाकोली कोलग्न का लड़का बिशप इत्यादि भी आ मिले थे। ऑरेञ्ज के सामने एक ही मार्ग था। किसी तरह शत्रु को खाइयों के पीछे से मैदान में निकाल कर लाये और ईश्वर का नाम लेकर दो-दो हाथ करे। परन्तु एल्वा एक होशियार सेनापति था। वह खाइयों के बाहर निकल कर आती हुई जीत को योंही क्यों खोता? फ्रांस के सिपाहियों के मौंस के भीतर बलवे पर उतारू होने और लुई के बुखार में पड़े होने के समाचार आ रहे थे। ऑरेञ्ज की सेना तीन मास के लिए जर्मनी से किराये पर आई थी। और फ्रांस से सहायता न मिलने का विश्वास होते ही इस सेना

के ऑरेञ्ज को छोड़ कर भाग उठने की सम्भावना थी। जिन कारणों से सन् १५३८ ई० में एल्वा ने ऑरेञ्ज से युद्ध न करके उसे योंही भगा दिया था वेही सब कारण आज फिर उपस्थित थे। ११ सितम्बर को डान फ्रेडोरिक ४,००० चुने हुए जवानों को लेकर शहर के हावरे नाम के द्वार के समीप के सेएट फ्लोरियन नामी ग्राम में जा डटा। ऑरेञ्ज भी थोड़ी ही दूर पर हरमिगनी नाम के स्थान पर टिका हुआ मौंस के भीतर सेना पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा था। रात को फ्रेडरिक ने ऑरेञ्ज के डेरों पर एकाएक ऐसा छापा मारा कि सारी सेना को आन की आन में नष्ट कर डाला। शाहज़ादा ऑरेञ्ज कैद होने से बाल-बाल बच गया। छः सौ जवानों को लेकर डान का नायक जूलियन रोमेरो रात को आरेञ्ज के पड़ाव में अन्धेरे में घुसा। सन्तरियों को मार कर सेना को एक दम धर दबाया। रात के एक बजे से तीन बजे तक अन्धकार में भयंकर मारकाट होती रही। ऑरेञ्ज की सेना एक तो सोते में धर दबाई गई थी, दूसरे अन्धकार में पता नहीं चलता था कि दुश्मन के कितने सिपाही हैं! रोमेरो कुछ सैनिकों को लेकर ऑरेञ्ज के खीमे की तरफ़ झपटा। आरेञ्ज और उसके सारे सन्तरी थके हुए गहरी नींद में सो रहे थे। जिस महान पुरुष के हाथ से एक देश के स्वतंत्र राज्य की नीव रक्खी जाने वाली थी वह लगभग शत्रु के हाथ में आ गया था। परन्तु एक छोटे से जानवर ने उसे शत्रु के हाथ में पड़ने से बचा लिया। पनियर जात का एक छोटा सा कुत्ता आरेञ्ज की खाट पर हमेशा सोया करता था। घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनकर वह भौंका और पन्जों से ऑरेञ्ज का मुँह खुरच-खुरच कर

अपने मालिक को जगाने का प्रयत्न करने लगा। भाग्यवश शत्रु आने से क्षणभर पहिले ही आरेञ्ज उठ बैठा। पास ही कसा हुआ घोड़ा खड़ा था। उस पर कूद कर वह बैठा और हवा हो गया। शत्रुओं ने आकर नौकरों और ऑरेञ्ज के मन्त्रियों को मार कर अपना हृदय ठण्डा किया। उषा के प्रकाश में आरेञ्ज की सेना ने देखा की शत्रु बहुत थोड़े हैं। परन्तु जैसे ही उसके सैनिक एकत्र होने लगे रोमेरो अपने जवानों को लेकर वापस भाग गया। उस अन्धकार में रोमेरो के एक-एक जवान ने कम से कम एक-एक शत्रु सैनिक को तो मारा ही होगा। बहुत से सोते हुए सैनिकों को जला भी डाला। रोमेरो के कुल ६० जवान खेत आये। जिस कुत्ते ने आरेञ्ज के प्राण बचाये थे उसी जात का एक और कुत्ता इस घटना के बाद से आरेञ्ज सदा अपने पास सुलाने लगा।

आरेञ्ज का इस हार से भी उत्साह भङ्ग नहीं हुआ। उसका खेल तो सेण्ट बार्थेलमो के वध ने ही बिगाड़ दिया था। वह लौट कर पेरोन पहुँचा। हीस्ट नाम का जर्मन हत्यारा चुप-चाप उसके पीछे लगा हुआ था। वह फ्लवा का इनाम पाने की इच्छा से ऑरेञ्ज के प्राण लेने की घात में था। ऑरेञ्ज जब पेरोन पहुँचा तो उसकी सेना ने रुपया न मिलने के कारण लड़ने से साफ इन्कार कर दिया। बेचारे ने दुःखी हो कर लुई को सारी परिस्थिति बताते हुए लिखा—"भाई तुम्हें बचाना अब मेरी शक्ति के बाहर है। जैसे बने शत्रु से इज्जत के साथ सुलह करलो।" दुःखी हृदय से अपने बहादुर भाई को मौंस में घिरा हुआ छोड़ कर ऑरेञ्ज सेना सहित मियूज पार करके राइन की

ओर चल पड़ा। उसके पास नेदरलैण्ड के नगरों के कागजी वादों के अतिरिक्त सिपाहियों को वेतन देने के लिए कुछ नहीं था। सेना में एक भीषण विद्रोह उठ खड़ा हुआ। बड़ी कठिनता से उसके कुछ अफसरों ने उसकी जान बचाई। राइन पार करके ऑरेञ्ज ने सारी सेना को छुट्टी दे दी और भगवान का नाम लेकर अकेला हालैण्ड की तरफ चल दिया। इस पराजय और कष्ट की पराकाष्ठा के समय भी ऑरेञ्ज के चेहरे से वीरत्व बरसता था। वह वीरत्व जो महारथियों के चेहरे पर विजय के बाद बरसता है। हालैण्ड ही एक ऐसा प्रान्त था जो अभी तक ऑरेञ्ज को अपना नेता मानता था। हालैण्ड प्रान्त ऑरेञ्ज को अपना त्राता और उद्धारक समझ कर उसके मुख की ओर देखता था। ऑरेञ्ज को हालैण्ड पहुँच कर वहाँ लड़ते-लड़ते मर मिटने के अतिरिक्त और कुछ आशा नहीं थी। उसने अपने भाई को लिखा था—"भाई ! मैं हालैण्ड में अपनी कब्र तैयार करने जा रहा हूँ।" लेकिन उसका प्रयत्न जारी रहा।

एल्वा लुई को हृदय से घृणा करता था। परन्तु मौंस शहर इतने मार्के का था और समय भी ऐसा बुरा था कि उसने लुई से सुलह कर लेना ही उचित समझा। लुई को अपनी फौज और उन सब नागरिकों के साथ निकल जाने दिया गया जिन्हों ने लुई के साथ सरकार के विरुद्ध युद्ध किया था। शहर छोड़ने से पहले लुई स्पेन की सेना में गया। वहाँ मेडीना कोली, डॉन फ्रेडरिक इत्यादि सरदारों ने उसका बड़ा सत्कार किया। जब लुई इन लोगों से विदा लेकर चलने लगा तो फ्रेडरिक अपने खेमे के बाहर खड़ा होकर इस बीसों युद्ध के वीर की छबि निहारने

लगा। जब तक लुई आँखों की ओझल नहीं हो गया तब-तक फ्रेडरिक खड़ा-खड़ा उस की ओर देखता और उसकी वीरता की हृदय में सराहना करता रहा। एल्वा के इस सद्व्यवहार में राजनैतिक चाल थी। लुई उसे अच्छी तरह समझता था। एल्वा का सेण्ट बार्थेलमो की घटना के सम्बन्ध में कहना था कि "मैं अपने दोनों हाथ कटा डालूंगा। परन्तु ऐसा घृणित कार्य्य कभी न करूँगा।" मानों उसके हाथ अभी तक पवित्र कार्य्य करके ही संसार का भला कर रहे थे। लुई के चले जाने पर नोयरकार्मेस ने शहर में प्रवेश किया। शहर छोड़ कर जाने वाले मनुष्यों में से कुछ स्पेन वालों के वचनों पर विश्वास करके अपने नातेदारों और मित्रों से मिलने को कुछ समय के लिए शहर में टिक गये थे। नोयरकार्मेस ने सुलह की शर्तों की जरा परवाह न करके उन सब को तुरन्त मरवा डाला। फिर ब्रसेल्स की तरह खूनी कचहरी बैठा कर उसने लोगों को 'शुक्रवार के दिन मांस खा लेने, अपने पुत्र को लुई के साथ लड़ने की इजाजत देने, नवीन पन्थ की तरफ सहानुभूति दिखाने' इत्यादि-इत्यादि छोटे-छोटे बहानों पर लोगों को फाँसी देना, और उनकी जागीरें जब्त करके सस्ते दामों में स्वयं नीलाम में खरीद कर अपना घर भरना, शुरू कर दिया। एक साल तक नायरकार्मेस का रावण-राज्य मौंस में कायम रहा। दूसरे वर्ष रेकुइसेन्स ने क्षमा की घोषणा निकाली। उस समय भी मौंस की जेल में ७५ प्राण-दण्ड पाये हुए अपराधी फाँसी की बाट जोह रहे थे। बड़े आश्चर्य की बात है कि इन अत्याचारों से सम्बन्ध रखने वाले सारे कागजात भी छिपा दिये गये और सदियों तक उनका किसी को पता भी नहीं चला। १९ वी सदी में पेटो

डेनास में एक पुरानी मीनार के गिरने पर कागजातों का एक पुलिन्दा निकला जिससे इतिहास लिखने वालों को इन घटनाओं का हाल मालूम हुआ और फिलिप के भयङ्कर अत्याचार का भण्डा फूटा।

मौंस देश की कुन्जी थी। उसके हाथ आते ही अन्य सारे स्वतंत्र हो जाने वाले नगर भी स्पेन वालों के हाथ आ गये। जब डॉन मेचलिन नगर के पास पहुँचा तो वहाँ की कायर सेना दो चार गोले स्पेनवालों पर दाग कर वरों के छत्ते को छेड़ भागी। नागरिक अनाथ हो गये। एल्वा ने पहले ही इस नगर को मजा चखाना निश्चय कर लिया था। गोले दगने से और भी क्रोध में आकर स्पेनवालों ने फ्रेडरिक और नोयरकार्मेस की अध्यक्षता में नगर पर भयंकर अत्याचार किये। उस समय के एक सनातनी लेखक ने इन अत्याचारों के सम्बन्ध में अपने मित्र को एक पत्र में लिखा था—"वर्णन लिखते मेरी कलम काँपती है, शरीर में रोमाञ्च हो आता है। बीमारों को खाट पर से खींच-खींच कर मारा गया। स्त्रियों की गिरजों में इज्जत उतारी गई। तीन दिन तक लूट हुई। एक दिन स्पेन के सैनिकों का राज्य था। दूसरे दिन बैलून सैनिकों का। तीसरा दिन जर्मनों को दिया गया था।" लूट यहाँ तक हुई थी कि उसी सनातनी लेखक के अनुसार माताओं के पास आँखों के सामने भूख से मरते हुए बालकों के मुख में रखने को रोटी का टुकड़ा तक नहीं था।

ब्रेवेण्ट और फ्लेण्डर्स जैसी शीघ्रता से स्वतंत्र हुए थे उसी शीघ्रता से फिर गुलामी की जंजीरों में जकड़ दिये गये। जेलैण्ड में भी ऑरेञ्ज की स्थिति कुछ अच्छी नहीं थी। वालचेरेन द्वीप

पर मिडलबर्ग और आर्नेम्यूड अभी तक सरकार के कब्जे में थे। केम्पवीयर और फ्लशिंग पर ऑरेञ्ज का अधिकार हो गया था। दक्षिण बीवलैण्ड द्वीप पर टरगोज नाम का बड़े मार्के का स्थान था। स्पेन की सेना इसकी अभी तक बड़ी बहादुरी से रक्षा कर रही थी। जब तक यह स्थान सरकार के हाथ में था, तब तक मिडलबर्ग भी सुरक्षित था। और इस स्थान के गिरते ही सारा वालचरेन द्वीप सरकार के हाथ से निकल जाता। जेरोम नाम के ऑरेञ्ज के एक वीर नायक ने मिडलबर्ग इत्यादि पर कब्ज़ा जमा लेने के प्रयत्न किये थे, पर सब असफल हुए थे। अन्त में उसने निराश होकर विजयी होने या मर मिटने का दृढ़ संकल्प कर लिया। ७,००० सेना लेकर उसने टरगोज के चारों ओर घेरा डाल दिया। एल्वा ने तुरन्त एन्टवर्प के अधिकारी डेरविला को टरगोज की सहायता के लिए भेजा। परन्तु तुरन्त जल-स्थल दोनों ओर से सहायता भेजने के उसके प्रयत्न देशभक्तों ने विफल कर दिये। दोनों रास्ते घेरे देशभक्तों की सेनायें पड़ी थीं। स्पेन वालों ने टरगोज की सहायता करने के लिए बड़ी वीरता पूर्वक युक्ति ढूँढ़ निकाली। संसार के युद्ध के इतिहास में उनकी यह युक्ति अद्वितीय और सदा उनकी कीर्ति का चिह्न रहेगी।

शेल्ड नदी एण्टवर्प के पास से बहती थी। वह ब्रेबण्ट और फ्लैण्डर्स को अलग करती हुई स्वयं दो परस्पर उलटी धाराओं में विभाजित होकर समुद्र में गिरती थी। इन दोनों धाराओं के बीच में जेलैण्ड के द्वीप थे। इनका कुछ भाग समुद्र में डूब गया था और कुछ ऊपर था। टरगोज दक्षिण बीवलैण्ड का मुख्य नगर था। दक्षिण बीवलैण्ड सदा से द्वीप नहीं था। ५० वर्ष

पहले समुद्र की एक बाढ़ ने आकर सदा के लिए इस भाग को खुश्की से अलग कर दिया था। इस द्वीप और खुश्की के बीच समुद्र की छोटी सी खाड़ी बन गई थी। इस खाड़ी में घटती (ebb) के समय चार-पाँच फीट पानी रहता था और ज्वार के समय १० फीट गहरा हो जाता था। स्पेन की सेना के कैप्टेन प्लोमर्ट ने इस सागर में डूबे हुए मार्ग से टरगोज़ सेना ले जाने का विचार किया। पहले उसने इस मार्ग से परिचित दो किसानों को साथ लेकर स्वयं दो बार दस मील लम्बी खाड़ी पार की। फिर सेनापति के सन्मुख अपना प्रस्ताव रक्खा। कर्नल मौण्ड्रेगन स्वयं सेना को इस मार्ग से ले जाने के लिए तुरन्त तैयार हो गया। स्पेन, वैलून और जर्मन तीनों जातियों के एक-एक हज़ार छटे जवानों को बिस्कुट और बारूद से भरा हुआ एक-एक बोरा दिया गया। सेना को बिल्कुल यह नहीं बताया गया था कि कहाँ जाना है। जब मौण्ड्रेगन उन्हें लेकर सागर के तट पर पहुँचा। तब उसने सिपाहियों को बताया कि किस भयंकर रास्ते से होकर उन्हें जाना है। वह स्वयं आगे-आगे चलने को तैयार हुआ। राह की भयंकरता सुनकर सिपाहियों का जोश ठण्डा होने के स्थान में और बढ़ गया। मोण्ड्रेगन ने कहा कि "वीरो! यदि हमने यह रास्ता पार करके विजय प्राप्त कर ली तो संसार में हमारा नाम रह जायगा।' सैनिक ख्याति लूटने के लिए पागल हो उठे। आगे-आगे वीर मौण्ड्रैगन और पीछे-पीछे सारी सेना एक-एक आदमी की कतार में सिर पर बोरी रक्खे रात्रि के अन्धकार में सागर पार करने लगी। पानी छाती से नीचे कहीं न था। अक्सर कन्धों से ऊपर तक हो जाता था। यह घटती

का समय था। बढ़ती आने में छः घण्टे की देर थी। इसी समय दस मील लम्बा सागर पार कर लेना था। नहीं तो ज्वार आकर सब को हड़प लेता। सागर की तलहटी में कहीं-कहीं मिट्टी बहुत चिकनी थी। कहीं-कहीं कीचड़ आ जाता था। सैनिकों को पाँव टिकाना असम्भव हो जाता था और तैर-तैर कर जाना पड़ता था। परन्तु उत्साह और वीरता से इस कठिन मार्ग को पार करके सुबह होते-होते सेना उस पार जा पहुँची। ३००० हजार में से कुल ९ आदमी डूबे। पार पहुँचते ही मशालें जलाकर मौण्ड्रेगन ने उस पार उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हुए सेनापति को अपने सहीसलामत पहुँच जाने की खबर दी। अन्धियारी रात में इस प्रकार ३,००० सेना का सागर के पार उतर जाना सचमुच एल्वा के लिए बड़ी अभिमान की बात और संसार के युद्ध के इतिहास में बड़ी विलक्षण घटना है। अलिफ लैला की कहानियों के जादू की सहायता से लड़ने वाले शाहजादों की अथवा 'बग़दाद के चोर' की जादू की सेना की तरह एल्वा की सेना सागर में से निकल कर खड़ी हो गई थी। चारों ओर खबर फैल गई कि एल्वा की सेना समुद्र के पेट में से निकल आई है। टरगोज निकट ही था। जैसे ही इस जादू की सेना ने नगर की ओर कूच किया देशभक्तों की सेना भय से भाग खड़ी हुई। मोण्ड्रेगन ने बड़ी सरलता से नगर पर अधिकार जमा लिया और फिर अपनी सेना लेकर ब्रेवेण्ट प्रान्त की ओर चला गया।

मौन्स और मेचलिन का सिर नीचा करके एल्वा निमवी-जन की तरफ चला गया था। डॉनफ्रेडरिक को उसने उत्तरी और

पूर्वीभागों को दबाने के लिए भेज दिया था। जहाँ जहाँ फ्रेडरिक गया था, वहाँ सब शहरों ने तुरन्त उसका अधिकार मान लिया था। जुटफेन नगर ने कुछ धृष्टता दिखाई थी, इसलिए एल्वा की आज्ञानुसार वहाँ कत्ले आम कर दिया गया। नगर में किसी औरत की इज्जत न बची। बहुत दिनों तक शहर के पास पहुँचकर समाचार लाने तक की किसी की हिम्मत न हुई। पास के दूसरे शहर के एक सरदार ने अपने किसी मित्र को एक पत्र लिखा था—"पिछले रविवार को जुटफेन से हाहाकार और कराहने की आवाजें आ रहीं थीं ऐसा लगता था मानो कोई भयंकर वध हो रहा हो। परन्तु हमें ठीक पता नहीं कि क्या मामला था।" आरेञ्ज ने जेल्डरलैण्ड और ओवरी सेल के नगर अपने साले सरदार वाण्डेनबर्ग के सुपुर्द कर दिये थे। परन्तु यह कायर अपनी जाति के नाम पर धब्बा लगाकर नगरों को अनाथ अवस्था में और अपनी गर्भवती स्त्री को एक किसान के यहाँ छोड़कर भाग गया। सारे शहर फिर एल्वा के हाथ योंही आ गये। फ्रीसलैण्ड ने भी सिर झुका दिया। लेकिन हालैण्ड ने झण्डा नीचा नहीं किया था। जिस प्रान्त की सरहद में स्वयं आरेञ्ज उपस्थित हो, वह प्रान्त आसानी से घुटने कैसे टेक सकता था? और सब तरफ का विद्रोह दबा देने के बाद फ्रेडरिक हालैण्ड की तरफ मुड़ा। रास्ते में 'नआरडन' नाम का एक छोटासा नगर था। इस नगर ने फ्रेडरिक का अधिकार स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था देशभक्तों के सैनिक लड़ने को तैयार नहीं थे, परन्तु नागरिकों में बड़ा उत्साह था। एक पागल ने ऊपर चढ़कर एकाएक स्पेन की फौज पर कुछ गोले भी दाग दिये। नागरिकों ने पास पड़े हुए देश

भक्त सेनापति ओनौय के पास सहायता भेजने की प्रार्थना की। परन्तु वह बेचारा थोड़ीसी बारूद और बहुत से वादों के अतिरिक्त कुछ न भेज सका। हाँ, यह सलाह जरूर दी कि यदि हो सके तो इज्जत से सुलह कर लो। नागरिकों को कोई रास्ता न सूझा विवश हो कर उन्होंने फ्रेडरिक के पास सुलह का सन्देशा भेजा। फ्रेडरिक अपनी फौज को नगर की ओर बढ़ने का हुक्म दे चुका था उसने सन्देशा लाने वालों से कहा—"जाओ, मेरी सेना के साथ जाओ। नागरिकों का शहर के द्वार पर ही उत्तर दिया जायगा" यह बेचारे सेना के साथ साथ चले। दो सन्देशा लाने वालों में से एक गाड़ी में अपना कोट छोड़ कर चुपके से खिसक गया। वह अपने साथी को नमस्कार करके बोला, भाई शहर में लौट कर जाना मुझे उचित नहीं लगता। दूसरा मनुष्य यह सोच कर सेना के साथ रहा कि मेरी बीबी बाल बच्चों और मित्रों पर जो संकट आवेंगे उन्हें मैं भी झेल लूंगा। शहर के पास डेरा डालकर फ्रेडरिक ने कहा कि सुलह के लिए शहर से कुछ और प्रतिनिधि आने चाहिए। दूसरे दिन सुबह शहर के चार प्रतिनिधि और आये। जूलियन रोमेरो ने आगे बढ़कर कहा कि 'मैं फ्रेडरिक की तरफ से सुलह करने को तैयार हूं। मुझे शहर की कुंजियाँ दे दो।' लोगों की जान-माल की रक्षा करने का विश्वास दिलाने के लिए उसने प्रतिनिधियों से तीन बार हाथ मिलाया। रोमेरो के वचन को एक सिपाही के वचन समझ कर प्रतिनिधियों ने विश्वास करके कुंजियों उसके हवाले कर दीं। रोमेरो ने शहर में प्रवेश किया। पाँच छः सौ बन्दूकधारी सैनिक भी उसके साथ घुसे। नगरवालों ने स्पेनवालों को खुश करने के लिए रोमेरो का स्वागत करने के लिए बड़ीशान

की दावत की। दावत खत्म हो चुकने पर शहर का घण्टा बजाकर रोमेरो ने नागरिकों को गिरजे में एकत्र किया। सब लोग एकत्र हो कर उत्सुकता से सन्धि की शर्तें सुनने को बाट देखने लगे। इतने में एक पादरी ने आकर सब को प्राण दण्ड का हुक्म सुना दिया। तुरन्त ही सेना ने गिरजे के द्वार खोलकर गोलियां बरसानी शुरु कर दीं, और भागते हुए लोगों को मारमार कर लाशों के ढेर लगा दिये। बाद को गिरजे में आग लगा कर ज़िन्दे और मुर्दे सब राख में मिला दिये गये। सैनिकों ने दौड़ दौड़ कर सड़कों पर लोगों को मारा और घरों को लूटा। जिन मनुष्यों को लूटा उन्हींके सिर पर माल लाद कर अपने पड़ाव में ले गये और इनाम में उन अभागों के सिर काट लिये। शहर में चारों तरफ आग लगा दी गई थी जिससे जो नागरिक छिप रहे हों वे भी जल जायं। चारों ओर भयंकर ज्वालायें उठ रहीं थीं। जो लोग निकल कर प्राण बचाने के लिए भागते थे उनको या तो तलवारों और कुल्हाड़ियों से टुकड़े टुकड़े कर डाले जाते थे, या उन्हें भालों से छेदकर आग में फेंक दिया जाता था। नागरिकों को भुनता देखकर स्पेनवाले खूब हँसते थे। स्पेन के सैनिक इतने पागल हो गये थे कि उनमें से बहुत से नागरिकों की रगें फोड़ फोड़ कर शराब की तरह रक्त पी रहे थे। बहुतसे नागरिकों की आखों के सामने पहले उनकी बहू बेटियों का सतीत्व हरण किया गया और फिर उन सब को मार डाला गया। क्रूरता का ताण्डव नृत्य था। एक विद्वान को उसकी विद्वत्ता के लिए छोड़ दिया गया परन्तु उसके सामने उसके बेटे का जिगर चीर-कर निकाल लिया गया। कुछ आदमी बरफ पर होकर जान

बचाने को भागे। पकड़कर उन्हें नंगा करके पेड़ों से उलटा लटका दिया गया। वहाँ उलटे लटके हुए बेचारे वे तड़प तड़प कर बर्फ में गल गये। अमीरों के तलवों पर अग्नि के दहकते हुए अंगारे रख रखकर पहले रुपया वसूल किया गया और पीछे से उनके प्राण भी ले लिये गये। नआरडन नगर में एक मनुष्य जीवित न बचा। तीन सप्ताह तक लाशें पड़ी सड़कों पर सड़ती रहीं। पेड़ों पर, द्वारों पर, दीवारों पर जिधर देखो हाड़-मांस हाथ-पैर अथवा लाशें लटकती नजर आती थीं। अन्त को शहर ढाकर मिट्टी में मिला दिया गया। हरे-भरे नआर्डन नगर की जगह बयाबन बन गया।

इन घटनाओं का वर्णन करते लेखनी काँपती है। परन्तु लेखनी को दृढ़ता से पकड़ कर इन घटनाओं का वर्णन करना इतिहास लिखने वालों का कर्तव्य है। घटाकर कहना पाप होगा। बढ़ा कर लिखना असम्भव है। अच्छा है, दुनिया के लिए नआ-र्डन का यह दृश्य याद रखना बड़ा लाभ दायक होगा। भगवान की इस पृथ्वी पर एक छोटे से देश ने अत्याचारियों के हाथों ईश्वर के नाम पर कैसी कैसी यातँनायें सहीं। बहुतसे लेखकों ने क्रान्ति के इतिहास लिख-लिखकर जनता के अत्याचारों का रोना रोया है। जनता के अत्याचार भी याद रखने और बार बार मनन करने के योग्य हैं। परन्तु दूसरी ओर के चित्र का अध्ययन कर-लेने से भी बड़ा लाभ होगा। जुल्म बड़ी पुरानी चीज है, फिर भी नित्य नयी वस्तु है। किसी न किसी स्वरूप में जुल्म संसार में बना ही रहता है। नआर्डन को याद रखने से स्वतंत्रता हमें प्यारी रहेगी। नेदरलैण्ड में एल्वा के शासन का हाल पढ़कर जबान बन्द हो जाती है। कैसे भगवान ने अपने नाम पर ऐसे जुल्म

होने दिये ? क्या भावी सन्तान के लिए स्वाधीनता प्राप्त करने में पीढ़ियों दर पीढ़ियों खून की नदियों में तैरना अनिवार्य था ? क्या इस बात की आवश्यकता ही थी कि एक पूरा देश अत्याचारी एल्वा के शासन में अग्नि और तलवार के घाट उतरे जिससे इन धूम्र और चीत्कार के बादलों में विलियम आरेञ्ज की निर्दोष और सौम्य मूर्ति संसार के सामने अधिक उज्वल हो जाय ? क्या राम के आने के लिए रावण राज्य अनिवार्य था ?

मौन्स की असफलता के बाद आरेञ्ज हालैण्ड चला गया। २०,००० सेना में से बचे हुए कुल सत्तर सवारों को साथ लिये जिस समय उसने एनखुइज्ञेन नगर में प्रवेश किया तो लोगों ने उसका ऐसा दिल खोलकर स्वागत किया, जैसा विजय प्राप्त करके लौटने वाले सेनापतियों का किया जाता है। आरेञ्ज ने समझ लिया था कि जर्मनी से अब फिर तीसरी बार एक और सेना खड़ी कर लेना असम्भव है। इसलिए वह अन्तिम बार हालैण्ड में ही भाग्य आजमाने का निश्चय करके आया था। नगर-नगर घूम-घूम कर वह लोगों को समझाने लगा और देश को सुव्यवस्थित रखने का प्रबन्ध करने लगा। हारलेम में हालैण्ड की पंचायत बुलाकर उसकी बन्द बैठक में आरेञ्ज ने अपने सारे विचार खोलकर रक्खे थे।

हालैण्ड में केवल एक नगर एम्सटर्डम अभी तक एल्वा के कब्ज़े में था। एल्वा और फ्रेडरिक इस स्थान पर बैठकर हालैण्ड पर फिर से अधिकार प्राप्त कर लेने की तरकीबें सोच रहे थे। आरेञ्ज दक्षिणी भाग में था और उसका अधिनायक डीडरिश सोनोय उत्तर हालेण्ड में। दोनों के बीच में हारलेम नगर था। हार-

लेम पर एल्वा का अधिकार हो जाने से हालैण्ड दो भागों में विभा-
जित हो जाता और देशभक्तों की सेना ऐसी बिखर जाती कि
एक दूसरे को सहायता पहुँचाना असम्भव हो जाता। हालैण्ड
के सरकारी गवर्नर बोस्सू ने कह रक्खा था कि जो दशा जुटफेन
और न आरडन की हुई है, वही उन सब शहरों की की जायगी जो
सरकार की आज्ञा का उल्लघँन करेंगे। यह सुनकर हारेलम वालों
में भय उत्पन्न होने की बजाय और दृढ़ता आ गई थी। लेकिन
वहाँ के कायर अधिकारियों में से तीन चुपचाप विभीषण बनकर
एल्वा के पास गये और गुप्त रूप से हारलेम पर अधिकार जमा
लेने की एल्वा को तरकीबें बताने लगे। एक तो इनमें से एल्वा
के पास ही रह गया। दो लौटकर नगर में आये। नागरिकों ने
उन्हें पकड़कर तुरन्त फाँसी पर लटका दिया। अधिकारी-वर्ग
कन्धा गिराने लगा था परन्तु नगर में रहने वाली आरेञ्ज की
सेना के वीर नायक रिपेर्डा ने लोगों को एकत्र करके उन्हें
स्वाधीनता के लिए आखिरी दमतक लड़ने को तैयार कर लिया।
हारलेम की जनता के हृदय में तो वीर रस बह रहा था, परन्तु
अधिकारी कायरता दिखा रहे थे। आरेञ्ज ने अधिकारियों को
बदल कर सेण्ट एल्डगोण्डे को शहर का प्रबन्ध सम्भालने के
लिए भेजा।

एम्सटर्डम और हारलेम के बीच में एक बड़ी भारी झील
थी। झील के किनारे किनारे एक ऊँची सड़क जाती थी, जो
दोनों शहरों को मिलाती थी। स्वभावतः इसी झील के आसपास
युद्ध होने वाला था। १० दिसम्बर को फ्रेडरिक सेना लेकर
एम्सटर्डम से चला और आगे बढ़कर स्पारेण्डम नाम के ग्राम

पर कब्ज़ा कर लिया। फिर उसकी सेना ने हारलेम के चारों ओर घेरा डाल दिया। आरेञ्ज ने बचाव में सुविधा करने के विचार से झील के किनारे किनारे दीवारें खड़ी करादी थीं। फ्रेडरिक ने आते ही वैसी ही दीवारें अपने पड़ाव के आगे भी खड़ी करा ली। स्पेन की सेना लगभग तीस हज़ार थी, जिसमें १५,००० सवार थे। हारलेम की सारी आबादी तीस हज़ार थी और सेना की तो कभी ४००० से अधिक होने की नौबत ही नहीं आई। हाँ, पीछे से देशभक्तों में अच्छे अच्छे घरानों की ३०० साहसी स्त्रियों की एक वीर सेना अवश्य आ मिली थी। जब नगर की देवियों में यह उत्साह था तो भला आदमी कैसे आसानी से घुटने टेक सकते थे? वह मौसम ऐसा था कि दिन में भी खूब पाला पड़ता था। झील पर धुयें के बादल से छाये रहते थे। पाला पड़ने का लाभ दोनों पक्षों ने उठाया। इस स्वभाविक पर्दे की आड़ में फ्रेडरिक इधर अपनी खाइयाँ और दीवारें तैयार कराके सेना को जगह जगह तैनात करने का प्रबन्ध कर रहा था, उधर हारलेम के पुरुष,-स्त्री,-बच्चे गाड़ियों पर पड़ोस के गाँवों से खाने पीने और युद्ध की सामग्री ला लाकर एकत्र कर रहे थे। आरेञ्ज ने लीडन में तीन-चार हज़ार मनुष्यों की एक सेना तैयार करके डेलामार्क की अध्यक्षता में नगर की सहायता के लिए भेजी थी। परन्तु शत्रु ने रास्ते में ही इस सेना को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। डेलामार्क का एक वान-ट्रायर नाम का सरदार शत्रु के हाथ में पड़ गया। वह उसे छुड़ाने का बड़ा प्रयत्न करने लगा। शत्रुपक्ष को बहुतसा रुपया और उनके १९ क़ैदी वापिस देने को तैयार हो गया। परन्तु स्पेनवालों ने वानट्रायर को एक टाँग से सूली पर लटका कर मार डाला।

डेलामार्क ने भी उत्तर में उनके १९ क़ैदियों को फांसी पर चढ़ा-दिया। इस क्रूर श्रीगणेश के बाद लड़ाई छिड़ी।

फ्रेडरिक ने हारलेम के क्रॉस-गेट और सेण्टजान गेट दो द्वारों और उनके बीच की दीवार पर तीन दिन तक भयङ्कर गोला बारी करके उन्हें छलनी कर डाला। मगर जहाँ जहाँ दीवार टूटती थी वहाँ वहाँ नागरिक मनुष्य स्त्री, बच्चे सब पहुँचकर तुरंत दीवार भर देते थे। फ्रेडरिक ने सोचा था कि एक सप्ताह में हारलेम पर विजय प्राप्त करके आगे बढ़ जाऊँगा। तीन दिन लगातार गोला बारी कर चुकने के बाद उसने रोमेरो को एक बड़ी सेना लेकर टूटी हुई दीवार पर धावा बोलने और शहर में घुस पड़ने की आज्ञा दी। रोमेरो ने धावा बोल दिया। हारलेम का नगर-घण्टा बजा और स्त्री, पुरुष, बच्चे सब नागरिक टूटे हुए स्थान की रक्षा करने को टूट पड़े। शत्रुओं का केवल हथियारों से ही सामना नहीं किया गया। पत्थर, धधकता हुआ तेल, अंगारे, जलती हुई मशालें जो कुछ जिसके हाथ पड़ा शत्रुओं पर उसने वही फेंकना शुरू किया। नागरिकों के भयंकर प्रहारों को रणक्षेत्र में जीवन व्यतीत करने वाले स्पेन के सैनिक भी न सहसके और उन्हें पीछे लौटना पड़ा। रोमेरो की एक आँख फूट गई। बहुत से अफ़सर और तीन-चार सौ सिपाही काम आये। नगर वालों के कुल तीन चार आदमी मरे। अब फ्रेडरिक को मालूम हुआ कि हारलेम पर सरलता से अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता। घेरा डाल रखना होगा।

आरेञ्ज ने डेलामार्क की क्रूरता से उकता कर उसको पद-च्युत कर दिया और उसके स्थान पर बेटनबर्ग को नियुक्त किया।

वेटनबर्ग की अध्यक्षता में आरेञ्ज ने फिर दो हजार सैनिकों को सात तोपें और बहुत सा गोला बारूद लेकर हारलेम की सहायता के लिए भेजा परन्तु इस सेना की भी वही दुर्गति हुई जो डेला-मार्क की सेना की हुई थी। पाला पड़ रहा था। वेटनबर्ग की सेना अन्धकार में रास्ता भूल कर भटकने लगी। स्पेनवालों ने एकाएक टूटकर उन सबको अन्धेरे में ही खत्म कर दिया। वेटनबर्ग भाग गया। परन्तु उसका एक कप्तान डेकोनिंग शत्रुओं के हाथ पड़ गया। स्पेनवालों ने उसका सिर काट डाला और सिर में एक पत्र बाँध कर हारलेम में फेंक दिया। पत्र में लिखा था—'यह है श्रीयुत कप्तान डेकोनिंग का सिर, जो सेना लिये हारलेम की सहायता के लिए आ रहे हैं। नागरिकों ने इस क्रूर मजाक का और भी क्रूर उत्तर दिया। उन्होंने शत्रु के ग्यारह कैदियों के सिर काट कर एक बोरे में भरे और बोरे में एक पत्र लिखकर बाँधा कि 'एल्वा को दस सैकड़ा कर की अदाई में यह दस सिर भेजे जाते हैं। और एक सिर सूद में भेजा जाता है, बोरा फ्रेडरिक की सेना में फेंक दिया गया।

जाड़े भर घेरा पड़ा रहा। रोज मारकाट में दोनों ओर के क़ैदी पकड़े जाते थे। दोनों पक्षवाले इन क़ैदियों को रोज सूली पर चढ़ा देते थे। फ्रेडरिक ने सुरंग लगा कर शहर को बारूद से उड़ा देने का प्रयत्न किया। परंतु नागरिक भी सुरंगें लगाकर शत्रुओं के सुरँगों में घुस गये और लालटेन ले लेकर जमीन के भीतर अन्धकार में भूतों की तरह भयङ्कर युद्ध किया। प्रायः ज्वालामुखी की तरह जमीन फटती थी और उसमें से मनुष्यों के टूटे शरीर, हाथ पाँव इत्यादि छर्रें की तरह निकल कर चारों ओर

बिखर जाते थे। नागरिकों ने स्पेन वालों के दाँत खट्टे कर दिये। शत्रु को एक क़दम आगे न बढ़ने दिया।

आरेञ्ज छोटे छोटे कागज़ के टुकड़ों पर खत लिख-लिख-कर कबूतरों द्वारा नागरिकों के पास भेजकर उनका उत्साह बराबर बढ़ा रहा था। २८ जनवरी को उसने १७० बर्फीली गाड़ियों में झील के ऊपर जमी हुई बर्फ पर से रोटी और बारूद जैसी परमावश्यक वस्तुयें तथा ४०० जवान शहर में भेज दिये। नागरिकों को भय होने लगा था कि द्वार शीघ्र ही टूट जाँयगे। द्वारों के गिरने पर शहर का बचाव करना असम्भव हो जाता। इसलिए बूढ़े, बच्चे, स्त्रियाँ सबने मिलकर चुपके चुपके द्वारों के पीछे एक नई दीवार खड़ी करली। ३१ जनवरी को दो तीन द्वारों पर लगातार गोले बरसा चुकने के बाद फ्रेडरिक ने आधी रात को एकदम धावा बोल दिया। द्वारों पर देश-भक्तों के कुल चालीस-पचास सन्तरी पहरे पर थे। उन्होंने हल्ला मचा दिया। नगर का घण्टा घहराने लगा। नागरिक मकानों से निकल निकल नगर की रक्षा करने के लिए दौड़ पड़े। रातभर घमासान युद्ध होता रहा। दिन निकल आया परन्तु लड़ाई जारी रही। प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद स्पेन की फौज में हारलेम पर पूरे ज़ोर से हमला करने का बिगुल बजा। फ्रेडरिक के सैनिक दौड़कर द्वारों पर जा चढ़े। लेकिन द्वारों पर अधिकार प्राप्त करलेने का यह हर्ष शीघ्र ही आश्चर्य में परिणत हो गया। उन्होंने देखा कि द्वारों के पीछे दूसरी दीवार खड़ी है। अब उनकी समझ में आया कि नागरिकों ने क्यों द्वार हाथ से निकल जाने दिये। देखते देखते ही सामने की दीवार पर से स्पेन वालों पर गोलियाँ बरसने लगीं। वे बचाव का प्रयत्न

करने लगे इतने में जिन द्वारों पर वे खड़े थे वे भी बारूद से उड़ा दिये गये। स्पेन के सैनिक आकाश में उड़कर छिन्न भिन्न हो, धरती पर गिर पड़े। अपने तीन सौ बहादुरों की लाशें पृथ्वी पर पड़ी छोड़ कर शत्रु को पीछे हटना पड़ा। फ्रेडरिक को विश्वास हो गया कि नगर पर हमला करके विजय नहीं मिल सकती। उसने हारलेम को फाके कराकर वश में करने का निश्चय किया।

जाड़ा ज़ोर का पड़ने लगा था। फ्रेडरिक के सिपाही ठण्ड से मरने लगे। उसकी राय हुई कि घेरा उठा लेना चाहिए। परन्तु एलवा ने नहीं माना। नागरिकों की रसद घटने लगी थी। तोल-तोल कर रोटी दी जाने लगी थी। नागरिक भूखों मरने से शत्रु से दो-दो हाथ करके मरना अच्छा समझते थे। झण्डे लेकर ढोल बजाते हुए शहर की चहार दीवारियों पर फिरते थे। पुजारियों के कपड़े पहन कर मूर्तियों को हाथ में लेकर उनकी दिल्लगी उड़ाते और शत्रु को चिढ़ाते थे। वे हर प्रकार से फ्रेडरिक को नगर पर आक्रमण करने की उत्तेजना देते थे। परन्तु उनकी इन चुनौतियों की फ्रेडरिक तनिक परवाह नहीं करता था। वह चुपचाप घेरा डाले पड़ा रहा। शहर की गायें रोज निकल कर मजे से मैदान में चरने जाती थीं। परन्तु यदि एक गाय पर हाथ रक्खा जाता तो दस स्पेन वालों को जान से हाथ धोने पड़ते थे। फ्रेडरिक ने एलवा को एक पत्र में लिखा था कि 'नागरिक ऐसे लड़ते हैं मानों संसार के छटे हुये वीर हों।' फरवरी का अन्त आ गया। जाड़े में झील पर बरफ जम जाने से आने जाने का मार्ग बन गया था। परन्तु अब बर्फ पिघलने लगी थी। शहर वालों को चिन्ता हुई कि "ऑरेञ्ज के पास से सहायता आने

का मार्ग भी बन्द हो जायगा। जहाजी बेड़ा झील पार करने के लिए बेचारा ऑरेञ्ज कहाँ से लायेगा ?" परन्तु बौस्सू ने एम्स्टर्डम में एक जहाज़ों का बेड़ा तैयार कर लिया था। वह उसमें तोपें रख कर हारलेम की तरफ चला। ऑरेञ्ज भी हाथ पर हाथ रक्खे नहीं बैठा था। उसने भी एक छोटासा बेड़ा तैयार करके रवाना कर दिया था। बर्फ के गलने से जो ख़तरा हारलेम को था वही एम्स्टर्डम को भी था। बाँध काट कर रास्तों में समुद्र का पानी भर कर ऑरेञ्ज एम्सटर्डम को उसी प्रकार भूखा मार सकता था जिस प्रकार स्पेन वाले हारलेम को मारना चाहते थे। एल्वा को बड़ी चिन्ता हुई। उसने लिखा—"जब से मैं संसार में आया हूँ मुझे कभी ऐसी चिन्ता नहीं हुई थी।" ऑरेञ्ज सारी परिस्थिति खूब अच्छी तरह समझता था और जानता था कि बहुत कुछ किया जा सकता है। परन्तु न उसके पास सेना ही थी न रुपया। उसने अपने इंग्लैण्ड फ्रांस और जर्मनी के मित्रों से सहायता भेजने की प्रार्थना की और लुई को भी लिखा कि 'भाई आओ! जो कुछ सेना मिल सके लेकर आ जाओ। लोग तुम्हारे ऊपर आस लगाये बैठे हैं। ऑरेञ्ज हारलेम के दक्षिण में पड़ा था और सोनौय उत्तर की तरफ। ऑरेञ्ज ने सोनौय को एम्सटर्डम के निकट के समुद्र के बाँध काट डालने का सन्देशा भेजा और उसकी सहायता के लिए एक सेना भेजी। स्पेन वालों का आक्रमण होते ही यह सेना भाग खड़ी हुई। सोनौय ने भागती हुई सेना को रोकने का बड़ा प्रयत्न किया परन्तु कुछ फल न हुआ। परन्तु एक बहादुर सैनिक ढाल-तलवार लेकर बाँध के ऊपर एक ऐसे स्थान पर जा

खड़ा हुआ जहाँ से केवल एक आदमी ही गुजर सकता था। बड़ी देर तक वहाँ खड़ा-खड़ा वह लड़ता रहा और १००० शत्रुओं को अकेले ही रोके रहा। परन्तु सोनौय की सेना ने एकत्र होकर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं की। जब इस वीर सैनिक ने देखा कि सेना के सब लोग भाग कर सुरक्षित स्थान में पहुँच चुके हैं तब वह भी समुद्र में कूद पड़ा और इटली के प्रसिद्ध वीर होरेशस की तरह तैर कर सागर पार कर गया। यदि यह वीर सैनिक कहीं रोम अथवा यूनान में पैदा हुआ होता तो आज उसकी मूर्ति यूरोप के किसी मैदान में अवश्य खड़ी होती। बहुत से देशभक्त आक्रमण में काम आगये थे। बहुतों को कैद करके स्पेन वाले ले गये और अपने पड़ाव में नगर के सामने एक ऊँची सूली गाड़ दी और नगर वालों को दिखा-दिखा कर सब कैदियों को उस सूली पर चढ़ा दिया। नगर-वालों के हाथ भी शत्रु-पक्ष का जो मनुष्य आता था, उसे वे बड़ी क्रूरता से तुरन्त फाँसी पर चढ़ा देते थे। नागरिकों को इस प्रकार क्रूर बना देने की सभी ज़िम्मेदारी स्पेन-सरकार के सिर था। मेचलिन, जुटफेन और नआरडन के बे गुनाहों का खून बहुत दिनों से जमीन के अन्दर से पुकार रहा था। यदि देश भक्त बदला न लेते तो सचमुच या तो वे देवता समझे जाते या पशु। उच्च प्रकृति के लोगों का हृदय ऐसे हत्याकाण्डों से कितना दुःखी होता था इसका पता एक दृष्टान्त से चल जायगा। देशभक्त सेना का एक सरदार केवल जनता की स्पेनवालों की क्रूरता से रक्षा करने के विचार से सेना में भरती हो गया था। अन्यथा उसे स्वभाव से मारकाट से बड़ी घृणा थी। रात को यह सरदार अपने बहादुरों

को लेकर स्पेन वालों पर छापे मारता था और जितने शत्रुओं को मार सकता था मार डालता था परन्तु लौट कर अपना कमरा बन्द करके दुःख से पलंग पर पड़ा-पड़ा कई दिन तक अपनी क्रूरता पर पछताया और रोया करता था। फिर जब स्पेनवालों की क्रूरता की याद आती थी तो फिर अपना खड्ग लेकर दुश्मनों पर जा झपटता था।

देशभक्त जान हथेली पर रख कर लड़ते थे। २५ मार्च को एक हज़ार नागरिक शहर से निकले और फ्रेडरिक की तीस हज़ार सेना की तनिक परवाह न करके उस के पड़ाव में जा घुसे। ३०० खेमों में आग लगादी। ८०० शत्रुओं को बातकी बात में मार गिराया। शत्रु की ९ तोपें और कई रसद की गाड़ियां लेकर शहर में लौट गये। नागरिक काल के गाल में घुसकर लड़े थे। परन्तु उनके केवल चारपाँच मनुष्य काम आये। नागरिकों ने इस जीत की खूब खुशी मनाई और बड़े विचित्र ढंग से मनाई। शहर की दीवार पर कब्र की शक्ल का एक चबूतरा बनाकर स्पेन वालों से छीनी हुई तोपें उसपर रख दी और मोटे मोटे अक्षरों में लिख दिया—"हारलेम स्पेन वालों का क़ब्रस्तान है।" एल्वा ने फिलिप को हारलेम के बारे में लिखा था—"मैंने अपने जीवन के ६० वर्ष युद्ध में बिताये हैं। परन्तु संसार के किसी देश में मैंने किसी घिरे हुए नगर का इस हिम्मत वारता और होशियारी से अपनी रक्षा करते नहीं देखा और न किसी के मुँह सुना है।"

स्पेन से एल्वा की मदद के लिए नई सेना और रुपया आ गया था। झील में बहुत से सरकारी जहाज़ भी आ गये थे।

ऑरेञ्ज ने भी किसी प्रकार १५० जहाजों का एक बेड़ा खड़ा कर लिया था। जब तक झील पर देशभक्तों का अधिकार था तभीतक हारलेम को सहायता पहुँचाई जा सकती थी। झील हाथ से निकलते ही हारलेम चारों ओर से कट जाता; फिर उसके बचाव की कोई आशा न रहती। दुर्भाग्य से यही हुआ। ऑरेञ्ज का बेड़ा शत्रुओं ने बड़ी सरलता से छिन्न-भिन्न कर डाला। नागरिक घबरा उठे। उन्होंने ऑरेञ्ज के पास सन्देशा भेजा कि कोई न कोई मार्ग नगर में रसद इत्यादि भिजवाने का अवश्य निकालिए अन्यथा तीन सप्ताह से अधिक हमलोगों के पाँव न टिक सकेंगे। ऑरेञ्ज ने कबूतरों की सहायता से नागरिकों के पास उत्तर भेजा कि कुछ दिन टिक जाओ मैं किसी न किसी तरह से शहर में सामान अवश्य पहुचा दूँगा।' जून का महीना भी आ गया। नागरिकों का सारा अनाज चुक गया था। लोगों ने अलसी और सरसों खाना शुरू कर दिया। जब अलसी और सरसों खत्म होगई तब कुत्ते, बिल्ली और चूहों की बारी आई। जब ये घृणित पशु भी न रहे तो वे घोड़े, बैलों के चमड़े और जूते उबाल-उबाल कर खाने लगे। जब घोड़े चमड़े, जूते भी निबट गये तो जवासा कटैया और पानी एवं मकानों पर से काई उतार-उतार कर खाने लगे। ऑरेञ्ज के पास से सहायता आने तक किसी प्रकार प्राण बचाये रखने के विचार से हारलेम के स्वतन्त्रता प्रिय नागरिकों ने कूड़ा करकट कीड़े मकोड़ों को भोजन बनाया था। बहुत सी स्त्रियाँ पुरुष और बच्चे भूक से गलियों में गिर-गिर कर मर रहे थे। उनकी लाशें सड़कों पर पड़ी-पड़ी लोटती थीं। जो जीवित बच गये थे, उनका न तो इन मुर्दों

को दफ़न करने को जी ही चाहता था और न उनमें मुर्दों को उठा कर ले जाने की शक्ति ही थी। वे छाया की भाँति उन मृतकों की ओर ईर्ष्या से देखते थे जिनकी मुसीबतों का अन्त मृत्यु ने अपनी गोद में सुलाकर कर दिया था।

जून का महीना भी समाप्त हो गया। पहली जुलाई को नागरिकों ने हारकर शत्रु के पास सन्धि का सन्देशा भेजा परन्तु फ्रेडरिक ने सन्धि करने से इन्कार कर दिया। तीसरी जुलाई को भंयकर गोलाबारी करके फ्रेडरिक ने नगर की दीवारें जगह जगह तोड़ डाली। लेकिन नगर पर आक्रमण नहीं किया गया। वह सोचता था कि थोड़े दिन में नगर आप से आप घुटने टेक देगा। आक्रमण करके व्यर्थ अपने सैनिकों की जान खतरे में क्यों डालूं? नागरिकों ने अन्तिम पत्र में खून से अपना हाल लिखकर आरेञ्ज के पास भेजा। सारे शहर में दो-चार टुकड़े रोटी के बचे थे। वे टुकड़े भी चिढ़कर शत्रु के कैम्प मे फेंकदिये गये। शहर के गिरजे पर निराशा का चिन्ह काला झण्डा लगा दिया गया। इतने में आरेञ्ज का सन्देश लिए एक कबूतर उड़ता हुआ शहर में आया आरेञ्ज ने लिखा था। 'दो दिन और हिम्मत करो। सहायता आती है।' आरेञ्ज के किये जो हो सकता था, कर रहा था। उसने डेफ्ट में लोगों को एकत्र करके कहा—"यदि कहीं से फौज मिलजाय तो मैं स्वयं हारलेम की सहायता को जाने को तैयार हूँ। सेना तो कहीं नहीं थी परन्तु डेफ्ट राटर्डम, गूडा इत्यादि नगरों की हारलेम के प्रति पूर्ण सहानुभूति थी। अनेक नागरिक, जिनमें बहुत से अच्छे अच्छे घरों के लोग भी थे सैनिक बनने को तैयार हो गये। आरेञ्ज को इस सेना की शक्ति पर अधिक विश्वास नहीं

हुआ। वह जानता था कि जहाँ शत्रु ने ऐसा कठिन डेरा डाल रक्खा है वहाँ अनुभवी सेना के अतिरिक्त कोरे स्वयं सेवकों से काम नहीं चल सकता। परन्तु हारलेम के बचाव का और कोई मार्ग न देखकर अन्त को आरेञ्ज चार हज़ार स्वयं सेवकों की सेना लेकर स्वयं हारलेम की सहायता के लिए जाने को तैयार हुआ। पालबुइस को अपने स्थान में गवर्नर नियुक्त किया कि अगर मैं मारा जाऊँ तो तुम सारा काम-काज सम्हालना। लेकिन सारे नगरों ने और सैनिकों ने शोर मचाया कि हम अपने सरताज आरेञ्ज विलियम को इस प्रकार अपनी जान खतरे में कभी न डालने देंगे। वास्तव में हारलेम जैसे बहुत से नगरों की बनिस्बत आरेञ्ज की जान देश के लिए कहीं अधिक कीमती थी। अगर आरेञ्ज मारा जाता तो फिर देश में स्वतंत्रता का झण्डा खड़ा करने वाला और कौन था? अन्त में लाचार होकर आरेञ्ज को सबकी बात मानना पड़ी। वह स्वयं न गया। सरदार बेटनबर्ग की अध्यक्षता में ८ जुलाई को स्वयं सेवकों की सेना हारलेम की सहायता के लिए भेज दी गई। पीछे से देश के इतिहास में मशहूर होनेवाला वीर ओल्डेन बार-नेवेल्ड भी अपने कन्धे पर बन्दूक रक्खे इस सेना का एक स्वयं सेवक था। सेना के हारलेम की सहायता के लिए चलने तथा उसकी संख्या इत्यादि का सब हाल स्पने वालों ने खत लेजाने वाले दो कबूतरों को पकड़ कर मालूम कर लिया था। उन्होंने राह में हरी डालियाँ और पत्तियाँ जलाकर धुआँ किया और उसके पीछे छिपकर स्वयं बैठ रहे। जैसे ही देशभक्तों की सेना निकट आई उन्होंने निकल कर एक झपाटे में सबको नष्ट कर डाला। बेटेनबर्ग मारा गया। एक कैदी की नाक कान काट कर हारलेम वालों को उनकी

सहायता के लिए आने वाली सेना का समाचार सुनाने के लिए भेज दिया गया। आरेञ्ज का दिल टूट गया। उसने निराश होकर नागरिकों को लिखा कि जिस तरह बने सन्धि कर लो। हारलेम वाले जानते थे कि सन्धि तो असम्भव है। शहर के लड़ सकने योग्य मनुष्यों ने निश्चय किया कि यहाँ भूखा मरने से अच्छा है बाहर निकलकर शत्रु से लड़ते लड़ते मरें। पीछे बूढ़े बच्चे और स्त्रियाँ रह जायँगी उन पर शायद शत्रु दया करके अत्याचार न करें। परन्तु जब वे सब चलने को तैयार हुए तो स्त्री बच्चों ने इतना कातर रोदन शुरू किया कि उन्हें छोड़कर चले जाना वीरों ने कायरता समझा। अन्त में निश्चय हुआ कि बीच में स्त्री, बच्चों और बूढ़ों को रखकर लड़ते हुए शत्रु की सेना चीरकर निकलने का प्रयत्न किया जाय। या तो निकल जाँयगे या सब साथ साथ प्राण दे देंगे। इस निश्चय की खबर फ्रेडरिक को मिली। उसे डर लगा कि इतने महीने घेरा डाले रखने के बाद भी यदि केवल खाली शहर पर अधिकार मिला तो बड़ी भद होगी। उसने इस सातमास के घेरे में देख लिया था कि हारलेम के वीर नागरिक जो कुछ निश्चय करें उसे कार्यान्वित कर सकते थे। उसने कपट करके अपनी फौज के सेनापति की ओर से नगर में एक खत भिजवाया कि शहर वाले यदि हथियार रख देने पर राजी हो जाँय तो छोड़ दिये जायँगे। केवल उन लोगों को सजा दी जायगी, जिन्हें स्वयं नागरिक दोषी ठहरायँगे। नागरिकों ने विश्वास करके १२ जुलाई को शहर स्पेन वालों के सुपुर्द कर दिया। फ्रेडरिक और ब्रास्सू सेना के साथ शहर में घुसे। उन्होंने वहाँ जो दृश्य देखा वह पत्थर का हृदय भी पिघला देने के लिए काफी था।

परन्तु फ्रेडरिक ने अपने वादे की परवाह न करके शहर में नआर्डेन की तरह अत्याचार करना शुरू कर दिया। जब खूब दिल-भर के अत्याचार कर लिया और २३०० आदमियों का वध हो चुका, तब क्षमा की घोषणा करने का मज़ाक किया। संसार के इतिहास में याद रखने योग्य हारलेम का घेरा इस प्रकार समाप्त हुआ। हालैण्ड पर विदेशियों की चढ़ाई और उनसे देश-भक्तों के युद्ध का पहिला अध्याय इस प्रकार समाप्त हुआ। सात महीने और दो दिन के घेरे में स्पेन वालों ने १०,२५६ गोले हारलेम पर दागे थे। और स्पेन की सेना के १२,००० मनुष्य काम आये थे। मनुष्य के कष्ट देने और कष्ट सहने की शक्ति का हारलेम का घेरा बड़ा रोमांचकारी और आश्चर्य जनक चित्र है।

स्पेन वालों ने अपनी जीत पर बड़ी खुशियां मनाईं। यूट्रेक्ट में आरेञ्ज का पुतला बना कर शिकंजे में कसा गया और फिर आग में झोंक दिया गया। हारलेम का मुहासरा स्पेन वालों की जीत कही जाती है। परन्तु यदि विजेता जीत के स्थान में हारलेम से हार मान लेते तो अधिक अभिमान की बात थी। खैर कुछ भी हो, यह बात तो स्पष्ट ही थी कि स्पेन का बृहत् साम्राज्य इस प्रकार की बहुतसी जीतें सम्हालने के योग्य नहीं था। यदि हालैण्ड के एक छोटे से नगर को जीतने के लिए सात मास और तीस हज़ार सेना की आवश्यक्ता पड़ी-जिस सेना में स्पेन की तीन ऐसी वीर सेनायें थीं, जिन्हें ऐल्वा 'अखण्ड' 'अमर' और 'बेजोड़' कहा करता था, फिर भी बारह हज़ार सैनिक काम आ गये तो पाठक, ज़रा हिसाब लगाइए कितने समय, कितने सैनिक और कितनी मौतों की ज़रूरत सारे प्रान्त पर विजय प्राप्त करने में पड़ी होती? जिस प्रकार

नआर्डन के हत्याकाण्ड से सरकार के विचारानुसार लोग भयभीत न होकर उलटे उभड़ उठे थे, उसी प्रकार हारलेम के इस लम्बे घेरे से सारे प्रान्त के हृदय में सरकार के प्रति असीम घृणा और क्रोध उत्पन्न हो गया था। स्पेन के ख़ज़ाने से पाँच वर्ष में नेदरलैण्ड के युद्ध के लिए २ करोड़ ५ लाख रुपया आ चुका था। अमेरिका की कमाई हुई सारी दौलत और नेदरलैण्ड की ज़ब्तियों और करों से मिला हुआ सारा धन भी सरकारी ख़ज़ाने का दिवाला पिटने से नहीं बचा सका था। फिर भी हारलेम की विजय से कुछ समय के लिए स्पेन वालों का हृदय ख़ुशी से फूल उठा। फिलिप बीमार पड़ा था। हारलेम के हत्याकाण्ड की ख़बर ने उसके लिए राम-बाण का काम किया। हत्या-काण्ड का समाचार सुनकर वह शीघ्र अच्छा हो गया। आरेञ्ज सदा की भांति हारलेम के नष्ट हो जाने पर भी भीत अथवा निराश नहीं हुआ। फल के लिए वह सदा भगवान के अधीन रहता था। जो तोड़ कर जो कुछ कर सकता था, करता था। अपने भाई लुई को उसने लिखा,—"मेरी इच्छा थी कि मैं तुम्हें शुभ-समाचार सुनाऊँ। परन्तु ईश्वर की इच्छा कुछ और ही थी इसलिए हमें उसकी इच्छा में सन्तोष करना चाहिए। भगवान साक्षी है, मैंने हारलेम की सहायता के लिए प्रयत्न करने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी थी। थोड़े दिन बाद उसने फिर उसी उत्साह से लुई को लिखा—जेलैण्ड वालों ने वालचरेन द्वीप के रामेकेन्स दुर्ग पर क़ब्ज़ा कर लिया है। इससे हमारे शत्रुओं का घमण्ड ज़रा लच जायगा। हारलेम की जीत के बाद से वे समझने लगे थे कि हमें समूचा ही निगल जायँगे। मुझे विश्वास है, उनकी आशा पूरी न हो सकेगी।"

(१५)

एल्वा का अन्त

एल्वा और मेडीनीकोली में आपस में ईर्ष्या के कारण झगड़ा शुरू हो गया। मेडीनाकोली नया वायसराय होकर आया था। एल्वा युद्ध के कारण रुका हुआ था। दोनों हर काम में अपनी अपनी टाँग अड़ाना चाहते थे। एक म्यान में दो तलवारों के लिए जगह कहाँ हो सकती थी! दोनों, पत्रों में एक-दूसरे के विरुद्ध फिलिप से अपने अपने दुखड़े रोते थे। बहुत दिनों से वेतन न मिलने से स्पेन को सेना के सिपाही विद्रोह पर उतारू होने लगे थे। यहाँ तक कि हारलेम के घेरे के समय स्पेन के सैनिकों के प्रतिनिधि चुपचाप ऑरेञ्ज से मिलने गये थे और कहा था—"यदि आप हमें चालीस हज़ार रुपये दें तो हम हारलेम का शहर एल्वा के विरूद्ध आपको सुपुर्द कर देंगे।" ऑरेञ्ज ने उनका प्रस्ताव तो स्वीकार कर लिया परन्तु बेचारा यह थोड़ासा रुपया भी निश्चित समय में एकत्र न कर सका। इसलिए दुर्भाग्य से बड़ा सुन्दर मौका उसके हाथ से निकल गया। एम्सटर्डम में भी सेना ने विद्रोह शुरू कर दिया। एल्वा ने स्वयं जा कर थोड़ा-थोड़ा रुपया बांटकर बड़ी कठिनाई से सैनिकों को शान्त कर दिया। हारलेम की विजय के बाद एल्वा ने फिलिप की तरफ़ से सारे नगरों में क्षमा की यह घोषणा करवाई—"महाराज सदा से अपनी प्रजा पर स्नेह दिखाते आये हैं। यदि लोग तुरन्त

पश्चाताप करके सरकार का विरोध बन्द कर दें तो महाराज सब का दोष माफ़ कर देने को तैयार हैं। परन्तु यदि शीघ्र ही लोग अपनी अक्ल दुरस्त न कर लेंगे तो महाराज़ इस बात पर तैयार हैं कि नेदरलैण्ड में एक आदमी भी जीता न छोड़ा जाय। और सारा देश उजाड़ कर दूसरे देशों से आदमी लाकर देश फिर से बसाया जाय। अन्यथा भगवान की मर्ज़ी महाराज कैसे पूरी कर सकेंगे।" इस घोषणा का जब कुछ असर न हुआ तो एल्वा ने फिलिप को लिखा—"हारलेम से लोगों ने पाठ नहीं लिया। अभी और सबक़ देना होगा। जो अधिकारी आपको स्पेन में बैठे-बैठे शान्ति का उपदेश देते हैं उनकी बात न सुनिए। जो अधिकारी इस देश में हैं वे ही यहाँ की परिस्थित अच्छी तरह समझ सकते हैं। शान्ति से काम न चलेगा। दण्ड की जरूरत है।" इस के बाद उसने अल्कमआर नगर पर चढ़ाई की। सोनौय ने घबराकर ऑरेञ्ज को लिखा कि 'यदि आपने किसी राजा से मित्रता कर ली हो और वहाँ से कोई सेना आने वाली हो तो जल्द ही घोषणा निकाल दीजिए जिससे शहरों की हिम्मत बनी रहे। ऑरेञ्ज ने सोनौय को प्रेम-भरी डांट बताते हुए लिखा-"इतनी जल्दी हिम्मत टूटने लगी क्या हारलेम के हारते ही सारे देश की हार हो गई? भगवान् जानता है कि मैंने उस वीर नगर की सहायता के लिए कोई प्रयत्न उठा नहीं रक्खा था। अपने रक्त का प्रत्येक बिन्दु बहाने को तैयार था परन्तु भगवान् की इच्छा कुछ और ही हुई। हमें उसकी इच्छा के सामने सिर झुकाना चाहिए। भगवान का हाथ बड़ा मज़बूत है। जो उस पर भरोसा रखते हैं, उनकी वह सदा रक्षा करता है। मैंने देश की स्वतंत्रता के

लिए तलवार उठाने के पहले उस राजाओं के राजा से मित्रता कर ली थी। वह हमारी सहायता को कहीं न कहीं से सेनायें ज़रूर भेजेगा।"

बारह घण्टे तक अलकमआर पर लगातार गोलावारी करने के बाद एल्वा ने स्पेन से आई हुई नई गरजती हुई सेनाओं को हमला करके शहर ले लेने के लिए भेजा। परन्तु यहाँ भी स्पेन-वालों को उन्हीं कवच-हीन स्वाधीनता के कठोर पुजारियों का सामना करना पड़ा, जिनका सामना हारलेम में करना पड़ा था। यहां भी खौलते हुए तेल, अँगारे, पत्थर, ईटें और लोहे, के भयंकर वार सहकर उसे पीछे लौटना पड़ा। स्पेन के सैनिक हमला करने के हुक्म का विरोध करने लगे। इधर ऑरेञ्ज ने नगर वालों को सन्देश भेजा कि जब तुम अधिक देर तक पाँव टिकाने के अयोग्य हो जाओ तो मीनारों पर मशालें जलाना। हम सागर के बाँध काट देंगे। ग्राम और फसलें बह जाँयगी तो बह जाँय परन्तु शत्रु की सोलह हज़ार सेना का एक आदमी भी न बचेगा। जो आदमी छड़ी के अन्दर यह पत्र रखकर लिये जा रहा था उसका शत्रु ने पीछा किया। वह तो शहर में भाग कर घुस गया। परन्तु उसकी छड़ी शत्रु के हाथ पड़ गई। फ्रेडरिक ने ऑरेञ्ज का पत्र पढ़ा तो उसे विश्वास हो गया कि स्वतंत्रता के पुजारी ये नागरिक और उनका यह निर्भय सरदार सब कुछ कर सकते हैं। स्पेन के सिपाही वैसे ही हमला करने से घबरा रहे थे। सागर में डूब कर मरने को कौन तैयार होता? फ्रेडरिक ने सोचा—"इस छोटे से नगर को जीतने के लिए सोलह हज़ार सेना की जान गवाँना व्यर्थ है। तीन सप्ताह का

घेरा हो चुका है। स्पेन वाले अपनी बहादुरी भी खूब दिखा चुके हैं। यह सोचकर उसने घेरा उठा लिया और एम्सटर्डम में अपने बाप से जा मिला।

लुई जैसा वीर सेनापति था वैसा ही चतुर राजनीतिज्ञ भी था। यद्यपि सेण्ट बार्थेलमो के हत्याकाण्ड के बाद से ऑरेञ्ज को फ्रान्स के राजा चार्ल्स के प्रति अश्रद्धा और घृणा हो गई थी, परन्तु लुई बराबर इस प्रयत्न में था कि किसी न किसी प्रकार नेदरलैण्ड के स्वतंत्रता के युद्ध के लिए चार्ल्स से कुछ सहायता मिले। सेण्ट बार्थेलमो के हत्याकाण्ड के बाद के जर्मनी और इंग्लैण्ड के नवीन मतावलम्बी राजा, प्रजा और सरदार सब फ्रान्स के विरुद्ध हो गये थे। स्पेन इस द्रोह का फ़ायदा उठाने का प्रयत्न कर रहा था। जर्मनी की गद्दी खाली होने वाली थी। गद्दी पर फ़िलिप का दांत था। उसने जर्मनी के नवीन मतावलम्बी सरदारों को यह विश्वास दिलाना शुरू कर दिया कि यदि मुझे जर्मनी के सिंहासन पर बैठाने को जर्मन सरदार तैयार हो जायें, तो मैं नेदरलैण्ड की प्रजा को नवीन मत पर चलने से नहीं रोकूंगा और ऑरेञ्ज को भी उसकी सारी जागीर और अधिकार वापिस कर दूँगा। फ्रांस के राजा चार्ल्स और उसकी माता मेडिसी की इच्छा थी कि किसी प्रकार इंग्लैण्ड की रानी एलिजबेथ का विवाह फ्रांस के राजवंशी ड्यूक ड एलोन्कौन से होजाय और ड्यूक एन्जूकोयलैण्ड की खाली होने वाली गद्दी मिल जाय। परन्तु सेण्ट बार्थेलमो के हत्याकाण्ड से इंग्लैण्ड की महारानी और वे सरदार जिनके हाथ में पोलैण्ड का तख्त था चार्ल्स से बहुत नाराज़ हो गये थे। इसलिए चार्ल्स ने सब से यह कहना शुरू

कर दिया था कि सेण्ट बार्थेलमो का हत्याकाण्ड कुछ लोगों ने गलत खबरें दे-देकर मुझे क्रोधित कराके करवा डाला है। मुझे इसके लिए बड़ा खेद है। भविष्य में ऐसी बात कभी न होगी।" जिन राजाओं के अत्याचार का इतिहास लेखक यह कहकर बचाव करते हैं कि ये धर्म-भाव में अन्धे होकर अत्याचार करते थे, वे दोनों राजा फिलिप और चार्ल्स नवम् राज्य मिलने के लालच से अधर्मियों से सन्धि करने और वह कार्य छोड़ देने पर तैयार हो गये जिसे वे 'भगवान का कार्य्य' कहा करते थे। होशियार लुई ने देखा अच्छा मौका है। उसने चार्ल्स से कहा—"बार्थेलमो के हत्याकाण्ड के बाद से आपके केवल वचनों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। आप को तुरन्त नवीन पन्थ वालों पर अत्याचार बन्द कर देना और कैदियों को मुक्त कर देना चाहिए, वर्ना स्पेन आपको बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा कर लेगा। फिलिप को जर्मनी का तख्त मिल गया तो वह बड़ा शक्तिशाली हो जायगा। जब चाहेगा फ्रांस को हड़प लेगा।" लुई की चाल काम कर गई। ऑरेञ्ज की राय से लुई ने चार्ल्स से सन्धि की कि 'या तो चार्ल्स स्वयं स्पेन वालों से युद्ध करके नेदरलैण्ड की सहायता करे या ऑरेञ्ज को युद्ध करने के लिए धन और सेना दे। यदि नेदरलैण्ड में सब मतवालों को एकसी स्वतंत्रता रहेगी तो हालैण्ड और जेलैण्ड को छोड़ कर नेदरलैण्ड के अन्य सब प्रान्तों पर फ्रांस का राज्य जमाने में ऑरेञ्ज और लुई चार्ल्स की सहायता करेंगे। हालैण्ड और जेलैण्ड पर चार्ल्स का फिलिप की जगह नाम मात्र का राज्य रहेगा। शासन प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में रहेगा और प्राचीन प्रथा के अनुसार प्रजा की

सम्मति से चलाया जायगा। फ्रांस जो कुछ रुपया सहायता में देगा वह सब ऋण माना जायगा और उसको अदा करने का भार हालैण्ड और ज़ेलैण्ड की पँचायतों और ऑरेञ्ज के सिर रहेगा। एन्जू को पोलैण्ड का तख्त दिलाने का भी प्रयत्न किया जायगा।" पोलैण्ड के तख्त की बागडोर मुट्ठी में रखने वाले सरदारों में एक दल ऑरेञ्ज को पोलैण्ड के तख्त पर बैठाने का भी प्रयत्न कर रहा था। परन्तु ऑरेञ्ज ने उस देश के ताज के लालच से अपने हाथ में लिया हुआ नेदरलैण्ड के दुःखी आदमियों को मुक्त करने का काम नहीं छोड़ा। सन्धि में भी वह अपना नाम केवल एक स्थान पर लाया था। "यदि पँचायत फ्रांस का कर्जा वापिस न करें तो कर्जा लौटाने का भार ऑरेञ्ज के सिर रहेगा।"

एल्वा ने सब प्रान्तों की पंचायतों को सितम्बर में ब्रसेल्स में यह विचार करने के लिए एकत्र होने का सन्देशा भेजा था कि अब आगे युद्ध किस प्रकार चलाया जाय। इस मौके का ऑरेञ्ज ने फायदा उठाना चाहा। उसने अपनी तथा हालैण्ड और ज़ेलैण्ड की पँचायतों की ओर से सारे देश का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक अपील निकाली। इस अपील में उसने सब प्रान्तों को प्राचीन काल से चले आने वाले आपस के भाईचारे के व्यवहार की याद दिलाई और प्रान्तों से एकमत होकर चलने की प्रार्थना की। उसने लिखा था—"फ्लैण्डर्स, ब्रबेण्ट, बर्गण्डी, हालैण्ड किसी प्रान्त के राजा बिना जनता की राय लिये कभी एक पैसा कर का नहीं लगाते थे। न बिना लोगों की राय लिये सिक्का गढ़ते थे अथवा किसी शत्रु से युद्ध या सन्धि करते थे।

फिर कैसे आज सारा देश एल्वा के अत्याचार सहने को तैयार हो गया है ? अगर एम्सटर्डम और मिडलबर्ग के नगरों ने स्वाधीनता के युद्ध में कन्धे न डाल दिये होते तो उत्तरीय प्रान्तों की ओर कोई आज नज़र भी नहीं उठा सकता था । लेकिन देशवासी ही देश का गला घोटते हैं । एल्वा की वह सारी शक्ति जिसपर वह इतना घमण्ड करता है कहाँ से आती है ? नेदरलैण्ड के नगरों से ! कहाँ से उसे जहाज़, रुपया, सिपाही, हथियार और सामग्री मिलती है ? नेदरलैण्ड के लोगों से ! नेदरलैण्ड की वह पुरानी वीरता, जिस की याद से विदेशी थर्राते थे, आज किस मिट्टी में मिल गई है ? अगर एक छोटासा प्रान्त हालैण्ड आज स्पेन जैसी महान शक्ति का सामना कर सकता है तो फिर देश के सारे प्रान्त फ्रीसलैण्ड, फ्लैण्डर्स ब्रबेण्ट इत्यादि मिल कर क्या नहीं कर सकते ? आओ भाइयो एक माँ के पेट से जन्म लेने वाले भाइयों की तरह एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर स्वाधीनता के संग्राम में युद्ध करो । अपनी प्राचीन मान-मर्यादा और अधिकारों की रक्षा करो ।"

इसी समय ऑरेञ्ज ने हालैण्ड और ज़ीलैण्ड की पंचायतों की तरफ़ से फिलिप के नाम एक पत्र भी छपवा कर बटवाया । इस पत्र ने यूरोप भर में बड़ी सनसनी फैलादी । पत्र में लिखा था—"हम ईश्वर को साक्षी देकर कहते हैं कि जो अपराध सरकार की ओर से इस देश के लोगों पर लगाये जाते हैं, यदि वे सच्चे हैं, तो न तो हमें क्षमा की इच्छा है और न क्षमा हम को मिलनी ही चाहिए । कुत्तों की तरह हम अपने पापों के लिए मरने को तैयार हैं । मुँह से एक शब्द नहीं निकालेगें ।

ऐ हमारे दयावान राजा ! जो अपराध हमारे सिर मढ़े जा रहे हैं यदि वे साबित हो जाँय तो हमारे टुकड़े-टुकड़े कर डाले जायँ। लेकिन यहाँ तो बदला लेने के लिए जुल्म हो रहा है। दिल की हौंस पूरी करने के लिए लोगों को पेड़ों पर लटका-लटाका कर मारा जा रहा है। देश में खून की नदियाँ बहा कर जमीन रँगी जा रही है। हमने केवल अपने स्त्री-बच्चों और घरों की एल्वा के खूनी हाथों से रक्षा करने के लिए हथियार उठाये हैं। गर्दन झुका कर देश को गुलामी का जुआ पहनाने से सर कटा कर स्वतंत्रता के लिए मर जाना हम अच्छा समझते हैं। इस विषय में हमारे प्रान्त के सब नगर दृढ़ और एक मत हैं। हम सब कष्ट झेलने तथा अन्त को अपने घर फूँक कर उनमें जल मरने को तैयार हैं। परन्तु गुलामी की जंजीरें अपने हाथों से कसने को तैयार नहीं हैं।" अल्कमआर की घटना के तीन दिन बाद ही देश-भक्तों को एक दूसरी बड़ी उत्साह जनक विजय मिली थी। ज्यूडरजी में देश भक्तों के जहाजी बेड़े ने सरकारी बेड़े को हरा कर प्रान्त के सरकारी सूबेदार बौस्सू को क़ैद कर लिया था। एल्वा को यह खबर सुन कर बड़ा धक्का पहुँचा। वह सोचने लगा कि ये युद्ध-शास्त्र से बिलकुल अनभिज्ञ थोड़े से देश-भक्त स्पेन की छटी हुई सेनाओं को छका-छका कर कैसे भारी नुकसान पहुँचा रहे हैं। ऑरेञ्ज ने बौस्सू को वापिस देकर सेगट एल्डेगोराडे को एल्वा की कैद से छुड़ा लिया। देशभक्तों को एल्डेगोराडे के आ जाने से बड़ा लाभ हुआ। एल्वा दाँत पीसता रह गया।

पांच-छः वर्ष के लगातार अत्याचार के कारण एल्वा जनता की घृणा का पात्र तो बन ही गया था। विग्लियस, बेरलामोराट

और एग्रशाट इत्यादि सरदार भी उसका अपमान करने लगे थे। एल्वा यह भी अच्छी तरह जानता था कि स्पेन में लोगों ने कान भर कर फिलिप को मेरे विरुद्ध कर दिया है। दुखी चित्त से उसने २९ नवम्बर को मेडीनाकोली को नेदरलैण्ड का शासन भार सौंपा और १८ दिसम्बर को नेदरलैण्ड से प्रस्थान किया। छः वर्ष में उसने १८,६०० मनुष्यों को तो केवल फाँसी पर चढ़ाया। जो लड़ाइयों, घेरों और क़त्ले आमों में मारे गये, उनकी तो गणना ही क्या ? चलते-चलते उसने फिलिप को नेदरलैण्ड के सम्बन्ध में अपनी यह राय लिखी कि स्टेट कौंसल में से विग्लियस, बेरलामोण्ट और एग्रशॉट इत्यादि सब देशी लोगों को निकाल कर स्पेन वालों को भर देना चाहिए। क्योंकि ये लोग इसी देश के होने के कारण प्रायः सरकारी मामलों में हानि-कर हस्तक्षेप किया करते हैं। नेदरलैण्ड के सारे शहरों को भस्म करके खाक में मिला देना चाहिए।" देश के बहुत से लोगों से एल्वा ने कर्ज़ ले रक्खा था। इसलिए वह चुपचाप किसी की एक कौड़ी अदा किये बिना खिसक गया। इस खूनी जीवन पर अधिक लिखना व्यर्थ है। इतना पर्याप्त है कि फ्रेडरिक के एक बड़े घर की स्त्री को धोखा देने के कारण बाद को बाप-बेटे दोनों स्पेन में क़ैद कर दिये गये, और जब बहुत दिन बाद पोर्च्युगाल के युद्ध के लिए फिलिप को एक अनुभवी सेनापति की आवश्यकता पड़ी, तब एल्वा को जेल से निकाला गया। एल्वा उस युद्ध में गया लेकिन लौट कर उसे ऐसा विषम ज्वर आया कि बहुत दिनों तक खाट पर घुलने के बाद १२ दिसम्बर सन् १५८२ को उसके प्राण निकल गये। मरते समय वह कुछ खा नहीं सकता था। इसलिए एक स्त्री के

स्तनों से दूध पीता था। इस संसार में ७० वर्ष तक जिस मनुष्य ने लगातार मनुष्यों का खून पिया था वह अन्त समय में असहाय बालक की तरह एक स्त्री का दूध पीता—पीता मरा।

---

(१९)

मुक्ति की चेष्टा

ग्रेण्ड कमाण्डर ड्यूक आव मेडीना कोली एक साधारण-वँश में जन्म लेने वाला मनुष्य था। कहा जाता है कि ले पाण्टो के युद्ध में उसने बड़ी वीरता दिखाई थी। नेदरलैण्ड के लोग इस साधारण मनुष्य के वायसराय बनकर आने से खुश नहीं थे। परन्तु एल्वा के शासन से सब इतना थक गये थे कि लोगों को आशा थी कि नया वायसराय आकर अवश्य सख्ती कम करेगा। मेडीनाकोली ने देखा कि सरकारी खज़ाने में कौड़ी नहीं है। लोगों को यदि खुश नहीं किया जायगा तो कर से रुपया उगाहना सर्वथा असम्भव है। एल्वा की तरह डण्डे के बल पर राज करने का वह भी पक्षपाती था। परन्तु थोड़े दिन चुप रहकर सरकारी खज़ाना भर लेना चाहता था। अतः उसने लोगों को धोखा देने के लिए मीठी मीठी बातें करना और क्षमा प्रदान करने का ढोंग रचना प्रारम्भ किया। सरकारी भाषा में क्षमा का जो अर्थ था उसे लोग खूब जान गये थे, कोई धोखे में न आया। फिर भी ऑरेञ्ज को क्षमा की आशा से लोगों के फिसल जाने का डर लगता था। सब कष्ट झेलते झेलते थक गये थे। सेण्ट एल्डेगोण्ड सा देशभक्त तक जेल के कष्टों से उकता कर सरकार की इतनी ही दया काफ़ी समझने लगा था कि जो मनुष्य सरकारी अत्याचार के विरुद्ध हों उन्हें माल असबाब लेकर देश से निकल जाने दिया जाय।

सरकारी सेनापति मौण्ड्रेगन मिडलबर्ग में घिरा पड़ा था। उसको बचाने के लिए मेडोना कोली ने रोमेरो की अध्यक्षता में एक बड़ा जहाजी बेड़ा भेजा था। परन्तु देशभक्तों के जहाजों ने रोमेरो के बेड़े को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। रोमेरो बड़ी कठिनाई से तैरकर भाग गया। समुद्र पर हालैण्डवालों का सामना करना बड़ा कठिन था। अन्त में मौण्ड्रेगन का सेना सहित आरेञ्ज ने निकल जाने दिया मिडलबर्ग पर देश-भक्तों का कब्जा हो गया। इस नगर पर अधिकार होते ही सारा वालचरेन द्वीप देश-भक्तों के हाथ में आ गया जिससे सागर के सारे उत्तरी किनारे पर देशभक्तों को फिर से अधिकार प्राप्त हो गया।

ड्यूक एंजू पोलैण्ड के सिंहासन पर बैठ चुका था। उससे तथा फ्रांस के अन्य बहुत से सरदारों और जर्मनी के अपने नातेदारों और मित्रों से रुपया एकत्र करके लुई ने फिर एक छोटीसी सेना एकत्र कर ली थी। यह सेना और अपने दो भाइयों को साथ लेकर वह नेदरलैण्ड की तरफ चल पड़ा था। बोमल द्वीप पर लुई ऑरेञ्ज की सेना से मिलने वाला था। मगर मियूज पार करके मुकग्राम के निकट उसका सरकारी सेना से मुकाबला हो गया। उसने किसी प्रकार आरेञ्ज से मिल जाने की उत्कट इच्छा से भयँकर संग्राम किया। लुई और उसके दोनों भाई रणक्षेत्र में जूझ गये। स्वतन्त्रता के लिए मतवाले इन नर-सिंहों की लाशों तक का पता नहीं चला। वे पानी में डूबकर मरे या घोड़ों से उनकी लाशें कुचल गईं, इस बात का दुर्भाग्य से आज तक पता नहीं चला है। ऑरेञ्ज अपने भाईयों की राह उत्कण्ठा से देख रहा था। जब उसने उनकी मृत्यु का भयानक समाचार सुना तो उसे

एकाएक विश्वास नहीं हुआ। स्पेन के सैनिकों को तीन वर्ष से वेतन नहीं मिला था। उन्होंने उपद्रव करके एण्टवर्प पर अपना अधिकार जमा लिया। नगर वालों के घरों में जा घुसे और 'शराब कवाब, मांस, मछली, मिठाइयाँ, फल, कुत्तों के लिए बढ़िया गेहूँ की रोटी, घोड़ों के पैर धोने के लिए शराब इत्यादि की फरमाइशें करने लगे। जिस समय स्पेन के सैनिक नागरिकों के घरों में बैठे इस प्रकार मज़े उड़ा रहे थे, उसी समय देशभक्तों के जहाज़ों ने आकर एण्टवर्प का जहाज़ी बेड़ा नष्ट कर डाला।

लीडन का पहला मुहासरा ३१ अक्टूबर सन् १५७३ को शुरु हुआ था और २१ मार्च १५७४ को सीमा पर लुई से लड़ने के लिए सेनाओं की जरूरत होने के कारण उठा लिया गया था। यह बात साफ ही थी कि लुई से युद्ध समाप्त होते ही सरकारी फौजें फिर लीडन पर घेरा डाल देंगी। इसलिए आरेञ्ज ने नगर वालों को सलाह दी थी कि यह साँस लेने का जो समय तुम्हें मिल गया है, इसमें नगर की टूटी हुई दीवारों को दुरुस्त कर लो। खाने पीने का सामान नगर में भर लो। परन्तु नागरिकों को लुई की जीत पर लुई से भी अधिक विश्वास था। इसलिए वे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। २६ मई को लुई की हार होते ही सरकारी सेना ने फिर लीडन पर घेरा डाल दिया। राइन नदी की अनेक नहरों पर बसने वाले लीडन नगर के डेढ़ सौ पुल, अनेक सुन्दर बाग-बगीचों और सड़कों के स्थान में नहरों का वर्णन पढ़कर श्रीनगर याद आता है। इस अनुपम सौन्दर्य से परिपूर्ण नगर में बसने वाले मनुष्यों को केवल ईश्वर, अपने साहस और विलियम आरेञ्ज पर ही भरोसा था। उनके पास स्पेन की फौज का

मुकाबला करने के लिए सेना नहीं थी। आरेञ्ज ने नागरिकों को सन्देशा भेजा था कि 'नेदरलैण्ड की जीत और हार तुम्हारे ऊपर ही निर्भर है। किसी तरह तीन मास तक डटे रहो। कहीं न कहीं से सहायता भेजने का प्रयत्न करूँगा।'

६ जून को सरकार की ओर से लीडन वालों को क्षमा की नई घोषणा सुनाई गई थी। आरेञ्ज को डर होने लगा था कि लड़ाई से थके हुए निराश नागरिक क्षमा के लोभ में पड़कर कहीं कन्धा न डाल दें। परन्तु सौभाग्य से लोगों पर क्षमा की घोषणा का कुछ असर नहीं हुआ। क्षमा क्या थी? जिस बात के लिए नेदरलैण्ड के लोग इतने दिनों से खून बहाते रहे थे उसे त्याग देने का केवल एक मौका दिया गया था। एक कलार और एक चमार के अतिरिक्त हालैण्ड भर में किसी ने इस क्षमा का फायदा नहीं उठाया! डेफ्ट और राटर्डम पर आरेञ्ज, डेरा डाले पड़ा था। लीडन बन्दरगाह नहीं था। इसलिए सागर से सहायता पहुँचाना असम्भव था। आरेञ्ज ने सोचा कि बाँध काट कर सागर को ही लीडन की सहायता के लिए भेजना चाहिए। बीसियों ग्राम, खेत और फसलें नष्ट हो जाँयगी। परन्तु लीडन को बचाने का और कोई रास्ता ही नहीं था। लोगों के सामने अपने घर-बार बहा देने का प्रश्न था इसलिए बड़ी मुश्किल से लोग उस प्रस्ताव को स्वीकार करने पर राजी हुए। सब फावड़ेले-लेकर यह चिल्लाते हुए बाँध काटने लगे कि 'हारे हुए देश से डूबा हुआ देश अच्छा है।' आरेञ्ज ने स्वयं जाकर बाँध काटने के कार्य्य का निरीक्षण किया। जगह जगह ग्रामों में नाव तैयार रखने का हुक्म दे दिया गया था। इस सारी तैयारी में तीन मास गुजर

गये। २१ अगस्त को आरेञ्ज के पास लीडन से एक पत्र आया कि हम लोगों ने तीन मास तक टिके रहने का अपना वादा बड़ी कठिनता से पेट काट-काटकर पूरा किया है। अब केवल तीन-चार दिन के लिए खाना बचा है। यदि तुरन्त ही सहायता नहीं आयी तो फ़ाके मस्ती के सिवा और हमारे किये कुछ न होगा। आरेञ्ज राटर्डम में बुखार से पड़ा था। बेहोशी-सी आ रही थी परन्तु पत्र मिलते ही उसने तुरन्त उत्तर लिखाया—"बाँध फूट गये हैं, सहायता आ रही है।" अपनी बीमारी का हाल नहीं लिखा, यह सोचकर कि कहीं लोग घबरा न जाँय। लीडन में जब आरेञ्ज का उत्तर पहुँचा तो सब नागरिकों को बाजार में एकत्र करके पत्र पढ़कर सुनाया गया। लोग खुशी मनाने लगे। चुंगी के प्रमुख वर्ग ने चुंगी का बैण्ड बजा कर लोगों को खुश करने का हुक्म दिया। बाहर पड़े हुए शत्रु शहर से आने वाले इस हर्ष-नाद को सुन कर आश्चर्य करने लगे। जब उनके चारों ओर समुद्र का थोड़ा-थोड़ा पानी आने लगा तब नागरिकों के उल्लास का कारण उनकी समझ में आ गया। लेकिन सब की राय थी कि लीडन तक सागर को ले आना असम्भव है। नगर-वालों को भी अविश्वास होने लगा। वे रोज शहर की मीनारों पर चढ़ कर देखते थे। किसी तरफ़ पानी बढ़ता दिखाई नहीं देता था। शत्रु बाहर से चिल्ला-चिल्ला कर नागरिकों को चिढ़ाते थे—"देख लो! देख लो! मीनार पर चढ़ कर देख लो! समुद्र तुम्हारी सहायता के लिये दौड़ा चला आ रहा है!।" नगर की ओर से आखिर निराश होकर प्रान्तीय पंचायतों के पास एक चिट्ठी भेजी गई। "हमें मुसीबत के वक्त सब ने छोड़ दिया है। पंचायत की ओर

से तुरन्त स्नेह-पूर्ण उत्तर आया—"लीडन, तेरे बचाने के लिए हम सब तबाह हो जाँयगे ! सारा देश डुबा देंगे । तेरे हारते ही सारा देश हार जायगा ।"

ऑरेञ्ज का बुखार बढ़ रहा था । वह बेहोशी में चारपाई पर पड़ा तड़प रहा था। परन्तु आँखों में लीडन की तस्वीर भूल रही थी। ऑरेञ्ज को लीडन ही नहीं, बल्कि सारे देश को सहायता पहुँचाने की चिन्ता थी। डाक्टरों ने देखा कि चिन्ता के कारण सरसाम हुआ जाता है। अच्छे होने का एक ही उपाय था कि सारी चिन्ता छोड़ दी जाय। परन्तु सारे संसार के डाक्टर भी एकत्र हो कर ऑरेञ्ज के मन से देश की चिन्ता नहीं निकाल सकते थे। पलंग पर तड़पता हुआ आरेञ्ज लीडन के लिये पत्र और देश भक्तों की नौ-सेना के सेनापति बायसॉट के लिए आदेश लिखा रहा था। अगस्त के अन्त में एक झूठी अफवाह उड़ी कि लीडन हार गया। ऑरेञ्ज को विश्वास नहीं हुआ। परन्तु चिन्ता से उसका बुखार बढ़ गया। इसी अवसर पर एक अफसर उससे मिलने आया था। ऑरेञ्ज की दशा देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। ऑरेञ्ज अकेला मकान में पड़ा था। नौकर चाकर कोई एक आदमी भी इधर-उधर नहीं था। मालूम हुआ कि आरेञ्ज ने चिन्ता के कारण सबको किसी न किसी काम पर लीडन की खबर लाने इत्यादि के लिए भेज दिया है। इस अधिकारी ने आरेञ्ज को विश्वास दिलाया कि लीडन अभी तक हारा नहीं है। तब आरेञ्ज का बुखार कम होना शुरू हुआ।

सितम्बर में ऑरेञ्ज के अच्छे होते ही बायसाट लीडन की तरफ़ चला। पहले-पहल बाँध से लीडन १५ मील दूर था। यह

बाँध तोड़ कर पानी चढ़ा दिया गया था। लेकिन जब बायसाट बेड़ा लेकर लीडन से पाँच मील दूर शीलिंडग स्थान पर पहुँचा, तो एक और कठिन बाँध सामने दिखाई दिया। शीलिंडग और लीडन के बीच में कई बाँध थे। इन बाँधों पर ग्राम बसे थे बहुत छोटे-छोटे दुर्ग भी बने थे। दुर्गों में सरकारी सेनायें थीं। देश भक्त ११ और १२ तारीख की रात को अचानक छापा मार कर शीलिंडग पर चढ़ गये। दुर्गों और बाँध पर कब्जा कर लिया। फिर बाँध तोड़ कर शीलिंडग में से रास्ता काट कर आगे बढ़े। परन्तु सामने दूसरा बाँध देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। इस पर भी धावा मार कर तुरन्त अधिकार जमा लिया गया और इस बाँध को भी काट कर देश भक्तों ने अपना बेड़ा आगे बढ़ाया। परन्तु आगे एक दूसरा बाँध दिखाई दिया। इस बाँध पर शत्रु की बहुत सी सेना भी थी। बायसाट चक्कर मार कर दूसरी तरफ से चला। परन्तु नार्थओ के पास पहुँच कर उसे इधर एक और भी बाँध मिला। हवा भी एक दम पूर्वी चलने लगी। सागर का पानी कम हो गया। बॉयशॉट का बेड़ा जमीन पर रह गया। लीडन की हारलेम से भी बुरी दशा हो गई थी। गाय, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, चूहे समाप्त हो चुके थे। लोग कुत्तों के मुँह में से छीन-छीन कर हाड़ चाटते थे। स्त्री और बच्चे दिन रात गन्दे नालों में खाना ढूँढ़ते फिरते थे। लगभग आठ हज़ार मनुष्य भूख से तड़प-तड़प कर प्राण गँवा चुके थे। सरकार की तरफ़ से सन्धि का लालच दे-दे कर लोगों को गिराने की चेष्टा की जा रही थी। कुछ लोग बेड़ा बनाने भी लगे थे। चुंगी के वीर प्रमुख बर्फ पर गालियों की बौछार होने लगी थी। एक दिन बर्फ बाजार में से जा रहा था। लोगों ने उस

चौराहे पर घेर लिया। बर्फ ने एक चबूतरे पर चढ़कर चिल्लाकर कहा—"क्या मतलब है तुम्हारा? क्या तुम घुटने टेकने के लिए बढ़-बढ़ाते हो? शत्रु के हाथों तुम्हें और भी बुरी तरह मरना पड़ेगा। मैंने तो क़सम खाली है कि मैं नगर को शत्रु के हाथ नहीं सौंपूँगा। भगवान मुझे अपनी शपथ पूरी करने का बल दें। मौत मुझे एक ही बार आयगी। चाहे तुम्हारे हाथों आये, चाहे शत्रु या भगवान के हाथों। मुझे अपनी चिन्ता नहीं है। परन्तु जो नगर मुझे सौंपा गया है उसे कसाई के हाथों में नहीं दूँगा। मैं जानता हूँ कि यदि शीघ्र ही सहायता नहीं आई तो भूखों मर जाना पड़ेगा। परन्तु शत्रु के हाथ में पड़कर अपमानित होकर मरने से भूखों मर जाना अच्छा है। तुम्हारी धमकियों का मुझे जरा भी डर नहीं है। मेरा जीवन तुम्हारी भेंट है। यह लो मेरा खंजर और मेरे टुकड़े करके अपनी भूख बुझा लो! परन्तु जब तक मैं जीवित हूँ शत्रु के हाथ में शहर सौंप देने की मुझ से आशा मत रक्खो।"

बर्फ के वीरता-पूर्ण वचन सुन कर लोगों के हृदय में जोश भर आया। दीवारों पर जाकर शत्रुओं से कहने लगे, "तुम हम लोगों को कुत्ते-बिल्ली खाने वाला कह कर हँसते हो! हाँ, हम कुत्ते बिल्ली खाने वाले हैं। तुम्हें समझ लेना चाहिए कि जब तक एक भी कुत्ता या बिल्ली की आवाज़ शहर में सुनाई देती है तबतक लीडन घुटने नहीं टेकेगा। जब खाने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा तब हम अपना बायां हाथ खायेंगे और दाहिने हाथ से स्वाधीनता के लिए लड़ेंगे। यदि भगवान् का सब प्रकार हम पर कोप ही हुआ तो भी हम घुटने नहीं टेकेंगे। अपने हाथों शहर में आग लगाकर स्त्री-बच्चों के साथ जल मरेंगे।

२९ सितम्बर को फिर पश्चिमी हवा चली। पानी चारों ओर गहरा हो गया। बायसाट अपना बेड़ा बढ़ाकर शहर के निकट जा पहुँचा। शहर के निकट स्पैन की बहुत सी सेना पड़ी थी। परन्तु जिस भगवान ने दुःखियों की सहायता के लिए सागर भेजा था; पश्चिमी हवा चलाई थी, उसीने शत्रुओं के हृदय में ऐसा भय फैला दिया था कि बायसाट के पहुँचते ही रात को अँधेरे में स्पेन की सारी सेना हेग की तरफ भाग गई। बायसाट ने नगर में प्रवेश किया। दो महीने से भूखे मरने वाले नागरिकों को रोटी मिली। कुछ तो इतनी रोटी खा गये कि तुरन्त ही मर गये। कुछ बीमार पड़ गये। सम्हाल-सम्हाल कर रोटी बाँटी जाने लगी। सबने मिलकर एक जुलूस निकाला। अन्त में सब घुटनों पर बैठ कर जब गिरजे में भगवान की प्रार्थना करने लगे तो लोगों का दिल इतना भर आया कि सब फूट-फूटकर रोने लगे। यहां तक कि प्रार्थना का चलाना असम्भव हो गया। ऑरेञ्ज को जब यह समाचार मिला तो वह आनन्द से खिल उठा। पंचायत की राय से उसने लीडन के प्रति देश का स्नेह दिखाने के लिए लीडन में हमेशा दस दिन का एक वार्षिक मेला लगाने की व्यवस्था की। महाराज फिलिप की ओर से उसने (यह फ़िलिप को नेदरलैंड का राजा मानने का मज़ाक अभी क़ायम था) लीडन की वीरता के स्मृति-चिन्ह स्वरूप लीडन-विश्व विद्यालय की स्थापना की।

जिस चीज़ को हालैण्ड और जेलैण्ड खून बहाकर पाने का प्रयत्न कर रहे थे उसे अन्य प्रान्त के बुद्धिमान नेता काग़ज़ी घोड़े दौड़ाकर ही ले लेना चाहते थे। रिम के रिम काग़ज़ फिलिप से समझौता करने के प्रयत्न में पत्र-व्यवहार में खर्च किये

जा रहे थे। यह लोग शायद समझते थे कि मानों स्वाधीनता पाना केवल कागजी सौदे की बात है। ऑरेञ्ज के पास भी सेण्ट एल्डगोण्डे इत्यादि कई आदमियों को सरकार की तरफ से यह सन्देशा लेकर भेजा गया था कि राजा के अधिकार और सनातन धर्म की प्रधानता के प्रश्नों को छोड़ कर अन्य सब बातों में समझौता किया जा सकता है। परन्तु ऑरेञ्ज और पंचायत ने समझौता करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा ऑरेञ्ज के हाथ में हालैण्ड और जेलैण्ड के शासन का सारा भार आ गया था। नगरों की पंचायतें पहले तो उसपर अधिकारों की इतनी वर्षा करने लगी थी कि जो अधिकार वह पंचायतों को देना चाहता था वे भी उसी के सिर थोप दिये गये थे। परन्तु पीछे से पंचायतों का अपने हाथ में सत्ता रखने के लिए जी ललचाया। पंचायतें ऑरेञ्ज के मार्ग में अड़चनें डालने लगीं। ऑरेञ्ज ने उकता कर सारे पदों से इस्तीफ़ा दे दिया। परन्तु देश के लिए उसका पल्ला छोड़ना स्वाधीनता से हाथ धो बैठने के बराबर था। पंचायतों ने ऑरेञ्ज की माँगें मान ली। जिन प्रान्तों से एल्वा अधिक से अधिक २ लाख ७१ हजार रुपया वार्षिक से अधिक कभी वसूल नहीं कर सका था। उन्हीं हालैण्ड और जेलैण्ड के प्रान्तों ने २ लाख १० हजार मासिक ऑरेञ्ज को देश की व्यवस्था के लिए देना स्वीकार कर लिया। पहले तो बनियों की तरह बहुत खींच-खसोटी की गई, परन्तु पीछे से ४५,००० मासिक फ़ौज के लिए भी मंजूर कर लिया गया। सरकार की ओर से समझौते की बात छिड़ी। सरकारी खज़ाने का दिवाला पिट चुका था। आगे लड़ाई चलाना असम्भव दिखता था। जर्मनी के

सम्राट ने भी फिर समझौता कराने का प्रयत्न शुरू कर दिया था। उसे भय था कि यदि फिलिप नेदरलैण्ड के सुधारकों पर अत्याचार करना बन्द नहीं करेगा तो जर्मनी के सरदार, जिनमें अधिकांश सुधारक थे, हरगिज फिलिप को राजगद्दी पर क़दम नहीं रखने देंगे। सम्राट के कुटम्ब के राज्य का ही अन्त हो जायगा। बहुत दिन ब्रेडा में समझौते के सम्बन्ध में कांफ्रेन्स होती रही। ऑरेञ्ज हृदय से सुलह चाहता था, परन्तु फिलिप सनातन धर्म की प्रधानता पर आँच आने देने को तैयार नहीं था। नेदरलैण्ड में थोड़े से पुजारियों को छोड़कर अन्य सब लोग नवीन पन्थी हो गये थे। इन सब मनुष्यों को देश से निकाल देने की बात पर ऑरेञ्ज और पंचायत कैसे राजी हो सकती थी! कुछ समझौता नहीं हो सका। दोनों के प्रतिनिधि लौट गये।

ऑरेञ्ज की स्त्री शाहजादी बूरबन कुछ पगली सी थी; बड़ी क्रोधी और कर्कशा थी। पहले ही से वह खब्ती तो थी ही परन्तु शायद ऑरेञ्ज की तरह दृढ़ और गम्भीर प्रकृति की न होने से मुसीबतों ने उसे और भी खब्ती बना दिया था। जब ऑरेञ्ज अपना माल असबाब बेच-बेच कर देश को बचाने के लिए सेना एकत्र करने का प्रयत्न कर रहा था, तब उसकी स्त्री केवल घर के भीतर ही कलह नहीं मचाती थी, बल्कि लोगों के सामने ऑरेञ्ज को खूब गालियाँ भी सुनाया करती थी। उस कमबख्त ने यहां तक किया कि एल्वा को एक ख़त लिख भेजा कि मेरा पति पागल हो गया है। सारा रुपया बहाये देता है। मेरे पास ख़र्च नहीं है। तुम मुझे कुछ रुपये ख़र्च के लिए भेज दो।" ऑरेञ्ज हृदय पर पत्थर

रख कर यह घरेलू वार सहता था। प्रायः देखा गया है कि देश के लिए कार्य करने वालों को बाहर की चोटों से इतना कष्ट नहीं सहना पड़ता जितना भीतरी चोटों से सहना पड़ता है। अन्त में उस पागल औरत ने एक मनुष्य से सम्बन्ध कर लिया। ऑरेञ्ज को मजबूर होकर तलाक दे-देनी पड़ी। आखिरकार शाहज़ादी बूरबन जर्मनी के एक सरदार की जेल में पागल हो कर पड़ी और वहीं मर गई। वर्षों से ऑरेञ्ज को गृह-सुख स्वप्न में भी देखने को नहीं मिला था। इसलिए उसने थक कर राजकुमारी चार्लट से विवाह कर लिया। इस विवाह के कारण जर्मनी के बहुत से सरदार उस से नाराज़ हो गये।

शक्ति पाकर दिमाग ठीक रखना बड़ा कठिन काम है। सोनौय ने अलकमार में कुछ लोगों को देश के विरुद्ध षड़यन्त्र रचने के सन्देह में पकड़ा था। इन लोगों की खालें खिंचवा कर ज़ख्मों में अंगारे भर-भर कर इतने कष्ट दिये गये कि एल्वा और उसकी ख़ूनी कचहरी को भी मात कर दिया। ऑरेञ्ज को जब यह ख़बर लगी तो उसने तुरन्त ही इन घृणित घटनाओं को बन्द करा दिया। सोनौय की देश के प्रति बहुत सी सेवायें थीं। इस लिए ऑरेञ्ज ने उसे दण्ड नहीं दिया।

मेडीनाकोली को अभी तक स्पेन से जहाज़ी बेड़े के आने की आशा थी। वह जेलैण्ड के किनारे किसी ऐसे स्थान पर अधिकार जमा लेने के फिराक में था, जहां से जेलैण्ड और हालैण्ड पर आसानी से हमला किया जा सके। थोलन द्वीप अभी तक सरकार के अधिकार में था। यहां से कुछ देश-द्रोहियों की सहायता से मोण्ड्रैगन की सेना की तरह एक टुकड़ी समुद्र में

घुस कर इङ्गलैण्ड पहुँचो। उसके पहुँचते ही वहाँ की देशभक्त सेना के सरदार बायसॉट को किसी देशद्रोही घातक ने क़त्ल कर डाला। एकाएक सरदार के मारे जाने से देशभक्त सेना घबराकर भाग पड़ी। स्पेन का कब्ज़ा फिर समुद्र के किनारे के एक मार्के के स्थान पर हो गया। हालैण्ड अभी तक अकेला ही स्वाधीनता के लिए युद्ध करता रहा था। परन्तु बहुत दिनों तक अकेले ही स्वतन्त्रता के लिए लड़ते जाना उसके लिए असम्भव था। अतः ऑरेञ्ज ने दूसरे देशों से भी सहायता लेने का विचार किया। उसका कहना था—"नेदरलैण्ड जैसी सुन्दर वधू के लिए बहुत से वर मिल जायँगे।" प्रान्तीय पंचायत और नगरों ने आखिरकार निश्चय किया कि फिलिप के ज़ुल्म इन्तहा को पहुँच चुके हैं। फिलिप को नेदरलैण्ड का राजा कहलाने का अब कुछ अधिकार नहीं रहा है। इसलिए किसी और देश के राजा को नेदरलैण्ड का राजा चुन लेना चाहिए। किस राजा को नेदरलैण्ड का राजा बनाया जाय, इस बात का फैसला आरेञ्ज के ऊपर छोड़ दिया गया। हालैण्ड और जेलैण्ड कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकते थे कि वे नेदरलैण्ड के भावी प्रजा-तन्त्र के दो स्तम्भ बन जाँयगे। ऑरेञ्ज ने दूसरे देशों से सहायता लेने का प्रयत्न शुरू किया। जर्मन साम्राज्य तो भानमती का कुनबा ही बन रहा था। फ्रान्स में अभी तक घरेलू युद्ध चल रहा था। इंग्लैण्ड की महारानी एलीजेबथ फिलिप से बहुत डरती थी। इसलिए फिलिप के विरुद्ध क़दम रखने को वह तैयार नहीं थी। फ्रान्स और विशेषकर इंग्लैण्ड में बहुत प्रयत्न करने पर भी जब आरेञ्ज को कोई सहायता नहीं मिली, तो वह निराश

होकर सोचने लगा कि हालैण्ड और जेलैण्ड के मनुष्यों को माल असबाब सहित जहाजों में भर कर चल देना चाहिए। नगरों को आग लगा कर नष्ट कर दिया जाय। बाँध तोड़ कर सारा देश समुद्र में डुबा दिया जाय। ईश्वर की पृथ्वी बहुत बड़ी है। कहीं किसी नये स्थान पर बस जाँयगे। इस बीच में मेडोना-कोली का ज्वर से एकाएक देहान्त हो गया। शाहजादा ऑरेञ्ज का देश में आग लगाकर चल देने का इरादा स्वभावतः कुछ दिन के लिए स्थगित हो गया।

---

(१५)

प्रान्तों का संगठन; राष्ट्रीय-एकता ।

मेडीनाकोली की मृत्यु से फिलिप को कुछ दुख नहीं हुआ । परन्तु मेडीनाकोली के इस बुरे समय में वे कहे-सुने अचानक मर जाने पर उसे बड़ा क्रोध आया । अपने स्वभाव के अनुसार फिलिप कुछ निश्चय नहीं कर सका कि किसको नेदरलैण्ड का वायसराय बनाकर भेजा जाय । इसलिए उसने फिलहाल 'स्टेट कौंसिल' को ही शासन का सारा भार सौंप दिया । 'स्टेट कौंसिल' में स्पेन के एक आदमी के अतिरिक्त और सब नेदरलैण्ड-निवासी थे । देश की परिस्थिति ऐसी बिगड़ रही थी कि किसी अच्छे शक्तिमान शासक के आने की जरूरत थी । ऑरेञ्ज ने हालैण्ड और जेलैण्ड के नगरों की पंचायतों और अमीर उमराव, व्यापारियों को एकत्र करके हालैण्ड और जेलैण्ड को मिलाकर एक सङ्गठित राष्ट्र बनाने की सम्मति ले ली थी । इस नये राष्ट्र के शासन की बागडोर भी ऑरेञ्ज के ही हाथों में देदी गई थी । पंचायतें ऑरेञ्ज के ही सिर पर ताज रखना चाहती थीं । परन्तु उसके बहुत कहने सुनने पर इस बात पर भी राजी हो गईं कि फिलिप के स्थान पर किसी अन्य राजा को अपना अधिपति बनाने के लिए न्योता दिया जाय । यह काम भी ऑरेञ्ज को ही सौंपा गया । इधर स्पेन की फ़ौजों ने बहुत दिनों से वेतन न मिलने के कारण खुल्लमखुल्ला बलवा शुरू कर दिया था । छः

हज़ार सङ्गठित सेना ने अपना नायक स्वयं चुनकर देश में पिन्डारियों की तरह फिरना और लूट-मार करना शुरू कर दिया, सेना के अधिकारी भी सैनिकों से मिल गये थे। खजाने में वेतन देने को पैसा नहीं था। प्रधान सेनापति मेन्सफील्ड सैनिकों को समझाने गया और बोला—"तुम्हारी संसार भर में कीर्ति है। क्यों ऐसा बुरा व्यवहार करके अपनी कीर्ति में व्यर्थ बट्टा लगाते हो?" सिपाहियों ने उत्तर दिया—"कीर्ति जेब अथवा पेट में नहीं रक्खी जा सकती। कीर्ति बहुत मिल चुकी है। अब हमें उसकी अधिक जरूरत नहीं है। रुपया लाओ! रुपया! हमें रुपया चाहिए!" बेचारे मेन्सफील्ड के पास रुपये के नाम कौड़ी भी नहीं थी। सैनिकों ने उसे तालियाँ पीट-पीटकर और हूहू करके भगा दिया। फिलिप ने तंग आकर आखिरकार सारी सेना के बाग़ी हो जाने की घोषणा निकाल दी। नागरिकों को आज्ञा दे दी गई कि जहाँ सैनिक मिलें निस्संकोच मार डाले जाँय। 'स्टेट कौंसिल' बिल्कुल अशक्त हो गई थी, देश पर शासन करने के स्थान में स्वयं ब्रसेल्स में क़ैद सी हो रही थी।

हालैण्ड और ज़ीलैण्ड स्वाधीनता के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ गये थे। उन्होंने फ़िलिप का अधिकार नष्ट करके प्रजातंत्र की लगभग स्थापना कर ली थी। लेकिन हालैण्ड और ज़ीलैण्ड तथा देश के अन्य १५ प्रान्तों में एकता कराने का कठिन कार्य अभी शेष था। इन दो प्रान्तों तथा अन्य १५ प्रान्तों में आपस में बहुत सी जरूरी बातों में बड़ा मतभेद था। इन दोनों प्रान्तों के सभी लोग नवीन-पन्थी थे। अन्य प्रान्तों के लोग अभी तक सनातन-धर्म के पक्ष में थे। परन्तु धार्मिक मतभेद होने पर भी सब प्रान्तों के

लोग पुराने अधिकारों और स्वतंत्रता को क़ायम रखना चाहते थे। ऑरेञ्ज को विश्वास हो गया था कि फ़िलिप का राज्य रहते हुए पुराने अधिकार और स्वतंत्रता क़ायम नहीं रह सकती। हालैण्ड और ज़ेलैण्ड भी ऐसा ही मानने लगे थे। अन्य १५ प्रान्त ऐसा नहीं मानते थे। यह एक बड़ा भारी भेद था। दूसरे यह जमाना ऐसा था कि दूसरे के धार्मिक विचारों के प्रति लोग उदारता दिखाना नहीं जानते थे। नवीन-पन्थी अपने विचारों के लिए तो स्वतंत्रता चाहते थे, परन्तु शक्ति मिलने पर सनातनियों पर वैसा ही अत्याचार करने की इच्छा रखते थे जैसा सनातनियों की ओर से होता आया था। इस कारण भी अन्य प्रान्त, हालैण्ड और ज़ेलैण्ड के नेताओं का नेतृत्व स्वीकार करने से डरते थे। परन्तु ऑरेञ्ज तो उन महा-पुरुषों में से था, जो अपने समय से बहुत आगे पैदा होकर लोगों को नये युग का मार्ग दिखाते हैं। वह दिन-रात इसी बात पर ज़ोर दिया करता था कि एक दूसरे के धार्मिक विचारों के प्रति उदारता होनी चाहिए। एक दूसरे पर अत्याचार न करके देशवासियों को आपस में मेल करने का प्रयत्न करना चाहिए। सारा देश स्पेन की सेना को एक दिल से घृणा करता था। स्पेन की सेना ने विद्रोही होकर उत्पात मचाना और लूट-मार करना प्रारम्भ कर दिया था। ऑरेञ्ज ने इसे भगवान का भेजा हुआ सुअवसर समझा। वह स्पेन की सेना के प्रति लोगों के घृणा के भावों को जागृत करके सारे देश को एक करने और स्पेनवालों को देश से निकाल फेंकने का प्रयत्न करने लगा। उसने चारों ओर एकता के लिए अपीलें छपवाकर बटवाईं और देश के प्रतिनिधियों को एक कांग्रेस घेण्ट में एकत्र

होने का न्योता दिया। अक्टूबर के अन्त में कांग्रेस ग्रेएट में एकत्र हुई।

इसी बीच एक जोशीले देश-भक्त नौजवान ने एकाएक एक दिन पांच सौ आदमियों को लेकर ब्रसेल्स में 'स्टेट कौंसिल' की बैठक पर हमला करके सब सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया था। परन्तु पीछे से सबको छोड़ दिया गया। विग्लियस और बेरला-मौएट उस दिन भाग्य से बीमारी के कारण नहीं आये थे। इस घटना से 'स्टेट कौंसिल' का रहा-सहा प्रभाव भी उठ गया। एएटवर्प के दुर्ग में डे एलिवा सरकारी अधिकारी था। निकट में ही स्पेन की बागी फौजें पड़ी हुई थीं। डे एलिवा के इशारे पर बागी सेना ने एएटवर्प को खूब लूटा। अन्य जगह के से रोमां-चकारी अत्याचार यहाँ भी किये गये। एक गृहस्थ के यहाँ विवाह हो रहा था। स्पेन के नृशंस सैनिक घुस पड़े। वर और बरातियों को मार डाला। सौन्दर्य की मूर्ति वधू को नंगा करके लोहे की छड़ों से मार-मार कर बेचारी के प्राण निकाल दिये। सेएट बार्थेलमो के हत्याकाण्ड से भी अधिक भीषण हत्याकाण्ड एएटवर्प में हो गया। इतिहास में यह हत्याकाण्ड 'स्पेनी क्रोध' के नाम से मशहूर है। एएटवर्प यूरोप का सबसे धनवान व्यापारिक केन्द्र था। पाँच-छः हजार सैनिकों के हाथ चालीस-पचास लाख की लूट पड़ी। सैनिक पागलों की तरह हर्ष से उन्मत्त होकर नाचने लगे। जो सैनिक बेवकूफ थे उन्होंने एक-एक दिन में दस हजार जुए में खो दिये। होशियार सैनिकों ने सोने चाँदी के कवच बनवा लिये। जब अपने आप वेतन उगाहने से इतना धन हाथ लगा तो स्पेन की सेना अपने कृत्य पर क्यों प्रसन्न

न होती ? शहर के कोतवाल चेम्पनी ने, जो ग्रेनविले का भाई था, परन्तु स्पेन वालों को हृदय से घृणा करता था, भाग कर ऑरेञ्ज के पास शरण ली।

कॉंग्रेस घेण्ट में बैठी हुई विचार कर रही थी। इसी समय एण्टवर्प की लूट का समाचार पहुँचा। प्रतिनिधियों ने आपस के भेद-भाव को भूल कर तुरन्त ऑरेञ्ज की सलाह के अनुसार सारे देश के एक सूत्र में बँध जाने की घोषणा पर हस्ताक्षर कर दिये। यह बड़े महत्व की घटना थी। ऑरेञ्ज की वर्षों की मेहनत और राजनीति आखिरकार सफल हुई। नवीन-पन्थ दो प्रान्तों में तो फैल ही गया था। अन्य प्रान्तों ने व्यक्तिगत रूप से लोगों को नवीन-पन्थ पर चलने देने का विरोध हटा लिया। ऑरेञ्ज को सारे देश का सेनापति और शासक उस समय तक के लिए मान लिया गया जब तक कि स्पेनवालों को देश से न निकाल दिया जाय। उसके बाद सब कुछ तय करना देश की सार्वजनिक पँचायतों के हाथ में छोड़ दिया गया। सब इस बात पर एक हो गये कि स्पेनवालों को देश से बिना बाहर किये काम नहीं चल सकता ऑरेञ्ज के हर्ष का पार न रहा। उसने कॉंग्रेस के इस निश्चय को नगर-नगर में घोषित कराया जिससे जनता को भी कॉंग्रेस के इस निश्चय के पक्ष में अपने विचार और भाव प्रकट करने का मौका मिले। ऑरेञ्ज प्रत्येक आवश्यक विषय पर हमेशा जनता को राय ले लेता था। जनता ने बाज़ारों में एकत्र हो-होकर दीपावली करके अपनी सहमति प्रकट की। एण्टवर्प के हत्याकाण्ड के एक दिन, और कॉंग्रेस की घोषणा के चार दिन पहले लक्ज़मबर्ग में एक विदेशी सरदार ने एक मूर

(मुसलमान) गुलाम के साथ प्रवेश किया था । सरदार शहज़ादा मेल्फी का भाई डॉन ओटावियो गौंज़ागा था । गुलाम के भेष में उसके साथ ग्रेनाडा का विजेता, लेपाण्टो का वीर आस्ट्रिया का डॉन जॉन था, जिसको नेदरलैण्ड का वायसराय बना कर भेजा गया था । वह गुलाम के भेष में जल्दी-जल्दी जर्मनी और फ्रांस पार करता हुआ नेदरलैण्ड की देहली पर चढ़ आया था । परन्तु इतनी शीघ्रता करने पर भी वह देर से पहुँचा ।

डॉन जॉन फिलिप के पिता महाराज चार्ल्स की रखेली धोबिन से पैदा हुआ था । बचपन से फिलिप का पुत्र कार्लोस, डचेज़ परमा का पुत्र अलेकज़ेण्डर और डॉन जॉन तीनों साथ-साथ एकसे ही राजसी ठाठ में पाले-पोसे गये थे । ग्रेनाडा के मुसलमानों को स्त्री-बच्चों सहित नष्ट करके लेपाण्टो के युद्ध में डॉन जॉन ने तुर्की के सुल्तान के सैकड़ों जहाजों को परास्त करके मुसलमानों के सेनापति का सिर काट लिया था और इस्लामी झण्डे को, जिसपर अट्ठाइस हज़ार नौ सौ बार अल्लाह का नाम लिखा हुआ था, छीन कर फिलिप के पास भेज दिया था । लगभग बीस-पच्चीस हज़ार मुसलमानों की जानें गई थीं । डॉन जॉन के भी दस हज़ार आदमी काम आये थे । उस समय एल्वा ने डान जान की वीरता पर दाँत तले उँगली दबाकर कहा था, "सीज़र के समय से तुम-सा वीर और कोई सेनापति देखने में नहीं आया ।" लेपाण्टो की विजय के बाद डान जान ने ट्यूनिस पर हमला करके वहां के राजा को उसके दोनों पुत्रों सहित पकड़ कर फिलिप के पास भेज दिया और ट्यूनिस का ताज फिलिप से अपने लिए माँगने लगा । पोप वो

राज़ी हो गया। परन्तु फिलिप ने, इस डर से कि इस बड़े-बड़े स्वप्न देखने वाले नौजवान को इतनी शक्ति मिल गई तो नहीं मेरा ताज खतरे में न पड़ जाय, उसकी अभिलाषा पूरी नहीं होने दी। उधर से निराश होकर डॉन जॉन की नज़र इँग्लैण्ड पर पड़ी। एलिज़बेथ को तख्त से उतार कर स्काटलैण्ड की बन्दी रानी मेरी को गद्दी पर बिठाने और इसके साथ साथ स्वयं इंगलैण्ड पर राज करने का वह स्वप्न देखने लगा। पोप नवीन-पन्थ पर चलने वाली इंग्लैण्ड की महारानी एलिज़बेथ को जैसे बने नीचा दिखाना चाहता था। वह डॉन जॉन को हर प्रकार से इंग्लैण्ड का राजा बनने के लिए प्रोत्साहित करने लगा। डॉन जॉन के दिमाग़ में ये सुख-स्वप्न चक्कर लगा ही रहे थे कि फिलिप ने उसे नेदरलैण्ड का वायसराय नियुक्त किया। वह खुशी से फूल उठा। नेदरलैण्ड में दस हज़ार चुनिंदा स्पेन के सिपाही थे। वे सैकड़ों लड़ाईयाँ देख चुके थे। परन्तु सोने की लूट के लिए सदा भूखे रहते। नेदरलैण्ड में विप्लव की अग्नि दहक रही थी। उसका ज़रा भी विचार न करके डान जान ने सोचा कि मैं इस सेना की सहायता से इंग्लैण्ड का राजा बनने का अपना स्वप्न सच्चा कर सकूँगा। इसीलिए तुरन्त अपने पांच-छः आदमियों को साथ लेकर इस विचित्र भेष में नेदरलैण्ड के लिए चल पड़ा था और फ्रांस एवं जर्मनी पार करता हुआ आखिरकार नेदरलैण्ड आ पहुँचा था। पेरिस में उसने रात को चुपचाप स्पेन के दूत से मुलाक़ात करके इँग्लैण्ड पर आक्रमण करने की मन्त्रणा भी की थी। भेष बदल कर एक नाच-पार्टी में भी गया था और वहां नवारे की उस अद्वितीया सुन्दरी

रानी मार्गरेट पर मुग्ध भी हो गया था जिसको उससे आगे चलकर नामूर में मुलाक़ात होगी।

सुन्दर गठीले शरीर और औसत कद का यह ३२ वर्ष का नौजवान, जिसके सिर पर घूँघरवाले बाल लहराते थे, अपने हृदय में अखण्ड उत्साह और चित्त में भावी अभिलाषाओं के स्वप्न की विह्वलता लिये ३ नवम्बर को नेदरलैण्ड में घुसा। डॉन जॉन ने अपने जीवन में जीत पर जीत पाई थी। ३२ वर्ष की अवस्था में भी बिल्कुल छोकरा सा लगता था। आरेञ्ज हार पर हार सह कर एक परतन्त्र देश को स्वाधीनता के शिखर पर ले जाने का प्रयत्न कर रहा था। चिन्ताओं के कारण ४३ वर्ष की अवस्था में वह बूढ़ा सा दीखने लगा था।

डॉन जॉन ने आते ही पंचायतों के प्रतिनिधियों से समझौते की बातचीत शुरू की। जनता के प्रतिनिधियों ने गेण्ट के अपने आपस के उस समझौते को डॉन के सामने रक्खा जिसके अनुसार चार्ल्स और एल्वा के सारे खूनी कानून रद्द मान लिए गये थे, फिर भी सनातन-धर्म की प्रधानता और फिलिप का अधिकार क़ायम माना गया था। स्पेन की फ़ौज को तुरन्त देश से निकाल देने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से मान्य हुआ था, इसलिए वह भी समझौते की एक शर्त थी। डॉन की समझ में नहीं आया कि जिस समझौते में हालैण्ड और जेलैण्ड के दो नवीन पन्थी प्रान्त शरीक हों और अन्य प्रान्तों में भी नये पन्थवालों को जलाने-मारने का अधिकार न रहा हो, उसमें सनातन-धर्म की प्रधानता कैसे मानी जा सकती है ? जिस समझौते में विलियम आरेञ्ज जैसे राजद्रोही को दो प्रान्तों का गवर्नर माना

गया हो, वहाँ फिलिप का अधिकार कहाँ रहता है? सख्त सुस्त बातों, झगड़े-टण्टे और बहुत सी गाली-गलौज के बाद आखिरकार डॉन ने समझौता मान लिया। परन्तु बहुत दिनों तक इस बात पर झगड़ा होता रहा कि स्पेन की सेना खुश्की की राह वापिस जाय या जहाज़ों से। डॉन जहाज़ों से भेजना चाहता था क्योंकि वह अधिकारियों से तय कर चुका था और इंग्लैण्ड पर छापा मारने का प्रबन्ध कर रहा था। परन्तु पंचायतें सेना को खुश्की से भेजने पर ही अड़ गईं और डॉन जॉन को अपनी इच्छा के विरुद्ध दाँत पीसते हुए यह शर्त भी माननी पड़ी। डॉन जॉन के ज़ोर देने पर पंचायतों ने यह बात भी स्वीकार कर ली कि स्पेन में आरेञ्ज का पुत्र काउण्ट ब्यूरन जो क़ैद में है और जिस के छुड़ाने की बात ग्हेन्ट के समझौते में मानी गई थी वह सरकार स्वीकार नहीं करती। समझौता हो जाने पर पंचायतों ने उसे नेदरलैण्ड का वायसराय स्वीकार कर लिया। आरेञ्ज को इस समझौते से बहुत दुःख हुआ। उसने देखा कि समझौता करके लोग फिर सरकारी जाल में फँस गये। वह अच्छी तरह समझता था कि सरकार के लिए नेदरलैण्ड में अब अधिक खून बहाना फिलहाल नामुमकिन है। इसलिए सरकार यह अर्थहीन समझौता करके देश को धोखे में डालना चाहती है, समय मिलते ही फिर कसर निकाली जायगी। डॉन जॉन के सम्बन्ध में आरेञ्ज का कहना था कि 'फिलिप, एल्वा और डॉन जॉन में केवल इतना फर्क है कि डॉन जॉन जवान होने के कारण अधिक बेवकूफ़, भेद छिपा रखने के अयोग्य और खून में हाथ रँगने को अधिक उत्सुक है।' आरेञ्ज ने हालैण्ड,

जेलैण्ड तथा स्वयं अपनी ओर से समझौता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और पँचायतों को लिखा कि सरकार ने केवल तुम्हें अर्थहीन शब्दों से धोखे में डाल दिया है। सरकार का कुछ करने कराने का इरादा नहीं है। फिर भी मैं इस शर्त पर समझौते पर हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ कि यदि नियत समय के अन्दर स्पेन की सेनायें देश छोड़ कर न चली जाँय तो पंचायतें वादा करें कि वे सब हथियार लेकर सेनाओं को निकालने के लिए तैयार हो जाँयगी।

डॉन जॉन समझता था कि बिना ऑरेञ्ज को मिलाये देश में शान्ति स्थापित करना या फिलिप का अधिकार सुरक्षित रखना अत्यन्त कठिन है उसने फिलिप को लिखा कि नेदरलैण्ड की नाव ऑरेञ्ज के हाथ में है। वह चाहे पार लगावे चाहे डुबा दे। मैं समझता हूँ, उसके सामने यह प्रस्ताव रक्खा जाय कि यदि तुम जर्मनी चले जाने का वादा करो तो तुम्हारे पुत्र काउण्ट ब्यूरन को हम तुम्हारी सारी पुरानी जागीर और सब इख्तियारात वापिस कर देंगे।' फिलिप ने यह प्रस्ताव मान लिया। डॉन जॉन लुवेन के विश्वविद्यालय में पहुँचा और वहाँ एअरशाट से मन्त्रणा करके अध्यापक डाक्टर लियोनीनस को ऑरेञ्ज के पास यह सन्देशा देकर भेजा कि 'अपने कुटुम्ब को आराम में रखना अपना पूर्व सुख पुनः प्राप्त कर लेना तुम्हारे हाथ में है। डॉन जॉन तुम्हारा मित्र है और तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार है। देश में शान्ति स्थापित करने के लिए वह इतना उत्सुक है कि अपनी जान की परवाह न करके अकेला ही चारों ओर घूमता फिरता है।' जिस लेपाण्टो के वीर ने हजारों योद्धाओं को सागर

में डुबा दिया था। जो डॉन जॉन स्काटलैण्ड की रानी और इंग्लैण्ड के ताज का स्वप्न देख रहा था वह दुर्भाग्य से अपनी आँखों के सामने एक देशभक्त का चित्र नहीं खड़ा कर सकता था। राजा की कृपा, कुटुम्ब का सुख, शान-शौकत, पद-अधिकार और अन्य लाभों का प्रलोभन विलियम ऑरेञ्ज को दिया जा रहा था। डॉन स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि इस संसार में किसी मनुष्य को अपना पानी में डूबा हुआ तबाह देश और घृणित धर्म इन चीजों से भी अधिक प्यारा हो सकता है। उसकी कल्पना में ही नहीं आ सकता था कि एक बाग़ी मनुष्य क्षमा का वादा मिलने के साथ-साथ सारी पिछली शान-शौकत वापिस मिलने पर भी अपने राजा का कृपा से बढ़ाया हुआ हाथ छूने से इन्कार कैसे कर सकता है? डाक्टर लियोनीनस ने मिडलबर्ग में जाकर ऑरेञ्ज के सामने ये सब प्रलोभन रक्खे। ऑरेञ्ज ने शान्ति से उत्तर दिया—"मैं अपने लाभ हानि का विचार जनता के लाभ-हानि के विचार के सामने तृणवत् समझता हूँ। फिर मुझे आपकी इन बातों के स्वीकार हो जाने की तनिक आशा नहीं है परन्तु मैं उन्हें पंचायतों के सामने रख दूगाँ। हार्न, एग्मोण्ट इत्यादि के साथ जो कुछ व्यवहार हुआ उसे देखकर और आज तक की सरकार की सारी चालों और गुप्त गोष्ठियों को जानते हुए हम सरकार की बातों पर विश्वास नहीं कर सकते। हमें पता है कि हालैण्ड और जेलैण्ड को कोने में देकर इन बेचारे छोटे-छोटे प्रान्तों को हमला करके नष्ट कर डालने का विचार हो रहा है। ख़ैर हम भी अपनी शक्ति के अनुसार बचाव करने के प्रयत्न में लगे हैं।"

जब तक स्पेन की सेना नेदरलैंड छोड़कर न चली जाय तब तक नये समझौते के अनुसार पंचायतें डॉन जॉन को वायसराय मानने को तैयार नहीं थी। डॉन जॉन अपना वायदा शीघ्र से शीघ्र पूरा करना चाहता था। उसने सारी स्पेन की सेना मेन्सफील्ड की अध्यक्षता में देश से रवाना कर दी। एअरशाट को एण्टवर्प के दुर्ग का कोतवाल नियत कर दिया गया था। डॉन जॉन लुवेन पहुँच कर सरदारों और सर्व साधारण की दावतों और खेल तमाशों में भाग ले-ले कर चार्ल्स की तरह लोगों का दिल जीतने का प्रयत्न कर रहा था। अपने सुन्दर हँसी भरे मुख से, वह जिससे दो बातें कर लेता वही उसका हो रहता था। बरसाती कीड़ों की तरह सैकड़ों चापलूस इधर उधर से निकल पड़े थे। वे दिन रात उसकी खुशामद में लगे रहते थे। वह भी खिताब खिलअतें और छोटे-छोटे पद बाँट कर सबको तृप्त करने का प्रयत्न कर रहा था।

अप्रैल के अन्त तक सारी स्पेन की सेना नेदरलैंड से चली गई। पहली मई को डॉन जॉन ने वायसराय की हैसियत से ब्रसेल्स में बड़े शानदार जुलूस के साथ प्रवेश किया। शहर बड़े ठाठ से सजाया गया था। दावतें हुईं। सुन्दरियों ने झरोखों और छज्जों से जॉन पर पुष्प-वर्षा की। ऐसा उत्सव मनाने का नेदरलैंड वालों को वर्षों से सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। परन्तु इस सब उत्सव और सत्कार से डॉन ज न भुलावे में नहीं पड़ा। वह जानता था कि देशवालों के हृदय पर सरकार का अथवा मेरा उतना काबू नहीं है जितना आरेञ्ज का है। वह नेदरलैंड-वासियों को हृदय से घृणा करता था। नेदरलैंड पर शासन

करने के प्रलोभन से वह आया भी नहीं था। स्काटलैण्ड की रानी मेरी और इंग्लैण्ड के तख्त पर अधिकार जमाने का स्वप्न पूरा करने के लिए ही वह नेदरलैण्ड आया था। परन्तु जिद्दी नेदरलैण्ड वासियों ने सेना को समुद्र की राह से जाने की इजाजत न देकर उसकी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया। अब उसको नेदरलैण्ड में एक दिन गुजारना भारी पड़ रहा था वह और उसका मंत्री एस्कोवेडो दोनों फिलिप के मन्त्री पेरेज़ को अपना बड़ा विश्वासी मित्र समझ कर पत्र लिख-लिख रोज दुखड़े रोया करते थे—"किसी तरह हमको इस भट्ठी में से निकाल लो। हमारा यहां ठहरने की अब बिल्कुल इच्छा नहीं है। जिस काम के लिए हम आये थे वह दुर्भाग्य से पूरा नहीं हो सका। नेदरलैण्ड पर राज्य करने के लिए तो कोई औरत भी भेजी जा सकती है। क्योंकि यहाँ की उद्दण्ड पंचायतें हमेशा से सब कार्य्य अपनी राय के अनुसार ही कराती हैं। वायसराय का काम तो सिर्फ़ काग़ज़ों पर बैठे-बैठे हस्ताक्षर करना है।" एस्कोवेडो की राय थी कि डॉन जॉन को स्पेन की कार्य्यकारिणी का प्रमुख बना दिया जाय। पेरेज़ इन दोनों को लिखता कि "मैं सब प्रबन्ध कर रहा हूँ। जल्दी नहीं करनी चाहिए। कहीं फिलिप को हमारे पत्र-व्यवहार का पता चल गया और वह जान गया कि हम सब लोग स्वार्थ-साधन की धुन में हैं, तो काम बिगड़ जायगा।" परन्तु पेरेज़ डॉन जॉन और एस्कोवेडो के सब पत्र फिलिप को दिखा देता था और इन के उत्तर भी उसे दिखाकर और उसकी सलाह लेकर भेजता था। पेरेज़ दोनों पक्षों को धोखा देकर स्वार्थ सिद्ध करना चाहता था। एस्कोवेडो उसको अपना बड़ा विश्वासी मित्र

समझता था परन्तु वह एस्कोवेडो की धीरे धीरे क़ब्र खोद रहा था। निरङ्कुश विदेशी शासन की लीला देखिए! जिन मनुष्यों के हाथ में ईश्वर ने लाखों मनुष्यों का भाग्य दे रक्खा था, वे एक दूसरे पर अविश्वास रख कर एक दूसरे को धोखा देने और एक दूसरे के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने में अपनी जिन्दगी बिताते थे। आरेञ्ज ने अपने आदर्श और उत्साह से हालैण्ड और ज़ीलैण्ड को तो एक सूत्र में बाँध ही लिया था। घेण्ट के समझौते से सारे देश को कुछ समय के लिए एक-सा कर लिया था। उसके मित्र सदा उसकी कुशलता के लिए बहुत चिन्तित रहते थे। उसकी वृद्ध परन्तु वीर माता जिसने अपने तीन प्यारे पुत्र लुई, एडोल्फस और हेनरी को स्वाधीनता की वेदी पर चढ़ा दिया था लिखा करती थी—"बेटा मुझे अपने जिगर-के-टुकड़े के समाचार मिलने की बड़ी चिन्ता रहती है। मैं सुनती हूँ कि शान्ति होने वाली है। कहीं यह शान्ति युद्ध से भयंकर न हो। मेरे बेटे! स्वाधीनता के लिए सब कुछ दे देना परन्तु घुटने न टेकना।' ऐसी माता का पुत्र क्यों न स्वाधीनता के लिए सब कुछ न्योछावर कर दे? आरेञ्ज के दूसरे भाई काउण्ट जॉन का, जो फ्रांस में रह कर अभी तक देश के लिए सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था, ऑरेञ्ज के पास एक पत्र आया था कि "भाई मैंने और लुई ने सेना एकत्र करने के लिए धन की आवश्यकता पड़ने पर अपनी स्त्रियों के बदन से गहने तक उतार कर गिरवी रख दिये थे। हमारे ऊपर इतना कर्ज़ हो गया है कि हम दबे जाते हैं। यदि नेदरलैण्ड के नगर अपनी जिम्मेदारी समझ कर इस कर्ज़ में हाथ बटावें तो अच्छा है।' आरेञ्ज अपनी माता, अपने भाई, अपनी स्त्री और अपने लोगों

सभी को ढाढ़स बँधाने का प्रयत्न करता था। वह जानता था कि सरकार से सुलह करना जान बूझकर भट्टी में कूदना है। युद्ध के अतिरिक्त उसे और कोई रास्ता नज़र नहीं आता था। डानजान को भी युद्ध से स्वाभाविक प्रेम था। परन्तु सरकारी खजाने का दिवाला निकल जाने से और सेनायें न होने से उसके पास सुलह की कोशिश करने के सिवाय और कोई चारा नहीं था। उसने फिर प्रतिनिधि भेज कर ऑरेञ्ज से सुलह करने का प्रयत्न किया। मिडलबर्ग में कई दिन तक कान्फ्रेंस होती रही परन्तु कुछ परिणाम नहीं निकला। सरकार के प्रतिनिधि कहते थे कि हम फिलिप को असीम अधिकार और रोमन कैथलिक सनातन-धर्म की प्रधानता के अतिरिक्त सब कुछ मान लेने को तैयार हैं। आरेञ्ज कहता था कि मुझे देश की पूर्ण स्वाधीनता और धार्मिक स्वतंत्रता चाहिए। ये दोनों एक दूसरे के विरुद्ध बातें थीं। कोई समझौता न हो सका। दोनों पक्ष के लोग फिर अपने-अपने घर लौट गये। डॉन जॉन ने फिलिप को लिखा कि आरेञ्ज संसार में किसी चीज़ से इतनी घृणा नहीं करता जितनी आपसे। यदि आपका रक्त उसे मिल जाय तो वह बड़ी खुशी से पी जायगा।'

अब देश में साफ़ तीन दल हो गये थे। एक तो अमीरों का दल था। ये लोग स्पेन वालों की घृणा करते थे। परन्तु स्वयं जनता से मिलना नहीं चाहते थे। दूसरा डॉनजॉन का दल, जो जान-पन्थी के नाम से पुकारा जाने लगा था। तीसरा ऑरेञ्ज का दल। अमीर लोग दोनों किनारों के बीच तैरना चाहते थे। बेरलामौण्ट इत्यादि के दो-चार कुटुम्ब ऐसे भी थे जो हर प्रकार से स्पेन की

सहायता करने पर तुले हुए थे। अन्य सब अमीर प्रवाह के साथ इधर-उधर बहते रहते थे। एअरशाट बिलकुल खुशामदी टट्टू था। ऑरेञ्ज और सरकार दोनों से डरता था। आरेञ्ज के पास सरकारी कागज़ात, फिलिप के पत्र और अन्य गुप्त खबरें चुपचाप भेज दिया करता था। उधर डॉनजॉन से आरेञ्ज की खूब बुराई करता था कोई पासा पड़े वह अपनी जीत चाहता था। एक दिन आधी रात को वह डॉनजॉन के पास दौड़ा हुआ पहुँचा और कहने लगा कि, 'तुरन्त यहाँ से भाग जाओ। वर्ना तुम्हारी खैर नहीं है।' डॉनजॉन को मालूम था कि एल्वा और मेडीनाकोली को पकड़ने के लिए देशभक्त प्रयत्न कर चुके थे। हाल में लुवेन में डानजान के गिरफ्तार कर लेने की भी आरेञ्ज की तरफ़ से कोशिश की गई थी। रोज डॉनजॉन के पास उसको पकड़ने के प्रयत्न करने के एक न एक षड्यन्त्र की ख़बर आती रहती थी। आखिरकार एअरशाट ने आधी रात को पहुँच कर एकाएक जब यह समाचार सुनाया तो बेचारा घबराकर तुरन्त मेचलिन भाग गया। वहाँ भी एअरशाट ने पहुँच कर एक दिन कहानियाँ सुनानी शुरू कीं। मेरे हाथ हाल ही में आरेञ्ज का एक गुप्त ख़त पड़ा है। उसने आपको पकड़ लेने की पंचायतों को सलाह दी है।' डानजान ने पूछा कि 'भला मुझे गिरफ्तार करके पंचायतें क्या करेंगी?' एअरशाट ने बड़े मज़े की गप्प उड़ाई। उसने कहा कि, 'नेदरलैण्ड में पुराने ज़माने में भी ऐसा ही किया जाता था। वह आपको पकड़ कर जिस काग़ज पर चाहेंगे दस्तख़त करा लेंगे। एक दफ़ा ऐसे ही आपके एक पूर्वज को पकड़ कर मनमाने पत्रों पर हस्ताक्षर करा लिये गये थे। और फिर साथियों सहित खिड़की में से सब को नीचे खड़ी

हुई क्रुद्ध भीड़ के भालों पर फेंक दिया गया था। डॉन ने चिल्लाकर कहा खबरदार, फिर कभी मुझे ऐसी बात मत सुनाना। परन्तु यह झूठा क़िस्सा सुनकर वह इतना घबरा गया कि सारा माल असबाब बेचकर मेचलिन छोड़कर उसने तुरन्त दूसरे नये स्थान को कूच कर दिया। आरेञ्ज का सारा सहारा मध्यम वर्ग के लोगों पर था। क्योंकि इन लोगों के पास बुद्धि और विद्या के साथ-साथ कुछ रुपया भी था।

बेलाय की रानी मार्गरेट जिसके सौन्दर्य पर डान जान पेरिस में नेदरलैण्ड आते समय मुग्ध हो गया था, फ्रान्स के ड्यूक एलेन्कौन की बहन थी। मार्गरेट अपने पति को घृणा करती थी और भाई पर भ्रातृ-स्नेह से भी अधिक स्नेह रखती थी। एलेन्कौन के भाई को पोलैण्ड का राज मिल गया था। एलेन्कौन का दाँत नेदरलैण्ड पर था। मार्गरेट एलेन्कौन की यह इच्छा पूरी करने का प्रयत्न करने नेदरलैण्ड आई। बहाना तो यह किया कि रानी मार्गरेट तीर्थ यात्रा को जा रही है। परन्तु रास्ते में नेदर-लैण्ड के अधिकारियों से मिल कर फोड़ने का वह प्रयत्न करने लगी। एक तो सौन्दर्य में अद्वितीय, दूसरे नज़ाकत की बात-चीत और उसका हृदय विदारक मधुर संगीत सोने में सुहाग था। पेरिस में उसे देखकर डॉनजॉन ने आह भर के कहा था, यह मानवी सौन्दर्य नहीं है, दैवी है! परन्तु यह सौन्दर्य मनुष्य को आनन्द देने के लिए नहीं बनाया गया। उसकी आत्मा पर आरा चलाने के लिए बनाया गया है। मार्गरेट कुछ कविता भी करती थी। वाणी में उसके जादू था। भला ऐसी सौन्दर्य की जादू भरी पुतली किस सरकारी अफ़सर पर जादू नहीं चला सकती? बहुत से अधिकारियों का

उसने एलन्कौन के पक्ष में कर लिया। डान जान मेचलिन से भाग जाने का विचार कर ही रहा था। नामूर में जाकर पेरिस की स्वप्न-देवी के स्वागत करने का बड़ा सुन्दर बहाना मिला। माया में लिपटे राम मिले। नामूर बड़ा सुन्दर शहर था। सदियाँ गुज़र जाने पर आज भी वैसा ही है। डान जान ने मार्गरेट का बड़े ठाट से स्वागत किया। देखने वाले एक स्वर से वाहवाह कर रहे थे। जिस महल में मार्गरेट के उतरने का प्रबन्ध किया गया था, उसमें तुर्की के सुल्तानों के भेजे हुए पर्दे और ग़लीचे बिछाये गये। लेपाण्टो की विजय के स्मृति चिन्ह स्वरूप डान जान को भेंट में दी हुई वस्तुयें चारों ओर रखीं थीं। शहर दीपावली से जगमगा रहा था। डान जान को क्या पता था कि मार्गरेट उसे धोखा देने और उसके नौकरों को फोड़ने आई थी ? वह तो प्रेम में मतवाला होकर सौन्दर्य की वेदी पर हृदय पुष्प चढ़ा चुका था। लेकिन जैसे ही मार्गरेट का मुँह फिरा वह मानों स्वप्न से चौंक पड़ा। सरदार बैरलामौण्ट को सिखा कर भेजा कि "जाओ नामूर के दुर्ग के कोतवाल से कहना कि डान जान इधर से शिकार खेलने जायगा। कुछ देर उसे दुर्ग में ठहरा कर जल-पान करावें तो अच्छा है।" कोतवाल ने बेरलामौण्ड के समझौते से यह शिष्टता दिखाना स्वीकार कर लिया। परन्तु डान जान ने कोतवाल को धोखा दिया। दुर्ग में इस बहाने घुसकर थोड़े से साथियों की सहायता से दुर्ग पर अधिकार कर लिया। वह सरकारी वायसराय था। उसका सभी दुर्गों पर अधिकार था। इस प्रकार धोखा देकर दुर्ग को हाथ में करने की क्या आवश्यकता थी ? परन्तु डान जान को विश्वास नहीं था कि ये

दुर्ग जिन्हें आरेञ्ज 'जुल्म के घोंसले' कहकर पुकारता था और शीघ्र ढा देने की फ़िक्र में था आसानी से उसके हाथ आ जायँगे। बहुत हद तक उसका सन्देह ठीक भी था। पर जिस मार्गरेट के विवाह के दिन धोखा देकर सेण्ट बार्थेलमो का हत्याकाण्ड किया गया था उसी मार्गरेट का स्वागत करने का बहाना करके डान जान ने धोखे से नामूर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। एस्को-बेडो कुछ दिन के लिए स्पेन गया था। फिलिप को पेरेज़ ने समझा ही रखा था कि एस्कोबेडो और डान जान षड्यन्त्र रच कर स्पेन-साम्राज्य को ही अपने हाथ में कर लेना चाहते हैं। इस-लिए फिलिप ने एस्कोबेडो को चुपचाप जहर देकर मरवा डालने का निश्चय कर लिया था। शाहज़ादा इवोली की स्त्री का फिलिप से सम्बन्ध था। इवोली के मर जाने पर उस स्त्री का पेरेज़ से भी सम्बन्ध हो गया था। एस्कोबेडो जब स्पेन पहुँचा तो उसे यह जान कर बड़ा दुःख हुआ कि जिस स्त्री का फिलिप से सम्बन्ध है उसी से पेरेज़ का भी सम्बन्ध है। उसने फिलिप से सब बात खोलकर कह देने की पेरेज़ को धमकी दी। पेरेज़ ने अपना भेद खुल जाने के डर से एस्कोबेडो का काम तमाम करने में और जल्दी की। तीन दफ़ा जहर देने में असफलता हुई। आखिर-कार पांच छः बदमाशों को भेज कर एस्कोबेडो एक दिन रात को एक गली में मार डाला गया और हत्यारों को इनाम स्वरूप फौज में भरती कर लिया और उनको आजीवन पेंशन कर दी।

हालैण्ड और ज़ीलैण्ड के लोग टूटे हुए बाँधों को तैयार करने में लगे थे। आरेञ्ज जगह-जगह घूमकर सबको उत्साहित कर रहा

था। लोगों की प्रार्थना पर उसने दोनों प्रान्तों के सब नगरों का एक दौरा भी लगाया। लेकिन विजेता सरदार, राजा या अधिकारी की भाँति उसने फूलों के द्वारों में होकर अपनी सवारी निकाली। जहाँ-जहाँ वह जाता था, 'पिता विलियम आता है। पिता विलियम आता है' की पुकार गूंज उठती थी। जैसे पिता अपने बच्चों से मिलता है उसी तरह वह लोगों से मिलता था। लोग बिलकुल दिखावा न करके उसका हृदय से स्वागत करते थे। यूट्रेक्ट पर पुराने अधिकारों के अनुसार उसका ही शासन होना चाहिए था। परन्तु वहाँ के लोगों ने अभी तक उसका शासन स्वीकार नहीं किया था। अब वहाँ से भी बुलावा आया। वह तुरन्त ही वहाँ पहुँचा। उसका अद्वितीय स्वागत हुआ। डान जान ने नामूर के दुर्ग पर धोखा देकर अधिकार जमा लेने का कारण देशकी पंचायतों को यह दिया कि "विलियम आरेञ्ज मुझे मरवा डालने के प्रयत्न में है। जिधर देखो उधर से क़ातिलों को मेरी ताक में फिरने की खबरें आती हैं। मैंने अपनी जान की रक्षा को इस दुर्ग में रहने के अतिरिक्त और कोई उपाय न समझ कर नामूर के दुर्ग पर कब्ज़ा कर लिया है। पंचायतों को मेरी रक्षा के लिए शरीर-रक्षक भेजने चाहिए।" आरेञ्ज ने भी पंचायतों के पास सन्देश भेजा कि "डान जान की हर चाल से पता चलता है कि वह सब को धोखे में डालकर दण्ड देने का षड्यन्त्र रच रहा है। अभी तक दस हज़ार जर्मन सैनिक इधर उधर देश में बखेर रक्खे गये हैं। उनको देश से निकालने में बहाने बना-बनाकर आनाकानी की जा रही है। नामूर के दुर्ग पर धोखा देकर अधिकार जमा ही लिया गया है। अन्य दुर्गों पर

भी निगाहें लगी हुई हैं। पंचायतों को बहका कर मुझ से लड़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है। हमको आपस में एक-दूसरे से लड़ाकर डान जान अपना निर्द्वन्द्व अधिकार जमाना चाहता है।" पंचायतों ने डान जान के लिए २०० शरीर-रक्षक तो भेज दिये परन्तु उसकी जान लेने के षड्यन्त्र की कहानी पर विश्वास न करके उससे नामूर का दुर्ग छोड़ देने को कहा। प्रतिनिधियों को भेज कर यह भी प्रार्थना की गई कि घेराट का समझौता पूरा करने के लिए तुरन्त ही जर्मन सैनिकों को देश बाहर भेज दिया जाना चाहिए।

एएटवर्प के कोतवाल एअरशाट को मार्गरेट का स्वागत करने के लिए भेजने के बहाने से हटाकर डान जान ने एएटवर्प दुर्ग के ट्रेसलौंग को कोतवाल बनाकर भेज दिया था। डानजान समझने लगा था कि बस अब एएटवर्प का दुर्ग भी मेरा है। लेकिन एएटवर्प नगर के एक वीर डेवोअरस ने आरेञ्ज के मित्र मार्टिनी और उसके मित्र शहर के गवर्नर लाडकर्क की सलाह और व्यापारियों के धन की सहायता से दुर्ग पर अचानक हमला करके अधिकार कर लिया। दुर्ग पर तो नागरिकों का कब्जा हो गया। परन्तु अधिकारी, व्यापारी और नागरिक सब मिलकर सोचने लगे कि सरकारी जर्मन सैनिक नगर में पड़े हैं। वह अवश्य ही बिगड़ खड़े होंगे और लूट-मार शुरू कर देंगे। व्यापारियों ने कहा कि हम तीन लाख रुपया तक सैनिकों की जेबों में भरने को तैयार है। उन से कहा जाय कि वे रुपया लें और शहर छोड़कर चले जायँ। जर्मन-सैनिकों ने बाजार के एक चौक में चारों ओर गाड़ियों और बोरों की दीवार खड़ी कर के

लड़ने की तैयारी करली थी। दुर्ग पर से सुलह का सफ़ेद झण्डा हिलाया गया। दोनों पक्ष के प्रतिनिधि आकर सौदा करने लगे। व्यापारी पुल पर खड़े होकर अशर्फ़ियों से भरी थैलियाँ सैनिकों को दिखा रहे थे। सैनिकों के मुँह में पानी भरने लगा। कहने लगे कि यदि हमारे अफ़सर सन्धि करने को तैयार नहीं होंगे तो हम उन्हें मार डालेंगे। इतने में शेल्डनदी पर से आरेञ्ज के जहाज़ी बेड़े ने आकर गोलियाँ दागीं। जर्मन सैनिक ऐसे घबराये कि व्यापारियों के रुपये मिलने का विचार तो दूर रहा अपना असबाव और हथियार भी छोड़कर भागे। दुर्ग पर देश-भक्तों का अधिकार हो गया। १२ वर्ष के कठिन समय के बाद आज पहली बार एण्टवर्प नगर का विदेशी सेना के प्लेग से पिण्ड छुटा। दस हज़ार आदमियों, स्त्रियों और बच्चों ने दिनरात काम कर के ज़ुल्म की काठी की तरह एण्टवर्प की पीठ पर कसे रहने वाले इस दुर्ग को ज़रा सी देर में तोड़-फोड़ कर मिट्टी में मिला दिया। घेण्ट के लोगों ने भी एण्टवर्प की देखा-देखी अपने यहाँ का दुर्ग नष्ट कर डाला। डान जान को इन सब समाचारों से बड़ा दुःख पहुँचा। पहिले उसने पंचायतों को लिखा कि—"देश की सारी सेना और दुर्ग मेरे हाथ में आ जाना चाहिए। घेण्ट के समझौते पर आरेञ्ज अमल नहीं करता है। उससे अमल करवाना चाहिए। यदि वह न माने तो पंचायतों को उससे युद्ध करने में मेरी सहायता करनी चाहिए। मैं पंचायतों से समझौता करने के लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ। यदि मेरे चले जाने से पंचायतों को सन्तोष हो जाय तो मैं देश छोड़ कर चले जाने को भी तैयार हूँ।" लेकिन डान जान पर

से पंचायतों का सारा विश्वास उठ चुका था। लेपाण्टो के विजेता की तीक्ष्ण तलवार आरेञ्ज की बुद्धि के सामने कुछ काम नहीं करती थी। डान जान ने नामूर और एण्टवर्प के क़िलों पर अधिकार जमाने की चेष्टा करके पंचायतों के दिल में यह विश्वास बैठा दिया था कि उसका मन मैला है। पंचायतों को तो पता नहीं था कि डानजान इंग्लैण्ड पर हमला करने की ताक में है। इसलिए उसके जर्मन सैनिकों को देश में रोक रखने और उनके अधिकारियों से गुप्त मन्त्रणायें करने पर उन्हें सन्देह होता था। जब डान जान एवं एस्कोवाडो द्वारा फिलिप को भेजे गये तथा डान जान के जर्मन सेना के अधिकारियों को लिखे हुए पत्र, जो आरेञ्ज के हाथ आ गये थे, पंचायतों के सामने रक्खे गये तब तो पंचायतों का रहा सहा विश्वास भी उठ गया। पंचायतों ने डान जान के धृष्टतापूर्ण पत्र का बहुत रूखा उत्तर लिख दिया—"जर्मन सेना और सब विदेशी अधिकारियों को तुरन्त देश से निकाल दीजिए। आपके पत्र जो हमारे हाथ में हैं उनसे पता चलता है कि आप कितने नेकनीयत हैं और हम आप पर कितना विश्वास कर सकते हैं। दुर्ग आपके हाथ में न सौंपने का हमारा निश्चय सर्वथा उचित है। महाराज फिलिप और सनातन धर्म पर हमारी पूर्ण श्रद्धा है। आप जायँ तो हमारी प्रार्थना है कि महाराज आपके स्थान पर किसी ऐसे मनुष्य को ही भेजें जिसकी रगों में असली शाही ख़ान्दान का ख़ून हो। इस पत्र को पाकर और 'असली शाही ख़ान्दान का रक्त हो' शब्दों को जिसमें उसकी धोबिन माँ पर छींटे थे पढ़कर, डान जान क्रोध से जल उठा। परन्तु अशक्त था। छट-

पटाने के अतिरिक्त कर ही क्या सकता था ? अपने बनाये हुए जाल में वह आप ही फँस गया था। जितने हाथ पैर चलाता था उतना ही और फँसता जाता था। आरेञ्ज उसको नष्ट कर डालने की घात में था।

---

(१८)

ऑरेञ्ज का उत्थान

पंचायतें ब्रूसेल्स में बैठीं डान जान से समझौते के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार कर रहीं थी। लोगों ने दबाव डालकर पंचायतों से आरेञ्ज को ब्रसेल्स आकर सलाह देने का बुलावा भिजवा दिया। आरेञ्ज ने ११ वर्ष से ब्रसेल्स में क़दम नहीं रक्खा था। उसकी वहाँ जाकर मित्रों से मिलने की बहुत इच्छा थी। परन्तु उसने ब्रसेल्स मे आया हुआ पत्र हालैण्ड और जेलैण्ड की पंचायतों के सामने रख कर वहाँ जाने के सम्बन्ध में उनकी सलाह माँगी। आरेञ्ज की स्त्री और पंचायतों ने बहुत मुश्किल से डरते-डरते उसे ब्रसेल्स जाने की इजाज़त दी। क्योंकि इसी नगर में आरेञ्ज के सबसे प्रिय और शक्तिशाली मित्रों के सिर उतारे गये थे। हालैण्ड और जेलैण्ड की पंचायतों का आरेञ्ज पर बड़ा स्नेह था। उन्होंने आज्ञा निकाली कि प्रान्त भर के गिरजों में रोज आरेञ्ज की अनुपस्थिति में उसकी मङ्गल-कामना के लिए प्रार्थनायें होती रहें। ब्रसेल्स देश की राजधानी और वायसराय के रहने की जगह थी। परन्तु वहां देश से निकाले हुए बागी, विद्रोही और अराजक शहजादे का बड़ा उत्साह-पूर्ण स्वागत हुआ। आधा शहर कई मील आगे खड़ा 'पिता विलियम' की जय बोल रहा था। विलियम के जीवन में यह सब से अभिमान-पूर्ण दिवस था। सरकार ने उसे विद्रोही ठहरा कर देश निकाले की सजा दे दी थी।

परन्तु सरकारी वायसराय नामूर के दुर्ग में घिरा पड़ा था और राजधानी आँखें बिछाकर विद्रोही विलियम का स्वागत कर रही थी। २३ सितम्बर को उसका धूमधाम से ब्रसेल्स में घुस आना प्रजा की विजय थी। आरेञ्ज प्रजा के अधिकारों के लिए लड़ रहा था। वह चाहता था कि देश के शासन का सारा अधिकार यथा-पूर्व सर्वदेशीय पंचायत के हाथ में रहे। पंचायतों द्वारा निर्वाचित की हुई कार्य-कारिणी 'स्टेट कौंसिल' शासन चलाये। राजा का पंचायतों पर नाम मात्र का अधिकार रहे। फ़िलिप अपने व्यवहार के कारण नेदरलैण्ड का राजा कहलाने का अधिकारी नहीं रहा था। विलियम स्वयं ताज पहिनने को तैयार नहीं था। आरेञ्ज की नज़र में फ्रान्स का ड्यूक एलेन्कौन ही एक ऐसा मनुष्य था जो नेदरलैण्ड का राजा बनाया जा सकता था। ब्रसेल्स में घुसते ही पहला काम आरेञ्ज ने यह किया कि पंचायतों से कहा कि सरकार से सन्धि होना असम्भव है, इसलिए डॉन जॉन से पत्र-व्यवहार बन्द कर दिया जाय। जो प्रतिनिधि पंचायतों की ओर से नामूर गये हुए थे, उन्हें पंचायतों ने वापिस बुला लिया। जब डान जान को इस सबका पता चला तो उसने कहा कि यह तो सीधी-सादी लड़ाई की घोषणा है। वास्तव में बात भी यही थी। पंचायतों ने सरकार को सिर्फ़ तीन दिन का मौक़ा दिया था। डान जान ने उन सब पुराने अनुभवी सैनिकों को लौट आने के बुलावे भेज रक्खे थे जो कुछ ही दिन पहले बड़ी मुश्किल से नेदरलैण्ड छोड़ कर चले गये थे। इन सैनिकों की टोलियों पर टोलियाँ आ-आकर डान जान के झण्डे के नीचे एकत्र होने लगी थीं। पंचायतें युद्ध की घोषणा कर चुकने के बाद सर-

कार को यदि अधिक समय देतीं तो बड़ी मूर्खता करतीं। जनता आरेञ्ज के नाम पर जान देती थी। जनता के ज़ोर देने पर सरदारों ने आरेञ्ज को ब्रसेल्स में बुला तो लिया था, परन्तु वे सब हृदय में उससे जलते थे। एग्मरशाट इत्यादि प्रजा के भय से आरेञ्ज के सामने सिर झुकाते थे। परन्तु उनके हृदय पर साँप लोटता था। सरदारों ने आरेञ्ज से अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए एक चाल चली। उन्हें भय था कि कहीं आरेञ्ज स्वयं नेदरलैण्ड का राजा न बन बैठे। इसलिए उन्होंने जर्मनी के नये शाहँशाह रुडल्फ के भाई मैथियस को नेदरलैण्ड आकर राजा बनने का चुपचाप बुलावा भेज दिया। मैथियस को यह भी लालच दिया गया था कि नेदरलैण्ड पर अधिकार जमते ही फिलिप तुमसे अपनी लड़की का विवाह कर के नेदरलैण्ड खुशी से दहेज में दे देगा। मूर्ख मैथियस भी इस हवाई क़िले पर तुरन्त ही अधिकार जमा लेने के इरादे से एक दिन रात को चुपचाप अपने भाई शाहंशाह जर्मनी को सोता छोड़ कर अकेला ही भाग खड़ा हुआ। उसने न तो बुलावा देने वाले सरदारों की शक्ति का ही कुछ विचार किया और न यह भी सोचा कि नेदरलैण्ड पर अधिकार जमाने की चेष्टा में यूरोप के सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ विलियम, प्रख्यात योद्धा डान जान, तथा शक्तिशाली क्रोधी फिलिप का सामना करना पड़ेगा। विलियम आरेञ्ज ने बड़ी दूरदर्शिता से काम लिया। उसने देखा कि मैथियस को बुलावा किसी न किसी तरह पहुँच ही चुका है। अब मैथियस के नेदरलैण्ड आने पर यदि उसका स्वागत न करके अपमान किया जायगा तो जर्मनी के सम्राट और सारे जर्मन सरदार नेदरलैण्ड के शत्रु बन

जाँयगे। इसलिए मैथियस के आने पर वह स्वयं सेना लेकर मेथियस का स्वागत करने गया। जनता आरेञ्ज के अतिरिक्त अन्य किसी के हाथ में अधिकार देना नहीं चाहती थी। लोगों ने सरदारों की चाल व्यर्थ करने के लिए आरेञ्ज को ब्रवेएट का 'रूवार्ड' चुन लिया, ब्रवेएट प्रान्त की राजधानी भी ब्रसेल्स ही था। परन्तु ब्रसेल्स में स्वयं वायसराय रहता था इसलिए ब्रवेएट प्रान्त का कोई गवर्नर नियत नहीं किया जाता था। यह प्रान्त वायसराय के ही अधिकार में समझा जाता था। 'रुवार्ड' को प्रान्त के शासन चलाने का सारा अधिकार होता था। इस पदाधिकारी को स्वाधीन शासक (Dictator) से भी अधिक सत्ता होती थी। आरेञ्ज ने पहिले तो यह पद स्वीकार नहीं किया। परन्तु पीछे जब बार-बार जोर दिया गया तो उसने आखिरकार रूवार्ड बनना स्वीकार कर लिया। जनता ने २२ अक्टूबर को आरेञ्ज को धूम-धाम से 'रूवार्ड' चुना और खूब आनन्दोत्सव मनाया। फ्लैण्डर्स प्रान्त की पचायतों ने भी उसे कई बार अपना सूबेदार चुना था। परन्तु आरेञ्ज ने यह पद लेने से हमेशा इन्कार कर दिया था। हालैण्ड और जेलैण्ड उसपर जान देते ही थे। ब्रवेएट और फ्लैण्डर्स भी उसे अपना शासन सौंप चुके थे। देश की राजधानी ब्रसेल्स आरेञ्ज पर प्रेम की वर्षा कर रही थी। वह चाहता तो जलने वाले सरदारों का भय सच्चा करके स्वयं राजा बन सकता था।

इसी समय सरकार की तरफ से एअरशॉट फ्लेण्ट का गवर्नर नियुक्त हुआ। डॉन जॉन के दल की हार हो जाने के बाद से एअरशॉट आरेञ्ज की तरफ हो गया था। परन्तु सब लोग जानते

थे कि एअरशाट बड़ा खुशामदी है। मैथियस को नेदरलैण्ड में बुलाने वाले दल का नेता समझ कर लोग उसे बहुत घृणा करते थे। एअरशाट का गवर्नर बनाया जाना घेण्ट वालों को असह्य हो गया। उसके घेण्ट में क़दम रखते ही नगर में बलवा हो गया। रायहोव नाम के एक वीर युवक सरदार ने जो ऑरेञ्ज का बड़ा भक्त था, अपने बहादुर साथी एक दूसरे नौजवान सरदार इम्बीज़ की सहायता से एअरशाट को गिरफ्तार कर लिया। ये दोनों नौजवान प्रजातंत्र राज्य का स्वप्न देख रहे थे। उन्होंने सोच रक्खा था कि नेदरलैण्ड के प्रान्तों को मिला कर स्वीजर-लैण्ड की भांति प्रजातन्त्र की स्थापना करेंगे। अपने को बुद्धि-मान समझने वाले लोग इन्हें पागल और गप्पी कहा करते थे। परन्तु जनता पर इन दोनों का बड़ा प्रभाव था। 'खूनी कचहरी' का मेम्बर हसेल—जो ऊँघ से चेत-चेत कर फाँसी-फाँसी चिल्ला उठता था आजकल घेण्ट में रहता था। उसकी स्त्री के वचन पूरे हुए। इसी बलवे में लोगों ने उसे भी जेल में डाल दिया और पीछे से पकड़ कर फाँसी पर लटका कर मार डाला। ऑरेञ्ज ने घेण्ट वालों के पास सन्देशा भेजा कि जिन मनुष्यों को क़ैदकर लिया गया है उन्हें तुरन्त छोड़ दिया जाय। एअर-शाट को तो लोगों ने छोड़ दिया परन्तु और किसी को न छोड़ा गया। इस बलवे ने फ्लैण्डर्स में क्रांति का श्री गणेश कर दिया देश भर में बड़ा प्रभाव पड़ा। फ्लैण्डर्स की चारों पंचायतों की प्रार्थना पर कुछ दिन बाद ऑरेञ्ज स्वयं घेण्ट आया। लोगों ने बड़ी धूमधाम से नाटक और दावतें इत्यादि करके उसका स्वागत किया। ऑरेञ्ज ने सब प्रान्तों का परस्पर एक नया समझौता

कराया। देशभर के सनातन धर्मी और नवीन-पन्थ पर चलने वाले मनुष्यों ने एक दूसरे के धर्म की रक्षा करने और मिलकर शत्रु से लड़ने की क़सम खाई। यह बड़ी भारी बात हुई। पिछले समझौते में नवीन-पन्थ वालों को केवल अपने धर्म पर चलने की इजाज़त दी गई थी। इस समझौते में दोनों पन्थों की बराबर हैसियत मान ली गई। सारा देश शत्रु से लड़ने के लिए एक-मत हो गया। परन्तु दुर्भाग्य से यह एकता एक मास भी क़ायम न रही। गेम्बल्रूर्स के युद्ध के बाद फिर कभी नेदरलैण्ड एक न हुआ। सात प्रान्तों ने मिलकर एक दृढ़ प्रजातन्त्र की स्थापना की, परन्तु शेष प्रान्त सदियों तक किसी न किसी के गुलाम ही बने रहे। और अभी हाल में हमारे समय में आकर स्वतन्त्र हो पाये। ७ दिसम्बर सन् १५७७ ई० को सार्वजनिक पंचायतों ने बाक़ा-यदा घोषणा निकाल कर डान जान को देश का वायसराय मानने से इन्कार कर दिया। घोषणा में कहा गया कि डान जान शान्ति-भग करने वाला देश का शत्रु है। जो उसकी सहायता करेगा देशद्रोही समझा जायगा और उसकी जायदाद ज़ब्ती की फ़हरिस्त में दर्ज कर ली जायगी। देश में युद्ध कुछ दिनों के लिए सो गया था। उसे फिर जगाया गया। आरेञ्ज अपनी राज-नीति में सफल हुआ। उसने ब्रेडा की कांफ्रेन्स समाप्त होते समय कहा था—"इस संशयात्मक शान्ति से युद्ध अधिक लाभदायक है। और तभी से देश को युद्ध के मार्ग पर ले जाने का वह बराबर प्रयत्न कर रहा था।

महारानी एलिज़बेथ को भय हो चला था कि कहीं एलेन्कौन का नेदरलैण्ड पर अधिकार हो गया, तो फ्रान्स बड़ा शक्तिशाली

हो जायगा। इसलिए उसने ७ जनवरी को पत्र लिखकर आरेञ्ज को सहायता देना स्वीकार कर लिया। महारानी एलीज़बेथ के नेदरलैण्ड को सहायता करने के लिए तैयार हो जाने से फिलिप और डान जान और भी चिढ़ गये थे। आरेञ्ज की सलाह से पंचायतों ने एक मसविदा तैयार कर लिया था। उसमें तीस शर्तें थीं। इन शर्तों के अनुसार राज्य शासन की व्यवस्था करने और क़ानून बनाने इत्यादि का अधिकार सार्वजनिक पंचायतों और उनके द्वारा निर्वाचित की हुई 'स्टेट कौंसिल' को दिया गया था। वायसराय के हाथ में दस्तख़त करने के अतिरिक्त और कोई सत्ता नहीं थी। बिना पंचायतों की सम्मति लिये वह कोई काम नहीं कर सकता था। इन शर्तों पर हस्ताक्षर करने और पंचायतों और फिलिप के प्रति सच्चे रहने की शपथ लेने पर ही पंचायतें मैथियस को वायसराय मानने के लिए तैयार थीं। फिलिप को राजा मानना तो केवल एक ढोंग था। मैथियस बेचारा बड़ी बड़ी आशायें लेकर आया था परन्तु उसको कुछ भी अधिकार या सत्ता नहीं दी गई। आरेञ्ज को मैथियस का नायक और ब्रेबेण्ट का रूवार्ड चुना गया था। आरेञ्ज जो चाहता था वही होता था। मैथियस तो केवल उसके तैयार किये हुए हुक्मों पर हस्ताक्षर करने वाला क्लर्क था। खैर! मैथियस ने शर्तें मान लीं और १८ जनवरी को धूम-धाम से वह वायसराय बना दिया गया।

डान जान ने जर्मनी के सम्राट को एक क्रोध-पूर्ण पत्र लिखा कि 'आप तो महाराज फिलिप के कुटुम्बी हैं। आपको उनके लाभ-हानि का विचार रखकर काम करना उचित है। आपको यह

भी सोचना चाहिए कि यदि आज उनकी प्रजा सिर उठा रही है, तो देखा-देखी कल आपकी प्रजा भी आपके विरुद्ध सिर उठा-एगी। स्वतन्त्रता उड़कर लगने वाली बीमारी है। राजाओं को चाहिए कि जहाँ प्रजा सिर उठाये वहीं सब मिलकर प्रजा को कुचलने की कोशिश करें। मुझे आशा है आप उन सब बातों का विचार करके मैथियस को वापिस जर्मनी बुला लेंगे। फिर २५ जनवरी को डान जान ने फ्रेंच, जर्मन और फ्लेमिश तीन भाषाओं में एक घोषणा निकाली कि 'मैं प्रान्तों को गुलाम बनाने नहीं आया हूँ; उनकी रक्षा करने आया हूँ। लेकिन महाराज फिलिप का अधिकार और कुचले हुए सनातन-धर्म की प्रधानता फिर से दृढ़ करने का मेरा इरादा है। जो नागरिक और सैनिक इस कार्य में सहायता देने के लिए मेरे झण्डे के नीचे आयेंगे उनके सारे पिछले अपराध क्षमा कर दिये जायेंगे और विद्रोहियों से उनकी रक्षा की जायगी। नेदरलैण्ड से गई हुई सेना का अधिकांश लौटकर उसके पास लक्ज़मबर्ग में एकत्र हुई थी। पुराने सरदार मेन्सफील्ड, मौण्ड्रेगन, मेण्डोज़ा सेनायें ले-ले कर फिर आगये थे। डान जान का बचपन का तथा लेपाण्टो के युद्ध का साथी अलेकज़ेण्डर परमा भी इटली और स्पेन से कई छटी हुई सेनायें लेकर आ पहुँचा था। अलेकज़ेण्डर को, चार्ल्स-पुत्र वीर डान जान का दिन रात के अपमान और चिन्ता के कारण मुरझाया हुआ चेहरा देखकर बड़ा दुःख और आश्चर्य हुआ। डान जान की सेना सब मिलाकर लगभग बीस हज़ार के हो गई थी। सारे सैनिक और अफ़सर अनुभवी थे। सेनापति डान जान यूरोप में प्रख्यात था। देशभक्तों की सेना की संख्या भी लग-भग

इतनी ही थी। परन्तु उसकी व्यवस्था बहुत खराब थी। आरेञ्ज के हाथ में अधिकार आजाने से अन्य सरदार उससे जलते थे। आरेञ्ज यथासंभव उन्हें खुश और मिलाये रखना चाहता था। सरदारों को खुश रखने के विचार से ही उसने कुछ सरदारों को ऐसे पद पर भी नियुक्त कर दिया था जिनके वे अयोग्य थे। सरदार लेलेन आरेञ्ज की पैदल सेना का सेनापति था मगर लेलेन मार्गरेट के जादू में पड़ कर एलेन्कौन का हो रहा था। राबर्ट मीलन सवारों का सेनापति था। परन्तु कुछ ही दिन पहले वह डान जान का दूत बन कर एलिज़बेथ के पास गया था। जब युद्ध के लिए सेना इकट्ठी हो रही थी तो ये दोनों सरदार तोपखाने के सेनापति डेवामोटे को साथ लेकर एक विवाह में शरीक होने का बहाना करके चले गये। नामूर से दस मील दूर गेम्बलूर्स में देशभक्तों का स्पेन वालों से युद्ध हुआ। अलेकजेण्डर परमा ने केवल ६०० जवानों को लेकर अचानक ऐसा छापा मारा कि देश भक्तों के आठ दस हजार आदमियों को देखते-देखते जमीन पर सुला दिया। देशभक्तों की सेना घबरा कर भाग खड़ी हुई। अलेक्ज़ेण्डर का एक आदमी भी नहीं मरा। ऐसी एकतर्फी विजय पाना सैकड़ों लड़ाईयां में लड़े हुए स्पेन के सैनिक और युद्ध-कला में प्रवीण अलेकजेण्डर परमा ही का काम था।

इसके बाद डान जान ने अन्य बहुत से छोटे-छोटे नगरों पर हमला किया और उनपर अपना अधिकार जमा लिया। गेम्बलूर्स की हार का समाचार सुनकर लोगों को सरदारों के दल पर बड़ा क्रोध होने लगा क्योंकि सरदारों की लापरवाही के कारण ही देशभक्तों को गेम्बलूर्स में हारना पड़ा था। फिर भी गेम्बलूर्स की

विजय और उसके परिणाम स्वरूप बहुत से छोटे-छोटे नगरों पर सरकारी अधिकार हो जाने से जितना सरकार को फायदा नहीं हुआ उतना देशभक्तों को हुआ। एम्सटर्डम अभी तक देशभक्तों के हाथ नहीं आया था। जब से हालैण्ड और जेलैण्ड पर आरेञ्ज का अधिकार हुआ था, तभी से वह इस नगर को मिला लेने का प्रयत्न कर रहा था। गेम्बलूर्स की हार की खबर सुनकर एम्सटर्डम भी आरेञ्ज की तरफ़ हो गया। जिन छोटे-छोटे नगरों पर सरकारी अधिकार हो गया था वे सब मिलकर भी एम्सटर्डम के बराबर उपयोगी नहीं थे। इसी बीच नोयरकार्मेस का भाई डेसेलेस स्पेन से फिलिप का सन्धि सन्देश लेकर आरेञ्ज के पास आया। परन्तु उन्हीं पुरानी बातों—राजा का असीम अधिकार और सनातन धर्म की प्रधानता—पर इस पत्र में भी ज़ोर दिया गया था। सन्धि की कोई सूरत दिखाई नहीं देती थी। आरेञ्ज ने इंग्लैण्ड से कुछ रुपये का प्रबन्ध कर लिया था, नई सेना खड़ी करली थी। परन्तु अब की बार भी उसने देश-भक्त सेना का अधिकार फिर एअरशाट, शैम्पनी, बौस्सू, लेलेन जैसे सरदारों के हाथ में देने की ग़लती की थी। बहुत दिनों से डान जान फिलिप से रुपया और सेना भेजने की बराबर ताकीद कर रहा था। अन्त में उसने निराश होकर फिलिप को लिखा कि अब शीघ्र ही नेदरलैण्ड पर आरेञ्ज का राज्य क़ायम हो जाने में कुछ सन्देह नहीं रहा है। तब फिलिप ने तीस हज़ार पैदल, सोलह हज़ार सवार और तीस तोपें एकत्र करने के लिए स्पेन से १९ लाख डालर भेजे। जुलाई में हिन्दुस्तान से जहाज़ लौटने पर और भी धन भेजने का वचन

दिया। इधर डान जान ने नेदरलैण्ड में घोषणा कर दी थी कि पंचायतों की बैठक न की जाय और न पंचायतों के नियत किये हुए अधिकारियों की बात सुनी जाय। परन्तु ऐसी घोषणाओं की नेदरलैण्ड में अब कौन परवाह करता था? पंचायतों ने खुल्लम खुल्ला विद्रोह प्रारम्भ कर दिया था।

सेण्ट एल्डगोण्डे को जर्मनी में खबर मिली कि स्वीडन के ड्यूक चार्ल्स से एम्सटर्डम पर हमला करने के लिए कुछ जहाज़ माँगे गये हैं। उसने तुरन्त ही यह खबर एम्सटर्डम के मित्रों के पास भेज दी। ग़ेण्ट के समझौते के बाद से एम्सटर्डम में नवीन दल की संख्या भी बहुत बढ़ गई थी। परन्तु अधिकारी अभी तक सब सनातनी थे। एम्सटर्डम में रहने वाला विलियम बारडेज़ नाम का एक नौजवान—जो एक पुराने उच्च अधिकारी का लड़का था—आरेञ्ज तथा नवीन-पन्थ का कट्टर अनुयायी था। उसने बहुत दिनों से सनातनी अधिकारियों और सनातनी पण्डों, पुजारियों को शहर से निकाल देने का निश्चय कर रक्खा था। एम्सटर्डम पर हमला होने की खबर सुनते ही उसका निश्चय और भी दृढ़ हो गया। बारडेज अच्छी तरह जानता था कि शहर विद्रोह करने के लिए बिलकुल तैयार है। उसने गवर्नर सोनोय से मिलकर यह प्रबन्ध कर लिया था कि छटे हुए कुछ जवान मकानों में छिपे बैठे रहें और आवश्यकता पड़ने पर क्रान्ति-कारियों की सहायता करने के लिए फौरन बाहर निकल आयें। २४ मई को उसने सोनोय से अपने लिए एक कवच भी मँगा लिया था। २८ मई के दिन चार साथियों को लेकर बारडेज मजिस्ट्रेट की कौन्सिल में पहुँचा और जनता की शिकायतों के

सम्बन्ध में बात चीत करने लगा। दोपहर हुई। एक साथी ज़रा देर के लिए बाहर छज्जे पर चला गया। वहाँ उसने अपना टोप सिर पर से उतार कर फिर सिर पर रख लिया। शहर में छिपे हुए क्रान्तिकारियों को क्रान्ति करने के लिए यह संकेत था। थोड़ी ही देर में एक मल्लाह हाथ में झण्डा लिये हुए शहर की सड़कों पर दौड़ता और चिल्लाता नज़र आया—"जो आरेञ्ज को प्रेम करते हों मेरे साथ आवें।" चारों ओर से सैनिक और नागरिक हथियार ले-ले कर निकल पड़े। बारडेज ने सब अधिकारियों, पण्डों और पुजारियों को तुरन्त कैद कर लिया और उन्हें एक जहाज़ में भरकर शहर के बाहर ले जाकर छोड़ दिया। इन बेचारों ने तो जहाज़ों पर चढ़ते समय समझा था कि हम लोगों को कुत्तों की तरह पानी में डुबा-डुबा कर मार डाला जायगा। परन्तु बिना किसी का रक्तपात किये ही एम्सटर्डम में क्रान्ति सफल हो गई। बारडेज के दल ने अपनी कौंसिल चुन ली। वीर बारडेज भी कौंसिल का एक सदस्य चुना गया। इसी प्रकार की घटना हारलेम में भी हुई। परन्तु वहाँ कुछ रक्तपात भी हो गया।

---

(१६)

डॉन जॉन का करुण अन्त

दोनों पक्ष की सेनायें एकत्र होकर एक दूसरे की ओर बढ़ रही थीं। डान जान की सेना क़रीब तीस हज़ार थी। उसमें अधिकतर स्पेन और इटली के सैनिक थे। देशभक्तों की सेना २०,००० के लगभग थी। महारानी एलिज़बेथ ने इस भय से कि फ़रासीसी ड्यूक एलेन्कौन का नेदरलैण्ड पर अधिकार न हो जाय, स्पेन के क्रोध की चिन्ता न करके आरेञ्ज को सहायता देना स्वीकार कर लिया था। सरदार जान कैसीमीर के साथ उसने इंग्लैण्ड से कुछ सेना और रुपया भेजा था। मगर जान कैसीमीर जुटफेन में पड़ा-पड़ा पंचायतों से रुपया माँग रहा था। ड्यूक एलेन्कौन जो अपने सुभीते के अनुसार धर्म-सिद्धान्त और विचार सब कुछ बदल लिया करता था नेदरलैण्ड पर दांत लगाये बैठा था। आरेञ्ज ने भी उसे इसलिए लालच दे रक्खा था, जिससे कि एलिजबेथ डरकर नेदरलैण्ड की फ़िलिप के विरुद्ध सहायता करने पर राज़ी हो जाय। एलिजबेथ को नेदरलैण्ड पर फ़रासीसियों का अधिकार हो जाना असह्य था। इसलिए वह एलेन्कौन से सारे इरादे चौपट करने का पूरा प्रयत्न कर रही थी आखिरकार उसने जान कैसीमीर के साथ फौज भी भेज दी। मगर एलिजबेथ में अपने प्रेमियों से अठखेलियाँ करने की बुरी आदत थी। एलेन्कौन उस पर

प्रेम रखता था इसलिए एलिजबेथ भी ऊपर से ऐसा व्यवहार रखना चाहती थी, जिससे कि रंग में भंग न पड़ जाय। एलेन्कौन की बहिन मार्गरेट ने नेदरलैण्ड में जाकर अधिकारियों पर जादू डालकर हेनाल्ट प्रान्त को एलेन्कौन के लिए द्वार खोल देने को तैयार कर लिया था। जिन सरदारों ने ईर्ष्यावश आरेञ्ज के अधिकारों में बाधा डालने के लिए मैथियस को बुला भेजा था, उनकी आशायें पूरी नहीं हुई थीं क्योंकि आरेञ्ज ने चालाकी से उल्टा मैथियस पर अपना अधिकार जमा लिया था। इसलिए इन सरदारों ने अब की बार डयूक एलेन्कौन को बुलावा भेजा। गेम्बलूर्स की हार के बाद एलेन्कौन ने पंचायतों के पास स्पेन के विरुद्ध नेदरलैण्ड को सहायता करने का सन्देशा भेजा था। चारों तरफ़ मैदान साफ़ देखकर आखिरकार एलेन्कौन आगे बढ़ा और मौन्स में पहुँच कर डेरा डाल दिया। पंचायतों और एलेन्कौन में समझौते की शर्तें होने लगीं। मैथियस को त पंचायतें वायसराय मान चली थीं और उसी की मौजूदगी में एलेन्कौन से बात-चीत करने लगी थीं इसलिए मैथियस को बड़ा बुरा लगा। उसके आंसू निकल आये। इधर एलेन्कौन के नेदरलैण्ड में घुस पड़ने से एलिजबेथ भी घबरा उठी। उसने पंचायतों को धमकी दी कि मैं अपनी सहायता लौटा लूंगी और स्वयं नेदरलैण्ड पर हमला करूंगी। १३ अगस्त को आरेञ्ज ने २३ शर्तें एलेन्कौन के सामने रख कर उस पर भी उसी चाल से अधिकार जमा लिया जिस प्रकार मैथियस पर जमा लिया था। अधिकार सब पंचायतों और आरेञ्ज के हाथ में रहे। एलेन्कौन को एक बड़ा लम्बा चौड़ा "स्पेन वालों और उनके साथियों के

अत्याचार से नेदरलैण्ड की स्वाधीनता की रक्षा करने वाला अर्थहीन ख़िताब देकर प्रसन्न कर दिया गया। इंगलैण्ड के बचाव के लिए भी एक शर्त्त यह करा ली गई कि डय़ूक इंग्लैण्ड के विरुद्ध कोई कार्य्य न करेगा। एलेन्कौन को वायसराय का खाली पद दे दिया गया। अधिकार कुछ नहीं दिये गये। हाँ! यह आशा अवश्य दिलाई गई थी कि यदि पंचायतें फिलिप के स्थान में किसी दूसरे राजा को चुनना चाहेंगी, तो पहले एलेन्कौन के सम्बन्ध में विचार किया जायगा। अगस्त के अन्त तक डान जान से समझौता कर लेने की मीयाद थी। डान जान के सामने समझौते के लिए जो शर्त्तें रक्खी गई थीं वे ये थीं— "डान जान सारे दुर्ग पंचायतों के हवाले कर दे और अपनी सारी सेना और साथियों को लेकर देश से चला जाय। जिन शर्त्तों पर मैथियस वायसराय बनाया गया उन शर्त्तों पर मैथियस ही वायसराय क़ायम रहे। धर्म के सम्बन्ध में सारे अधिकार पंचायतों को रहें। सब क़ैदियों को छोड़ दिया जाय। निर्वासितों को लौट आने की इजाज़त दे दी जाय। जिन लोगों की जायदादें ज़ब्त कर ली गई हैं, उनको वे सब लौटा दी जायँ। मैथियस के मरने पर नया वायसराय पञ्चायत की राय से नियुक्त किया जाय। डान जान ने पहले की तरह क्रोध तो न दिखाया परन्तु इन शर्त्तों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। उसका स्वास्थ्य बिल्कुल बिगड़ रहा था। एस्केवेडो की हत्या के बाद से तथा फिलिप का अपनी ओर रुख बिगड़ा हुआ देख कर वह बड़ा दुःखी रहने लगा था। उसका सारा जोश ठण्डा पड़ गया था। पहिले की तरह क्रोध दिखाने की शक्ति नहीं रही। जून में नवीन-

पन्थ के गिरजों के प्रतिनिधियों की एक सभा हुई। उसमें आरेञ्ज ने धार्मिक स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में अपने विचार लोगों को समझाये थे और बड़ी मुश्किल से उनको इस बात पर राजी किया कि दोनों दलों को अपने अपने धर्म पर चलने का एक सा अधिकार रहे। आरेञ्ज धार्मिक स्वतन्त्रता चाहता था। परन्तु उसके अन्य सब साथी उसके इस उच्च सिद्धान्त को नहीं समझते थे। वे तो केवल नवीन-पन्थ के लिए स्वतन्त्रता चाहते थे। जहाँ-जहाँ उनका अधिकार हो गया था वहाँ के सनातन-धर्म के लोगों से धार्मिक स्वतन्त्रता छीन लेना चाहते थे। सेएट ऐल्डगोएडे तक सनातन-धर्मियों को स्वतन्त्रता देने के विरुद्ध था। आरेञ्ज के सब भाई स्वतन्त्रता के युद्ध में काम आ चुके थे। केवल जान नसाऊ बचा था। उसने भी बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना किया था, और आखिरकार अपना घर-बार छोड़ कर एक ओर हालैएड, ज़ेलैएड, यूटरेक्ट और दूसरी ओर ग्रोनिंजन और फ्रीसलैएड के बीच में बसे हुए अत्यन्त मार्के के प्रान्त जेल्डरलैएड का गवर्नर होना स्वीकार कर लिया था। इस प्रान्त की वह अन्त तक बड़ी वीरता से रक्षा करता रहा था। परन्तु उसका मत भी सनातनियों को स्वतन्त्रता देने के विरुद्ध था। इधर नवीन-दल के लोग आरेञ्ज से उसके सनातनियों को स्वतन्त्रता देने का प्रयत्न करने के कारण असन्तुष्ट थे। इधर शैम्पनी इत्यादि सनातन-धर्मी सरदार भी उससे नाराज थे कि नवीन-पन्थवालों को हर जगह स्वतन्त्रता क्यों दे दी गई है। शैम्पनी ने ब्रसेल्स में अधिकारियों के सामने सनातन-धर्मियों की ओर से स्वयं एक अर्जी पेश की। लोगों को जब इस अर्जी का पता चला तो वे

बड़े बिगड़े। शैम्पनी ने अत्यन्त वीरता से एएटवर्प की रक्षा करके देश की जो महान सेवा की थी, उसे वे क्षणभर में भूल गये। केवल इतना याद रक्खा गया कि शैम्पनी उस घृणित मनुष्य ग्रेनविले का भाई है जिसने नेदरलैएड के गले पर छुरी चलाने में कोई कसर नहीं रक्खी थी। लोगों ने शैम्पनी को उसके साथियों-सहित पकड़ कर जेल में ठूस दिया। ऑरेञ्ज को जब यह समाचार मिला तो उसे बड़ा दुःख हुआ। ऐसी घटनाओं से देश-भक्तों के प्रति लोगों की श्रद्धा कम होती थी। काम बनने के स्थान पर बिगड़ता था।

डान जान का डेरा नामूर के निकट बूज नामी स्थान पर पड़ा था। जिस लेपाएटों के महारथी ने नेदरलैएड में आते ही आरेञ्ज को अभयदान देकर अपना कृपा-पात्र बनाने की अभिमान-भरी बात कही थी, उसकी आज ऐसी दयनीय दशा हो रही थी कि शत्रुओं को भी तरस आता था। फिलिप सुवर्ण के स्थान में शब्द भेजता था। इन शब्दों में से जितना सोना बेचारा डान जान खींच सकता था उतना सोना निकाल कर नेदरलैएड की क्रान्ति दबाने का प्रयत्न कर रहा था। उधर फिलिप उस पर अविश्वास करता था; इधर नेदरलैण्ड में लोग डान जान के नाम से घृणा करते थे। एस्केवेडो की हत्या ने उसके हृदय पर कड़ी चोट पहुँचाई थी। आरेञ्ज ने उसकी सारी राजनैतिक चालें निष्फल कर डालीं थीं। बिना युद्ध किये डेरे में पड़ा-पड़ा वह ज़िन्दगी से आजिज़ आ गया था। अपने मित्रों को पत्रों में लिखता था—"भाई! तुम बड़े मज़े में हो। मेरे चारों ओर तो इतने संकट, इतनी हाय-हाय दिन-रात मची रहती है कि यदि

कोई और सूरत आराम मिलने की न हो तो क़ब्र में ही आराम मिल जाय। फ़िलिप को भी बेचारा बार-बार लिखता था कि मुझे यहाँ से वापस बुला लो। परन्तु न तो फ़िलिप उसे वापिस बुलाता था और न युद्ध के लिए सहायता ही भेजता था। चिंता का बुख़ार दिमाग़ में था ही, शरीर में भी हो आया। दस दिन तक डान जान चारपाई पर पड़ा-पड़ा बकता रहा। ग्यारहवें दिन होश आया और प्राण निकल गये। जिस मकान में वह पड़ा था वह किसी ग़रीब की कभी झोंपड़ी रही होगी। मकान में केवल एक ही कमरा था जो मालूम होता था वर्षों तक क़बूतरख़ाना रहा था। झाड़-झूड़ कर परदे इत्यादि लगा कर किसी तरह मकान डान जान के रहने योग्य बना लिया गया था। तख़्त और ताजों का स्वप्न देखने वाले डान जान के इस झोंपड़े में प्राण निकले। लाश का रंग कुछ काला पड़ गया था। हृदय बिल्कुल सूखा हुआ था। किसी-किसी का सन्देह था कि उसे ज़हर देकर मार डाला गया। क्या ठीक? जिस फ़िलिप ने इतने लोगों की जानें लीं थीं उसने डान जान को भी ज़हर दिलवा दिया हो। परन्तु अधिक सम्भव यही मालूम पड़ता है कि डान जान के पड़ाव में जो विषम ज्वर की बीमारी फैल रही थी उसी में उसके भी प्राण गये। तीन दिन बाद उनकी अन्त्येष्टि क्रिया की गई। नामूर के गिरजे में फ़िलिप का हुक्म आने तक उसकी लाश दफ़न कर दी गई। अलेक्ज़ेण्डर फ़ार्नीस परमा ने डान जान की यादगार का वहाँ पर एक पत्थर गाड़ दिया। वह पत्थर आज तक उस स्थान का परिचय देता है जहाँ 'सिंह ख़ाक में मिल गया।' डान जान ने मरते समय इच्छा प्रगट की थी कि मेरी लाश मेरे पिता चार्ल्स

के निकट दफ़न की जाय। फ़िलिप ने उसकी यह इच्छा-पूर्ण करने के लिए लाश स्पेन मँगवाई। फ्रांस ने केवल थोड़े से सिपाहियों को अपने देश से लाश लेकर गुज़रने की इजाज़त दी थी, उस समय के रिवाज के अनुसार फ्रांस में से लाश ले जाने पर जगह-जगह बहुत सा रुपया देना पड़ता था। मितव्ययी फ़िलिप ने लिखा कि लाश के तीन टुकड़े करके अलग-अलग बोरों में भर कर चुपचाप ले आओ। किसी को पता भी नहीं लगेगा कि लाश जा रही है। यूरोप के प्रसिद्ध वीर डान जान की लाश को इस घृणित और निन्दनीय ढंग से टुकड़े-टुकड़े करके बोरों में भर लिया गया और सैनिक जल्दी-जल्दी फ्रांस में से उसे लिए हुए निकल गये। दो वर्ष पहिले डान जान मूर-गुलाम का भेष धरे इसी फ्रांस में से आशा और उत्साह से भरा जा रहा था। स्पेन पहुँच कर फ़िलिप की मुलाक़ात के लिए लाश तारों से जोड़ कर खड़ी की गई। फ़िलिप का पत्थर का कलेजा भी इस भयानक दृश्य को देखकर दहल गया। अन्त में अपनी आखिरी इच्छानुसार आस्ट्रिया का डान जान चार्ल्स के निकट स्पेन में दफ़ना दिया गया।

अलेक्ज़ेण्डर फ़ारनीस

पाँचवाँ वायसराय आया। जिस पद पर डचेज़ परमा, एल्वा, रेकुइसीन्स, डॉन जॉन रह चुके थे उस पर अब अलेक्ज़ेण्डर फारनीस नियुक्त हुआ। अब तक जितने वायसराय आये थे, उन सबसे अलेक्ज़ेण्डर फारनीस यही योग्य था। उसकी उम्र इस समय केवल ३२ वर्ष की थी। अपने चचा डान जान और फ़िलिप के पुत्र डॉन कार्लोस की पैदाइश के एक-दो वर्ष इधर-उधर उसका जन्म हुआ था। बचपन से उसने उनके साथ ही शिक्षा पाई थी। पोप पॉल तृतीय का पौत्र ऑक्टेवो फ़ारनीस, जो चार्ल्स का बड़ा विश्वासी सेना-नायक था, अलेक्ज़ेण्डर का पिता था और परमा की डचेज़ मार्गरेट, जो फ़िलिप के स्पेन चले जाने पर नेदरलैण्ड में पहली बार वायसराय नियुक्त हुई थी, उसकी माँ थी। लड़ाइयाँ जीत कर लौटे हुए पिता के हथियारों की झन्कार फ़ारनीस ने पलने में सुनी थी। ११ वर्ष की उम्र में उसने चार्ल्स से सेण्ट क्विण्टेन के युद्ध में जाने की आज्ञा माँगी थी और जब चार्ल्स ने आश्चर्य-चकित होकर मना कर दिया था तो खूब फूट-फूट कर रोया था। बीस वर्ष की अवस्था में पोर्चुगाल की शहज़ादी मेरिया लुई से उसका विवाह हुआ था और समय पर सन्तान भी हुई थी। जवानी में राजधानी परमा में कुछ काम न होने से फ़ारनीस रात को अकेला ही निकल जाया करता था और राह-

गीर सैनिकों और योद्धाओं से अन्धकार में छिप-छिपकर युद्ध किया करता था। जो योद्धा अपने बल के लिए परमा में मशहूर होता था उसे तो जाकर फ़ारनीस अवश्य ही ललकारता था। एक दिन उसके इस निशाचार का भण्डा फूट गया। तब से वह रात को घर पर रहने लगा। पोप के मुसलमानों के विरुद्ध धर्म-युद्ध की घोषणा निकालने पर वह अपना माँ और स्त्री की प्रार्थनाओं और निहोरों की परवाह न करके मुसलमानों से लड़ने के लिए लेवाण्ट में अपने चचा डॉन जॉन से जा मिला। वहाँ लेपाण्टों के युद्ध में उसने बड़ा भयङ्कर लोहा लिया। अकेला ही तलवार लेकर तुर्कों के जहाज़ पर चढ़ गया। मुस्तफ़ा बे को मार कर जहाज़ पर अधिकार जमा लिया और तुर्कों का झण्डा नीचे झुका दिया। इसके बाद कुछ दिनों तक उसे अपना जोर आज़माने का मौका नहीं मिला। फिर जब डॉन जॉन के पास सेना भेजने की जरूरत पड़ी तो वह तुरन्त इटली से फ़ौज लेकर पहुँचा। गेम्बलूर्स में केवल ६०० जवानों को लेकर वह शत्रु पर बाघ की तरह ऐसा झपटा कि डेढ़ घण्टे के भीतर ही उसने आठ-दस हज़ार आदमियों का ज़मीन पर छाँट कर सुला दिया। लेपाण्टो के युद्ध से चारों ओर डॉन जॉन की कीर्ति बहुत फैल गई थी। परन्तु अलेक्ज़ेण्डर फ़ारनीस डॉन जॉन से कहीं अधिक योग्य सेनापति और अधिक नहीं तो बराबर का योद्धा था। राज-कार्य में तो उसमें डॉन जॉन से अधिक योग्यता होने में कुछ सन्देह ही नहीं था। डॉन जॉन की तरह वह क्रोध करके गाली-गलौज नहीं करता था। मौके पर फुफकारना, मौके पर फन समेटकर चुपचाप शत्रु को धोखा देने के लिए पड़े रहना, और

मौके पर डँक मारना फारनीस को खूब आता था। चालें चल-चल कर और चक्कर लगा-लगा कर शत्रु को थकाने और छकाने में भी वह बड़ा सिद्ध हस्त था। किसी बन्दी रानी को तख्त पर बैठाने और उसका पति बनकर ताज अपने सिर पर रखने के आलसी स्वप्न देखने वाला मनुष्य फारनीस नहीं था। उसे मालूम था कि फिलिप ने उसे किस काम के लिए नेदरलैण्ड भेजा है। वह यह भी समझता था कि फ़िलिप के काम के लिए सब से अधिक उपयुक्त मनुष्य इस समय मैं ही हूँ। फारनीस नेदरलैण्ड वालों से खुले मैदान लड़ने नहीं आया था। जिस राजनीति में नेदरलैण्ड वालों ने थका-थका कर डान जान के प्राण ले लिये थे फ़ारनीस उनके उसी खेल में उन्हें परास्त करने आया था। उसने आगे चलकर दिखा भी दिया कि वह युद्ध-विद्या में जितना कुशल है उतना ही धोखा देने, षड्यन्त्र रचने, चालें चलने और छकाने की विद्या में भी होश्यार है। यदि उसके मुकाबले में आरेञ्ज जैसा बुद्धिमान राजनीतिज्ञ न होता तो सारे नेदरलैण्ड को उसने सदा के लिए गुलाम बना लिया होता। धर्म में वह कट्टर सनातनी था। नये पन्थ को कोली-चमारों का पन्थ कह कर बड़ी घृणा करता था। उसका जीवन नियमित था। उसका कहना था कि खाना मैं केवल जीवित रहने के लिए खाता हूँ। कभी ही कोई ऐसा दिन जाता था जब उसे खाते से दो-चार बार किसी न किसी आवश्यक कार्य के लिए उठना न पड़ता हो।

फ़ारनीस का नेदरलैण्ड से पहिले भी सम्बन्ध रह चुका था। इसका उसने आते ही पूरा-पूरा लाभ उठाना शुरू कर दिया। आरेञ्ज से जलने वाले सरदारों के, मेथियस और एलेन्कौन को

फँसाने के प्रयत्न असफल हो गये थे इसलिए वे चिढ़कर देश को बेच डालने पर तैयार हो गये थे। अलेकजेण्डर फ़ारनीस के देश में घुसते ही ये लोग जा-जाकर उसकी खुशामदें करने लगे। बाहरी शत्रु के भय से देश में जो एकता हो गई थी वह शत्रु को नीचा दिखाने के बाद नष्ट हो गई थी। आपस का कलह, सनातनियों और सुधारकों का झगड़ा, दल-बन्दियाँ फिर शुरू हो गई थीं। वैलून प्रान्त के लोग सनातन-धर्म के कट्टर पक्षपाती थे। फ्लेण्ट में सुधारकों की संख्या अधिक थी। जिस रायहोव ने बड़ी वीरता से एअरशाट को गिरफ्तार कर लिया था वही अब जनता पर अत्याचार करता फिरता था। रहसेल को तो उसने दाढ़ी नोंच-नोचकर मार डाला था। इम्बीज भी बड़ा नीच और दलबन्दी के कीचड़ में फँसा हुआ निकला। अब वह भी आरेञ्ज का पक्का दुश्मन बन गया। बहुत से सुधारक इस विश्वास पर कि देश में शान्ति हो गई है अपने-अपने निर्वासित स्थानों से लौट आये थे। परन्तु वैलून लोगों के अत्याचार देखकर उन्हें बड़ी निराशा हुई। फ्लेण्ट में धार्मिक स्वतन्त्रता को अधिक विस्तृत करने का प्रयत्न करने के बहाने सनातनियों की हड्डियाँ तोड़ी जा रही थीं। एलेन्कौन ने मौंस नगर को अपने हाथ में कर लेने के कई प्रयत्न किये थे। परन्तु वे सब असफल हुए थे उधर जान कैसीमीर फ्लेण्ट में बैठा-बैठा विद्रोह कराने की चेष्टा कर रहा था। कुछ लोगों ने कैसीमीर को फ्लैण्डर्स का सूबेदार बनाने की बात भी चलाई थी। कैसीमीर यह समाचार सुनकर बड़ा प्रसन्न हो गया था। परन्तु एलेन्कौन ने जब यह समाचार सुना तो वह क्रोध से जल उठा और अपनी सारी सेना बखेर कर फ्रांस लौट जाने के लिए तैयार हो

गया। कैसीमीर की सेना ग्रामों में लूट-मार करती फिरती थी। एलेन्कौन की छोड़ी हुई सेना भी 'असन्तोषी' दल से मिलकर चारों तरफ़ लूट-मार और उपद्रव करने लगी। पंचायतों की सेना की संख्या बहुत घट गई थी। चारों ओर लुटेरों की तरह देश में घूमनेवाले स्पेन, इटली, बरगण्डो, वैलून, जर्मन, स्काच अंग्रेज इत्यादि विदेशी सैनिकों के आये दिन के उत्पातों से जनता की रक्षा करनेवाला कोई भी नहीं था। सबकी आँखें आरेञ्ज की तरफ़ लगी थीं। अन्त में आरेञ्ज ने घेण्ट के नागरिकों के सामने तीन शर्तें रक्खीं। "सनातनी पण्डों की जागीर उनसे न छीनी जाय। उनको अपने धर्म पर चलने का अधिकार रहे। २८ अक्तूबर के दिन गिरफ्तार किये हुए सब लोग छोड़ दिये जायँ।" यदि ये शर्तें घेण्ट वाले मानने को तैयार हों तो मैं स्वयं तथा मैथियस और पंचायतें घेण्ट की रक्षा करने के लिए हर तरह तैयार हैं। पहली दोनों शर्तें तो बड़ी आना-कानी के बाद मान ली गईं। परन्तु तीसरी शर्त मानने पर नागरिक तैयार नहीं हुए। किसी तरह ३ नवम्बर को समझौते पर एएटवर्प में दोनों पक्षों ने दस्तख़त किये। जिस समय इस समझौते की बात-चीत चल रही थी उसी समय दुर्भाग्य से घेण्ट में एक और बड़ा भारी उत्पात हो गया। सनातनियों को बुरी तरह लूटा गया। मूर्तियाँ तोड़-फोड़ कर चारों ओर बखेर दी गईं। जब यह ख़बर आरेञ्ज को मिली तो उसके दिल पर बड़ी चोट पहुँची। वह विचार करने लगा कि जो लोग मेरी बात सुनते और समझते ही नहीं उनका साथ देने से क्या फ़ायदा? कुछ लोग आरेञ्ज को ही सारे उत्पातों की जड़ बताते थे। इसलिए आरेञ्ज का एक उत्तर छपवाने का विचार भी हुआ।

उसके एलेन्कौन का पक्ष लेने के कारण हालेण्ड तक में लोग उस पर सन्देह करने लगे, परन्तु अन्त में आरेञ्ज सोच-विचार कर इसी निश्चय पर पहुँचा कि बे-बुनियाद आक्षेपों को हँस कर टाल देना और कार्य्य पर दृढ़ रहना ही अच्छा होगा। वह स्वयं भेएट गया और सब दलों के नेताओं से मिला। सबके साथ मीठी-मीठी बातें कीं; इम्बीज़ के साथ खाना खाया और सब को हिला-मिला कर नगर में फिर शान्ति का राज्य स्थापित कर दिया। कैसीमीर की सेना ने नेदरलैण्ड में जो करतूतें की थीं उनसे एलिज़बेथ बहुत रुष्ट हो गई थी। कैसीमीर ने सुना कि पंचायतें कोशिश कर रही हैं कि मुझे वापिस इंग्लैण्ड बुला लिया जाय। वह तीस हज़ार जर्मन-सैनिकों को नेदरलैण्ड में छोड़ बिना वेतन दिये ही चुप-चाप जर्मनी चला गया। ये सैनिक देश में चारों ओर निर्द्वन्द्व घूमने और लोगों को लूटने लगे। नेदरलैण्ड सदियों से लूटा जा रहा था। सैनिकों को काफ़ी धन लूट में न मिल सका। उन्होंने बड़ी धृष्टता की, फारनीस को लिखा 'हमारी तनख्वाह का प्रबन्ध कर दो।' फारनीस को उनकी धृष्टता पर बड़ी हँसी आई। उसने उत्तर में सैनिकों को लिखा कि देश छोड़कर तुरन्त चले जाओ। नहीं तो सबके सिर ज़मीन पर लोटते नज़र आयेंगे।" बेचारे सैनिकों के हाथ कुछ न आया। उन्होंने एक गीत बना लिया जिसमें अपने सब दुखड़े रोये थे। और इस गीत को एक स्वर से ज़ोर-ज़ोर से गाते हुए जर्मनी को कूच कर गये। एलेन्कौन मौन्स छोड़ने के बाद कुछ दिन सीमा-प्रान्त पर ठहरा। वहाँ से पंचायतों को एक खत लिखा कि मुझे फ्रान्स में अपने भाई से बड़े आवश्यक कार्य्य तय करने हैं। यह खत भेज कर

वह भी चलता बना। साल का अन्त होते-होते कार्डिनल बौस्सू का देहान्त हो गया जिससे आरेञ्ज को बहुत दुःख हुआ और देश-भक्तों के दल को ऐसी क्षति पहुँची जिसका पूरा होना असम्भव था।

नेदरलैण्ड में क्रान्ति नष्ट करने के लगभग सब उपाय सरकार आज़मा चुकी थी। फारनीस ने एक नया उपाय सोचा और बड़ी युक्ति और कुशलता से उसे प्रयोग करना शुरू किया। बड़ी-बड़ी रिश्वतें देकर वह देश-भक्तों के अफ़सरों, सिपाहियों और नेताओं को अपनी तरफ फोड़ने लगा। सबसे पहिले ला मोटे नाम के अधिकारी ने अपने आपको फारनीस के हाथों बेचा। एरेस नगर पर स्वदेशी सरकार ने कुछ नया कर लगाया था। इस योजना के प्रति लोगों को स्वभावतः विरोध था। इस विरोध का लाभ सनातनी पण्डों और राज-भक्त जी-हजूरों ने उठा लिया। लोगों को आरेञ्ज और स्वदेशी सरकार के प्रति भड़का दिया गया। सेण्ट एल्डेगोण्डे ने जाकर लोगों को बहुत-कुछ समझाने का प्रयत्न किया परन्तु कुछ फल न हुआ। वैलून प्रान्त में तीन दल बन गये। मौन्स में एलेन्कौन का दल था। ग्रेवलाइन्स में ला मोटे का दल खड़ा हो गया और देश-भक्तों का दल तो था ही। एरेस का गर्वनर वायकौण्ट गेण्ट आरेञ्ज का पक्षपाती था। राज-भक्त दल के लोगों की पक्की धारणा हो गई थी कि जब तक सारे उपद्रवों की जड़ विलियम आरेञ्ज जीवित है तब तक क्रान्ति दबाई नहीं जा सकती। उनके विचार से आरेञ्ज को किसी तरह मरवा डालना ही सब रोगों की एक दवा थी। ला मोटे को सरकार ने चुपचाप अन्य देश-भक्तों को रिश्वतें दे-देकर फोड़ने में अपना दलाल बना लिया। लेलेन—जो मार्गरेट के प्रभाव से एलेन्कौन के पक्ष का हो

गया था—उसका भाई मौण्टनी, हेजे, हाव्रे, केपरेस, वीर एग्मोण्ट
का लड़का, यहाँ तक कि वायकौण्ट मेराण्ट तक को ला मोटे ने
लालच दे-दे कर हिला दिया था। अब ये अधिकारी देश-भक्तों
के विश्वास के योग्य नहीं रहे थे।

एरेस में ऑरेञ्ज के दल का सब से बड़ा पक्षपाती एक
अमीर प्रभावशाली और प्रख्यात वकील गोसन नाम का मनुष्य
था। फ़ारनीस के आने के कुछ ही दिन बाद एरेस के अधिकारी
फ़ारनीस से पत्र-व्यवहार करके चुपचाप वैलून प्रान्त सरकार के
हाथ में दे देने का षड्यन्त्र रचने लगे थे। गोसन ने कैप्टन
एम्ब्रोज़ की सहायता से इन सब अधिकारियों को एकाएक
गिरफ़ार करके नये अधिकारियों का चुनाव कर लिया। परन्तु
फ़ारनीस के चालाक एजेण्ट पादरी जॉन सेरासिन ने तुरन्त
एम्ब्रोज़ को रिशवत देकर अपनी ओर फोड़ लिया। फ़ारनीस
के दलवालों ने अधिकारियों को छुड़ाकर शहर पर फिर अपना
अधिकार जमा लिया और देश-भक्त वृद्ध गोसन को सूली पर चढ़ा
दिया। लेलेन, मौण्टनी, हेजे, केपरेस और वायकौण्ट मेराण्ट को
बड़े-बड़े ओहदे और रूपया देकर फोड़ लिया गया। पादरी
सेरासिन को उसकी सेवाओं के कारण फिलिप ने नेदरलैण्ड के सब
से धनी मठ सैण्टवास्ट का मठाधीश बना दिया। बाद को वह
कैम्ब्रे का आचार्य भी बना दिया गया। ६ जनवरी सन् १५७९
ई० को वैलून के एट्रोयस, हेनाल्ट, लिले, डूये और चोज़ इत्यादि
स्थानों ने मिलकर एक नया संघ बना लिया और उसी साल
६ अप्रैल को माउण्ट सेण्ट एलोय पर एक गुप्त सन्धि हुई जिस
पर सबने दस्तख़त कर दिये।

सार्वदेशिक पंचायत और राष्ट्रीय दल को इन प्रान्तों के निकल जाने से देश का शीराज़ा फिर बिखरता नज़र आने लगा। चिन्ता और भय से उनके कान खड़े हुए। ऑरेञ्ज ने देख लिया कि घेण्ट की सन्धि पर चलने के लिए देश तैयार नहीं है। इसलिए उसने सोचा कि एक नई सन्धि करके जितने प्रान्तों का हो सके-एक नया स्थायी संघ बनाया जाय। उसके वीर भाई जॉन नसाऊ ने जो सौभाग्य से अभी तक जेल्डरलैण्ड का गवर्नर था प्रयत्न करके जेल्डरलैण्ड, जुटफेन, हालैण्ड, जेलैण्ड, यूटरेक्ट और फ्रसलैण्ड के प्रान्तों को एक नये घनिष्ठ संघ में मिल जाने के लिए तैयार कर लिया। २६ नियमों की एक योजना तैयार करके इन प्रन्तों के प्रतिनिधियों ने उस पर हस्ताक्षर किये और शपथ ली कि भीतरी शासन में सब प्रान्त एक-दूसरे से स्वतन्त्र रहेंगे परन्तु बाहर वालों से एक मत होकर व्यवहार करेंगे। विदेशी शत्रु से एक प्रान्त दूसरे प्रान्त की जीवन, धन और रक्त देकर रक्षा करेगा। यह योजना ही आगे चलकर नेदरलैण्ड के भावी प्रजातन्त्र की नींव हुई। योजना पर इस समय हस्ताक्षर करनेवालों ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि वे एक प्रजातन्त्र राज्य की नींव रख रहे हैं। अभी तक वे फिलप को अपना राजा मानते थे। अपने प्राचीन अधिकारों के अनुसार केवल शासन-कार्य अपने हाथ में रखना चाहते थे। योजना के अनुसार ये सात प्रान्त बाहरी कार्य के लिए एक राष्ट्र हो गये। सब के प्रतिनिधियों की सभा को यूटरेक्ट में बैठकर प्रान्तों को आम बातों पर विचार और निश्चय करने तथा सब प्रान्तों पर एकसा कर लगाने का अधिकार दे दिया गया था। परन्तु, सब

प्रान्तों ने अपने प्राचीन अधिकार और स्थानीय शासन अपने हाथ में रक्खा था। एक प्रान्त का दूसरे से संघर्ष बचाने और सब को एक रखने के विचार से प्रांतों को अपनी-अपनी इच्छानुसार धर्म-भाव मानने की स्वतन्त्रता दी गई थी। नेदरलैण्ड के प्रजातन्त्र की बुनियाद इस प्रकार रक्खी गई। यदि सरदारों ने आरेञ्ज के प्रति ईर्ष्या न की होती; यदि धार्मिक झगड़ों ने इतना ज़ोर न पकड़ा होता; यदि वैलून प्रान्त के सनातनी इतने धर्मान्ध न हो गये होते; यदि झेगट के स्वतंत्रतावादियों ने इतना पागलपन न दिखाया होता तो विलियम आरेञ्ज ने सात प्रांतों के स्थान में सारे देश को एक करके स्वाधीनता का झण्डा फहरा दिया होता। फ़ारनीस ने वैलून प्रान्त के प्रतिनिधियों को दावतें दे-देकर और जलसे दिखा-दिखाकर बेवकूफ़ बना लिया था। वे सब फ़ारनीस पर लट्टू हो रहे थे। मियूज के किनारे बसे हुए मेसट्रिश्ट नगर पर—जो जर्मनी में घुसने के लिए द्वार था—फारनीस ने चढ़ाई की। चार महीने तक फ़ारनीस की बीस हज़ार सेना नगर को चारों ओर से घेरे पड़ी रही। मेसट्रिश्ट की आबादी भी बीस ही हज़ार थी। फारनीस की सेना का पड़ाव नगर के चारों ओर बसा हुआ एक दूसरा नगर लगता था। दोनों ओर से रोज़ हमले होते थे। बारूद भर-भरकर सुरगें उड़ाई जाती थीं नागरिक बड़ी दृढ़ता से अन्त तक लड़े। जब फ़ारनीस ने नगर में प्रवेश किया तो वहां उसने केवल ४०० आदमी जीवित पाये। आरेञ्ज ने पंचायतों से बराबर प्रार्थना की कि इस वीर नगर की शीघ्र से शीघ्र समुचित सहायता करनी चाहिए। पंचायतों ने कंजूसी के मारे पर्याप्त सहायता की कमी

मंजूरी नहीं दी। मेसट्रिस्ट के नष्ट हो जाने पर सब आरेञ्ज को दोष देने लगे कि 'आरेञ्ज ही शान्ति नहीं होने देता उसी के मारे देश को इतने दुःख झेलने पड़ रहे हैं।' एक दिन पंचायत की बैठक में चुपचाप एक पत्र पेशकार के हाथ में रख दिया गया। पेशकार ने पत्र का कुछ ही भाग पढ़ा था कि उसे चुप हो जाना पड़ा। उस पत्र में आरेञ्ज पर ऐसे बुरे दोषारोपण किये गये थे कि प्रतिनिधियों को पत्र सुनना असह्य हो गया और वे चिल्ला उठे—"बस-बस! बन्द करो! बन्द करो!" आरेञ्ज ने पेशकार के हाथ से पत्र ले लिया और स्वयं खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से पत्र पढ़ने लगा और पत्र पढ़ चुकने पर बोला—"हाँ सच है। मैं ही अशान्ति का कारण हूँ। यदि मेरे चले जाने से शान्ति हो जाने की आशा हो तो मैं देश छोड़ कर आज ही चला जाने को तैयार हूँ।" इस पर चारों तरफ से प्रतिनिधि चिल्लाने लगे—नहीं, हमारा आप पर पूर्ण विश्वास है।" इसी बीच में उपद्रवों की खान घेण्ट में फिर एक उपद्रव हो गया। इम्बीज़ कहा करता था कि आरेञ्ज फ्रांस का दलाल है और भीतर से कट्टर सनातनी है। उसका एक साथी पादरी पोटरडेथीज़स बड़ा प्रभावशाली व्याख्यनदाता था। वह भी आरेञ्ज को खूब गालियाँ सुनाया करता था। उन्हीं दोनों ने लोगों को भड़का कर घेण्ट में उपद्रव करा दिया। आरेञ्ज स्वयं घेण्ट गया और बड़ी मुश्किल से नगर में फिर शान्ति स्थापित करने में सफल हुआ। इम्बीज़ और पीटर को आरेञ्ज ने शहर से निकाल दिया। जिस वार का नाम सारे यूरोप में प्रख्यात था; जिसके खून से फिलिप हाथ रंग चुका था। उस एग्मोण्ट के कुपुत्र ने ला मोटे इत्यादि

की तरह धन और पद के लालच में पड़ कर सरकार से मिल जाने का विचार किया। उसने सोचा कि ब्रसेल्स नगर पर कब्ज़ा करके यदि मैं उसे सरकार के हवाले कर दूँ तो मुझे कोई न कोई बड़ा पद अवश्य मिल जायगा। एकाएक एक दिन उसने अपने साथियों की सहायता से ब्रसेल्स में उपद्रव खड़ा कर दिया परन्तु देशभक्तों ने उसे साथियों सहित एक गली में घेर लिया। एक दिन और एक रात वह उसी गली में घिरा पड़ा रहा। चारों ओर से लोग उस पर आवाज़ें कसते थे—"वीर एग्मोएट के सपूत। तुम्हें याद है कल तुम्हारे बाप की बरसी का दिन है? क्या अपने पूज्य पिताजी का आप सिर ढूँढने इधर आये थे? जहाँ तुम पड़े हो वहाँ का एक पत्थर तो ज़रा उखाड़ कर देखो! तुम्हारे पिताजी का रक्त चिल्ला-चिल्ला कर तुम्हारा नाम पुकार रहा है।" इत्यादि। जिस स्थान पर ११ वर्ष पहले एग्मोएट का सिर गिरते देखकर देशभक्तों का हृदय रो रहा था उसी स्थान पर और दुर्भाग्य से उसी तारीख़ को एग्मोएट का कुपुत्र बाप का बदला लेने के स्थान पर देश को बेचने और अपने बाप के क़ातिलों के ख़ूनी हाथ चूमने के फेर में था। ख़ैर, नागरिकों ने दूसरे दिन इस रोते हुए बेवकूफ़ जवान पर तरस खाकर उसे साथियों सहित शहर से निकल जाने दिया। फ्लैण्डर्स के लोग बहुत बार ऑरेञ्ज से प्रार्थनायें कर चुके थे कि हमारे प्रान्त का शासन-भार आप अपने हाथ में ले लीजिए। ऑरेञ्ज हमेशा इन्कार करता रहा था। अब की बार फ्लैण्ड का उपद्रव शान्त कर चुकने पर फ्लैण्डर्स के शासन की बागडोर उसने अपने हाथ में लेली और एन्टवर्प लौट आया।

कोलन में सात महीने से फिलिप और पंचायतों के प्रतिनिधि आपस में समझौता करने का प्रयत्न कर रहे थे। जर्मनी के सम्राट ने भी अपने प्रतिनिधि दोनों पक्षों में जैसे बने समझौता करा देने में सहायता करने के लिए भेजे थे। दोनों पक्ष शान्ति तो चाहते थे परन्तु वे बातें जिन पर असली झगड़ा था दोनों में से एक पक्ष भी छोड़ने को तैयार नहीं था। फिलिप अपना असीम अधिकार और सनातन-धर्म की प्रधानता कायम रखना चाहता था। देश-भक्त अपने पुराने अधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता क़ायम रखना चाहते थे। सात महीने तक सब दलों के प्रतिनिधियों ने खाने-पीने में खूब रुपया उड़ाया और दस हज़ार पृष्ठ काग़ज़ लिखा-पढ़ी में खराब किये। परन्तु रहे वहीं जहाँ से प्रारम्भ किया था। किसी प्रकार समझौता न हो सका; सब अपने-अपने घर लौट आये इधर ऑरेञ्ज को बड़े-बड़े प्रलोभन दिये जा रहे थे। उससे कहा गया था कि अगर तुम देश छोड़ कर चले जाने पर राज़ी हो जाओ तो तुम्हारी ज़ब्त की हुई सारी जागीर और धन सरकार तुम्हें लौटा देगी और तुम पर जो कर्ज़ हो गये हैं उन्हें निबटाकर दस लाख रुपया तुम्हारी नज़र करेगी और भी जो माँगोगे मिल जायगा केवल देश छोड़कर चले जाओ। ऑरेञ्ज ने कहा कि मैं पंचायत का सेवक हूँ अपने लिए नहीं लड़ रहा हूँ। जो जनता का हुक्म होगा करूँगा। यदि पंचायतों को फिलिप से सन्धि करने में मैं ही अड़चन दीखता होऊँ या वे चाहती हों कि मैं देश छोड़ कर चला जाऊँ, तो मैं आज ही चले जाने को तैयार हूँ। यदि पंचायातें मेरी जगह किसी और को अधिकारी रखना चाहती हों

तो मैं इस अधिकारी के नीचे काम करने के लिए भी तैयार हूँ। परन्तु, धन, स्त्री, बालक किसी के लोभ से जनता का कार्य छोड़ कर चले जाने के लिए तैयार नहीं हूँ। आरेञ्ज को तो बेचारी सरकार क्या फोड़ सकती थी? हाँ, इसी बीच में मेचलिन के गर्वनर डेवूयर्स को, जिसने बड़ी बहादुरी से एण्टवर्प की रक्षा करके देशभक्तों में ख्याति प्राप्त की थी, और फ्रीसलैण्ड के गवर्नर काउण्ट रेनेनबर्ग को फ़ारनीस ने रिशवतें और बड़े-बड़े पदों का लालच देकर फोड़ लिया। डेवूयस ने एक दिन एकाएक मेचलिन फ़ारनीस के सुपुर्द कर दिया। परन्तु छः मास के भीतर में ही देशभक्तों ने मेचलिन पर फिर अधिकार जमा लिया। डेवूयर्स कुछ दिन बाद लड़ते-लड़ते एक जगह मारा गया। काउण्ट रेनेन-बर्ग ह्रूगस्ट्रेटन का भाई था। ऑरेञ्ज डेवूयर्स की तरह उस पर भी अत्यन्त बिश्वास करता था। परन्तु रेनेनबर्ग अन्दर ही अन्दर ऑरेञ्ज से ईर्ष्या करता था। सरकार की ओर से उसे धन और एक सुन्दर स्त्री के मिलने का लालच दिया गया। बस उसने एक दिन अचानक ग्रोनिन्जन प्रान्त की राजधानी सरकार को सौंप दी। ऑरेञ्ज को इन साथियों के धोखा देने पर बड़ा दुःख हुआ। उसने कुछ दिन पहले अफवाहें सुनी थीं कि ये लोग धोखा देने वाले हैं। परन्तु जब उस पर ही लोग दिन-रात इतने दोषारोपण करते थे तो वह केवल अफवाहों के कारण मित्रों पर कैसे सन्देह कर सकता था?

ऑरेञ्ज जानता था कि कोलग्न की कान्फरेंस में कुछ समझौता नहीं हो सकेगा। वह यह भी समझता था कि ये लम्बी-लम्बी कान्फ्रेंसें केवल इसलिए की जाती हैं कि देश में

फूट डालने का अवकाश सरकार को फिर मिल जाय। इसलिए वह इधर बराबर पंचायतों से यह निश्चय करा लेने का प्रयत्न कर रहा था कि यदि समझौता न हो तो फिलिप के स्थान में किसको राजा चुना जाय। विलियम ऑरेञ्ज संयुक्त-राज्य अमेरिका की तरह देश का किसी को राष्ट्रपति या प्रमुख चुनकर नेदरलैण्ड में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने का विचार नहीं कर रहा था। उस समय की नेदरलैण्ड की जो परस्थिति थी उसमें बिना राजा का राज्य स्थापित करना स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था, न किसी नवीन राजनैतिक अधिकार के लिए ही विलियम ऑरेञ्ज ने क्रान्ति का संचालन अपने हाथ में लिया था। प्रजा के बहुत से अधिकार नेदरलैण्ड में प्राचीन काल से चले आते थे। फ़िलिप नेदरलैण्ड की प्रजा के यह अधिकार कुचल डालना चाहता था। वह इतिहास के इस अन्धकारमय युग में राजा-प्रजा का पालन और प्रजा के अधिकारों की रक्षा करने के लिए भगवान् की ओर से भेजा हुआ अवतार माना जाता था। विलियम ऑरेञ्ज और पंचायतों का कहना था कि जो राजा प्रजा के प्राचीन अधिकारों की रक्षा न करके उलटे प्रजा के अधिकारों को ठुकराता है; प्रजा का पालन करने के स्थान में अपने हाथों से प्रजा का खून बहाता है, वह राजा राजा कहलाने का अधिकारी नहीं है। एक नया अधिकार अवश्य माँगा जा रहा था। वह था हरएक के लिए धार्मिक स्वतन्त्रता। मगर उसके सम्बन्ध में यह कहा जाता था, कि 'धर्म ईश्वर और मनुष्य के बीच की बात है। राजा का उससे कुछ सम्बन्ध नहीं।' फ़िलिप ने नेदरलैण्ड की प्रजा के अधिकार बड़ी बेदर्दी से कुचले

थे। जिस प्रजा का उसे पालन करना चाहिए था उस प्रजा के रक्त से फिलिप ने जमीन रँग डाली थी। प्रजा-भक्षक फिलिप को नेदरलैण्ड का राजा या प्रजा-रक्षक कहलाने का अब अधिकार नहीं रहा था; इन्हीं कारणों से पंचायतें और ऑरेञ्ज उसे राज-पद से च्युत करके किसी नये राजा के सिर पर नेदरलैण्ड का छत्र रखने का विचार कर रहे थे। मैथियस बिल्कुल निकम्मा साबित हुआ उसके कारण जर्मनी के सम्राट और अन्य जर्मन सरदारों से जो सहायता मिलने की आशा थी वह भी नहीं मिली। इंग्लैण्ड में नेदरलैण्ड के प्रति काफ़ी सहानुभूति थी। परन्तु महारानी एलिज़बेथ अपनी आदत के अनुसार अठखेलियाँ कर रही थी। एक ओर तो एलेन्कौन को प्रेम-प्रत्र लिखती थी और दूसरी ओर नेदरलैण्ड पर एलेन्कौन का अधिकार न जम जाय, इस बात का भी प्रयत्न कर रही थी। कुछ ही दिन पहले उसने एक बड़ा स्नेह-पूर्ण पत्र एलेन्कौन को लिखा था। सबको विश्वास हो चला था कि एलिज़बेथ और एलेन्कौन का शीघ्र ही विवाह हो जायगा। ऑरेञ्ज ने ऐसी परिस्थिति में फिलिप की जगह एलेन्कौन को ही चुनना उचित समझा। फ्रांस नेदरलैण्ड के बिल्कुल समीप भी था इसलिए हर समय नेदरलैण्ड को सहायता पहुँचा सकता था। नेदरलैण्ड पर फ्रांस का अधिकार हो जाने से स्पेन और जर्मनी सदा नेदरलैण्ड से डरते। एलिज़बेथ एलेन्कौन को प्रेम करती थी इसलिए वह तो अवश्य ही खुश होती। एक अधिकारी और था जिस के सिर पर नेरदलैण्ड का ताज रक्खा जा सकता था। और वह स्वयं ऑरेञ्ज था परन्तु उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मैं

यह मान स्वयं न लूंगा। यदि ऑरेञ्ज ने यह पद स्वीकार कर लिया होता तो देश का बड़ा लाभ होता। हालैण्ड और जीलैण्ड विलियम ऑरेञ्ज के अतिरिक्त और किसी को अपना सिरताज बनाने के लिए तैयार नहीं थे। एलेन्कौन के नाम से तो वे चिढ़ते थे। आरेञ्ज ने इन प्रान्तों को बहुत समझाया कि "मैं मरते दम तक हर प्रकार से देश की सेवा करने को तैयार हूँ। परन्तु राजा एलेन्कौन को ही बनाना उचित है।"

लोग आपस में एक दूसरे से बड़ी ईर्षा करते थे। फूट का बाजार गर्म था। देश के कार्यों में पैसा देने में भी कंजूसी दिखाई जाती थी। एक दिन ऑरेञ्ज ने पंचायतों को फटकार कर कहा—"यदि मुझे अधिकारी बनाया है तो मेरा कहा मानकर जितनी फ़ौज मैं बताता हूँ रखनी पड़ेगी उसके खर्च के लिए रुपया भी देना पड़ेगा। अन्यथा मैं ये अधिकार रखने को तैयार नहीं हूँ। जिस प्रकार मेरे दुश्मन केवल मेरे दोष ढूंढते फिरते हैं उसी प्रकार तुमने भो सदा मेरे दोष ही बताये हैं। मैंने घर-बार फूंक कर देश-सेवा करने का प्रयत्न किया है। उसका विचार भी नहीं किया जाता। किसे ऐशो-आराम, धन, सम्पत्ति, गृह-सुख प्यारा नहीं होता? मेरा जी भी आराम करने को चाहता है; मैं भी ऐश कर सकता हूँ। मेरा लख्ते जिगर स्पेन में कैद है। उसे मैं चाहूँ तो अपने ज़रा से इशारे पर छुड़ा सकता हूँ तुम्हारी सेवा के लिए मैं इन सब चीज़ों को छोड़ने को तैयार हूँ, परन्तु, तुम से स्वयं अपनी रक्षा के प्रबन्ध तक में मुझे सहायता करने में ढिलाई हो रही है।"

लड़ाई धीरे-धीरे चल रही थी। ऑरेञ्ज का एक बहादुर

साथी ला नोइ लड़ाई में गिरफ्तार हो गया। उसकी गिरफ्तारी से देशभक्तों के दल को बड़ा धक्का पहुँचा। ला नोइ की केवल तलवार में ही बल नहीं था, उसकी लेखनी भी जादू भरी थी। ऑरेञ्ज ने ला नोइ को छुड़ाने का प्रयत्न किया। सरकारी पक्ष के कैदियों में से एग्मोएट के पुत्र, सेलेस और शेम्पनी इत्यादि को लानोइ के बदले में देने को तैयार हुआ परन्तु फ़ारनीस ने कहा—"इन भेड़ों के बदले सिंह नहीं लौटा सकता।" लानोइ को मारा तो नहीं गया क्योंकि देशभक्तों ने भी बहुत से सरकारी अफ़सर पकड़ रक्खे थे यदि लानोइ को मारडाला गया होता तो इधर देशभक्त भी सारे सरकारी कैदियों को मार डालते। उसे एक ऐसी कोठरी में डाल दिया गया जो चारों तरफ़ से बन्द होने के कारण बिल्कुल अँधेरी थी। सिर्फ़ ऊपर छत में एक सूराख था जिस में से हवा और रोशनी आती थी। वर्षा होने पर पानी और ओले भी आते थे। चूहे, मेंढक, छिपकलियाँ, मकड़ियाँ, मच्छर, जुएँ, काँतर, बिच्छू इत्यादि की कोठरी में भरमार थी। पाँच वर्ष तक वीर लानोइ इसी कोठरी में पड़ा-पड़ा सड़ा। यहाँ पड़े-पड़े उसने कई अच्छे ग्रन्थ भी लिखे, परन्तु, वह अपने इस जीवन से बिल्कुल उकता गया। बहुत दिनों बाद फ़िलिप की ओर से प्रस्ताव रक्खा गया कि यदि लानोइ अपनी आँखें निकलवाने पर राज़ी हो जाय तो उसे छोड़ा जा सकता है। लानोइ आँखें निकलवा कर जेल से छुटकारा पाने पर लगभग राज़ी हो गया था। परन्तु अपनी स्त्री के मना करने पर पीछे से उसने इन्कार कर दिया। रेनेनबर्ग के ग्रोनिंजन सरकार को सुपुर्द करते ही ऑरेञ्ज ने ग्रोनिंजन के चारों ओर घेरा डलवा दिया

था। ऑरेञ्ज के पास विश्वासी और चरित्रवान अफसर नहीं थे। उसे बारथोल्ड एण्टीस और काउण्ट फिलिप होहेन्लो जैसे मनुष्यों पर निर्भर रहना पड़ता था। ये लोग अच्छे घरानों के होकर भी शराब, नाच-रँग, लूट-मार और अत्याचार करने के आदी थे। परन्तु साथ-साथ वीर, साहसी और देश के लिए जी जान से लड़ने वाले भी थे। ऑरेञ्ज का भाई जॉन नसाऊ जेल्डरलैण्ड का गवर्नर था। परन्तु वह बिल्कुल दरिद्र हो रहा था। जिस मकान में वह रहता था उसकी आधी छत्त टूट गई थी। उसे ठीक करवाने तक के लिए रुपया नहीं था। बनिये और टाल वाले ने रसद देने से इन्कार कर दिया था और पिछले दाम के लिए नोटिस दे दी थी। पंचायतों के रोज़ आपस में ही झगड़े थे। परस्पर के कलह-ईर्ष्या और आये दिन की तू-तू मैं-मैं से ंग आकर आखिरकार जॉन नसाऊ जेल्डरलैण्ड की गवर्नरी छोड़ अपने घर जर्मनी चला गया। उसकी स्त्री मर चुकी थी और उसके कई बाल-बच्चों की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं था, परन्तु, अपने जवान लड़के विलियम लुई को जॉन नसाऊ देश की सेवा करने के लिए नेदरलैण्ड में ही छोड़ गया था। विलिमय लुइ अपने कुल की रीति के अनुसार भरी जवानी में तलबार लेकर देश-सेवा के लिए मैदान में उतरा था। ऑरेञ्ज को अपने भाई का निश्चय अच्छा नहीं लगा। आवश्यकता के समय जॉन नसाऊ के देश छोड़कर चल देने पर उसे दुःख हुआ। उसने कहा कि 'जब तक जरासा भी प्रयत्न किया जा सकता है हम लोगों को प्रयत्न नहीं छोड़ना चाहिए। जब-जब हम पर मुसीबतें आती हैं तब-तब ईश्वर हमारी परीक्षा लेता है। यदि

हम अपनी हिम्मत बनाये रखें तो ईश्वर हमारी अवश्य सहायता करेगा। उसकी भुजायें बहुत लम्बी हैं। निराश नहीं होना चाहिए।

२२ जुलाई सन् १५८० ई० को मैथियस ने एएटवर्प में सर्व-साधारण की एक सभा बुलाई। उसमें अपना दुखड़ा रोते हुए कहा कि आप लोग एलेन्कौन से पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। आस्ट्रिया के राज-वंश से बिल्कुल नाता तोड़ने का विचार कर रहे हैं। विदेशी राजा को देश सौंपने का विचार करना अत्यन्त अनुचित है। मेरे निजी खर्च तक का आप प्रबन्ध नहीं करते; मुझ पर बहुत-सा कर्जा हो गया है।" पंचायतों की ओर से मैथियस की निजी आवश्यकताओं के सम्बन्ध में नम्रतापूर्ण उत्तर दे दिया गया। फिलिप के सम्बन्ध में कहा गया कि "वह किस प्रकार से समझौता करने पर तैयार ही नहीं होते हैं इसलिए उनसे सम्बन्ध तोड़ना ही पड़ेगा। जर्मनी के सम्राट ने भी हमारी कुछ सहायता नहीं की इसलिए आस्ट्रिया के राज-वंश से हमें अब कुछ आशा नहीं है। कुछ दिन बाद पंचायतों के प्रतिनिधि एलेन्कौन से मिले। २९ सितम्बर को एलेन्कौन और पंचायतों के प्रतिनिधियों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये। हालैण्ड और जीलैण्ड की पंचायतों ने इस समझौते में भाग नहीं लिया क्योंकि ये प्रान्त आरेञ्ज के अतिरिक्त अन्य किसी को अपना राजा बनाने के लिए तैयार नहीं थे। आरम्भ से ही हालैण्ड और जीलैण्ड ऑरेञ्ज को शासन-भार देने का हठ कर रहे थे। ऑरेञ्ज बहुत समझाता था। परन्तु वे अपने हठ पर अड़े हुए थे। फिलिप पोर्चुगाल को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया था।

नेदरलैण्ड के विद्रोहियों को पाठ पढ़ाने के लिए उसे पोर्च्युगाल में नया खज़ाना मिल गया था। ग्रेनविले बहुत दिनों से फिलिप को लिख रहा था कि नेदरलैण्ड का विद्रोह खत्म करने का एक ही उपाय है कि ऑरेञ्ज को खत्म कर दिया जाय।" ग्रेनविले की राय थी कि सरकार की तरफ़ से घोषणा निकाली जाय कि जो ऑरेञ्ज को मारेगा उसे माला-माल कर दिया जायगा। इस घोषणा से यूरोप भर के हत्यारों की आँखें ऑरेञ्ज के ऊपर लग जाँयगी। यदि ऑरेञ्ज मारा न भी जा सका तो भी कम से कम वह अपनी जान के डर से स्वच्छन्दता से इधर-उधर तो न घूम फिर सकेगा। देश-भक्तों के काम में बाधा पड़ जायगी। फिलिप ने ग्रेनविले की सलाह मान कर १५ मार्च सन् १५८० को यह घोषणा निकाली। "ऑरेञ्ज ने ही नेदरलैण्ड में सारे उत्पात खड़े किये हैं। उसी के कारण देश में इतना रक्त बहा है। उसने एल्वा, डॉन जान इत्यादि का सशस्त्र विरोध करके राज–विद्रोह किया है। राजा और प्रजा दोनों के वैरी ऑरेञ्ज का सिर जो कोई उतार लावेगा उसे २५०००) पुरस्कार मिलेगा। यदि वह अपराधी होगा तो उसके सारे पिछले अपराध क्षमा कर दिये जाँयगे। यदि वह सरदार नहीं होगा तो सरदार बना दिया जायगा।" आरेञ्ज ने इस घोषणा का जवाब छपवाया। फिलिप ने जो दोष उसके ऊपर लगाये थे उनके उत्तर में उसने फ़िलिप के सारे अपराध बतलाये और लिखा "नेदरलैण्ड में कभी कोई राजा नहीं था सरदार अमीर या नवाब, जो कुछ कहिए, इस शर्त पर नेदरलैण्ड का शासक चुना जाता था कि वह प्रजा के पूर्व अधिकारों की पूर्ण रूप से रक्षा करेगा। यदि शासक प्रजा के अधिकारों की रक्षा नहीं

करता था तो वह पद से तुरन्त हटा दिया जाता था। फ़िलिप भी
इसी प्रकार का नेदरलैंड का शासक था। स्पेन की गद्दी पर ठ
कर उसने नेदरलैंड की प्रजा के पवित्र अधिकारों को बुरी तरह
ठुकराया है इसलिए उसे नेदरलैंड का शासक रहने का अधिकार
नहीं है। फिलिप ने इतनी हत्यायें, इतने ज़ुल्म और इतना व्यभि-
चार किया है कि उसे दूसरे के चरित्र पर टीका-टिप्पणी करने का
अधिकार नहीं है। उसके मित्र पादरी जनाब ग्रेनविले साहब, जिनकी
राय से यह घोषणा निकाली गई है, वही हज़रत हैं जिन्होंने
सम्राट मैक्स मिलियन को विष दिया था। इन दोनों का मुझ पर
यह दोष लगाना कि मैं प्रजा के हृदय में राजा के प्रति अविश्वास
उत्पन्न कराता फिरता हूँ बड़ा हास्यास्पद लगता है। फिलिप और
ग्रेनविले स्वयं अविश्वास की हवा में दिन-रात रहते हैं। डेमो-
स्थनीज़ जैसे जग-प्रख्यात बुद्धिमान का कहना है कि अत्याचारी
राजा के प्रति प्रजा का सबसे बड़ा केवल एक बचाव है कि कभी
किसी समय, प्रजा राजा पर विश्वास न करे। मैंने इस विद्वान
से पाठ लेकर जनता के हृदय में राजा के प्रति अविश्वास पैदा
करना अपना परम कर्तव्य मान लिया है। मेरे सिर काट लेने
वाले मनुष्य के लिए अब जो खुल्लम-खुल्ला पुरस्कार देने की घोषणा
निकाली गई है वह मेरे लिए कोई नई ख़बर नहीं है। मुझे मालूम
बहुत दिनों से है कि मेरी जान लेने का प्रयत्न किया जा रहा है।
पहले भी बहुत बार बहुत से हत्यारों और विष देने वालों से इस
सम्बन्ध में सौदे हो चुके हैं। मैं अपना जीवन और अपना सर्व-
स्व भगवान के चरणों पर रख चुका हूँ। भगवान की जो इच्छा
होगी, जिसमें वह, मेरा हित और अपनी बड़ाई समझेगा, करेगा।

अगर मेरे चले जाने से देश का उपकार हो सके तो मैं सबको विश्वास दिलाता हूँ कि आजन्म निर्वासन में रहने के लिए मैं तैयार हूँ। ऐसा निर्वासन मुझे बड़ा सुखदाई होगा। ऐसे निर्वासन की मृत्यु मुझे बड़ी मीठी लगेगी। क्या मैंने अपनी जागीर इसलिए नष्ट की थी कि मैं अधिक अमीर बन जाऊँगा? क्या मैंने अपने भाइयों को इसलिए गवाँया था कि मुझे नये भाई मिल जाँयगे? क्या मैंने अपने लड़के को इतने दिनों से क़ैद में इसलिए छोड़ रक्खा है कि मुझे कोई दूसरा मनुष्य लड़का दे सकता है? मैंने अपना घर-बार सारा संसारिक ठाट-बाट केवल इसीलिए फूँका है कि मेरे देश वासियों को स्वतंत्रता मिल जाय। यदि मेरे देश छोड़कर चले जाने से या मेरी मृत्यु से देश को सुख और स्वतंत्रता मिल सकती हो तो मैं देश की आज्ञा सिर आँखों पर रखने को तैयार हूँ। मेरे देश वासियो! दो, दो, मुझे आज्ञा दो। मैं पृथ्वी के उस सिरे पर चला जाने को तैयार हूँ। मेरे सिर पर किसी राजा और महाराजा का अधिकार नहीं है। मैं तो अपना सिर तुम्हारे हाथ में दे चुका हूँ। देश की भलाई और स्वतंत्रता के लिए जिस तरह तुम्हें उपयोगी लगे मेरा सिर काम में लाओ। मेरे अनुभवों की और मेरी बची-खुची जागीर की यदि तुम्हें आवश्यकता हो तो वह तुम्हारी भेंट है।" १३ दिसम्बर को ऑरेञ्ज का यह उत्तर डेफ्ट में संयुक्त-प्रान्तों की सभा के सम्मुख रखा गया। सभा ने ऑरेञ्ज में अपना पूर्ण विश्वास बतलाते हुए फ़िलिप की नीच घोषणा पर अत्यन्त घृणा प्रकट की।

(२१)

स्वाधीनता की घोषणा

इस साल सरकारी सेना से देश-भक्तों की इधर-उधर केवल छोटी-मोटी मुठ-भेडें होती रहीं। किसी स्थान पर घोर युद्ध न हुआ। स्टीनविक नामी स्थान पर देशद्रोही रेनेनबर्ग ने घेरा डाला था परन्तु देश-भक्तों की दृढ़ता देखकर उसे वहाँ से शीघ्र ही हट आना पड़ा। फिर उसने ग्रोनिंजन नगर को घेरा परन्तु, वहां पहुँचते ही वह बीमार पड़ गया और चारपाई पर तड़प-तड़प कर मर गया। मरते समय रेनेनबर्ग की आँखों के सामने वही ग्रोनिंजन नगर था, जिसको उसने लोभ में पड़कर शत्रु के हाथों बेच दिया था। मरते समय ग्रोनिंजन को सामने देख कर अपने देशद्रोह का चित्र रेनेनबर्ग की आँखों के सामने नाच उठा। हाय ग्रोनिंजन! ग्रोनिंजन! तेरी दीवारें मैंने फिर क्यों देखीं? कहते-कहते बड़े कष्ट से उसके प्राण निकले।

संयुक्त-प्रान्तों के आन्तरिक शासन में बड़ा फेर-फार हो गया था। १३ जनवरी को संयुक्त-प्रान्तों की सभा ने, सब प्रान्तों से थोड़े-थोड़े प्रतिनिधि लेकर, ३० सदस्यों की एक कार्य्यकारिणी संयुक्त-प्रान्तों का शासन चलाने के लिए नियुक्त कर दी थी। बिना कार्य्यकारिणी की राय लिये अन्य राष्ट्रों से किसी प्रकार की सन्धि भी नहीं की जा सकती थी। परन्तु इस कार्य्यकारिणी को सार्व-देशिक पंचायतों के अधिकार और शासन में हस्तक्षेप करने अथवा

ड्यूक एलेन्कौन से होने वाले प्रबन्ध में दस्तन्दाज़ी का अधिकार नहीं था। कार्य्यकारिणी के सदस्य केवल नेदरलैण्ड-वासी ही हो सकते थे। फ़िलिप को राज्य-च्युत करने के सम्बन्ध में बहुत दिनों से विचार हो रहा। यह ऐसा विषय था कि यदि एक बार आगे रख दिया गया तो फिर पीछे हटाया नहीं जा सकता था। परन्तु नेदरलैण्ड के सामने और कोई इज्ज़त बचाने का मार्ग ही नहीं था। अतएव २६ जुलाई सन् १५८१ ई० को हेग नगर में सारे प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने एकत्र होकर यह घोषणा कर दी;—"नेदरलैण्ड पूर्ण रूप से स्वाधीन है। फ़िलिप का नेदरलैण्ड पर कुछ अधिकार नहीं है।" स्वतन्त्रता की घोषणा तो हो गई परन्तु भाग्य दुर्से देश में ऐक्य न हुआ। ऑरेञ्ज ने बहुत समझाया परन्तु उसका कहा न मान कर वैल्डून प्रान्त अन्य प्रान्तों से अलग हो गये थे। हालैण्ड और ज़ेलैण्ड ऑरेञ्ज के अतिरिक्त किसी क अपने सिर पर बैठाने को राज़ी नहीं थे। शेष प्रान्तों ने फ़िलिप को पदच्युत करके एलेन्कौन के सिर पर ताज रखना स्वीकार कर लिया था।

हालैण्ड और ज़ेलैण्ड बार-बार ऑरेञ्ज से प्रार्थना करते थे कि हमारे शासन की बागडोर आप अपने हाथ में ले लीजिए। ऑरेञ्ज राज़ी नहीं होता था। २९ मार्च सन् १५८० को हालैण्ड और ज़ेलैण्ड की पचायतों ने एक प्रस्ताव भी पास कर डाला था कि, 'हम न तो फ़िलिप को अपना राजा मानते हैं न उसके साथ किसी प्रकार का समझौता करने को तैयार हैं। सरकारी कागज़ों पर से उसका नाम सदा के लिए उड़ा दिया जाय। उसके नाम की मोहर तोड़ डाली जाय। कागज़ों पर ऑरेञ्ज का नाम और

मोहर रहे।" यूट्रेक्ट प्रान्त ने भी यही प्रस्ताव पास कर लिया था। परन्तु ऑरेञ्ज ने ये प्रस्ताव स्वीकार नहीं किये थे। इसलिए सब कार्रवाई गुप्त रक्खी गई थी। ९ जुलाई सन् १५८१ को इन प्रान्तों के सारे सरदारों, अमीर-उमरा और पंचायतों ने फिर ऑरेञ्ज से प्रार्थना की कि कम से कम जब तक युद्ध जारी है तब तक के लिए ही आप इन प्रान्तों का अधिकार अपने हाथ में ले लीजिए। समय की शर्त इसलिए लगा दी गई थी कि सब अच्छी तरह जानते थे कि अगर ऐसी शर्त नहीं लगाई जायगी तो ऑरेञ्ज प्रान्तों का शासन अपने हाथ में लेने के लिए हर-गिज़ राज़ी नहीं होगा। युद्ध समाप्त होने तक प्रान्तों का शासन करने के लिए ऑरेञ्ज राज़ी हो गया। १५५५ ई० में ऑरेञ्ज फ़िलिप की ओर से प्रान्तों का शासक बनाया गया था। उस समय फ़िलिप राजा था और ऑरेञ्ज फ़िलिप का नियुक्त किया हुआ प्रान्तों का सूबेदार। आज ऑरेञ्ज जनता का चुना हुआ प्रान्तों का राजा था। प्रान्तों की पंचायतें किसी न किसी तरह ऑरेञ्ज को सदा के लिए सारे अधिकार दे देना चाहती थीं। कुछ ही दिन बाद पंचायतों की एक गुप्त सभा करके ऑरेञ्ज को शासनाधिकार देने में जो समय की शर्त रक्खी गई थी उसे चुप-चाप रद्द कर दिया। ऑरेञ्ज को स्थायी रूप से जीवन भर के लिए प्रान्त का सारा शासनाधिकार दे दिया गया परन्तु ऑरेञ्ज को इस गुप्त प्रस्ताव की ख़बर न दी गई। २४ जुलाई को शासन ऑरेञ्ज को सुपुर्द करने और उसके प्रति शपथ लेने की रस्म पूरी की गई। पंचायतों की ओर से कहा गया कि, "फ़िलिप हालैण्ड और ज़ीलैण्ड का सूबेदार था। परन्तु उसने प्रान्तों की रक्षा न

करके उनको गुलाम बनाने का ही सदा प्रयत्न किया है। इसलिए आज से हम उससे अपना सम्बन्ध तोड़ते हैं। जनता की ओर से शासन के सारे अधिकार ऑरेञ्ज को दिये जाते हैं। जनता की शक्ति और जनता के अधिकारों की मूर्ति, ऑरेञ्ज के प्रति हम सब श्रद्धा की शपथ लेते हैं।" इसके बाद २६ जुलाई को संयुक्त प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने हेग में एकत्र होकर, फिलिप को राजा के पद से च्युत कर देने का प्रान्तों की ओर से एलान कर दिया। उन्होंने मठों के स्थापित होने के समय से प्रारम्भ होने वाले ग्रेनविले, एल्वा, रेकुइसेंज, डॉन जान इत्यादि के अत्याचारों और शहरों के नष्ट होने, एग्मोएट हार्न इत्यादि बड़े-बड़े सरदारों को सूलियाँ मिलने, सरदार मोएटनी और बर्घन जो राजदूत बनकर स्पेन गये थे, नियम विरुद्ध मरवा डालने, फिलिप को वादे पर वादे तोड़ने, विश्वासघात करने इत्यादि का ज़िक्र करते हुए अन्त को ऑरेञ्ज के सिर पर सरकार की ओर से इनाम लगाये जाने का ज़िक्र किया और कहा—"सारा संसार मानता है कि राजा को अपनी प्रजा की बच्चों की भाँति रक्षा करनी चाहिए; प्रजा का पालन-पोषण करना चाहिए। जब राजा अपना कर्तव्य भूल कर प्रजा को लूटने लगता है अथवा प्रजा को गुलाम समझ कर प्रजा पर अत्याचार करने लगता है तब राजा-राजा नहीं रहता। वह आततायी, अत्याचारी, लुटेरा बन जाता है। ऐसे राजा को गद्दी से उतार देने का प्रजा को अधिकार है। इसी सर्वमान्य सिद्धान्त के अनुसार संयुक्त प्रान्त फिलिप को राज्यच्युत करते हैं। प्रान्तों ने न्याय और क़ानून की दृष्टि से फिलिप को गद्दी से हटाने का निश्चय किया था। जिन शर्तों पर फिलिप नेदरलैण्ड का राजा

हुआ था वे शर्तें फ़िलिप ने पूरी नहीं कीं, इसलिए वह कानून और न्याय की दृष्टि से नेदरलैण्ड का राजा नहीं कहा जा सकता। फ़िलिप को गद्दी से उतारने वालों का प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने का बिल्कुल विचार नहीं था। पंचायतें फ़िलिप के स्थान में नेदरलैण्ड की गद्दी पर बैठाने के लिए दूसरे राजा की तलाश में थीं। परन्तु परिस्थिति ऐसी आ बनी थी कि बिना इच्छा-विचार के शक्ति और प्रभुता प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथों में आ गयी। अज्ञानावस्था में ही सही; परन्तु, प्रजा-तन्त्र की राह पर देश ने क़दम रख दिया था। इस घोषणा के निकलने के बाद मैथियस चुपचाप जर्मनी को कूच कर गया। नेदरलैण्ड में अब उसकी कुछ ज़रूरत नहीं रही थी। मैथियस निरा छोकरा था। कुछ राजनीतिज्ञों ने उसे अपना काम बनाने के लिए नेदरलैण्ड बुला लिया था। ऑरेञ्ज ने उसे अपने हाथ में कठ-पुतली बना कर जो चाहा किया। जब मैथियस की किसी को कोई ज़रूरत न रही, तभी वह दूध की मक्खी की तरह नेदरलैण्ड की राजनीति में से निकाल कर फेंक दिया गया।

ख़ैर, पंचायतों ने मैथियस को पचास हज़ार सालाना की पेंशन देना स्वीकार कर लिया। मगर बाद को शायद पेन्शन बराबर नहीं दी गई। नेदरलैण्ड की इस समय विचित्र अवस्था थी। फ़िलिप को गद्दी से उतार दिया गया था। अब फ़िलिप की प्रभुता दो भागों में उसके स्थान पर दो मनुष्यों को दी जा रही थी। ऑरेञ्ज को इच्छा न होने पर भी हालैण्ड और जेलैण्ड का शासन अपने हाथों में लेना पड़ा था। अन्य प्रांतों का अधिकार एलेन्कौन को देना निश्चय हो गया था। परन्तु, पंचायतों ने

अभी तक बाक़ायदा यह बात स्वीकार नहीं की थी। ऑरेञ्ज ने बहुत प्रयत्न किया कि हालैण्ड और जेलैण्ड भी संयुक्त प्रांतों की तरह एलेन्कौन की आधीनता स्वीकार कर लें; परंतु ये प्रांत अपने निश्चय पर अटल रहे। हारकर ऑरेञ्ज को फिलहाल उनकी बागडोर अपने हाथ में लेनी पड़ी। अन्य प्रांतों में भी ऐसे लोगों की काफ़ी संख्या थी। जो एलेन्कौन की आधीनता स्वीकार करने को राज़ी नहीं थे। परंतु, ऑरेञ्ज के बहुत समझाने-बुझाने पर अन्य प्रांतों ने आख़िरकार एलेन्कौन की आधीनता स्वीकार कर ली। ऑरेञ्ज ने एलेन्कौन जैसे निकम्मे मनुष्य को नेदरलैण्ड का राजा बनाना उचित समझा यह बड़े अश्चर्य की बात लगती है। क्या मनुष्यों के जौहरी आरेञ्ज ने एलेन्कौन की अच्छी तरह परख करके उसे पहचान लिया था? क्या आरेञ्ज जानता था कि वह धूर्त, नीच और निकम्मा है? शायद, एलेन्कौन को अच्छी तरह जान लेने का अभी तक मौक़ा ही नहीं आया था, स्वयं फ़िलिप का स्थान ऑरेञ्ज लेना नहीं चाहता था। यदि उसने नेदरलैण्ड का ताज अपने सिर पर रख लिया होता तो शायद दोष ढूँढने वाली दुनिया यह समझती कि वह देश को स्वतंत्र करने का प्रयत्न नहीं कर रहा था, अपने लिए ताज तैयार कर रहा था। बिना किसी बाहरी सहायता के केवल अपने बल पर, फिलिप जैसे शक्तिशाली अत्याचारी का सामना करना भी नेदरलैण्ड के लिए असम्भव था। इसलिए फ्रांस और इंग्लैण्ड की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए ही, शायद, आरेञ्ज ने एलेन्कौन को नेदरलैण्ड का राजा बनाना उचित समझा हो। एलेन्कौन सनातनी था। कुछ लोग नेदरलैण्ड में उसका विरोध केवल सनातनी होने के कारण करते थे ने

आरेञ्ज की ओर से कहा गया कि जब धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा की जाती है, तब सनातनी और सुधारक का प्रश्न ही नहीं रहता। राजा चाहे सुधारक दल का हो या सनातन-धर्मी; यदि वह हम पर अत्याचार न करके हमारी रक्षा करने को तैयार हो, तो हमें उसकी अधीनता स्वीकार करने में उज्र नहीं होना चाहिए। फ़िलिप को गद्दी से इसलिए नहीं उतारा जा रहा है कि वह सनातनी है। उसके अत्याचारों के कारण हमने उसे अलग किया है। कुछ लोगों को डर था कि एलेन्कौन, नेदरलैण्ड को फ्रान्स के राज्य में मिला लेगा। इसलिए यह भी विचार हुआ कि उस को केवल नाम-मात्र को ही सत्ता दी जाय; वास्तविक सत्ता पंचायतों के हाथ में ही रहे।

इन दिनों एलेन्कौन इंग्लैण्ड में अपनी प्रेमिका एलिज़बेथ के पास था। दोनों ने एक-दूसरे की अँगूठियाँ बदल ली थीं। सब जगह ख़बर फैल चुकी थी कि शीघ्र ही दोनों का विवाह होने वाला है। नेदरलैण्ड में लोग आतशबाज़ी छुड़वाने लगे थे। इंग्लैण्ड में भी चारों ओर खुशियाँ मनाई जाने लगीं। चारों ओर विवाहोत्सव हो रहे थे। केवल विवाह की देर थी। एलेन्कौन को इंग्लैण्ड से नेदरलैण्ड बुलाया गया और एण्टवर्प में वैसे ही ठाठ-बाट, धूम-धाम से उसका राज्याभिषेक किया गया जैसा किसी दिन फ़िलिप का किया गया था। एलेन्कौन के सामने प्रजा की तरफ़ से २७ शर्तें रक्खी गईं। एलेन्कौन ने सारी शर्तें स्वीकार करके हस्ताक्षर कर दिये। इन शर्तों के अनुसार उस को पंचायतों की सम्मति के बिना किसी आवश्यक विषय में निश्चय करने का अधिकार नहीं था।

(२२)

ऑरेञ्ज की हत्या का प्रयत्न

१८ मार्च सन् १५८२ ई० एलेन्कौन की वर्ष-गाँठ का दिन था। इस दिन नेदरलैण्ड भर में समारोह मनाया गया, महल में भी एक बृहत् भोज देने की योजना की गई। आरेञ्ज इत्यादि सारे सरदार बुलाये गये। भोज में काउण्ट होहेनलो, लावल तथा अपने पुत्र मौरिस और दो भतीजों के साथ आरेञ्ज एक मेज पर बैठा खाना खाता-खाता गप्पें लड़ा रहा था। जब वह उठकर चलने लगा तो नाटे क़द के एक बदमाश नौकर ने आगे बढ़कर उसके हाथ में एक अर्जी रख दी। आरेञ्ज अर्जी पढ़ने में लगा था कि बदमाश ने पिस्तौल निकाल कर आरेञ्ज के सिर पर वार किया। गोली दाहिने कान के नीचे घुसी और तालू फोड़ती हुई जबड़े में चली गई। आरेञ्ज के दो दाँत बाहर निकल पड़े। दाढ़ी और बालों में आग लग गई। आरेञ्ज की आँखों के सामने अन्धकार छा गया और वह बेहोश सा खड़ा रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है। बाद को आरेञ्ज के कहने से मालूम हुआ कि जब उस को गोली लगी तो उसे ऐसा लगा था मानों जिस मकान में वह खड़ा था उसका एक भाग एकाएक धड़ाम से पृथ्वी पर आ गिरा। गोली

लगने के बाद जैसे ही ऑरेञ्ज को होश आया उसने चिल्लाकर कहा—"मारना मत! मेरी हत्या का प्रयत्न करने वाले को मैं क्षमा करता हूँ।" परन्तु उसके ये शब्द निकलने के पहले ही हत्यारे के टुकड़े-टुकड़े हो चुके थे। आरेञ्ज को पलंग पर लिटा दिया गया। घाव से खून इतना बह रहा था कि किसी को उसके बचने की आशा नहीं थी। नगर में अफ़वाह उड़ गई कि एलेन्कौन ने आरेञ्ज को मरवा डाला। जनता को किसी पर विश्वास नहीं था, इसलिए उसने अपने एक प्रतिनिधि को स्वयं अपनी आँखों से आरेञ्ज की हालत देखने के लिए भेजा। आरेञ्ज ने भी समझा कि मैं बच नहीं सकूँगा। वह दुःख प्रकट करके कहने लगा—"मेरे बाद बेचारे एलेन्कौन की क्या दशा होगी?" डाक्टरों ने उससे प्रार्थना की कि आप चुप-चाप पड़े रहें, नहीं तो मुँह के घाव से खून निकलना बन्द नहीं होगा। ऑरेञ्ज चुप हो गया। परन्तु उसका हृदय चुप कैसे हो सकता था? वहाँ तो देश को स्वतंत्र बनाने की चिन्ता आँधियाँ खड़ी कर रही थी। उसने एक खत लिखवा कर जनता के पास भिजवाया—"मेरे मर जाने पर एलेन्कौन का हुक्म अवश्य मानना।" आरेञ्ज का पुत्र मौरिस था तो कुल १५ वर्ष का बालक, परन्तु बड़ा शान्त चित्त, वीर और होशियार था। आरेञ्ज जैसे पिता के गोली लगने पर भी वह जरा नहीं घबराया। चुपचाप हत्यारे की लाश के पास खड़ा रहा, उसका विचार हुआ कि जिन लोगों ने जल्दी से हत्यारे को मारकर उसका मुँह बन्द कर दिया है वही कहीं इस षड्यन्त्र में शरीक न हों। हत्यारा पकड़े जाने पर कहीं भेद न खोल दे इसी डर से न कहीं उसे तुरन्त मार डाला गया हो।

मौरिस ने हत्यारे की लाश की तलाशी ली। हत्यारे के कपड़ों में मौरिस को कुछ कागज़ मिले। कागज़ों को लेकर वह एक विश्वस्त नोकर के साथ अलग कमरे में चला गया और वहाँ बैठकर वह कागज़ात को देखने लगा। कागज़ात स्पेनिश भाषा में लिखे थे। होहेन्लो ने हुक्म दे दिया था कि कोई मनुष्य मकान से बाहर न जाने दिया जाय और न बाहर से ही कोई अन्दर आने दिया जाय। सेएट एल्डगोएडे भी आ गया था। उसने कागज़ों को पढ़ कर मालूम किया कि हत्यारा एएटवर्प में रहने वाले एक व्यापारी का नौकर था। व्यापारी और उसका मुनीम दोनों षड्यन्त्र में शरीक थे। व्यापारी का दिवाला निकलने वाला था इसलिए उसने आरेञ्ज की हत्या करके इनाम के रुपये से दिवाला बचाने का निश्चय किया था। व्यापारी ने फ़िलिप से पत्र-व्यहार करके सौदा तय कर लिया था। फ़िलिप ने अपने हाथ से पत्र लिख कर व्यापारी के पास अपनी मुहर लगाकर भेजे थे। व्यापारी ने २८७७) अपने नौकर को आरेञ्ज की हत्या करने के लिए दिये थे। व्यापारी के नाम की २८७७) रु० की हुँडियाँ कागज़ों में मिली। व्यापारी एक दिन पहले ही नेदरलैण्ड छोड़कर भाग गया था। उसका मुनीम पकड़ा गया, परन्तु, आरेञ्ज की आज्ञा से उसका मुक़दमा निष्पक्ष न्याय से किया गया। फाँसी देने के पहले मुनीम को कोई कष्ट नहीं दिया गया। बेवकूफ़ हत्यारे को विश्वास दिला दिया गया था कि विलियम आरेञ्ज को मार डालने से संसार से सबसे बड़े पापी को मारने का श्रेय मिलेगा और इस पुण्य-कार्य के कारण स्वर्ग के द्वार उसके लिए खुल जायँगे। परन्तु, हत्यारा आरेञ्ज को मार कर

२८७७) रु० प्राप्त करने और स्वर्ग जाने के बजाय इसी संसार में रहने के लिए अधिक इच्छुक मालूम पड़ता था, क्योंकि, उसने ऑरेञ्ज पर हमला करने के कई दिन पहले ही से पत्र लिख-लिख कर कुँवारी मेरी, ईसामसीह, जिब्राईल इत्यादि से अपनी सफलता के लिए मन्नतें माँगनी शुरू कर दी थीं। सफलता से मारकर भाग आने में सहायता करने के लिए इन देवताओं को रिश्वतें देने का भी उसने वायदा किया था। किसी को भेड़, किसी को मेमना और किसी को चढ़ावे में वस्त्र देने का प्रलोभन दिया गया था। ऑरेञ्ज की हत्या का शुभ-कार्य सफलता-पूर्वक समाप्त कर चुकने पर हत्यारे ने आठ दिन तक केवल रोटी और पानी पर रहकर उपवास करने का निश्चय भी कर लिया था। उसके कपड़ों में दो मरे हुए मेढक भी पाये गये, जिन्हें शायद वह किसी जादूगर से अपनी रक्षा करने के लिए लाया था। मालूम होता है, इस बेवकूफ़ बदमाश को उससे कहीं बड़े बदमाशों ने उलटा-सीधा समझा कर उसे ऑरेञ्ज की हत्या करने के लिए तैयार कर लिया था। ऑरेञ्ज १८ दिन तक खतरनाक हालत में पलँग पर पड़ा रहा। घाव अच्छा होने लगा। देश भर में लोग गिरजों में इकट्ठे हो-होकर आँखों में आँसू भरकर उसके लिए ईश्वर से प्रार्थनायें करते थे। एक दिन घाव में से एकाएक फिर खून जारी हो गया। लोगों को उसके बचने की आशा न रही। आरेञ्ज भी निराश हो गया। उसने अपने पुत्रों को बुला कर जो कुछ अन्त समय कहना था, कह दिया। घाव पर पट्टी बाँधने के लिए मुँह में जगह नहीं थी। खून रोकने के लिए अगर कसकर पट्टी बाँध भी दी जाती तो दम घुट कर बीमार के

मर जाने का भय था। सौभाग्यवश एलेन्कौन के वैद्य को एक बड़ी अच्छी तरकीब सूझ गई। उसने कहा कि यदि बारी-बारी से भिन्न-भिन्न आदमी घाव के मुँह को उस समय तक हाथ से बन्द किये बैठे रहें जबतक कि खून बिल्कुल बन्द न हो जाय तो मरीज़ अवश्य बच जायगा। यही युक्ति काम में लाई गई। अठारह दिन बीमार पड़े रहने के बाद ऑरेन्ज अच्छा हो गया, परन्तु उसकी प्राण-प्रिय चिर-संगिनी शाहज़ादी बूरबन को जो सात वर्ष से दुःख-सुख में सदा उसके निकट रही थी, और जो उसकी बीमारी के १८ दिवसों में दम भर के लिए उसके पलँग के पास से अलग नहीं हुई थी ऑरेन्ज के घाव में से आखिरी बार खून जारी हो जाने से बड़ा धक्का लगा था। चिन्ता के कारण उसे बहुत ज़ोर का बुखार चढ़ आया था। ५ मई को पति के अच्छे होने के तीसरे दिन शाहज़ादी बूरबन मर गई, 'पतंग दीपक की भेंट हो गया।' लोगों को डर हुआ कि शाहज़ादा ऑरेन्ज को यह नया दुःख फिर कहीं बीमार न बना दे। शाहज़ादी बूरबन बड़ी सती-साध्वी स्त्री थी। ऑरेन्ज की उसने बड़ी सहायता की थी। सारे देश ने उसकी मृत्यु पर दुःख मनाया। ९ मई को शाहज़ादी बूरबन की अन्त्येष्टि-क्रिया की गई। शाहज़ादी छः लड़कियाँ छोड़ कर मरी थी। इधर भागे हुए व्यापारी ने अलेक्ज़ेण्डर फ़ारनीस से जाकर अपनी कृति का सारा हाल कह सुनाया। उसने फ़ारनीस को विश्वास दिला दिया कि ऑरेन्ज का काम तमाम हो चुका है। फ़ारनीस ने ऑरेन्ज के मारे जाने का आनन्ददायी समाचार पाते ही, तुरन्त, एण्टवर्प ब्रसेल्स इत्यादि नगरों की पंचायतों को खत लिखे—"अब तो ज़ालिम देश-द्रोही

ऑरेञ्ज मर चुका है। अब आप लोगों को चाहिए कि अपने राजा की शरण में लौट आवें। महाराज प्रेम से हाथ फैला कर अभी तक आप लोगों को बुला रहे हैं।" मगर फारनीस ने पत्र लिखने में जरा जल्दबाज़ी दिखाई थी। 'ज़ालिम देशद्रोही' विलियम ऑरेञ्ज अभी तक जीवित था। यद्यपि, अधिक दिनों के लिए नहीं। हालैण्ड और जेलैण्ड की पंचायतों की आजकल बैठकें हो रही थीं। वहां सब रोज़ ऑरेञ्ज के समाचारों की प्रतीक्षा किया करते थे। जैसे ही ऑरेञ्ज अच्छा हुआ, इन प्रान्तों की ओर से प्रांतों पर राज करने के लिए फिर उस पर जोर दिया जाने लगा। बहुत दिनों से ये प्रांत ऑरेञ्ज के पीछे पड़े हुए थे। आखिरकार ऑरेञ्ज ने उनकी बात स्वीकार कर ली। एलेन्कोन ने भी वादा किया कि इन प्रांतों पर अधिकार जमाने का मैं कभी प्रयत्न नहीं करूँगा। ऑरेञ्ज ने हालैण्ड और जेलैण्ड की जिद के सामने सिर झुका कर इन प्रांतों का राजा बनना स्वीकार कर लिया। परन्तु जिस प्रकार उसने एलेन्कोन को अन्य प्रान्तों की गद्दी पर बैठा कर भी एलेन्कौन के हाथ में कुछ शक्ति नहीं दी थी, उसी प्रकार उसने अपने हाथ में भी सत्ता नहीं रक्खी। शासन के सारे अधिकार पंचायतों के ही हाथ में रहे। हालैण्ड और जेलैण्ड का ताज स्वीकार कर लेने से ऑरेञ्ज की शक्ति में वृद्धि नहीं हुई। उलटे उसकी शक्ति घट गई। अगर विलियम ऑरेञ्ज ताज पहनने तक जीवित रहा होता तो इन प्रांतों में इंग्लैण्ड की तरह एक नियंत्रित राजा की अध्यक्षता में लोक-सत्तात्मक राज्य कायम हुआ होता। परन्तु भगवान की इच्छा से अमेरिका की तरह पूर्ण प्रजातंत्र राज्य कायम हुआ।

विलियम ऑरेञ्ज नियम-पूर्वक राज्याभिषेक होने से पहले ही संसार से उठ गया।

सन् १५८२ ई० में साल भर युद्ध धीरे-धीरे चलता रहा। फारनीस के पास पर्याप्त सेना नहीं थी। सयुँक्त प्रान्तों का एलेन्कौन से समझौता हो जाने के बाद फारनीस ने स्पेन से नई सेना मँगा ली थी। सेना के पहुँचते ही उसने शेल्ड के किनारे पर बसे हुए ऊडेनार्डे नाम के नगर पर घेरा डाला। फारनीस स्वयं खड़ा होकर अपने पड़ाव के चारों ओर खाइयाँ खुदवाता था। अन्य सब काम की देख-रेख भी स्वयं करता था। जितना शीघ्र हो सके खाइयाँ बनाने का काम ख़त्म करके वह नगर पर आक्रमण करना चाहता था। समय बचाने के विचार से अपना खाना भी खाइयों पर मँगा कर खा लेता था। एक दिन ढोलों पर दस्तरख्वान लगा कर मेज बनाई गई और उस पर बैठे हुए फारनीस, एरेम्बर्ग, मौण्टनी, लामोटे इत्यादि खाना खा रहे थे। एक सरदार दूसरे दिन के हमले का संचालन-कार्य अपने हाथ में लेने के लिए फारनीस से बड़ा हठ कर रहा था। इतने ही में शहर की तरफ़ से एक गोला आकर उसके सिर में लगा। सिर की खीलें बिखर गईं। सिर का एक टुकड़ा एक दूसरे मनुष्य की आँख में उचट कर इस ज़ोर से लगा कि उसकी आँख ही निकल पड़ी। देखते ही देखते एक और गोला आकर दस्तरख़ान पर गिरा। सारा खाना तितर-बितर हो गया। फारनीस के साथ बैठे हुए सरदार उठकर भागने लगे। परन्तु, फारनीस वहीं बैठा रहा। उसने नौकरों को नया दस्तरखवान बिछाकर दूसरा खाना लगाने का हुक्म दिया। वह कहने लगा कि दुश्मन को इस बात का सन्तोष मैं कभी नहीं

दूँगा कि उसने मुझे खाना खाने से भगा दिया। फारनीस के हठ
के कारण विवश होकर वहीं अन्य सरदारों को भी बैठना पड़ा।
भाग्य से नगर की ओर से और कोई गोला नहीं आया। जिस
नगर को फारनीस ने इस दृढ़ता से घेरा था उस बेचारे के पास
अन्त में हारने के अतिरिक्त और चारा ही क्या था।

नागरिकों के सौभाग्य से फारनीस की नानी का जन्म इसी
नगर में हुआ था। अपनी नानी की पवित्र स्मृति में फारनीस ने
नगर में लूट-मार और क़त्ल-आम नहीं किया। केवल तीस हज़ार
रुपया वसूल करके नागरिकों को छोड़ दिया। एलेन्कौन ने ऊडेनार्डे
को बचाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया था, परन्तु, उसकी नाक के
नीचे ही फारनीस ने नगर पर अधिकार जमा लिया। दूसरी चढ़ाई
फारनीस ने निनोव नाम के दुर्ग पर की। यहाँ उसको चारों ओर से
रसद मिलनी बन्द हो गई और उसकी फौज भूखों मरने लगी।
यहाँ तक अकाल पड़ा कि सिपाही घोड़े मार-मार कर खाने लगे।
एक दिन फारनीस का एक अफसर फारनीस के खेमे के बाहर
घोड़ी बाँध कर किसी काम के लिए अन्दर गया। बाहर निकल
कर देखा तो काठी और लगाम तो लटक रही है मगर घोड़ी
नदारद है, उसने बहुत शोर-गुल मचाया, मगर, शोर-गुल से
क्या होना था! घोड़ी तो टुकड़े-टुकड़े होकर लोगों के पेट में
भी पहुँच चुकी थी। परन्तु सेना में इतना अकाल होते हुए भी
फारनीस ने निनोव पर अन्त में विजय प्राप्त की। इसके बाद
उसने स्टीनविक पर चढ़ाई की और वहाँ भी विजय प्राप्त की।
इन्हीं चढ़ाइयों में फारनीस का यह वर्ष बीत गया। फारनीस
के पास अब साठ हज़ार फ़ौज हो गई थी। इसकी सेना का

माहवारी ख़र्च साढ़े छः लाख के लगभग था। एलेन्कौन और संयुक्त प्रान्तों की सेना भी काफ़ी बड़ी थी। इन दो बड़ी-बड़ी सेनाओं का ख़र्च देते-देते नेदरलैंड का दिवाला पिटने की नौबत आ गई थी।

---

(२३)

एलेन्कौन का अन्त

जुलाई मास में जब ब्रूगेज़ नगर में एलेन्कौन का स्वागत हो रहा था। ऑरेञ्ज भी वहाँ मौजूद था। वहाँ भी दो मनुष्य आरेञ्ज और एलेन्कौन के खाने में जहर मिलाने का प्रयत्न करते हुए पकड़े गये। पकड़े जाने पर अपराधियों ने स्वीकार किया कि फारनीस के कहने से हम लोग आरेञ्ज और एलेन्कौन को जहर देकर मार डालने का प्रयत्न कर रहे थे। दुर्भाग्य से इस षड्यन्त्र में एग्मोण्ट का छोटा लड़का भी जिसका हाथ उसकी माँ आरेञ्ज के हाथ में दे चुकी थी, शरीक पाया गया। बड़े लड़के ने ब्रसेल्स में दगा करके अपने बाप का नाम बदनाम किया ही था, छोटे साहब उससे भी बढ़कर निकले। इन जनाब को पकड़ कर जेल में डाल दिया गया। मगर आरेञ्ज ने प्रयत्न करके मामला दबा दिया। एग्मोण्ट के नाम को कलंक से बचाने के लिए आरेञ्ज ने उसे छुड़ा कर चुपचाप फ्रान्स भेज दिया।

इधर एलेन्कौन पर भी बेवकूफी का भूत सवार हुआ। फ्रान्स से बहुत से सरदारों ने आकर उसके कान भरना शुरू कर दिये थे। "पँचायतों ने तुम्हें अधिकार ही क्या दिये हैं। चारों तरफ से तुम्हारे हाथ-पैर बाँध दिये गये हैं। यह नाम-मात्र के अधिकार लेकर आप अपने प्रख्यात राज्य-वंश को बदनाम करते हैं। नेदरलैण्ड को फ्रान्स के राज्य में मिला लेने का आपके हाथ में

अच्छा अवसर आ गया है। यदि आप नेदरलैण्ड को फ्रान्स के राज्य में मिलाने का प्रयत्न नहीं करेंगे तो फ्रान्स के राजा भी आपकी सहायता नहीं करेंगे। एलेन्कौन ढीला तो था ही, बहक गया। एक दिन रात को उसने अपने अधिकारियों को बुलाकर सलाह की कि सैनिकों को सिखा-पढ़ा कर सैनिकों और नागरिकों के जगह-जगह झगड़े करा दिये जायँ और फिर इन बलवों को दबाने के बहाने सेना ले जाकर नगरों पर अधिकार जमा लिया जाय। बहुत से नगरों में यह चाल चली गई। एण्टवर्प में स्वयं एलेन्कौन ने अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। ऑरेञ्ज एलेन्कौन पर अटल विश्वास रखता था। उसने एलेन्कौन के विरुद्ध कुछ अफ़वाहें सुनी थीं परन्तु उसने विश्वास नहीं किया। जिस समय एण्टवर्प के नागरिकों पर एलेन्कौन के मनुष्यों ने एका-एक हमला किया उस समय नागरिक निश्चिन्त अपने-अपने घरों में बैठे खाना खा रहे थे। फिर भी वे इस वीरता से लड़े कि घण्टे भर में ही एलेन्कौन के हजारों मनुष्यों की लाशें लोटने लगीं। जो तलवारों की चपेटों से बच गये थे उन्हें नागरिकों ने कैद कर लिया। एलेन्कौन जान लेकर भाग गया। जैसे ही ऑरेञ्ज को यह समाचार मिला तो वह तुरन्त एण्टवर्प पहुँचा। वहाँ की दशा देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ। इतने दिनों के प्रयत्न के बाद आरेञ्ज ने प्रान्तों को मिला कर एक किया था। बड़ी मुश्किल से शासन-व्यवस्था का ठीक-ठाक करके स्वतन्त्रता और शान्ति की स्थापना की थी। अब उसको फिर सब मामला बिगड़ता नजर आया। एलेन्कौन की दगाबाजी के कारण पंचायतों का एलेन्कौन पर विश्वास नहीं रहा था। जब इस उपद्रव की खबर

फ्रान्स पहुँची तो फ्रान्स के राजा और उसकी माता ने विलियम
आरेञ्ज को लिखा कि यदि एलेन्कौन ने विद्रोह किया है तो किसी
के भड़काने या किसी बात से रुष्ट हो जाने से ही किया
होगा। आपको चाहिए कि जैसे बने उससे फैसला कर लें।
महारानी एलिज़बेथ ने भी इंग्लैण्ड से आरेञ्ज को ऐसा ही लिखा।
एलेन्कौन ने भी स्वयं एक पत्र आरेञ्ज को और दूसरा पंचायतों
को लिखा कि जो कुछ मैंने किया वह प्रजा के अविश्वास और
दुर्व्यवहार से रुष्ट होकर ही किया था। मुझे नेदरलैण्ड और
'चायतों पर आज भी पूरा स्नेह है। पीछे से एक दूसरे पत्र में
लिखा, कि 'मेरे सैनिकों और नागरिकों में झगड़ा हो गया था।
मैंने बहुत समझाया फिर भी सैनिकों ने न माना और नागरिकों
पर आक्रमण कर दिया।' आरेञ्ज ने उसे उत्तर लिखा 'मैंने सदा
आप पर विश्वास रखकर सच्चे मित्र की तरह आपकी हर समय
सहायता की। परन्तु, आपने अपने इस अन्तिम कृत्य से अपना
विश्वास गवाँ दिया है। आपका पक्ष लेने के कारण लोग मुझसे
पहिले ही से नाराज़ थे। आपके इस कृत्य के बाद अब आपकी
सहायता करना मेरे लिए अत्यन्त कठिन हो गया है। पहिले
ख़त में सारे उपद्रव की ज़िम्मेदारी आप अपने ऊपर लेकर
कहते हैं कि प्रजा के अविश्वास और व्यवहार से चिढ़कर आपने
विद्रोह किया। परन्तु दूसरे पत्र में आप सारी ज़िम्मेदारी सैनिकों
के कन्धे पर डाल कर स्वयं अलग हो जाते हैं। इस प्रकार की
बातें आपको शोभा नहीं देतीं। प्रजा ने आपके साथ कोई दुर्व्य-
वहार नहीं किया। आप अपना क़सूर स्वीकार न करके मामले
को और भी टेढ़ा बनाते जाते हैं।'

आरेञ्ज का दिल एलेन्कौन की तरफ से फट चुका था। परन्तु वह करता तो क्या करता? हालैण्ड और जेलैण्ड के अतिरिक्त अन्य प्रांतों में अपने बल पर खड़े होने की हिम्मत नहीं थी। ऐसी दशा में दो ही बातें हो सकती थीं या तो नेदरलैण्ड वाले फिलिप की दासता स्वीकार कर लें या किसी अन्य विदेशी राजा की सहायता से स्वतंत्रता प्राप्त करने की जो कुछ थोड़ी बहुत आशा थी, उसके लिए प्रयत्न करते। आरेञ्ज जान गया था कि एलेन्कौन विश्वास करने योग्य मनुष्य नहीं है। परंतु फिर और कोई दूसरा राजा नेदरलैण्ड की सहायता के लिए बढ़ता नजर में भी तो नहीं आता था। एलेन्कौन ने विश्वासघात करके प्रजा का खून बहाया था; प्रजा के अधिकारों को कुचलने का प्रयत्न किया था। प्रजा के खून से सने उसके हाथों से हाथ मिलाने को आरेञ्ज का जी नहीं चाहता था। परन्तु यदि वह एलेन्कौन से समझौता नहीं करता तो फ्रान्स और इंग्लैण्ड शत्रु बने जाते थे। पृथ्वीतल पर यही दो देश ऐसे थे जो नेदरलैण्ड से कुछ सहानुभूति रखते थे, और समय-समय पर थोड़ी बहुत सहायता भी पहुँचाते रहते थे। जब कभी पंचायतों के सामने कोई कठिन समस्या उपस्थित होती थी और उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं देता था। तब वे आरेञ्ज की शरण लेती थीं। इस कठिन समस्या के सम्बन्ध में भी आरेञ्ज की राय पूछी गई। आरेञ्ज ने कहा कि 'मैं अपनी राय तो देने को तैयार हूँ परन्तु बहुत डरता हूँ। जब-जब कोई कार्य असफल हो जाता है तब तब उसका सारा दोष मेरे सिर मढ़ा जाता है, मानों किसी कार्य को सफल बनाना भगवान के हाथ में नहीं मनुष्य के हाथ में है। रास्ते तीन ही हैं। अपने बल पर खड़े होकर स्वाधीनता के लिए

युद्ध किया जाय; फिर या तो विजय मिले या लड़ते-लड़ते प्राण दे दिये जाँय। दूसरा मार्ग यह है कि फिलिप के अत्याचार को चुपचाप सहन किया जाय। यदि इन दो बातों में से एक भी नहीं की जा सकती, तो फिर इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है कि किसी विदेशी राजा से जो कुछ सहायता मिले लेकर फिलिप से पिण्ड छुड़ा लिया जाय। मैं तो हमेशा से पहिले उपाय के पक्ष में हूँ। अपने बल पर खड़े होकर लड़ना; स्वाधीनता प्राप्त करना, नहीं तो लड़ते-लड़ते मर जाना ही मेरी नजर में सर्वश्रेष्ठ जँचता है। परन्तु आप लोगों में इतनी हिम्मत और आत्म-विश्वास नहीं है। तब दूसरे दो रास्ते ही रह जाते हैं। फिलिप के अत्याचारों के सामने सिर झुकाने को मैं आप लोगों को राय दे नहीं सकता। मेरी समझ में एक ही बात आती है। जैसे बने एलेन्कौन से फैसला करके उसकी सहायता से स्वाधीनता की रक्षा करने का प्रयत्न किया जाय। पंचायतों ने आरेञ्ज की सलाह मान ली। एलेन्कौन से समझौता कर लिया गया। नई शर्तों पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद एलेन्कौन को गद्दी पर बैठाने का प्रयत्न होने लगा। हालैण्ड और जेलैण्ड एलेन्कौन से समझौता करने के बिल्कुल विरुद्ध थे। उन्होंने बड़ी नम्रता से परन्तु दृढ़ता से आरेञ्ज को लिखा "कभी-कभी बड़े से बड़े आदमी भी ग़लती कर बैठते हैं, हमारी राय से आपको एलेन्कौन ने धोखे में डाल रक्खा है। आप उसकी तरफ से मुँह मोड़ कर ईश्वर पर विश्वास रख कर देश की शक्ति के बल पर स्वाधीनता प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिए। सारे प्रान्त आपको अपना राजा बनाने के लिए तैयार हैं। आप स्वीकार तो कर लीजिए।" सारे प्रान्तों की ओर से उसके

पास ऐसी ही प्रार्थनाएं आईं । संयुक्त प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने तो जाकर उसके हाथ में शासन के सारे अधिकार ही रख दिये। परन्तु उसने कहा " न तो मैं फिलिप को यह कहने का मौका देना चाहता हूँ कि मैं स्वयँ राजा बनने का प्रयत्न कर रहा था ! न मेरे पास इतनी शक्ति ही है कि मैं केवल अपने बल पर देश की रक्षा कर सकूं । ये अधिकार किसी अन्य योग्य व्यक्ति को ही दिये जाने चाहिए । जो कुछ देश की सहायता मैं कर सकता हूँ बिना राज्य स्वीकार किये वैसे ही करने को तैयार हूँ।" आरेन्ज की राय में एलेन्कोन से समझौता कर लेने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं था। इसलिए वह पंचायतों और एलेन्कौन का समझौता करा देने का प्रयत्न कर रहा था।

फारनीस चुपचाप नहीं बैठा था। उसने एलेन्कौन के एकाएक विश्वासघात कर बैठने के कारण देश में पैदा हो जाने वाली अव्यवस्था का फायदा उठाकर बहुत से छोटे-छोटे नगरों पर कब्जा कर लिया था। आरेन्ज के साले वागडेनबर्ग ने भी धोखा दिया था। उसने जुटफेन नगर सरकार के हवाले कर दिया। वागडेन-बर्ग ने चुपके-चुपके फारनीस से पत्र-व्यवहार करके तय कर लिया था कि यदि सरकार मेरे सारे अपराध क्षमा करके मुझे किसी अच्छे पद पर नियुक्त कर दे तो मैं गिल्ड्र्स और जुटफेन प्रान्तों के सारे मुख्य-मुख्य नगर सरकार के हवाले कर दूँगा। फारनीस ने वागडेनबर्ग की प्रार्थना मन्जूर कर ली थी। वागडेनबर्ग ने जुट-फेन नगर सरकार के हवाले करके अपने नीच कृत्य का श्री गणेश किया था। आरेन्ज के शत्रु तो आरेन्ज को नहीं छका पाते थे, परन्तु प्रायः उसके विश्वास-पात्र मित्र ही उसे ऐन वक्त पर

धोखा देते थे। एअरशाट का लड़का शाहजादा चिमे, देश-भक्त दल का विश्वास-पात्र बन कर फ्लैण्डर्स का गवर्नर नियुक्त हो गया था। उसने भी अपने प्रान्तों को फारनीस के सुपुर्द करने का प्रयत्न किया। परन्तु आरेञ्ज के लोगों को समझाने और जनता से अपील करने के कारण घेण्ट नगर के निवासी सजग हो गये। फ्लैण्डर्स प्रान्त कुछ दिन के लिए गढ़े में गिरने से बच गया। केवल एक ब्रूजेज नगर—जिस पर चिमे का पूर्ण अधिकार था—फारनीस के हाथ में चला गया। यपरिस पर सरकारी फौजें बहुत दिनों से घेरा डाले पड़ी थीं। आखिरकार इस नगर को भी हार मान कर सरकार की शरण में चला जाना पड़ा। सनातन-धर्म के नये महन्त के हृदय में प्रतीकार की अग्नि धधक रही थी। जैसे ही यपरिस पर फारनीस का अधिकार हुआ उसने हुक्म निकाला कि सुधारक तुरन्त नगर छोड़ कर चले जावें। जो सुधारक मर चुकने पर शहर में दफनाये जा चुके थे उनकी लाशें निकलवा कर फाँसी पर चढ़ाई गई। मुर्दों को फाँसी पर चढ़ा कर उनकी आत्मा शुद्ध कर ली गई। सनातनधर्म के नाम को अपवित्र करने वाली कोई वस्तु यपरिस में नहीं रही। एलेन्कौन और पंचायतों में समझौते की बात-चीत चल रही थी। समझौते में सहायता करने के लिए फ्रान्स के प्रतिनिधि भी १९ अप्रेल सन् १५८४ ई० को डेपट्र नगर में आ पहुँचे थे। परन्तु १० जून को एकाएक एलेन्कौन की मृत्यु हो जाने से समझौते की बात-चीत व्यर्थ हो गई। एलेन्कौन के प्राण बड़े कष्ट से निकले उसके शरीर से पसीने के साथ-साथ खून निकलने लगा था। यह भी सन्देह किया जाता है कि शायद उसे विष देकर मार डाला गया।

ऑरेञ्ज की हत्या

पाठक देख ही चुके हैं कि सरकार की ओर से ऑरेञ्ज को मार डालने के लिए जो पुरस्कार मिलने की घोषणा की गई थी वह अपना असर दिखाने लगी थी। कई बार ऑरेञ्ज की हत्या करने का प्रयत्न हो चुका था। एण्टवर्प में जोरगुइ नाम के एक हत्यारे ने आरेञ्ज के प्राण लेने का यत्न किया था। ब्रूजेज़ में सालसेडा और बैज़ा ने विष देने की चेष्टा की थी। सन् १५८२ ई० के मार्च महीने में एण्टवर्प में पीट्रो नाम के एक मनुष्य को आरेञ्ज को क़त्ल करने का प्रयत्न करने के अपराध मे फाँसी हो चुकी थी। उसने मरने से पहले स्वीकार भी किया कि मैं स्पेन से केवल आरेञ्ज को मारने के लिए ही आया था और प्रेवलाइन्स के गवर्नर ला मोटे से मैंने इस सम्बन्ध में सलाह भी की थी। सन् १५८४ ई० के अप्रेल मास में फ्लशिंग के हेन्स हैनज़ून नाम के एक व्यापारी को इस अपराध के लिए प्राण-दण्ड दिया गया कि उसने आरेञ्ज के घर के नीचे बारूद लगा कर और गिरजे में उसके बैठने की जगह के नीचे बारूद रखकर दो बार आरेञ्ज को बारूद से उड़ा कर मार डालने का प्रयत्न किया। उसने भी अपराध स्वीकार करते हुए कहा कि इस षड्यन्त्र में स्पेन का पैरिस में रहने वाला राजदूत भी शरीक था। लगभग इसी समय लेगोथ नाम के एक फ्रांसीसी कैदी से भी फ़ारनीस की

तरफ़ से कहा गया कि यदि तुम आरेञ्ज को विष देकर मार डालने का वादा करो तो तुम्हें छोड़ दिया जायगा।" उस चालाक कैदी ने कहा—"यह काम तो मैं बड़ी सरलता से कर सकता हूँ क्योंकि ऑरेञ्ज को मेरा बना खाना बहुत प्रिय है। उसने फारनीस की जेल से छुटकारा पाते ही ऑरेञ्ज को जाकर सारी बात बता दी थी। लेगोथ का ऑरेञ्ज पर सहज प्रेम था। दो वर्ष के भीतर ही पाँच-छः बार ऑरेञ्ज के प्राण लेने का यत्न किया जा चुका था।

सन् १५८४ ई० के ग्रीष्म में ऑरेञ्ज अपने डेल्फ्ट नगर के राजभवन में ठहरा था। पिछली शरद में उसकी नई स्त्री जग-विख्यात कौलिग्नी की पुत्री लूज़ा को लड़का पैदा हुआ था। यही लड़का आगे चलकर फ्रेडरिक हेनरी के नाम से यूरोप में बहुत मशहूर हुआ। डेल्फ्ट अत्यन्त सुन्दर, शान्त छोटा सा नगर था। नगर में होकर अनेक नहरें बहती थीं। सड़कों के दोनों ओर नीबू और सनोवर के वृक्ष थे। नगर में चारों ओर शांति, आनन्द का साम्राज्य था। राजपथ 'डेल्फ्ट स्ट्रीट' पर ऑरेञ्ज का सुन्दर विशाल भवन था। ऑरेञ्ज के घर के सामने ही सड़क के दूसरी तरफ़ गिरजा घर था। आठ जुलाई सन् १५८४ ई० को फ्रांस से एक दूत एलेन्कौन की मृत्यु का समाचार लेकर आया। ऑरेञ्ज अभी पलंग पर ही लेटा था। पत्र पढ़ चुकने पर ऑरेञ्ज ने सन्देशा लाने वाले दूत को अपने पास बुलवाया कि दूत से एलेन्कौन की बीमारी का कुछ और हाल पूछे। दूत ने अन्दर आकर अपना नाम फ्रन्सिस गुइओन बतलाया। इसी मनुष्य ने एक बार बसन्त ऋतु में ऑरेञ्ज की शरण में आकर

यह कह कर सहायता माँगी थी कि "मेरा पिता कट्टर सुधारक होने के कारण बीसनकोन नगर में मार डाला गया है। मैं भी नये पन्थ का पक्का पक्षपाती हूँ।" बाइबिल और प्रार्थना की पुस्तक हर समय बग़ल में दबाकर फिरने वाला, सदा धार्मिक प्रवचन बड़े चाव से सुनने वाला २७ वर्ष का यह नौजवान बहुत ही भोलाभाला सज्जन-सा लगता था। उसका नाटा क़द और मैला रँग था। इस मनुष्य में कोई भी ऐसी बात नहीं थी कि जिसके कारण लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित होता। बात-चीत से वह सुशिक्षित और अच्छे कुल का जँचता था। ऊपर से मेमने की तरह भोला-भाला लगने वाले इस मनुष्य के साधारण ढाँचे के भीतर बड़ा घृणित चरित्र और हलाहल भरा हुआ था। सात वर्ष से यह मनुष्य एक घोर पाप करने की फिराक़ में फिर रहा था। इस नौजवान का असली नाम वाल्था-जार जेरार्ड था और यह कट्टर धर्मांध सनातनी था। इसके माता पिता सब जीवित थे, बरगण्डी में रहते थे। जिस समय बाल्थाजार जेरार्ड निरा छोकरा था, उसी समय उसने 'धर्म का नाश करने वाले' ऑरेञ्ज की हत्या करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। बीस वर्ष की उम्र में उसने एक दिन अपना खंजर बड़ी ज़ोर से दरवाज़े में घुसेड़ कर कहा था—"अहा! ऐसा वार ऑरेञ्ज की छाती पर लगता तो क्या कहने थे।"

जब आरेञ्ज को हत्या करने वाले को पुरस्कार मिलने की घोषणा निकली थी, तब वह डोल नगर छोड़कर लक्ज़मबर्ग चला आया था। वहाँ उसे समाचार मिला कि जौरगुइ नाम के एक मनुष्य ने आरेञ्ज को मार डाला। यह समाचार सुनकर उसे

बड़ी प्रसन्नता हुई कि बिना अपनी जान खतरे में डाले ही उसकी मनोकामना पूरी हो गई। सन्तुष्ट होकर उसने एक व्यापारी के यहाँ नौकरी भी कर ली। बाद को जब उसे पता चला कि जौरगुइ का प्रयत्न असफल रहा, तो उसके हृदय की आग फिर धधक उठी। उसने मैन्सफील्ड की मुहर भी चुराली थी। यह मुहर आरेञ्ज के दल वालों को देकर वह देश-भक्तों के विश्वास में आ जाना चाहता था। परन्तु बहुत से कारणों से उसे काफ़ी दिन तक लक्ज़म्बर्ग में ही रहना पड़ा। आखिरकार लक्ज़म्बर्ग से चलकर वह हेल्स पहुँचा और वहाँ लालबाली नाम के एक पादरी को अपना इरादा भी बताया। पादरी ने जेरार्ड को आशीर्वाद देकर कहा कि यदि इस शुभ कार्य में तुम मारे गये तो तुम्हारा नाम ग़ाज़ियों में लिखा जायगा। वहाँ से चलकर वह ट्रेन आया। ट्रेन में भी एक बूढ़े पादरी ने जेरार्ड को बहुत आशीर्वाद देकर आरेञ्ज की हत्या जैसा अत्यन्त धार्मिक कार्य करने के लिए उत्साहित किया। अन्त में जेरार्ड ने बड़े परिश्रम से फारनीस के लिए स्वयं एक लम्बा पत्र लिखा। इस पत्र में उसने अपना सारा कवित्व ख़र्च कर दिया था। पत्र में लिखा था—"गुलाम को अपने राजा की भलाई का और राजा की इच्छा पूर्ण करने का अपने से अधिक ध्यान रखना चाहिए। आश्चर्य है कि किसी ने महाराज फिलिप को आरेञ्ज के लिए घोषित की हुई सज़ा को अभीतक पूरा नहीं किया। मैं बहुत दिनों से आरेञ्ज को मार डालने की फिराक़ में हूँ। दुर्भाग्य से आरेञ्ज के पास पहुँचने तक का मौका ही नहीं मिलता है। दूसरी कठिनाई एक और भी है। जो कोई मनुष्य आरेञ्ज के इर्द-गिर्द की भ्रष्ट अधार्मिक

हवा में रहता है उसके अन्दर की सारी धार्मिक वृति शैतान हर लेता है। खैर, अब मैंने इस लोमड़ी को फँसाने के लिए जाल तैयार कर लिया है। मैंने सरकारी इनाम के लालच से यह काम करने का इरादा नहीं किया है। उस सम्बन्ध में मैं बिल्कुल निश्चिन्त हूँ क्योंकि मुझे महाराज फिलिप की उदारता में विश्वास है।"

फारनीस बहुत दिनों से किसी होशियार हत्यारे की तलाश में था। उसे भी पिछले वायसरायों और फिलिप की तरह विश्वास हो गया था कि जब तक आरेञ्ज जीवित है, तबतक नेदरलैण्ड में फिर से स्पेन की सत्ता क़ायम नहीं की जा सकती। इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड, इटली, स्पेन, लौरेन्स इत्यादि बहुत से देशों से उसके पास हत्यारे आये थे। उसने इन लोगों को रुपया भी दिया था, लेकिन किसीने भी काम पूरा नहीं किया। बहुत से तो रुपया खा-उड़ा कर अपने-अपने घर जा बैठे। जेरार्ड का बड़ी बड़ी बातों से भरा हुआ पत्र पढ़कर और उसकी शक्ल देखकर फारनीस को विश्वास नहीं हुआ कि यह छोटा-सा कमज़ोर आदमी इतना खतरनाक काम कर सकेगा। इस लिए उसने जेरार्ड को अपने यहाँ से चलता किया। परन्तु पीछे से लोगों के कहने पर उसने एक आदमी भेजकर जेरार्ड को बुलाया। फारनीस ने जेरार्ड से पूछा—"तुमने किस तरह अपना काम पूरा करने का विचार किया है?" जेरार्ड ने कहा—"आरेञ्ज से जाकर कहूँगा कि मैं सुधारक दल का कट्टर पक्षपाती हूँ। मेरे पिता को सरकार ने मरवा डाला है। आप मुझ को अपनी शरण में लेकर मेरी रक्षा कीजिए। आपके अतिरिक्त और मेरा कोई सहारा नहीं

है। मैन्सफील्ड की मुहर आरेञ्ज को देकर मैं उसका विश्वासी बन जाऊँगा और इस तरह उसके पास आने-जाने का सिलसिला लगा लूँगा। जिस समय मौक़ा लगेगा काम पूरा कर डालूँगा। कुछ दिन पापियों की संगत में रहकर मुझे उनके ढंग अवश्य अख्तियार करने पड़ेंगे। उसके लिए मुझे क्षमा किया जाय। मैंने मैन्सफील्ड की मुहर की नकल भी केवल इसी धार्मिक कार्य के लिए उतारी है। वह भी मेरा अपराध न समझा जाय। धर्म से अधिक मुझे और कुछ इस संसार में प्रिय नहीं है।" पंडित लेखराम को मारने वाले हत्यारे ने यदि अपने हृदय के भाव खोलकर रक्खे होते तो उसने भी शायद इसी प्रकार की कहानी कही होती। लेकिन जेरार्ड को केवल धर्मान्ध समझना ठीक न होगा। उसने यह भी कहा था कि मैं बहुत ग़रीब आदमी हूँ और दौलत पाने ही की आशा से मैंने इस काम के लिए क़दम बढ़ाया है। मुझे विश्वास है कार्य सफल हो जाने पर फ़ारनीस मुझे पुरस्कार दिलवा देंगे। जेरार्ड ने ५०) रु० फ़ारनीस से सफर खर्च के लिए भी माँगे। परन्तु फारनीस की तरफ से उसे उत्तर मिला कि अभी कुछ नहीं दिया जायगा। फ़ारनीस ने बहुत से बदमाशों को रुपये दिये थे। सब के सब खा-पीकर बैठ रहे थे। इसलिए अबकी बार फारनीस ने निश्चय कर लिया था कि इस मनुष्य को कुछ भी न दिया जाय। उसे जेरार्ड की सूरत शक्ल देखकर आशा भी नहीं होती थी कि वह कुछ कर सकेगा। फिर भी उसने जेरार्ड को विश्वास दिलाया कि, काम पूरा हो जाने पर तुम्हें पुरस्कार अवश्य मिलेगा तुम मारे गये तो तुम्हारे बाल-बच्चों को मिलेगा। लेकिन ख़बरदार, अगर पकड़े जाओ तो

मेरा नाम मत लेना।" जेरार्ड को फ़ारनीस से ५०) भी न मिलने से निराशा नहीं हुई। वह फारनीस से यह कह कर चल पड़ा कि "मैं अपने पास से ही किसी न किसी तरह ख़र्च निकाल लूँगा। छः सप्ताह में आपको मेरी सफलता की ख़बर मिल जायगी।" फ़ारनीस के प्रतिनिधि एक बूढ़े पादरी ने जो उससे मिलने आया था जेरार्ड से चलते समय कहा—"जाओ पुत्र आशीर्वाद! अगर तुम सफल हो गये तो महाराज फिलिप अपना वायदा पूरा करेंगे और तुम्हारा नाम अमर हो जायगा।"

जेरार्ड ने आरेञ्ज के मित्र विलर्स के पास जाकर उसे मैन्सफ़ील्ड की मुहर दिखाई। आरेञ्ज ने जेरार्ड को मुहर लेकर एलेन्कौन के पास फ्रान्स भेज दिया। फ्रान्स पहुँच कर जेरार्ड को बड़ी बेचैनी रहने लगी। नींद हराम हो गई। अपना काम पूरा करने के लिए जैसे बने शीघ्र से शीघ्र वह आरेञ्ज के निकट पहुँच जाना चाहता था। एलेन्कौन की मृत्यु हो जाने पर उसने अधिकारियों से प्रार्थना की कि मृत्यु का समाचार लेकर आरेञ्ज के पास मुझे भेज दिया जाय। जब आरेञ्ज ने ख़त पढ़ चुकने पर समाचार पूछने के लिए उसे अन्दर बुलाया, तो जेरार्ड का हृदय धड़क उठा। अन्दर जाकर उसने देखा कि उसका शिकार जिसके प्राण लेने के लिए वह वर्षों से तड़प रहा है, पलँग पर असहाय अवस्था में निश्चिन्त पड़ा है। एक हथियार तक पास नहीं। 'धर्म तथा मनुष्य जाति का शत्रु, जेरार्ड के हाथ के निकट था। ऐसा मौक़ा फिर कब मिलने वाला था? जेरार्ड ने सोचा कि कि आरेञ्ज को मार कर एक क्षण में मैं दुनिया में अमीर और अमर बन सकता हूँ। स्वर्ग में भी ईसामसीह मेरे सिर पर ताज

रक्खेंगे। जिस मनुष्य का ख़ून करने के लिए सात वर्ष से वह भूखे बाघ की तरह इधर उधर भटकता फिर रहा था, उसको आज अपने सामने लेटा देख कर जेरार्ड अपने भावों पर क़ाबू न रख सका। आरेञ्ज के प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर देना उसे कठिन हो गया। आरेञ्ज फ्रान्स से आये हुए पत्रों को पढ़ने और उनसे उत्पन्न होने वाले विचारों में निमग्न था। उसने जेरार्ड के चेहरे के भाव नहीं देखे। जेरार्ड को आरेञ्ज ने अचानक ही भीतर बुलवा लिया था। जेरार्ड के पास अपना इरादा पूरा करने के लिए इस समय कोई हथियार नहीं था। इसलिए वह बेचारा दिल मसोस कर रह गया किसी तरह आरेञ्ज के प्रश्नों का उत्तर देकर बाहर चला आया।

रविवार का दिन था। गिरजे का घण्टा घननन-घननन बज रहा था। जेरार्ड आरेञ्ज के मकान से निकल कर अहाते में घूम-घूमकर मकान को चारों ओर से देखने लगा। एक सन्तरी ने पूछा—"इधर क्यों घूमता है?" उसने बड़ी नम्रता से कहा—"सामने के गिरजे में प्रार्थना करने का विचार है। परन्तु सफ़र में कपड़े सब फट गये हैं। कम से कम जूते और मोज़े तो अवश्य ही चाहिए।" सार्जेंसट ने उसकी भोली-भाली शक्ल पर विश्वास करके उसकी कठिनाई का ज़िक्र एक अफ़सर से कर दिया। अफ़सर ने आरेञ्ज से कहा। आरेञ्ज ने तुरन्त जेरार्ड को रुपया देने का अपने मन्त्री को हुक्म दिया। जिस कार्य के लिए जेरार्ड को कंजूस फारनीस से रुपया नहीं मिल सका था उसी कार्य के पूरा करने के लिए उसे उदार ऑरेञ्ज से सहायता मिली। रुपया हाथ आते ही जेरार्ड ने जाकर तुरन्त एक सिपाही से दो

पिस्तौलें खरीदीं। दूसरे दिन शाम को जब उस अभागे सिपाही को पता चला कि उसके पिस्तौल किस काम के लिए खरीदे गये थे, तो वह अपने हृदय में छुरा भोंक कर मर गया।

१० जुलाई सन् १५८४ ई० को मंगलवार के दिन आरेञ्ज अपनी स्त्री और घर के लोगों के साथ खाना खाने के कमरे की तरफ़ जा रहा था। जेरार्ड ने बढ़कर अपना पास पोर्ट माँगा। आरेञ्ज की स्त्री एक दम चौंक पड़ी। धीरे से आरेञ्ज से बोली—"मैंने ऐसी मनहूस और बदमाश-सूरत आज तक कभी नहीं देखी। यह मनुष्य कौन है।" आरेञ्ज ने कहा—'कोई नहीं एक साधारण आदमी है। अपना पासपोर्ट माँगता है।' आरेञ्ज अपने मंत्री को पासपोर्ट तैयार करके दे देने का हुक्म देकर खाना खाने चला गया। खाना खाने के कमरे में आरेञ्ज अपने स्वभाव के अनुसार खूब हँसता आनन्द से बातचीत करता और खाना खाता रहा। दो बजे के करीब खाना खाकर बाहर निकला। ऊपर के कमरे में जाने के लिए दो सीढ़ी ही चढ़ा था कि जीने के कोने से एक आदमी ने उछल कर उसके हृदय पर पिस्तौल तान कर धड़ा-धड़ तीन वार कर दिये। एक गोली सीने को पार करती हुई दीवार में घुसगई। आरेञ्ज के मुँह से आवाज़ निकली "भगवान! मेरे ऊपर दया करना! मेरे देश की ग़रीब प्रजा पर दया करना।" विलियम आरेञ्ज के ये अन्तिम शब्द थे। लोगों ने दौड़ कर गिरते हुए विलियम आरेञ्ज को हाथों पर ले लिया। कुछ ही क्षण में, स्त्री और बहन के हाथों में सिर रक्खे हुए विलियम आरेञ्ज की महान् आत्मा संसार से लुप्त हो गई।

जेरार्ड पिस्तौल पटक कर भाग गया था। खाई बैर कर

उस पार जाने का प्रयत्न कर रहा था। इतने ही में सिपाहियों ने जाकर उसे पकड़ लिया। जेरार्ड ने अपना नाम पता इत्यादि सब ठीक-ठीक बतला दिया और अपना अपराध भी क़बूल कर लिया। उसे जेल में बहुत कष्ट दिये गये। जिस पशु ने देश के पिता विलियम आरेञ्ज के प्राण ले लिये थे उसपर लोगों का अत्यन्त क्रुद्ध होना स्वभाविक ही था। सदा अपने हत्यारों की रक्षा करने वाला विलियम आरेञ्ज तो अब इस संसार में था नहीं। जेरार्ड को बचाता तो कौन बचाता? परन्तु पतले-दुबले जेरार्ड का कलेजा शायद पत्थर का बना था। अकथनीय कष्ट सहने पर भी कभी उसने आह मुँह से नहीं निकाली। बराबर यही कहता रहा कि, 'इस शुभ-कार्य के लिए यदि मुझे ऐसी सौ मौतें सहनी पड़तीं तो भी मैं ख़ुशी से सहने के लिए तैयार था। शिकन्जे में कस कर जब उसे बाहर निकाला जाता था, तो वह अच्छी तरह बातें करता हुआ निकलता था। लोगों को उसकी सहनशीलता देखकर आश्चर्य होता था। कुछ लोगों का तो विश्वास हो चला था कि जेरार्ड अवश्य ही जादूगर है। कोई-कोई कहते थे कि स्वयं शैतान उसके भीतर घुस कर बैठा है। जेरार्ड ने बहुत कष्ट पा चुकने के बाद ट्रेव्स और टूर्नें में पादरियों से होने वाली मुलाकातों की बात तो स्वीकार कर ली परन्तु फारनीस का नाम मरते दम तक ज़बान पर नहीं लाया। आख़िरकार उसके लिए बड़ी भयंकर और क्रूर सज़ा निश्चित की गई। पहले दाहिना हाथ दहकते हुए लोहे से जलाया गया। छः जगह हड्डियों में से माँस नोच कर अलग कर लिया गया। छाती चीर कर उसका दिल बाहर निकाल लिया गया और फिर दिल फेंक

कर उसके मुँह पर मारा गया। जेरार्ड का सिर काट कर शरीर से अलग कर दिया गया। शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले गये। आरेन्ज के बस में होता तो वह क़ब्र से उठकर भी अपने मित्रों की इस भयंकर क्रूरता से जेरार्ड की अवश्य ही रक्षा करता! बड़े से बड़े अपराध के लिए भी किसी मनुष्य को ऐसी सजा नहीं दी जा सकती। क्रूरता और अत्याचार नष्ट करने के लिए महान् आत्मा विलियम आरेन्ज ने जन्म भर प्रयत्न किया था। आरेन्ज के मरने पर उसके अनुयायियों ने ऐसी क्रूरता करके अवश्य ही उसकी स्मृति को कलंकित किया। जेरार्ड अधमरा हो जाने पर भी मरते दमतक बिल्कुल शान्त रहा। फाँसी देने से पहले जल्लाद जेरार्ड की उन पिस्तौलों के तोड़-तोड़ टुकड़े करने लगा जिन से उसने विलियम आरेन्ज को मारा था। अचानक हथौड़ा उचट कर जल्लाद को लग गया। कुछ लोग हँसने लगे। फाँसी के तख्ते पर खड़ा हुआ जेरार्ड भी हँसने लगा।

जेरार्ड को फाँसी हो जाने पर उसके माँ बाप को फारनीस ने पच्चीस हजार रुपये का पुरस्कार और आरेन्ज की जब्त की हुई जागीर में से एक भाग दिलवा दिया। बेटे के पाप से माँ बाप फले फूले।

हत्यारे को विलियम की जान लेने के लिए हथियार खरीदने के लिए भी रुपया विलियम आरेन्ज से मिला था। हत्यारे के मर जाने पर पुरस्कार में उसके माँबाप को विलियम आरेन्ज की जागीर मिली। देश-सेवा का पुरस्कार बड़ा विचित्र है! घर-बार फूँककर मैदान में आना, जीवन पर्यन्त कष्ट सहन करना, अन्त

में मातृभूमि की वेदी पर बलिदान हो जाना जिन्हें यह सौदा प्रिय हो वही ओखली में सिर दें। २७ वर्ष बाद फिलिप की शिक्षा पाकर विलियम आरेञ्ज का अभागा कनिष्ठ पुत्र जब स्पेन से चलने लगा तो फिलिप ने उससे कहा कि 'जेरार्ड' के माता पिता को जागीर की आमदनी का रुपया देते रहना, जागीर पर अधिकार तुम्हारा रहेगा। विलियम आरेञ्ज के पुत्र को फिलिप ने ऐसा क्रूर बना दिया था कि उसकी शक्ल देख कर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह शान्त सौम्य विलियम आरेञ्ज का पुत्र होगा फिर भी उसमें विलियम का रक्त था। उसने जेरार्ड के बाप को दी गई वह जागीर छूने से इन्कार कर दिया। बहुत दिनों बाद जब यह जागीर फ्रान्स के राज्य में मिली तो फ्रान्सीसी गवर्नर ने जेरार्ड के कुटुम्बियों को दी हुई फिलिप की सनदें फाड़कर पैरों से कुचल डालीं और जागीर जब्त कर ली।

मृत्यु के समय शाहजादा विलियम आरेञ्ज की अवस्था ५१ वर्ष १६ दिन की थी। वह १२ बच्चे छोड़ कर मरा। ३ अगस्त को सारे राष्ट्र ने रोते-रोते उसे डेल्फ्ट में दफ़न कर दिया। धन्य है उस माई के लाल की मौत जिसके मरने पर सारे देश की आखों से आँसू बरसें।

आरेञ्ज के जीवन और परिश्रम ने नेदरलैण्ड में प्रजातन्त्र की स्थापना कर दी थी और उसे सुदृढ़ नींव पर भी रख दिया था। परन्तु उसकी मृत्यु से सारे देश का एक प्रजातन्त्र राष्ट्र में मिल जाना असम्भव हो गया। विलियम के मर जाने से फारनीस को लोगों के बहकाने और फोड़ने का मौक़ा मिल गया। दक्षिण प्रान्त सदा के लिए उत्तर प्रन्तों से अलग हो गये। जब तक

विलियम आरेञ्ज जीवित था, बहुत से दल और गृह-कलह होने पर भी दो, वैल्लून प्रान्तों को छोड़ कर वह सारे देश का पित माना जाता था। देश एक था अथवा यों कहिए कि देश के एक हो जाने की सम्भावना थी। सारे देश के देश-भक्तों के लिए विलियम आरेञ्ज का दृढ़ हृदय चट्टान का सहारा था। उसका मस्तिष्क कठिन से कठिन समय में देश को मार्ग दिखाता था। ग्रेनविले और फिलिप का विश्वास ठीक निकला। जो कार्य स्पेन और इटली की चतुर राजनीति और यूरोप की प्रख्यात फौजें न कर सकीं वह एक तुच्छ मनुष्य की पिस्तौल ने कर दिया। विलियम आरेञ्ज के बाद नेदरलैंड का एक सूत्र में बँधना असम्भव हो गया।

एएटवर्प सदा से स्वतन्त्र और स्वाधीनता के लिए लड़नेवाला नगर रहा था। परन्तु आरेञ्ज के बाद फारनीस की चालों के सामने इस नगर ने गर्दन झुका दी। नेदरलैंड दो भागों में विभाजित हो गया। हालैंड और जेलैंड की गद्दी पर विलियम आरेञ्ज बाक़ायदा नहीं बैठ पाया था। उसके मरते ही इन प्रान्तों की पंचायतों ने प्रभुता अपने हाथ में ले ली। विलियम आरेञ्ज के पुत्रों और वारिसों की छत्र-छाया में दो सौ वर्ष तक यह प्रजातन्त्र-राज्य फला फूला।

विलियम के जीवन ने प्रजातन्त्र की स्थापना की। उसकी मृत्यु ने प्रजातन्त्र की सीमा निश्चित कर दी। यदि विलियम आरेञ्ज बीस वर्ष और भी जी गया होता तो सात प्रान्तों के प्रजातन्त्र राष्ट्र के स्थान में सत्रह प्रान्तों का एक महान् प्रजातन्त्र बन गया होता। स्पेन की सत्ता सदा के लिए नेदरलैंड से काफूर

हो गई होती। उसकी मृत्यु के बाद दो सौ वर्ष तक और युद्ध चलने के बाद स्पेन ने इन प्रान्तों की स्वतन्त्रता स्वीकार की। परन्तु इन दो सौ वर्षों में प्रान्तों की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। हालैण्ड की नौ-सेना संसार की सर्वोच्च नौ-सेना मानी जाने लगी थी। नागरिक स्वतन्त्रता, देश की राजनैतिक स्वतन्त्रता की स्थापना और विदेशी अत्याचार का अन्त आरेञ्ज विलियम की आँखें मुँदने के पहले ही हो चुका था। जिस समय सन् १५८१ ई० में जनता ने फिलिप को गद्दी से उतारने की घोषणा की थी उसी समय से प्रजातन्त्र की स्थापना हो गई थी।

नेदरलैण्ड के प्रजातन्त्र का इतिहास विलियम आरेञ्ज के जीवन का इतिहास है। विलियम आरेञ्ज का जीवन-चरित्र त्याग, तपस्या, सज्जनता, प्रेम और स्वाधीनता का महाकाव्य है। आदि से अन्त तक आरेञ्ज के जीवन का एक ही लक्ष्य था। स्वाधीनता—सर्वसाधारण के लिए स्वाधीनता। जीवन भर उसने महान संकटों का हँस-हँस कर सामना किया आपत्तियों के पहाड़ टूटे, परन्तु उसके माथे पर शिकन नहीं आई। आरेञ्ज के मित्र उसके धैर्य को देखकर कहा करते थे—"हमारा विलियम तूफ़ानी समुद्र में अटल चट्टान है। यूरोप की सर्वश्रेष्ठ शक्ति का जीवन पर्यन्त दृढ़ता से अकेले सामना करने के कारण उसके शत्रुओं के मुँह से उसके लिए वाह वाह निकलती थी। एक उच्च राजवंश में पैदा होकर भी उसने कभी अपनी मानमर्यादा, पद, धन-संपत्ति, किसी की कुछ चिन्ता नहीं की। कभी-कभी तो आरेञ्ज के जीवन में ऐसा समय तक आया कि उसके पास आवश्यकता की साधारण वस्तुयें भी नहीं रहीं। देश के लिए

गले में झोली डाल कर वह भिखारी बना; विद्रोही कहलाया। उसके मरने के दश वर्ष बाद उसके भाई जान नसाऊ और कर्जदारों से जब हिसाब-किताब साफ हुआ तो १४ लाख रुपया आरेञ्ज के नाम कर्ज निकला। रिश्तेदारों से भी आरेञ्ज इतना कर्जा ले चुका था कि उसके लड़कों को जागीर चली जाने का भय होने लगा था। देश के लिए विलियम आरेञ्ज ने अपना रुपया पानी की तरह बहाया। जब देश का ताज उसके सिर पर रक्खा जाने लगा तो उसने उस ताज को उठा कर दूसरे के सिर पर रख दिया। हालैण्ड और जेलैण्ड ने जब बिल्कुल ही न माना, जब अस्वीकार करना असम्भव हो गया तभी उसने देश के इस भाग पर राज्य करना स्वीकार किया। परन्तु सारी सत्ता पंचायत के हाथ में देकर स्वयं पंचायतों का केवल सेवक बनकर रहा। आरेञ्ज अपने देश के लिए जिया; अपने देश के लिए मरा! 'भगवान मेरे देश की गरीब जनता पर दया करना' ये उसके अन्तिम शब्द थे।

संकट के समय न घबराना, कर्त्तव्य का पालन करना, पराजय होने पर निराश न होना; सिपाही के ये गुण उसमें कूट-कूट कर भरे थे। हार पर हार पाकर अन्त में उसने विजय प्राप्त की। उस समय के यूरोप के सबसे शक्तिमान स्पेन-साम्राज्य के तीक्ष्ण दाँतों के भीतर उसने एक प्रजातंत्र राष्ट्र की स्थापना कर दी थी। आरेञ्ज बहुत ऊँचे अर्थ में सच्चा विजेता था। उसने एक देश के लिए स्वाधीनता जीती थी; राष्ट्र का पद जीता था। स्वाधीनता का युद्ध बहुत लम्बा था। इसी युद्ध में विलियम ने अपनी जान गवाँई। परन्तु विजय का ताज इस मृत वीर के सिर पर ही रहा। आरेञ्ज

को मार कर जीवित रहने वाले फिलिप के सिर नहीं। आरेञ्ज
को सदा असङ्गठित सेना और भाड़े के टट्टुओं की सहायता से
युद्ध लड़ना पड़ा था। ये भाड़े के टट्टू प्रारम्भ होते ही प्रायः
बलवा करने पर उतारू हो जाते थे। आरेञ्ज के पास अपने भाई
लुई के अतिरिक्त और कोई अच्छा सेनापति भी नहीं था।
लुई मर जाने पर उसका एक मात्र सहारा भी उठ गया था।
शत्रु के पास यूरोप की छटी हुई सेनायें थीं, प्रख्यात सेनापति थे।
फिर भी उसने संसार के युद्ध के इतिहास में प्रसिद्ध, एल्वा
रेक्वेसिन्स, डान जॉन और फारनीस के सारे प्रयत्न निष्फल कर
दिये। आरेञ्ज की मृत्यु के समय हेनाल्ड और आरटोयज केवल
दो प्रान्त फिलिप की अधीनता में रह गये थे। अन्य पन्द्रह प्रान्तों
पर क्रान्ति का झण्डा लहराने लगा था। राजनैतिक कुशलता में
तो आरेञ्ज अपने युग का राजा था। लोगों के स्वभाव समझने
में वह इतना दक्ष था कि शक्ल देखते ही आदमी को समझ लेता
था। जनता के आवेश और भावों को वह सितार के तारों की
तरह वश में रखता था। जिस घेण्ट नगर को चार्ल्स-सा चतुर
मनुष्य बिना कुचले नहीं दबा सका था, वही घेण्ट आरेञ्ज की
उँगलियों पर मरते दम तक नाचता रहा। घेण्ट ने नेदरलैण्ड में
स्वाधीनता को जन्म दिया था। आरेञ्ज के जीवन भर घेण्ट
स्वाधीनता की रक्षा करता रहा। परन्तु उसके मरते ही घेण्ट ने
स्वाधीनता का झण्डा नीचा कर दिया।

आरेञ्ज की वक्तृत्व शक्ति भी अच्छी थी। लेखन-कला में
ग्रेनविले का गुरु बन सकता था। फ्रेञ्च, जर्मन, फ्लेमिश, स्पेन, इटै-
लियन और लेटिन छः भाषाओं का वह ज्ञाता था। लिखने में

क्रान्ति की तैयारी कीजिए

जागृति-कर

१ हमारे जमाने की गुलामी	।)
२ नरमेध !	१।)
३ सामाजिक कुरीतियाँ	॥≡)
४ अंधेरे में उजाला	।≡)
५ शैतान की लकड़ी	॥।=)
६ चीन की आवाज़	।–)

जीवन-प्रद

१ स्वाधीनता के सिद्धान्त	॥)
२ आत्मकथा	॥–)
३ अनीति की राह पर	॥)
४ दिव्य-जीवन	।=)
५ ब्रह्मचर्य-विज्ञान	॥।–)
६ स्त्री और पुरुष	।=)